उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

बी.ए. कर्मकाण्ड (तृतीय सेमेस्टर)

BAKA(N)-220

(MINOR VOCATIONAL COURSE)

व्रत-पर्वों का सामान्य परिचय

मानविकी विद्याशाखा

भारतीय कर्मकाण्ड विभाग

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

पाठयक्रम समिति

कुलपति - अध्यक्ष
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

प्रोफेसर रेनू प्रकाश – संयोजक
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि 0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष एवं भारतीय कर्मकाण्ड विभाग

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
पौरोहित्य विभाग
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रोफेसर उपेन्द्र त्रिपाठी
वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम संयोजन एव सम्पादन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल	**3**	**4,6**
डॉ. प्रमोद जोशी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1/3**	**1/ 1,3**
डॉ. प्रभाकर पूरोहित असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**2**	**1, 2, 3**
डॉ. रंजीत दूबे असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1/3**	**3,4/5**
डॉ. विजय रतूड़ी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1/3**	**2,5/2**

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रकाशन वर्ष : 2024 ISBN No. -

प्रकाशक: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी - 263139 **मुद्रक:**

नोट - : (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

व्रत-पर्वों का सामान्य परिचय MINOR VOCATIONAL COURSE BAKA(N)-220

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर – (कर्मकाण्ड)

क्रम व इकाइयों के नाम		पृष्ठ संख्या
खण्ड 1	**व्रत परिचय**	**2**
इकाई 1	व्रत परिचय	3-18
इकाई 2	व्रत धारण विधि एवं महत्व	19-33
इकाई 3	शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत	34-46
इकाई 4	चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत	47-69
इकाई 5	आश्विन से फाल्गुन मास पर्यन्त प्रमुख व्रत	70-91
खण्ड 2	**पर्व परिचय**	**92**
इकाई 1	पर्वों का सामान्य परिचय	93-103
इकाई 2	वैदिक सनातन परम्परा के प्रमुख पर्व	104-132
इकाई 3	पर्वों का निर्धारण विधि	133-157
खण्ड 3	**प्रमुख व्रत**	**158**
इकाई 1	एकादशी व्रत	159-174
इकाई 2	प्रदोष व्रत	175-190
इकाई 3	गणेश चतुर्थी व्रत	191-206
इकाई 4	पूर्णिमा व्रत	207-215
इकाई 5	वट सावित्री व्रत	216-230
इकाई 6	ऋषि पञ्चमी व्रत	231-239

बी.ए. (तृतीय सेमेस्टर)

MINOR VOCATIONAL COURSE

व्रत-पर्वों का सामान्य परिचय

BAKA(N)-220

खण्ड- 1
व्रत परिचय

इकाई – 1 व्रत परिचय

इकाई की संरचना –

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 व्रत का सामान्य परिचय
1.4 व्रत के प्रकार व तिथि, दिन निर्णय
1.5 बोध प्रश्न
1.6 सारांश
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है -व्रत परिचय। इस इकाई के माध्यम से यह जानने का प्रयास करेंगे कि व्रत से सम्बन्धित क्या-क्या बाते आवश्यक हैं?

शास्त्रानुसार व्रत, धर्म का साधन है। संसार के समस्त धर्मो में किसी न किसी रूप में 'व्रत' करने का विधान है। व्रत के आचरण से पापों का नाश, पुण्य का उदय, शरीर और मन की शुद्धि, अभिलषित मनोरथ की प्राप्ति, शांति तथा परम पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार से किस तिथि को व्रत करना चाहिये और किस तिथि में नहीं, किस दिन व्रत करना चाहिये और किस दिन नहीं। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखकर इस इकाई के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

हम आशा करते है कि आप सभी शिक्षार्थीगण इस इकाई को पढ़ने के बाद व्रत से सम्बन्धित बातों को समझने में सफल रहेंगे।

1.2 उद्देश्य

- इस इकाई के द्वारा व्रत सम्बंधित जानकारियों से अवगत हो सकेंगें|
- किन तिथियों में व्रत ग्राह्य है व किन में अग्राह्य है,इसे समझ सकेंगें|
- व्रत के भंग होने पर किस प्रकार से प्रायश्चित किया जाय इसे समझ पायेंगे|
- व्रतोपवासनाशकतत्त्व कौन-कौन से है उन्हें समझ सकेंगें|

1.3 व्रत का सामान्य परिचय

भारतीय सनातन परम्परा में ऋषि-मुनियों ने वेदों, पुराणों, स्मृतिग्रन्थों आदि में मानव के कल्याण के लिए सुख की प्राप्ति तथा दुःख की निवृत्ति के अनेक उपाय कहे है। उन्ही उपायों में से 'व्रत' श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय है। व्रत को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है –

- **किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अथवा निष्काम भावना से समय विशेष के लिए अन्न, जल अथवा अन्य भोज्य पदार्थों का त्याग 'व्रत' कहलाता है।**
- **किसी कार्य को पूर्ण करने का संकल्प लेना भी 'व्रत' है।**

वेदो, पुराणो तथा धर्मशास्त्रादि ग्रन्थों में अनेक प्रकार के व्रतो के आचरण का वर्णन प्राप्त होता है। इनमें कुछ व्रतों का अनुष्ठान सप्ताह के प्रत्येक दिन में, कुछ का मास के दोनों पक्षों की विशेष तिथियों में तथा कुछ व्रतों का अनुष्ठान वर्ष में एक बार किया जाता है। ज्योतिषशास्त्र में काल के अनेक भेद कहे गए

है। व्रत की दृष्टि से कुछ व्रतो का अनुष्ठान चान्द्रमान से, कुछ का सावन से तथा कुछ व्रत सौर मान के अनुसार किए जाते है। अतः व्रत के अनुष्ठान से पूर्व व्रत की तिथि एवं दिन का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है क्योकि शास्त्रोक्त समयानुसार किए गए व्रतानुष्ठान का ही फल व्रतकर्ता को प्राप्त होता है।

व्रत की विस्तारपूर्वक परिभाषा के विषय में मध्यकाल के निबन्धों में बडी विवेचना उपस्थित की गयी है। शबर जैमिनि, ने निष्कर्ष निकाला है कि व्रत एक मानस क्रिया है, जो प्रतिज्ञा के रूप में होती है। यथा मैं यह नहीं करूँगा। मेघातिथि ने इसे स्वीकार किया है। अग्निपुराण ने व्यवस्था दी है कि शास्त्र द्वारा घोषित नियम ही व्रत है, इसी को तप भी कहा गया है, व्रत को तप कहा गया है, क्योंकि इससे कर्ता को सन्ताप मिलता है, इसे नियम भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें ज्ञान के कतिपय अंगों पर नियंत्रण करना पडता है। मनु ने घोषित किया है कि संकल्प सभी कामों (इच्छाओं) का मूल है, सभी यज्ञों, सभी व्रतों का मूल है, और इनकी विशेषताएँ अर्थात् यम संकल्प से ही उत्पन्न होते है। किन्तु प्रत्येक सकल्प व्रत नहीं कहा जा सकता। यहां पर विचावरणीय है कि अमरकोश के अनुसार नियम' एवं 'व्रत' समानार्थी हैं और व्रत में उपवास आदि होते हैं जो पुण्य उत्पन्न करते है। 'तप' शब्द ब्रह्मचारी के आचार-नियमों के लिए प्रयुक्त, होता है। मिताक्षरा के अनुसार व्रत मानसिक संकल्प है जिसके द्वारा कुछ किया जाता है या कुछ नहीं किया जाता है। दोनों कर्तव्य रूप में लिये जाते हैं। इसीलिए श्रीदत्त ने अपने समयप्रदीप में सम्भवत शबर एवं मिताक्षरा से संकेतलेकर व्रत की परिभाषा यो की है- यह एक निर्दिष्ट संकल्प है जो किसी विषय से सम्बन्धित है, जिससे हम कर्तव्य के साथ अपने को बाँधते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह भावात्मक या अभावात्मक हो सकता है

इसके अतिरिक्त व्रत्त के आचरण के कुछ विषेष नियमो का भी निर्देश शास्त्रों में दिया गया है। व्रत के अधिकारी कौन-कौन है? गृहस्थियों को किन किन व्रतों का आवरण नहीं करना चाहिए? स्त्रियों को व्रत का अधिकार किन अवस्थाओं में नहीं है? व्रत की असमर्थता में व्रत का प्रतिनिधि कौन हो सकता है? व्रत में किन किन भोज्य पदार्थो को वर्जित कहा गया है? व्रत के समय किंन किन नियमों का पालन करना चाहिए? व्रतभग का प्रायश्चित कैसे किया जाता है? सूतक पातक में व्रत करना चाहिए अथवा नही व्रत का आरम्भ कब करना चाहिए तथा किस व्रत का उद्यापन कितने समय पश्चात करना चाहिये

व्याकरणषास्त्र के अनुसार व्रत शब्द की व्युत्पत्ति वृ' (वृञ् वरणे) धातु से हुई है जिसका अर्थ है वरण करना अर्थात् धारणा करना। जब कोई व्यक्ति देवों के अनुग्रह कि प्राप्ति के लिये अपने आचरण और भोजन पर विशिष्ट रोक लगा देता है, तो वह पुनीत संकल्प या धार्मिक आचार - कर्म का रूप धारण कर लेता है| यास्क द्वारा लिखित निरुक्त में भी व्रत शब्द का प्रयोग दो अर्थों के लिए किया गया है। जो इस प्रकार है

व्रत्तमिति कर्मनाम निवृत्तिकर्म वारयतीति सतः। इदमपीतरद व्रतमेतदस्मादेव वृणोतीति सतः ।।

अर्थात् प्रथम अर्थ में धार्मिक कृत्य या सकल्प अथवा आचरण तथा द्वितीय अर्थ में अन्न भी व्रत है जो शरीर को आवरण करता है। व्रतराज में व्रत को इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

अत्र केचित्स्वकर्तव्यविषयो नियतः संकल्पो व्रतमिति।
तन्न अग्निहोत्रसंध्यावन्दनादिविषये सङ्कल्पेऽतिप्रसक्तेः।
अतोऽभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।

अर्थात् किसि कार्य को करने के दृढ सकल्प को व्रत कहते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सन्ध्यावन्दन अग्निहोत्रादि को व्रत की श्रेणी में नहीं रखा गया है। क्योंकिव्रत, पर्व एवम् उत्सवों का धर्मशास्त्रीय निर्णयसन्ध्यावन्दनादि भी प्रतिदिन किया जाने वाला कर्म है। व्रत एक प्रकार का सकल्प विशेष है, जिसके अनुष्ठान कुछ विशेष नियमों का पालन करते हुआ किया जाता है।
इसी प्रकार अमरकोश के अनुसार व्रत तथा नियम दोनों समानार्थक शब्द है। व्रत में केवल उपवासादि पुण्य कार्य अधिक करने का विधान है-
नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पूण्यकम्।
इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि व्रत का सबंध दो विषयों से हैप्रथम नियमबद्ध रूप से निराहार रहकर व्रत करने से देवी-देवताओं को प्रसन्नकरना दूसरा व्रत करने से जीवन नियमबद्ध होता है तथा इच्छाए सयमित एवं नियंत्रितहोती है

1.4 व्रत के प्रकार व तिथि, दिन निर्णय

व्रतपर्व विवेक नामक पुस्तक में धर्मशास्त्रों तथा पुराणों के आधार पर व्रत के चार प्रकार बताए गए है जो निम्न प्रकार से हैं-

1 - उपवास
2 - एकभुक्त
3 - नक्त
4 - अयाचित

उपवास-

वार के पुरे समय अर्थात 24 घंटा अन्न ग्रहण न करना उपवास है। दिन मे किए जाने वाले व्रतों में यह काल सूर्यादय से लेकर सूर्योदय पर्यन्त ग्रहण किया जाता है। उपवास करना सभव न हो तो शास्त्रकारों ने इसके तीन विकल्प बतलाए है- एकभुक्त, नक्त तथा अयाचित।

एकभुक्त -

व्रत के दिन एक बार मध्याह्न के अन्तिमार्ध में भोजन ग्रहण करना एकभुक्त व्रत कहलाता है। इस व्रत में भी पूर्ण भोजन न करने का विधान है। शास्त्रो के अनुसार मुनि को 8 ग्रास, वानप्रस्थी को 16 और गृहस्थी को 32 ग्रास ही ग्रहण करने चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि एकभुक्त में शरीररक्षा के लिए भोजन करना चाहिए उदरपूर्ति के लिए नहीं।

नक्त -

इस व्रत में व्रत के दिन प्रदोष काल में सूर्यास्त पश्चात् । मुहूर्त के पश्चात भोजन करना चाहिए। यति, विधवा और अपुत्र विपुरी को तो नक्क भोजन सूर्यास्त से पहले एक मुहूर्त के भीतर कर लेना चाहिए, क्योंकि उन्हें सूर्यास्त के बाद भोजन करने का निषेध है।

अयाचित -

इस व्रत में व्रत के दिन व्रतकर्ता को वही भोजन करने का अधिकार है. जो किसी अन्य व्यक्ति ने उसे बिना मामे दिया हो। इसके भोजन के काल के बारे में शास्त्रों में कोई स्पष्ट निर्देश प्राप्त नहीं होता। इस व्रत में भी व्रती को अपनी भूख का तीसरा हिस्सा ही शान्त करना चाहिए। ऐसा व्रत पारण के नियमों से निर्णय लिया जा सकता है।

तिथि विचार-

अचार्य नेमीचन्द शास्त्री के अनुसार प्रात. काल सूर्योदय के पश्चात् तीन मुहूर्त रहने वाली जिस तिथिको प्राप्तकर सूर्य अस्त होता है, धर्मादि कार्यों में वह तिथि पूर्ण मानी जाती है, इस प्रकारका कथन व्रत धारण करनेवाले मुनीश्वरोका है। अर्थ यह है कि सूर्योदय के पूर्व तीन मुहूर्त रहने वाली तिथि भी रात्रिव्रत व्रतों के लिए ग्राह्य है। इस श्लोक के अनुसार व्रत तिथि का ज्ञान दोनों प्रकार से ग्रहण किया गया है, उदय और अस्त काल में रहने वाली तिथि के अनुसार। उदयकाल के उपरान्त कम से कम तीन मुहूर्त ५ घटी ३६ पल प्रमाण विधेय तिथि के रहने पर ही व्रत ग्राह्य माना जाता है। इसी प्रकार व्रत वाली तिथि के सूर्योदय के पहले तक रहने पर भी रात्रि व्रतो के लिए तिथि ग्राह्य मान ली गयी है-

अवाप्य यामस्तमुपैति सूर्यस्तिथिं मुहूर्तत्रयवाहिनीं च।
धर्मेषु कार्येषु वदन्ति पूर्णा तिथिं व्रतज्ञानधरा मुनीशाः ।।

यदि एक तिथि दो दिनों तक रहे तो ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? धर्मशास्त्र केअनुसार इसका निर्णय इस प्रकार करना चाहिए द्वितीया और तृतीया, चतुर्थी औरसप्तमी, अष्टमी और नवमी एकादशी और द्वादशी, चतुर्दशी और पूर्णा, प्रतिपदा और अमावस्या इन तिथियों के युग्म (जोडे) शुभ कहे गए है।

युग्मतिथियाँ-

जब व्रत दो दिन पड़ता हो या दोनों दिन नहीं पड़ता हो, तब युग्मतिथियों के माध्यम से पूर्वविद्धा या परविद्धा तिथि (व्रत) ग्राह्य होती है।

१. द्वितीया-तृतीया का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ हैं।
२. चतुर्थी-पंचमी का वेधग्राह्य है। येयुग्मतिथियाँ हैं।
३. षष्ठी-सप्तमी का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ हैं।
४. अष्टमी-नवमी का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ हैं।
५. एकादशी-द्वादशी का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ है। चतुर्दशी-पूर्णिमा का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ हैं।
६. अमावास्या-प्रतिपदा का वेधग्राह्य है। ये युग्मतिथियाँ है।

अपवाद युग्म तिथियाँ –

१. भगवती गौरी और भगवान् श्रीगणेश के व्रत में तृतीया और चतुर्थी तिथि का युग्म बनता है- चतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते। रम्भातृतीयाहमेशा द्वितीया विद्धा होती है।
२. श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत एवं दूर्वाष्टमीव्रत सप्तमी अष्टमीविद्धा ग्राह्य है। जन्माष्टमी में मध्यरात्रि में अष्टमी की अनिवार्यता स्वीकृत है। ज्येष्ठा देवीनिमित्त अष्टमी व्रत सप्तमी एवं नवमी दोनों से विद्धा ग्राह्य है। कालभैरवाष्टमी मध्यरात्रिक होनेसे सप्तमी विद्धा भी ग्राह्य है।

उदयातिथि का महत्त्व –

जिस तिथि में सूर्य का उदय होता है वह तिथि स्नान, दान, जप कार्य में सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है-

यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः ।
सा तिथिः सकला ज्ञेया स्नानदानजपादिषु।।

यह वचन स्नान, दान, जप तथा नवमीहोम के लिए पूर्णतः ग्राह्य है।
इनसे भिन्न युगल अग्राह्य है। उनकाप्रयोग करने से पूर्वार्जित पुण्य नष्ट हो जाता है

युग्माग्नि युग भूतानां षण्मुन्योः वसु रन्ध्रयोः ।
रुद्रेण द्वादशीयुक्ता चतुर्दश्या च पूर्णिमा ।।
प्रतिपद्यप्यमावस्या तिथ्योर्युग्मं महाफलम् ।
एतद्वयस्तं महाघोरं हन्ति पुण्यं पुराकृतम् ।।

युग्म शब्द का सामान्य अर्थ है, जोडा। अर्थात् तिथियों का जोडा। अभिप्राय यह है कि व्रत के दोनों दिनों में व्याप्त या अव्याप्त तिथि का व्रत उस दिन किया जाना चाहिए, जिस दिन उस तिथि का अपनी शुभ युगल वाली तिथि से योग हो रहा है। उदाहरणार्थ यदि व्रततिथि चतुर्थी शुक्रवार एवं शनिवार दोनों दिन व्रत के काल में व्याप्त या दोनों दिन अव्याप्त है तो इस नियम के अनुसार चतुर्थी तथा पचमी का युगल शुभ है। अतः चतुर्थी का व्रत उस दिन करना चाहिए जिस दिन चतुर्थीपचमी का योग हो।

इसी तरह तृतीया से विद्ध चतुथी का व्रत तृतीया तिथि में करना अशुभ है। इसी प्रकार अन्य युगलों के विषय में भी विचार करना चाहिए। रात्रिव्रत में भी इसी प्रकार विचार करना चाहिए।

व्रत के अधिकारी एवं प्रतिनिधि

व्रत का अधिकारी कौन है? इस विषय में स्कन्द पुराण में कहा गया है कि अपने वर्ण आश्रम और आचार में निरत, शुद्ध हृदय, निर्लोभ, सत्यवादी, सभी प्राणियों का हित चाहने वाला श्रद्धा-भक्तियुक्त, पापभीरु, मद-दम्भरहित, प्रारब्धकार्य को यथावत् करने वाला, वेद निन्दा से सतत दूर बुद्धिमान व्यक्ति ही व्रत का अधिकारी है। जो व्यक्ति इन नियमों का पालन नहीं करता उसका व्रत विफल माना जाता है -

निजवर्णाश्रमाचार निरतः शुद्धमानसः ।अलुब्धः सत्यवादी च सर्वभूतहिते रतः ।।
व्रतेष्वधिकृतो राजन् अन्यथा विफलः श्रमः। श्रद्धावान् पापभीरुश्च मद-दम्भविवर्जितः ।।
पूर्वनिश्चयमाश्रित्य यथावत्कर्मकारकः । अवेदनिन्दको धीमानधिकारी व्रतादिषु ।।

गृहस्थी के लिए वर्जित व्रत अनेक धर्मशास्त्रों में ऐसा भी वर्णन प्राप्त होता है
रविवार, सक्रान्ति, सूर्य चन्द्रग्रहण के दिन तथा कृष्णपक्ष की एकादशी का व्रत गृहस्थों को नहीं करना चाहिए। जैसा गौतम का मत प्राप्त होता है-

आदित्येऽहनि संक्रान्त्यामसितैकादशीषु च। व्यतीपाते कृते श्राद्धे नोपवसेद् गृही ।।

परन्तु पद्मपुराण में कृष्ण एकादशी का व्रत पुत्र की आयु में समृद्धि देने वाला कहागया है-

एकादश्यां तु कृष्णायामुपोष्य विधिवन्नरः । पुत्रानायुः समृद्धिं च सायुज्यं स च गच्छति।

स्त्रियों को व्रत का अधिकार-

पतिरूपो हिताचारैः मनोवाक्कायसंयमैः । व्रतैराराध्यते स्त्रीभिः वासुदेवो दयानिधिः ।।
नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् । भर्तुः शुश्रूषयैवैताः लोकानिष्टान् व्रजन्ति हि ।

व्रतराज के अनुसार स्त्रियों को विना पति की आज्ञा के व्रतादि करने का अधिकार नहीं है। ऐसा ही मदनरत्न ग्रन्थकार ने मार्कण्डेय पुराणसे उद्धृत कर लिखा है कि, जिस स्त्री को पत्ति पिता और पुत्र से व्रत करने की आज्ञा प्राप्त न होने पर भी यदि वह व्रतादि करें तो उस व्रत का फल उसे प्राप्त नहीं होगा। पति की आज्ञा से ही वह सभी व्रतों को कर सकती है। विष्णु का वचन है कि, जो स्त्री पति के जीवित रहते हुए उपवास व्रत करती है वह पति की आयु का नाश करती है, जिससे वह नर्क को प्राप्त करती है। इसका तात्पर्य यह है कि स्त्री को बिना पति की आज्ञा से कोई व्रत नहीं करना चाहिए। स्कन्दपुराण के अनुसार स्त्री को पतिकी आज्ञा के बिना व्रत करने का अधिकार नहीं है। पति की सेवा एवं मानसिक,

वाचिक एवं कायिक संयम द्वारा भगवान उससे प्रसन्न हो जाते है। तथा उसे व्रत का फल मिल जाता है।

व्रत-पर्व विवेक ग्रन्थ के अनुसार स्त्री को विवाह से पूर्व पिता की आज्ञा विवाहानन्तर पति एवं पुत्र की आज्ञा से ही नियमानुसार व्रत का अनुष्ठान करना चाहिए। अन्यथा उसके द्वारा किया गया व्रतोपवास निष्फल होगा

या नारी त्वननुज्ञाता पित्रा भर्ना सुतेन वा।विफलं तद् भवेत्तस्याः यत्करोत्वौर्धव दैहिकम् ।।

व्रत में प्रतिनिधि-

रोग, शारीरिक दुर्बलता आदि की स्थिति में व्रत करना चाहिए? अथवा अन्य किसी अपरिहार्य कारण से यदि व्यक्ति व्रत न कर सके तो ऐसी स्थिति में किसी प्रतिनिध से व्रत करवाया जा सकता है, अथवा नहीं? इस विषय में भी धर्मशास्त्र में विकल्प की व्यवस्था की गई है। रोगादि की स्थिति में वह अपने स्थान पर प्रतिनिधि रूप मे धर्मपत्नी, आज्ञाकारी पुत्र, भ्राता, बहन, पिता, माता, पति, पुरोहित, मित्र, शिष्य आदि द्वारा अपना अभीष्ट व्रत करवा सकता है। व्रत के मध्य यदिं जननाशौच, मरणाशीच पड जाए तो प्रारम्भ किए गए व्रत का का शारीरिक कर्म प्रणामादि स्वयं करना चाहिए तथा अर्चनादि गन्ध-माल्यार्पण दीपदानादि कर्म प्रतिनिधि से करवाने चाहिए। यही नियम व्रत के मध्य रजोदर्शन वाली (स्जस्वला) स्त्रियों के लिए भी है

अर्चनादि गन्ध-माल्यार्पण दीपदानादि कर्म प्रतिनिधि से करवाने चाहिए। यही नियम व्रत के मध्य रजोदर्शन वाली (रजस्वला) स्त्रियों के लिए भी है

पूर्वसंकल्पितं यच्च व्रतं सुनियत-व्रतः ।तत्कर्तव्यं नरैः शुद्ध दानार्चनवर्जितम् ।।

नित्य, नैमित्तिक व्रत के लिए ही प्रतिनिधि चयन किया जा सकता है, काम्यव्रत के लिए नहीं। यदि नित्य या नैमित्तक प्रारम्भ करने के बाद किसी भी असामर्थय आदि के कारण उसका आचरण असम्भव हो जाए तो ऐसी स्थिति में उस व्रत के लिए प्रतिनिधि का चयन किया जा सकता है। कभी भी काम्यव्रत का प्रारम्भ प्रतिनिधि द्वारा नहीं करवाया जा सकता है।

काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्ये नैमित्तिके च सः।
काम्येऽप्युपक्रमादूर्ध्व केचित् प्रतिनिधिं विदुः ।।

व्रतभंग का प्रायश्चित्त

व्रत कि नियमों का पालन ना करने से अथवा वर्जित कार्यों को करने से व्रतभग होता है। अग्निपुराण

के अनुसार क्रोध, प्रमाद, लोभ आदि के कारण उद्वेग में यदि व्रतभंग हो तो प्रायश्चित्त के रूप में वह

तीन दिन अनशन करे तथा शिरोमुण्डन करवाना चाहिए-

क्रोधात्प्रमादाल्लोभाद् वा व्रतभंगो भवेद्यदि। दिनत्रयं न भुञ्जीत मुण्डनं शिरसस्तथा ।।

कुछ आचार्यों का कथन है कि इन दोनों (अनशन तथा शिरोमुण्डन) में से केवल एक ही प्रायश्चित्त पर्याप्त है। यह भी कुछ धर्मशास्त्रविदों का मत है कि प्रमाद से उपवास भग हो जाने पर प्रायश्चित्त की आवश्यक्ता नहीं है।सूतक-पातक में व्रत शास्त्रों के अनुसार सूतक (परिवार में किसि का जन्म होने पर जननाशौच) और पातक (परिवार में किति की मृत्यु होने पर पड़ने वाला मरणाशैच) मे व्रत नहीं रखना चाहिए। यदि अनेक दिनो तक चलने वाले व्रत के आरम्भ के पश्चात् सूतक या पातक पड़ जाए तो व्रत का त्याग नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति मे व्रतधारी को जप, ध्यान, पाठ आदि स्वयं करते रहना चाहिए। देवता की मूर्ति की पूजा अर्चना के लिए उसे किसी अन्य ऐसे प्रतिनिधि का चुनाव करना चाहिए, जो सूतक अथवा पातक से न प्रभावित हो। पातक की समाप्ति के पश्चात् वह देवमूर्ति कीपूजार्चना स्वयं करके ब्राह्मणभोजन, दानादि भी स्वय उसी दिन करना चाहिए।

रजस्वला का व्रत

रजस्वला स्त्री व्रत की अधिकारिणी नहीं है। यदि व्रतारम्भ केअनन्तर रज प्रवाह हो जाए अथवा दीर्घगामी व्रत के मध्य वह रजस्वला हो जाए तो उसे व्रतत्याग नहीं करना चाहिए। इस स्थिति में जप-पाठादि स्वय किया जा सकता है तथा व्रत से सम्बन्धित देवता की पूजार्चना अन्य प्रतिनिधि से करवानी चाहिए। स्त्री रज. प्रवाह से पाचवें दिन पूजन अर्चन आदि देवकार्य के लिए शुद्ध मानी जाती है, अतः 5वें दिन स्नानादि से निवृत्त होकर उसे व्रतदेवपूजा, ब्राह्मणभोजन तथा दानादि करना चाहिए।
व्रत में भक्ष्य अभक्ष्य व्रत में क्या भक्ष्य है और क्या अभक्ष्य ? इस विषय में शास्त्रो में अधिक वर्णन नहीं किया गया है। व्रती को स्थानीय परम्परा अनुसार दूध फल एवं श्यामाक (सावा), नीवार, तिल, सेंधा नमक आदि भक्ष्य है। गो दूध के अतिरिक्त दूध, मसूर, जम्बीर शुक्तिका चूर्ण, आरनाल (सिरका), मास, बैंगन, कूष्माण्ड द्विदल (दाले) तथा कास्यपात्र का प्रयोग एवं परान्न व्रत में वर्जित है।

व्रत में करने योग्य अनिवार्य कार्य-

क्षमा-सत्यं-दया-दानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
देवपूजा च हवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम्।।

एक साथ दो रात्रि से अधिक उपवास नहीं करना चाहिए- द्विरात्राधिकोपासो न करणीयः। व्रत के दिन दातुन और ब्रश से मुख नहीं धोना चाहिए। पत्ता या बारह कुल्ला से दन्तधावन करना चाहिए। प्रत्येक व्रत के प्रमुखदेवता होते हैं। अतः व्रत में संकल्पपूर्वक प्रधानदेवता का मंत्र जप-ध्यान-कथा-पूजन-कीर्तन-श्रवण आदि करना क्षमा-सत्य-दया-दान-शौच-इन्द्रियनिग्रह-देवपूजा-हवन-संतोष-अचौर्य ये दस तत्त्व चाहिए। व्रत के लिए अनिवार्य होते हैं

व्रत में ग्राह्य भोज्यपदार्थ-

(फलाहार, हविष्य)- १. सांवा २. नीवार (तिन्नी) ३. कुडू ४. सिंघाड़ा ५. तिल ६. कन्द ७. गोदुग्ध ८. गोदही ९. गोघृत १०. आलू ११. आम्रफल १२. केला १३. नारीयल १४. हरें १५. पिप्पली १६. जीरा १७. सोंठ १८. आँवला १९. बड़हल २०. भूमि के भीतर उत्पन्न होने वाला कन्द-मूल आदि सफेद पदार्थ (लाल नहीं) २१. ईख का रस। इन पदार्थों को तेल में तलना वर्जित है। कोई-कोई गाय का मट्ठा और भैंस का घी भी हविष्य में मानते हैं, पर यह सर्वसम्मत नहीं है। धर्मसिन्धुग्रन्थ में तिल, गेहूँ और मूंग को हविष्यान्न (फलाहार) में बतलाया गया है पर प्रायशः व्रती इनको अन्न मानकर नहीं ग्रहण करते।

जल, मूल (पृथ्वी के भीतर उत्पन्न भोज्य पदार्थ), फल, दूध, हविष्य, ब्राह्मण की कामना, गुरु का वचन और औषध इन आठ पदार्थों से व्रत का भंग नहीं होता है। गुरु और ब्राह्मण की आज्ञा मानकर व्रत में किया हुआ आचरण व्रत भंग कारक नहीं होता है। इसमें दोष आज्ञा देने वाले गुरु और ब्राह्मण के ऊपर पड़ता है। अतः गुरु और ब्राह्मण को अपने मुख से हमेशा धर्मयुक्त तथा सद्आचरण से युक्त आदेश को ही अपने शिष्य और यजमान से कहना चाहिए-

अष्टैतान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः।हविर्ब्रह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम् ।।

दो विरुद्ध व्रत-

यदि एक ही दिन किसी व्रत का पारणा हो और दूसरे व्रत का आरम्भ हो तो ऐसे में व्रत का पारणा करना अनिवार्य होता है- तत्रभोजनमेव कार्यम्। पारणा विधि से प्राप्त है। तुलसीदल खाने से पारणा हो जाती है। और व्रतभंग भी नहीं होता है।

रात्रिभोजन की अनिवार्यता-

वारव्रत एवं चतुर्थीव्रत आदि में रात्रि भोजन करना ही प्रशस्त है- एवं रविवारादौ संकष्टचतुर्थ्यादिव्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। धर्मसिन्धु, प्रथमपरिच्छेद, व्रत सन्निपात। पारण के दिन यदि एकादशी उपस्थित हो तो जल से पारणा करके उपवास करना चाहिए। जहाँ भी रुकावट आये वहाँ जल से पारणा करनी चाहिए। तुलसी और जल से की हुई पारणा व्रतभंग को बचाती है।

व्रतोपवासनाशकतत्त्व-

१. बार-बार अनावश्यक रूप से जल पीना। (व्रतकाल में दो बार से अधिक जल नहीं पीना चाहिए। प्राणसंकट आने पर अधिक बार भी जल ले सकते हैं।)

२. एक बार भी ताम्बूल चबाना। (सौभाग्यवती स्त्रियाँ करवाचौथ, तीजव्रत, गौरीव्रत आदि में उबटन-तेल लगा सकती हैं। साथ ही पान का चर्वण कर सकती हैं।)

३. व्रत के दिन, दिन में सोना।

४. व्रत के दिन अष्टविध मैथुन करना। (स्मरण, वार्ता, केलि, दर्शन, गुप्तसंवाद,संकल्प, निश्चय और क्रियापूर्ति ये आठ प्रकार का मैथुन होता है)। असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलचर्वणात्। उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात्।। स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्। संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च।।

५. चमड़े में रखा जल पीना।

६. गोदुग्ध के अतिरिक्त दुग्ध लेना।

७. मसूर, जम्बीरी नींबू, चूना ग्रहण करना।

८. अश्रुपात तथा क्रोध करना। द्यूत (जूआ) खेलना।

९. झूठबोलना, पक्वान्न की सुगंध लेना। दूसरे के घर फलाहार या पारण करना।

१०. तेल-उबटन लगाना। बिना धुला वस्त्र पहनना। असत्य भाषण करना।

११. काँस्य पात्र में भोजन करना। दो बार फलाहार लेना। मधु खाना।

१२. कायिक-वाचिक-मानसिक दश पापों को करना। (दूसरों की वस्तु लेना, हिंसाकरना, परस्त्रीगमन तीनकायिक, परुषवाणी, असत्यभाषण, चुगली, प्रलापकरना चारवाचिक, परधन पर नजर, दूसरे का अनिष्ट, मिथ्याकार्योंको करना ये दश पाप होते हैं।

व्रतादि से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

मुहूर्त्त-

दो घटी (४८ मिनट) का एक मुहूर्त कहलाता है- मुहूर्तीघटिकाद्वयम्।

ब्राह्ममुहूर्त्त –

रात्रि का अन्तिम याम (प्रहर = ३ घण्टा) ब्राह्ममुहूर्त कहलाता है- रात्रेस्तुपश्चिमो यामः मुहूर्ती ब्राह्मसंज्ञकः। यह सूर्योदय का पूर्ववर्तीकाल होता है।

भारतीय मास-

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन ये बारह मास होते हैं।

पक्ष –

एक मास में दो पक्ष होते हैं- शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष। शुक्लपूर्णिमा की संख्या १५ तथा कृष्णपक्षीय अमावास्या की संख्या ३० होती है।

प्रमाथी संवत्सर –

कुल ६० संवत्सर परिगणित है। इनका चक्रभ्रमण होता है। इन संवत्सरों का नाम क्रमशः इस प्रकार से है- १ प्रभव २ विभव ३ शुक्ल ४ प्रमोद ५ प्रजापति ६ अंगिरा ७ श्रीमुख ८ भाव ९ युवा १० धाता ११ ईश्वर १२ बहुधान्य १३ १४ विक्रम १५ वृषभ १६ चित्रभानु १७ सुभानु १८ तारण १९ पार्थिव २० व्यय २१ सर्वजित् २२ सर्वधारी २३ विरोधी २४ विकृति २५ खर २६ नन्दन २७ विजय २८ जय २९ मन्मथ ३० दुर्मुख ३१ हेमलम्ब ३२ विलम्ब ३३ विकारी ३४ शर्वरी ३५ प्लव ३६ शुभकृत् ३७ शोभन ३८ क्रोधी ३९ विश्वावसु ४० पराभव ४१ प्लवंग ४२ कीलक ४३ सौम्य ४४ साधारण ४५ विरोधकृत् ४६ परिधावी ४७ प्रमादी ४८ आनन्द ४९ राक्षस ५० नल ५१ पिंगल ५२ काल ५३ सिद्धार्थ ५४ रौद्र ५५ दुर्मति ५६ दुंदुभी ५७ रुधिरोद्गारी ५८ रक्ताक्ष ५९ क्रोधन ६० क्षय।
आरम्भ के २० संवत्सर ब्रह्मा, मध्य के २० विष्णु तथा अन्त के २० संवत्सर शिव के होते हैं। इन संवत्सरों के अधिपति क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश होते हैं।

चान्द्रवर्ष –

व्रत-पर्व में संकल्प लेते समय चान्द्रवर्ष का ही स्मरण किया जाता है- चन्द्रवत्सर एव स्मर्तव्यो नान्यः। चान्द्रतिथि से ही जन्मदिन मनाना चाहिए।

अयन –

अयन दो प्रकार का होता है-उत्तरायण एवं दक्षिणायन। एक अयन छः मास का होता है। प्रायशः १४ जनवरी से उत्तरायण तथा १७ जुलाई से दक्षिणायन का आरम्भ होता है।

संक्रान्ति-

सूर्य का एक राशि भोग एक सूर्यमास होता है। राशि प्रवेश के दिन को उस राशि की संक्रान्ति के नाम से जाना जाता है। ये बारह सूर्यसंक्रान्तियाँ निम्नवत् हैं- मेषसंक्रान्ति, वृषसंक्रान्ति, मिथुनसंक्रान्ति, कर्कसंक्रान्ति, सिंहसंक्रान्ति, कन्यासंक्रान्ति, तुलासंक्रान्ति, वृश्चिकसंक्रान्ति, धनुसंक्रान्ति, मकरसंक्रान्ति, कुम्भसंक्रान्ति, मीनसंक्रान्ति। संक्रान्ति के दिनपिण्डरहित श्राद्ध किया जाता है-
संक्रान्तिषु पिण्डरहितं श्राद्धं कार्यम्।

ऋतु-

ऋतुयें छः होती हैं। एक ऋतु में सूर्य की दो राशियों होती हैं। ये हैं-
मकर, कुम्भ = शिशिरमीन, मेष = वसन्त, वृष, मिथुन = ग्रीष्म
कर्क, सिंह = वर्षाकन्या, तुला = शरद्वृश्चिक, धनु = हेमन्त

अधिकमास एवं क्षयमास-

जिस मास में संक्रान्ति न हो उसे अधिकमास और जिस मास में दो संक्रान्तियाँ हो उसे क्षयमास कहते हैं। अधिकमास प्रायशः ३२ माह के बाद आता है। क्षयमास १४१ वर्षों पर आता है। जिस वर्ष क्षयमास होता है उसवर्ष दो अधिकमास होते हैं। एक क्षयमास से पहले और दूसरा क्षयमास के बाद।

अधिकमास, शुक्रास्त एवं गुर्वस्त में वर्ज्य-

श्रावणी, गृहारम्भ-गृहप्रवेश, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह, तीर्थयात्रा, देवप्रतिष्ठा, कूप-तालाब वापी का निर्माण, उद्याननिर्माण, नववस्त्रालंकारधारण, महादान, यज्ञकर्म, अपूर्वतीर्थदर्शन, संन्यास, वृषोत्सर्ग, राज्याभिषेक, दिव्यकर्म, गोदान, अष्टकाश्राद्ध, अन्नप्राशन, व्रतारम्भ (तीज, करवाचौथ आदि), व्रतोद्यापन मलमास एवं गुरु-शुक्र के अस्त होने पर नहीं करना चाहिए।

एकभक्त –

रात्रि में उपवास करके दूसरे दिन मध्याह्न बीतने के पश्चात् (सूर्यास्त से तीन घण्टा पूर्व) पारण किया जाता है- मध्याह्नान्त्यदले त्रिभागदिवसे स्यादेकभक्तम्। इस व्रत में दोपहर में पूजन किया जाता है। एकभक्त व्रत में चौबीस घण्टे में एक बार दोपहर बाद भोजन लिया जाता है। ब्रह्मचारी को एकभक्तव्रत करना चाहिए। एकभक्त व्रत में हमेशा मध्याह्न व्यापिनी तिथि में पूजन किया जाता है-मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभक्ते सदा तिथिः। पद्मपुराण, निर्णयसिन्धुः।

नक्तव्रत-

रात्रि में पारण करना नक्तव्रत कहलाता है। नक्तव्रत में तिथि प्रदोषव्यापिनी ग्राह्य होती है- 'प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या तिथिर्नक्तव्रते सदा।' दिन भर उपवास रहकर रात्रि में प्रदोष के बाद पारण करना नक्त व्रत है-

निशायां भोजनं चैवं तज्ज्ञेयं नक्तमेव तु ।।

सूर्यास्त से एक मुहूर्त (४८ मिनट) पूर्व से लेकर नक्षत्र दर्शन काल तक नक्त कहलाता है-

मुहूत्तानं दिनं नक्तं प्रवदन्ति मनीषिणः ।
नक्षत्रदर्शनान् नक्तमहं मन्ये गणाधिप।।

अयाचितव्रत –

बिना मांगे जो कुछ मिल जाए उसे खा कर रहना, यदि नहीं मिले तो बिना खाये रहना अयाचितव्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें 'उपवास' की प्रधानता होती है, पूजन की नहीं।

प्रदोष-

सूर्यास्त के बाद तीन घटी (७२ मिनट) का प्रदोषकाल होता है- प्रदोषो घटिकात्रयम्। स्कन्दपुराण के अनुसार त्रिमुहूर्त का प्रदोष होता है- त्रिमुहूर्तः प्रदोषः स्याद् रवावस्तङ्गते सति।

प्रदोषकाल –

सूर्यास्त के तीन घटी (७२ मिनट) बाद तक प्रदोषकाल होता है- प्रदोषो घटिकात्रयम्। इसमें पूजन करके सूर्यास्त के तीन घटी बाद पारण किया जाता है।

व्रत का धार्मिक महत्व

सनातन धर्म में व्रत रखने का विशेष महत्व होता है. व्रत रखने से व्यक्ति को मानसिक शांति, भगवान के नजदीक रहने के शक्ति और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है. शास्त्रों में उपवास रखने का विशेष महत्व होता है. मान्यता है कि व्रत रखने पर सभी तरह के पापों और कष्टों से मुक्ति मिलती है. व्रत रखने से व्यक्ति का मन,दिमाग और आत्मा शुद्ध होती है. हिंदू धर्म में व्रत रखने से भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा,भाव, भक्ति और समर्पण का भाव आता है. इसी कारण से हर एक धार्मिक मौके पर किसी न किसी रूप में अलग-अलग तरीके से व्रत रखा जाता है.

व्रत का वैज्ञानिक महत्व

व्रत का जितना धार्मिक महत्व होता है उतना ही वैज्ञानिक महत्व होता है. विज्ञान के अनुसार व्रत धारण करने से व्यक्ति की सेहत अच्छी बनी रहती है. व्रत के दौरान भोजन नहीं किया जाता है कुछ अल्पाहार लेकर ही पूरा दिन बिताया जाता है इससे व्यक्ति का पाचन तंत्र ठीक बना रहता है और पाचन तंत्र की क्रियाएं मजबूत बनी रहती है. व्रत रखने व्यक्ति के शरीर में मोटापा और कोलेस्ट्रॉल का मात्रा काबू में रहती है जिससे व्यक्ति का शरीर सेहतमंद रहता है.

बोध प्रश्न-

1 बिना मांगे जो कुछ मिल जाए उसे खा कर रहने वाले व्रत को कहते हैं|
2 सूर्यास्त के बाद कितने घटी तक का समय प्रदोषकाल काल कहलाता हैं|

3 एक ऋतु में सूर्य की कितनी राशियाँ होती हैं|
4 सूर्य काकितने राशि भोग एक सूर्यमास होता है|
5 संवत्सरों कि संख्या है
6 एक मुहूर्त कितने घटी का होता हैं|
7 व्रत मुख्यतः कितने प्रकार के होते हैं|

1.5 सारांश –

इस इकाई से माध्यम से आप समझ सके होंगे कि व्रत किसे कहा जाता है, यह व्याकरण के किस सूत्र के द्वारा इसका निर्माण होता है| तथा किन-किन सावधानियों का ध्यान व्रत-उपवास में करना चाहिये, किस अवस्था में कोन सा व्रत ग्राह्य है,और कोन सा नही व्रत करने से पूर्व उसका उचित समय जानना परम आवश्यक है। शास्त्रानुसार सूर्योदय के पश्चात तीन मुहूर्त तक रहने वाली जिस तिथि को प्राप्तकर सूर्य अस्त होता है, वह तिथि पुरे दिन मानी जाती है तथा धर्मादि कार्यों में वह तिथि पूर्ण मानी जाती है। यदि तिथि दो दिनों तक सूर्योदय के समय हो तो तिथियों के शुभ युग्म (जोडे) कहे गए है। शुभ युग्म वाली तिथि व्रत के लिए ग्राह्य है। व्रत एक धार्मिक कृत्य है। शास्त्रों में व्रतानुष्ठान के विषेष नियम तथा अधिकारी कहे गए है। अपने वर्ण आश्रम और आचार में निरत, शुद्ध हृदय, निर्लोभ, सत्यवादी, सभी प्राणियों का हित चाहने वाला श्रद्धा-भक्तियुक्त, पापभीरु, मद-दम्भरहित आदि गुणों से युक्त व्यक्ति व्रत का अधिकारी है।व्रत एक नियम है नियंत्रित करने वाली विधि) जो शास्त्रों द्वारा व्यवस्थित है.) उपवास द्वारा विशिष्टीकृत है,धर्मसिन्धु ने व्रत को पूजा आदि में समन्वित धार्मिक कृत्य माना है। यद्यपि प्रत्येक व्रत के मूल में और इसके लिए आग्रह के फलस्वरूप कोई सकल्प अर्थ का द्योतक है। किसी व्रत में कई बातें सम्मिलित रहती हैयथा स्नान ., प्रातः सन्ध्या, संकल्प, होम, पूजा (इष्ट देवता की), उपवास, ब्राह्मणों, कुमारियों या विवाहित स्त्रियों, दरिद्रों को भोजन दान, गौ, धन, वस्त्र, मिठाई आदि का दान तथा व्रत की अवधि के भीतर आचरण सम्बन्धी कुछ विशिष्ट नियमों का परिपालन है। इस प्रकार से इस इकाई के द्वारा यह समझाने का प्रयास किया गया है, कि व्रत को किस तरीके से करना शास्त्र सम्म्मत है|

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1 अयाचितव्रत

2 तीन घटी

3 तीन राशियाँ

4 एक राशि

5 साठ

6 दो घटी का

7 चार प्रकार के

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

व्रतराज, खेमराज श्रीकृष्णदास अकादमी प्रकाशन, बम्बई-4.
पर्व विवेक, प्रो प्रियव्रत शर्मा, अभिजीज प्रकाशन, सैक्टर-6, पचकुला

तिथि निर्णय, लेखक भट्टोजदीक्षित, सम्पादक गब्बिट आजनेय शास्त्री, इडोलोजिकल रिसर्च सैन्टर, दिल्ली, निर्णय सिन्धु, प ज्वाला प्रसाद मिश्रा, व्याख्याकार खेमराज, श्रीकृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई,

1.8 निबंधात्मक प्रश्न

1 व्रत में प्रतिनिधि व व्रत भंग में प्रायश्चित कैसे किया जाय इस पर विस्तृत लेख लिखिये।
2 व्रत शब्द कि उत्पत्ति सहित उसके प्रकारों का वर्णन कीजिये।

इकाई -2 व्रत धारण विधि एवं महत्व

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 व्रत परिचय –

2.4 पूजन में व्रत की उपयोगिता

2.5 व्रत विधि एवं पूजन सामग्री

2.6 व्रत के प्रकार

2.7 व्रत का मानव मानव जीवन पर प्रभाव

2.8 व्रत धारण का मुहूर्त

2.9 व्रत का महत्व

2.10 सारांश

2.11 पारिभाषिक शब्दावली

2.12 अभ्यास प्रश्न

2.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.14 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

2.15 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 से सम्बंधित है इस इकाई में आप व्रत के बारे में जान सकेंगे प्राचीन भारतीय परम्परा में व्रत को मानव जीवन का अंग माना गया हैं। व्रत के माध्यम से मानव जीवन को आओर भी उत्तम बनाया जा सकता हैं। तथा परमात्मा को प्राप्त करने के लिए भी व्रत किया जाता रहा हैं। सभी धर्मों को देखा जाय तो अपने अपने धर्मानुसार सभी व्रत करते रहते हैं जिससे उनको उनके उद्देश्य की प्राप्ति हो सकें। आध्यात्मिक तथा भोतिक के माध्यम से भी व्रत का लाभ मिलता रहता हैं। शरीर को कष्ट देकर त्याग तपस्या, संयम के द्वारा व्रत किया जाता हैं पूजा अनुष्ठान को भी व्रत से जोड़ा जाता हैं। बिना व्रत के कोई भी अनुष्ठान, यज्ञादि कार्यों को सम्पादित नहीं किया जाता हैं। सम्पूर्ण कर्मकांड को व्रत के द्वारा ही पूर्ण किया जाता हैं। अन्यथा यह पूर्ण नहीं हो सकता सभी देशों तथा धर्मों में व्रत का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं। व्रत करनें से मनुष्य की अन्तरात्मा पवित्र होती हैं। व्रत करनें से मनुष्य की ज्ञानशक्ति, विचार शक्ति, बुद्धि, मेधा, तथा भक्ति मैं मन बना रहता हैं। उपवास करनें से शरीर मेंआने वाले विकारों से मुक्त हो जाता हैं। तथा मनुष्य दीर्घायु को भी प्राप्त करता हैं।

2.2 उद्देश्य

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- व्रत क्या है व्रत के बारे में समझा सकेंगे।
- व्रत धारण करनें की विधि को समझा सकेंगे।
- मानव जीवन में व्रत करनें से क्या लाभ हैं समझा पायेंगे।
- पूजन में व्रत की क्या भूमिका हैं जान सकेंगे।
- व्रतों के कितनें प्रकार हैं समझा सकेंगे।

2.3 व्रत परिचय –

व्रत को उपवास के नाम से भी जाना जाता हैं। **“व्रियते स्वर्गं व्रजन्ति स्वर्गमनेन वा”** जिससे स्वर्ग मैं गमन अथवा स्वर्ग का वरण होता हैं उसे व्रत कहते हैं। स्वर्ग का वरण होता हो (पृषोदरादि) - इस अर्थमें 'व्रत' शब्दकी उत्पति होती है। 'निरुक्त' में व्रतका अर्थ सत्कर्मानुष्ठान तथा उस क्रियासे

निवृत्ति कहा गया है। अमरसिंह आदि ग्रन्थकारो , निबन्धकारों तथा दूसरे व्याख्याताओं ने व्रत का अर्थ उपवासादि पुण्य कार्य के लिए कहा हैं।

'नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम्'

'शब्दरत्नावली'ग्रंथ कार संयम और नियम को व्रत समानार्थक मानते हैं। वाराहपुराण में वेद ब्यास जी, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और सरलताको मानसिक व्रत; ,नक्तव्रत, निराहारादि को कायिक व्रत तथा मौन एवं हित, सत्य, मृदु भाषण को वाचिक व्रत कहा गया।

इतिहास-पुराणों में जिस तपस्याका इतना महत्त्व बतलाया गया है, वह भी वेदोक्त कृच्छ्र-बान्द्रायणादि उपवासोंके अतिरिक्त कुछ दूसरा नहीं है।

'तत्र तपो नाम विध्युक्तकृच्छ्रबान्द्रायणादिभिः शरीरशोषणम्'

(शाण्डिल्योप० १।२)

वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छ्रचान्द्रायणादिभिः।
शरीरशोषणं यत् तत् तप इत्युच्यते बुधैः॥

श्रीजाबालदर्शन २।३२

कूर्मपुराण में वेदव्यास जी कहते है की व्रत उपवाससे से भगवान् विष्णु तथा भगवान् शंकर की प्राप्ति होती हैं।

व्रतोपवासैर्नियमैहोंमैर्ब्रह्मणतर्पणैः

तेषां वै रुद्रसायुज्यं जायते तत्प्रसादतः॥

गरुडपुराण में भी व्रत के बारे में कहा गया है कि राजर्षि धुन्धुमार को व्रतों से १०० पुत्रों की प्राप्ति हुई थी , राजा दशरथ को सदा व्रत करते रहने से साक्षात् परमात्मा ही पुरुषोत्तम राज राजेन्द्र श्रीरामके रूपमें पुत्र बनकर आये, महाराज जनक भी व्रत करते थे। आदित्यपुराण में भी व्रतों के करने से दुःख-दारिद्र्य एवं रोगों का निधान किस प्रकार हो सके इसका उल्लेख प्राप्त होता हैं।

अहिंसा,सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमकल्मषम्।
एतानि मानसान्याहुव्रतानि व्रतचारिणाम्॥
एकभुक्तं तथा नक्तमुपवासादिकं च यत

व्रतोपवासान् खलु यो विधत्ते दारिद्रञ्चपाशं स भिनत्ति चाशु।
व्रतोपवासेषु स्तस्य पुंसश्चैवापदः शान्तिमुशन्ति तज्ज्ञाः ॥

हिंदू-संस्कृति में व्रत को धर्म का प्राण कहा गया हैं; व्रतों के विषय में वेद, धर्मशास्त्रों, पुराणों तथा वेदाङ्गों में विस्तार से वर्णन किया गया है। व्रतराज, व्रतार्क, व्रतकौस्तुभ, जयसिंहकल्पद्रुम, मुक्तकसंग्रह, हेमाद्रिव्रतखण्ड आदि बीसों विशाल निबन्धग्रन्थ व्रतों पर ही लिखे गये हैं। व्रतों से अनेक अंशों में प्राणिमात्र का और विशेषकर मनुष्योंका बड़ा भारी **उपकार होता है। तत्त्वदर्शी** महर्षियोंने इनमें विज्ञानके सैकड़ों अंश संयुक्त कर दिये है। मनुष्यतक इस बात को भी जानते हैं कि अरुचि, अजीर्ण, उदरशूल, मलावरोध, सिरदर्द और ज्वर-जैसे स्वतःसम्भूत साधारण रोगों से लेकर कोढ़, उपदंश, जलोदर, अग्निमान्द्य, क्षतक्षय और राजयक्ष्मा-जैसी असाध्य या प्राणान्तक महाव्याधियाँ भी व्रतोंके प्रयोगसे निर्मूल हो जाती हैं और अपूर्व तथा स्थायी आरोग्यता प्राप्त होती है। यद्यपि रोग भी एक प्रकार का पाप
हैं। और ऐसे पाप को व्रतों के माध्यम से दूर किया जाता हैं, तथापि कायिक, वाचिक, मानसिक और संसर्गजनित पाप, उपपाप और महापापादि भी व्रतों के करने से दूर होते हैं। उनके समूल नाश का प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि व्रतारम्भके पहले पापयुक्त प्राणियोंका मुख हतप्रभ दिखाई पड़ता हैं और व्रत करने से परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और तल्लीनता का संचार होता रहता है। व्यापार- व्यवसाय, कला-कौशल, शास्त्रानुसंधान और व्यवहार-कुशलता का सफल सम्पादन उत्साहपूर्वक किया जाता है और सुखमय दीर्घ जीवनके आरोग्य- साधनोंका स्वतः संचय हो जाता है। ऐसा दूसरा कौन-सा साधन है जिसके करनेसे एक से ही अनेक लाभ हों। व्रत की विधि, उनके परिणाम आदि का पता लग सके , जिससे व्रतों में श्रद्धा होगी और व्रतों से लाभ उठाने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि पूर्वाङ्ग में जो विधि-विधान या नियमादि दिये हैं, वे सब आगे के व्रतों के लिये उपयोगी है। अतः व्रत करनेवालों को चाहिये कि वे व्रतारम्भ करने से पहले विचार अवश्य करे।

2.4 पूजन में व्रत एवं उपवास की उपयोगिता

सर्वप्रथम हम जिस भी देवी देवताओं का पूजन करते हैं उन सभी देवताओं का पूजन करनें से पूर्व कुछ नियम भी ध्यान मैं रखनें होते हैं जिससे उस अनुष्ठान मैं कोई विध्न उत्पन्न न हो सके वह

नियम क्या हैं ,उस विधि को जानते हैं। देवताओं का पूजन करनें से पूर्व प्रातः काल से लेकर सांयकाल तक पूजन विधि नियम का पालन किया जाता हैं। जोनिम्नलिखित हैं।

1.व्रत –

व्रत एवं उपवास पूजन एवं अनुष्ठान का स्तम्भ हैं,जिसके बिना कार्य का होना असंभव होता है,व्रत एक ऐसा तप हैं जिसके माध्यम से हम सभी प्रकार के अनुष्ठान, तथा पूजा मैं बैठनें के अधिकारी होते हैं। बिना व्रत के मनुष्य किसी भी धार्मिक कार्य का अधिकारी नहीं होता हैं इसलिए व्रत करना आवश्यक होता हैं जिससे शारीरिक शुद्धि, मानसिक शुद्धि, हृदय शुद्धि, होती रहे। व्रत करनें से अनुष्ठान का जो प्रमुख उद्देश्य हैं जीवन की सफलता वो प्राप्त होती हैं, यदि व्रत करनें मैं किसी व्यक्ति को कष्ट होता है तो वह धीरे धीरे अभ्यास मार्ग के द्वारा इसमें सफल हो सकते हैं। इसे सफलता की प्रथम सीढी भी कहा जा सकता हैं। व्रत को करनें से अनुष्ठान की जो उपयोगिता हैं वह भी पूर्ण होती हैं बिना व्रत के अनुष्ठान की उपयोगिता अधूरी रहती हैं।

2.उपवास

उपवास क्या हैं किसे कहते हैं इस बारे मैं जानते हैं, उपवास का सामान्य अर्थ हैं (उप- समीप), वास-निवास या वसना) जो भगवान् के समीप या निकट रहकर वास कर भक्ति करता हैं वह उपवास कहलाता हैं। जिसका पूजा अनुष्ठान मैं उपयोगिता दिखाई पड़ती हैं ,नियमपूर्वक पूजन उपवास के माध्यम से मनुष्य जीवन मैं अनेकानेक कष्टों का शमन हो जाता हैं। तथा इसकी उपयोगिता से भी मानव जीवन तीनों तापों से निवृत होकर सुख का अनुभव करता हैं। यह दूसरी सीढी हैं जो उपवास के नाम से जानी जाती हैं। उपवास करनें से पूजा, अनुष्ठान की उपयोगिता मैं चार चांद लग जाते हैं और अनुष्ठान का विधि विधान पूर्वक फल भी प्राप्त होता हैं, पूजन मैं व्रत की अति उपयोगिता हैं, यदि व्रत न किया जाए तो पूजन का महत्व समाप्त हो जाता हैं। इसलिए मनुष्य जीवन को सुखमय करनें के लिए इन व्रत , उपासना का सहारा लेकर जीवन को धन्य बना सकते हैं।

2.5 व्रत विधि एवं पूजन सामग्री

उपवास करनें के लिए व्रत के नियमों को , विधियों को ध्यान पूर्वक अध्ययन कर व्रत के बारे मैं जान लेना चाहिए। जिससे की व्रत के आरम्भ मैं कोई भी समस्या न हो सके व्रत विधि को को करनें से पूर्व

काल शास्त्रानुसार पूर्व रात्रि से ही नियम का पालन करना आवश्यक होता हैं, यहां पर यह भी शंका उत्पन्न होती हैं कि क्या किस उत्सव मैं कोन सा व्रत करें हम इसकी क्या विधि हो होगी जैसे एकादशी ब्रत करने के लिए अलग विधि से भगवान का पूजन अर्चन किया जाता हैं ऐसे ही सौम व्रत,भौमव्रत,नवरात्र की उपासना इत्यादि देवताओं के व्रत की अलग अलग विधियों का वर्णन शास्त्रों मैं किया गया हैं। व्रत को करनें के लिए प्रातः काल से लेकर सांयकाल पर्यन्त दिनचर्या का पालन करना आवश्यक होता हैं प्रातःकालीन ब्रह्म मुहूर्त मैं जागरण के पश्चात् स्नानादि कर, देव पूजन कर मौन धारण करते हुए परमात्मा की उपासना करना आवश्यक होता हैं। शुभ काल मैं व्रतको आरम्भ कर उपवास को करनें से सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती हैं मानसिक शांति के साथ साथ पारलौकिक सुख भी प्राप्त होता हैं। व्रत की तैयारी मे पूर्व सबसे पहले शारीरिक शुधि के साथ साथ नवीन वस्त्र धारण करें। सोम, बुध, बृहस्पति या शुक्रवार से शुरू किए गए व्रत सफलतादायक सिद्ध होने के कारण इन दिनों में ही व्रत शुरू करना चाहिए। इसके अलावा पुष्य, हस्त, अश्विनी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती और अनुराधा नक्षत्र एवं शुभ, शोभन, प्रीति, सिद्धि, आयुष्मान और साध्य योग में शुरू किए गए व्रत सुखदायी और शुभफलदायक होते हैं। शास्त्रों में व्रत की शुरुआत मलमास, भद्रा आदि योग में, बृहस्पति और शुक्र के अस्त एवं अस्त होने के तीन दिन पूर्व के वृद्धत्व तथा उदय होने के बाद के तीन दिन बालत्व के कारण करना निषेध किया गया है। इसलिए व्रतों की शुरुआत श्रेष्ठ समय देखकर ही करें। मदनरत्न नामक ग्रंथ में आचार्य देवल ने कहा है कि निराहार रहकर, स्नानादि से निवृत्त होकर, एकाग्रचित्त मन से भगवान् का ध्यानकर प्रणाम करना चाहिये प्रातःकाल व्रत का संकल्प कर उसे ग्रहण करना चाहिए। व्रत-संकल्प की विधि का वर्णन महाभारत में किया गया है , हाथ में शुद्ध जल से भरा तांबे का पात्र लेकर उत्तर दिशा की ओर देखकर कर, संकल्प करके उपवास करना आवश्यक होता हैं। जब कभी रात को कोई व्रत-उपवास करना हो, तो उसमें भी यही विधि ग्रहण करनी चाहिए। यदि तांबे का बर्तन न हो तो अंजलि में जल लेकर व्रत का संकल्प करें। जिस उदेश्य के लिए व्रत किया जा रहा है उसी उदेश्य से संकल्प करना चाहिए l मार्कण्डेय पुराण में उल्लेख है कि जिन कामनाओं को लेकर व्रत करना चाहते हो, उसका संकल्प करने के बाद ही स्नान, दान और उपवास करना चाहिए।

पूजन सामग्री –

विधि-विधानानुसार व्रत के देवता के पूजन की तैयारी के लिए आवश्यक सामग्री लेकर। देवता की मूर्ति, स्वर्ण ,चांदी, पीतल या मृदा से बना हो दीपक, सुपारी, घंटी, शंख, घी, चंदन, रोली, तांबूल फल , पुष्प, , धूप, अक्षत, कुंकुम, कलश, नारियल, हल्दी , गुड़, चीनी, शहद, दही, कपूर,

कुशा, तिल, जौ (यव), कलावा, दूध, ताम्रपात्र, आसन, फल प्रसाद, तुलसीदल आदि सामग्री की आवश्यकता होती है। व्रत की पूजन सामग्री प्रत्येक व्रत या अनुष्ठान की फलप्राप्ति के निमित्त अलग-अलग देवों के लिए अलग-अलग पूजन-सामग्री का प्रयोग किया जाता है। इनका ध्यानपूर्वक व विधि-विधान से पूजन करने पर गृहपूजन या शांतिप्रदायक यज्ञ-अनुष्ठानादि अत्यंत फलदायी होते है। पूजन-सामग्री में चंदन, जनेऊ, जल, पान और सुपारी, रोली, बेलपत्र, तुलसीदल, घी, चावल, गेहू इत्यादि का प्रयोग करना लाभदायक होता है।

2.6 व्रत के प्रकार

भारतीय संस्कृति मैं उपवास करनें का विधान , उपवास के कितने प्रकार हैं इन सभी का वर्णन शास्त्रों मैं प्राप्त होता हैं। अलग अलग व्रतों का अलग अलग महत्व होता है तथा अलग अलग फलों की प्राप्ति भी होती हैं। अलग अलग व्रतों का अलग अलग महत्व होता है तथा अलग अलग फलों की प्राप्ति भी होती हैं। मानवजीवन को पवित्र बनाने में व्रतों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं ।व्रतों की संख्या बहुत अधिक है, इसलिए उनके प्रकारों में विभिन्नता होना स्वाभाविक है। व्रत और उपवास में मूलभूत अंतर यह है कि व्रत में अन्न का सेवन किया जा सकता है, वहीं उपवास में पूर्ण रूप से निराहार रहना होता है। आचार्य पास्क के ग्रंथ 'निरुक्त' में कहा गया है। व्रत का एक अर्थ अन्न भी होता है, क्योंकि यह हमारे शरीर को पुष्टता प्रदान करता है, इसीलिए उचित विधि-विधान से अन्न ग्रहण करना भी व्रत कहलाता है। आमतौर पर व्रत दो प्रयोजनों से किए जाते हैं। पहले प्रकार का व्रत 'नित्य' कहलाता है, जिसमें किसी प्रकार की कामना का समावेश नहीं होता है , जो भक्ति और प्रेम के कारण आध्यात्मिक प्रेरणा से पुण्य प्राप्ति के किया जाता है। अर्थात् जब हम यह नियम पर रहते हैं कि महीने या सप्ताह में अमुक तिथि के दिन एक समय भोजन करेंगे, फलाहार करेंगे या निर्जल रहेंगे, तो यह 'नित्यव्रत कहलाता हैं । इसके विपरीत दूसरे प्रकार का व्रत 'काम्य' या 'नैमित्तिक' कहलाता है, जो किसी विशेष उदेश्य को लेकर किया जाता है। या जब हम कोई अनुष्ठान, मांगलिक कार्य या शुभ कार्य में जो हम जो व्रत करते हैं, वह 'काम्य' या 'नैमित्तिक' व्रत कहलाता है। उदाहरण के लिए पापक्षय के से किया गया'चांद्रायणादि व्रत' नैमित्तिक और सुख-सौभाग्य की वृद्धि के लिए किया गया 'वट-सारिय व्रत' काम्यव्रत की श्रेणी में आते हैं। नित्य, काग्य और नैमित्तिक व्रतों के अलावा और भी अनेक प्रकार के व्रत रखे जाते हैं, जिनके अपने-अ अनेक प्रकार के विधि-विधान होते हैं। कुछ प्रमुखता से

किए जाने वाले व्रतों का विवरण इस प्रकार है अयाचित व्रत : बिना किसी प्रकार की कामना रखे, दिन या रात में एक बार भोजन करने को 'अयाचित व्रत' कहते हैं।

नक्तव्रत- विशेष रूप से रात में किए जाने वाले व्रत को 'नक्तव्रत' कहते हैं।

एकभुक्तव्रत: - मध्याह्न, संध्या, या इच्छानुसार व्रत 'एकभुक्तव्रत' कहलाता हैं।

प्राजापत्यव्रत- यह व्रत बारह दिनों में करने के बाद संपन्न होता है, जो तीन-तीन दिनों तक भोजन की मात्रा बढ़ाते यह प्रजापत्य व्रत कहलाता हैं l

चांद्रायणव्रत-

यह व्रत चंद्रकला के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। इसमें भोजन की मात्रा कृष्णपक्ष में घटानी और शुक्लपक्ष में बढ़ानी होती है। अमावस्या को निराहार रहकर पूर्ण होने वाले इस व्रत को 'चांद्रायण' के नाम से जाना जाता है, जो किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ किया जा सकता है। इसे पापों की निवृत्ति, चंद्रलोक की प्राप्ति या चंद्रमा की प्रसन्नता पाने के लिए करने का विधान है।

तिथि व्रत - एकादशी, अमावस्या, चतुर्थी आदि 'तिथिव्रत' कहलाते हैं।

मासव्रत - माघ, कार्तिक, वैशाख आदि के व्रत 'मासव्रत' कहलाते हैं।

पाक्षिकव्रत - : शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष के व्रत 'पाक्षिकव्रत' कहलाते हैं।

नक्षत्रव्रत - रोहिणी, श्रवण और अनुराधा आदि के व्रत 'नक्षत्रव्रत' कहलाते हैं।

देवव्रत - गणेश, शिव, विष्णु आदि के लिए रखे जाने वाले व्रत 'देवव्रत' कहलाते हैं।

वारों के व्रत- सोम, मंगल, बुध आदि वारों के दिन रखे जाने वाले व्रत को 'वारव्रत' कहते हैं।

प्रदोषव्रत - प्रत्येक मास की त्रयोदशी/तेरस के दिन किए जाने वाले व्रत 'प्रदोषव्रत' कहलाते हैं।

व्रत के देवता- प्रत्येक देवताओं के लिए अलग-अलग व्रत किया जाता हैं। जो व्रतों के देवता कहलाते हैं। अपनी मनोकामना को पूर्ण करनें के लिए व्रतों के देवताओं की आराधना की जाती हैं जैसे सोमवार का ब्रत करते समय भगवान शंकर , भोम का व्रत करनें के लिए हनुमान जी की, एकादशी व्रत के लिए भगवान विष्णु, पूर्णिमा के व्रत के लिए देवी, इसी प्रकार से अन्य अन्य देवताओं का पूजन अर्चन तथा व्रत किया जाता हैं। अधिकांश व्रतों का संबंध किसी-न-किसी देवता से अवश्य रहता है है। यही वजह है कि व्रती अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए देवता की शरण लेता है, उसके सामने मनौतियां मानकर उसकी पूजा करता है, आराधना करता है, व्रत रखता है, उसका गुणगान करता और सुनता है। भगवान् देवता भी मक्तों के मनोरथ तभी पूर्ण करते हैं, जब उनके प्रति भक्त के मन में पूर्ण विश्वास, श्रद्धा

और भक्ति की भावना हो। भक्त द्वारा किए गए व्रत में ये गुण सम्मिलित हों और व्रत पूर्ण विधि-विधान से किया गया हो l

2.7 व्रत का मानव मानव जीवन पर प्रभाव

व्रत को करने से मनुष्य को सुख की प्राप्ति होती रहती हैं। चाहे वह किसी भी समस्या से ग्रसित हो , चाहै शारीरिक कष्ट हो, लौकिक तथा पारलौकिक कष्ट हो सभी प्रकार के वात,पित, कफ, जन्य रोगों का निदान भी व्रत के माध्यम से होता हैं। हमारे शास्त्रों मैं कहां गया हैं कि जो मनुष्य सभी प्रकार के दुखो से घिरा हुआ हैं वहदुःख व्रत करने से दूर हो जाता हैं। व्रत करनें से शारीरिक, मानसिक, आधिदैविक, अधिभौतिक, आध्यात्मिक इन तीनों का शमन हो जाता हैं। तथा पवित्र शरीर धारण करता हैं।

2.8 व्रत धारण का मुहूर्त

किसी भी व्रत को करनें के लिए काल शास्त्र की आवश्यकता होती हैं बिना मुहूर्त के किसी भी व्रत को नहीं किया जा सकता हैं। क्योंकि शुभ कार्य को करने के लिए शुभ समय की आवश्यकता होती हैं , जिससे उस कार्य की सिद्धि हो सके , सर्वप्रथम व्रत को आरम्भ करने से पूर्व शुभ मुहूर्त को निश्चित कर तिथि,वार ,नक्षत्र, योग, करण , के साथ साथ कुछ विशेष योगों का विचार कर व्रत को आरम्भ करना शुभफल को प्राप्त करना माना जाता हैं। दिन मैं प्रहर के अनुसार व्रतों को करना चाहिए,इन सभी का विचार शुभशकुन माना जाता हैं।

उदयस्था तिथिर्या हि न भवेद् दिनमध्यगा।
सावतानां स्यादारम्भञ्च समापनम् ॥

हेमाद्रि व्रतखण्ड सत्यव्रत

सूर्योदयकी तिथि यदि मध्यान क न रहे तो वह 'खण्डित ' होता है, उसमें व्रतका आरम्भ और समाप्ति दोनों वर्जित कहा गया हैं और सूर्योदयो सूर्यास्त पर्यन्त रहनेवाली तिथि 'अखडित ' होती है। यदि गुरु और शुक्र अस्त न हुए हों तो उसमें व्रतका आरम्भ शुभ माना जाता है। जिस व्रतसम्बन्धी कर्मके लिये शास्त्रोंमें जो समय नियत है, उस समय यदि व्रतकी तिथि चल रही हो तो उसी दिन उस

तिथिके द्वारा व्रतसम्बन्धी कार्य शुभ समय पर करना चाहिये। तिथिका क्षय और वृद्धि व्रत का विचार करना चाहिए

कर्मणो यस्य वः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिः।
तया कर्माणि कुर्वीत हासवृद्धी न कारणम् ॥

वृद्ध याज्ञवल्क्य

जो तिथि व्रतके लिये आवश्यक नक्षत्र और योगसे युक्त हो, वह यदि तीन मुहूर्त हो तो वह भी श्रेष्ठ होती है। जन्म और मरण में तथा व्रतादि के पारण मे तात्कालिक तिथि ग्राह्य है; किंतु बहुत-से व्रतों का पारण में विशेष निर्णय किया जाता है, जिस तिथि में सूर्य उदय या अस्त हो, वह तिथि स्नान-दान-जपादिमें सम्पूर्ण उपयोगी होती है। " पूर्वाह्नो वै देवानों मध्याहो मनुष्याणामपराकः" पितृणाम् पूर्वाद्ध देवोंका, मध्याह्न मनुष्योंका और अपराह्न पितरोंका समय है। जिसका जो समय हो, उसका पूजनादि कर्म उसी समयमें करना चाहिये।

या तिथिऋक्षसंयुक्ता या च योगेन नारद।
मुहूर्तत्रयमात्रापि सापि सर्वा प्रदास्यते ॥

गोभिल

यो विधिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।
सा तिथिः सकला शैया स्नानदानजपादिषु ॥

देवल

आज के सूर्योदय से कल के सूर्योदय तक एक दिन माना जाता है। उसके दिन और रात्रि दो भाग हैं। पहले भाग (दिन) में प्रातःसंध्या और मध्याह्नसंध्या तथा दूसरे भाग (रात्रि) में सायाह्न और निशीथ हैं। इनके अतिरिक्त पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सायाह्नरूपमें चार भाग माने गये हैं। व्यास जी ने दिनभर के पाँच भाग निश्चित किये हैं। बृहस्पति और शुक्र का अस्त तथा अस्त होने के पहले के तीन दिन वृद्धत्व के और उदय होने के बाद के तीन दिन बालत्व के व्रतारम्भ में वर्जित हैं। ऐसे अवसर में व्रतादिका आरम्भ और उत्सर्ग नहीं करना चाहिये। भद्रादि कुयोग और मलमासादि भी त्याज्य माना गया हैं।

व्रत करनेवाला व्रतके आरम्भके पहले दिन मुण्डन कराये और चि-स्नानादि नित्यकृत्यसे निवृत्त होकर आगामी दिनमें जो व्रत किया जाय, सके उपयोगी व्यवस्था करे। दूसरे दिन उषःकालमें सूर्योदय से दो मुहूर्त पहले उठकर शौच-स्नानादि करके प्रातःकाल सूर्य और व्रतके देवताओ कों अपनी

मनोकामनाए निवेदित कर व्रतका आरम्भ करना शुभाशुभ माना जाता हैं। आरम्भमें गणपति, मातृका और पञ्चदेव का पूजन करके नान्दीश्राद्ध करे और व्रत-देवता की सुवर्णमयी मूर्ति बनवाकर उसका पञ्चोपचार, दशोपचार या षोडशोपचार पूजन करे। मास, पक्ष, तिथि, वार और नक्षत्रादिमें जिसका व्रत हो उसका अधिष्ठाता ही 'व्रतका देवता' होता है। अतः प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीयादि के यथाक्रम अग्नि, ब्रह्मा, गौरी आदि और अश्विनी, भरणी, कृत्तिकादि के नासत्य यम और अग्नि आदि तथा वारों के सूर्य, सोम, भौमादि अधिष्ठाता होते हैं।

अभुक्त्वा प्रातराहार स्नात्वाऽऽचम्य समाहितः ।
सूर्याय देवताभ्यश्च निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥

व्रतारम्भे मातृपूजां नान्दीश्राद्धं च कारयेत् ।
स्नात्वा व्रतवता सर्वव्रतेषु व्रतमूर्तयः ।

2.9 व्रत का महत्व

सनातन परंपरा में हर एक पर्व पर व्रत उपवास का विशेष महत्व रहा है। व्रत को रखने के अलग-अलग नियम भी है,जिससे व्रत की पूर्णता होती हैं। व्रत के नियमों का पालन सही तर से न किया जाए तो व्रती को व्रत का शुभ फल प्राप्त नहीं होता है, उपवास या व्रत करनें की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही हैं। जो आज तक दिखाई पड़ती हैं पूर्व काल मैं जब दैत्यों और देवताओं के मध्य मैं घनघोर युद्ध होता था तो उस युद्ध मैं वहीं विजयी होता था जो सत्यवादी, संयमी, तपस्वी, धर्म का अनुसरण करनें वाला तथा तथा उपवास करनें वाला होता था। जब दैत्य पराजित होते थे तो पुनः विधि-विधान पूर्वक व्रत करते हुए हजारों वर्षों तक प्रभुकघ तपस्या करते थें परमात्मा प्रसन्न होकर उनको वरदान देने के साथ साथ विजयी भव का आशीर्वाद भी देते थे तात्पर्य यह हैं कि उस काल मैं भी व्रत और उपवास का उतना ही महत्व था जितना आज हैं।उस काल मैं दैत्य भी व्रत उपासना के महत्व को समझनें के साथ साथ शारीरिक, मानसिक, रुप से व्रत, उपवास करते थें। जिससे उन्हें एक

नई ऊर्जा प्राप्त होती थी हमारे प्रत्येक शरीर मैं जहां जहां भी शक्ति का का प्रवेश हैं, ऊर्जा दिखाई देती हैं तो वह व्रत और उपवास का ही परिणाम हैं। जो मानसिक शांति प्रदान करता हैं, प्राचीन काल मैं प्रत्येक धार्मिक कार्य को करनें से पूर्व व्रत करनें का महत्व था , व्रत , उपासना के पीछे ही सभी शक्तियां विद्यमान थी, प्रातः जागरण से लेकर के रात्रि पर्यन्त हमारे द्वारा जो भी कर्म किए जाते हैं उन सभीका हमारे जीवन मैं महत्व रहा हैं।

व्रत का धार्मिक महत्व

सनातन धर्म में व्रत रखने का विशेष महत्व रहा हैं1 व्रत रखने से व्यक्ति को मानसिक शांति, भगवान के नजदीक रहने के शक्ति और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है. शास्त्रों में उपवास रखने का विशेष महत्व होता है. मान्यता है कि व्रत रखने पर सभी तरह के पापों और कष्टों से मुक्ति मिलती है. व्रत रखने से व्यक्ति का मन,दिमाग और आत्मा भी शुद्ध होती है. हिंदू धर्म में व्रत रखने से भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा,भाव, भक्ति और समर्पण का भाव उत्पन होता है, यही कारण है की हर धार्मिक मौके पर किसी न किसी रूप में अलग-अलग तरीके से व्रत या उपवास किया जाता है। व्रत रखने से दैहिक, मानसिक और आत्मिक ताप कम तो होते ही हैं साथ ही इससे ग्रह-नक्षत्रों के बुरे प्रभाव से भी बचा जा सकता है। व्रत करने से संकल्पवान मन में ही सकारात्मकता, दृढ़ता और एकनिष्ठता प्राप्त होती हैं।

2.10 सारांश

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ गये होंगे की भारत धर्मनिक्षेप राष्ट्र होने के साथ यहां पर सभी धर्मों के अनुसार व्रत पर्व एवं उपवास किया जाता रहा हैं। भारतीय परम्परा हिन्दू धर्म मैं व्रत,एवं उपवास को प्रमुख अंग के रुप मैं स्वीकार किया गया हैं। जिस प्रकार हमारे शरीर के सभी अंग की महत्ता हैं उसी प्रकार से सनातन परम्परा मैं व्रतों को धारण करनें की महत्ता हैं। प्राचीन काल से से चली आ रही यह परम्परा आज भी बड़े ही उल्लास के साथ मनाया जाता हैं, हमारे धर्म ग्रंथों मैं धर्म पर कैसे चला जाय किस विधि से ,किस नियम से चला जाय इन सबका मार्गदर्शन हमारे प्राचीन ऋषियों मुनियों के द्वारा हमें प्राप्त होता रहा हैं। जिससे की आने वाला मनुष्य धर्म कर्म का नियमानुसार से पालन करता रहें तथा यह प्रकृति भी के साथ संतुलित रहें जिससे किसी प्रकार कीहानि न हो, सनातन परंपरा मैं व्रतों के विषय मैं वेदों से लेकर पुराणों धर्म ग्रंथों मैं भी व्रत तथा उपवास का बारम्बार उल्लेख प्राप्त होता रहता हैं। जैसे श्रीमद्भागवत महापुराण मैं राजा अम्बरीष भी व्रत, उपवास को निस्वार्थ पूर्वक करते थे, जब तक परमात्मा का दर्शन न हो जाय या भोग न लग जाए तब तक जल का भी सेवन नहीं करते हैं। इसी तरह पद्म पुराण, महाभारत,नारद पुराण, स्कन्द पुराण,शिवपुराणादि, मैं विस्तृत रुप से व्रतों के विधान का वर्णन किया गया हैं। व्रत क्या है इससे किसकी प्राप्ति हो सकती हैं इस विषय मैं भी विस्तार पूर्वक उल्लेख प्राप्त होता हैं। आध्यात्मिक दृष्टि के साथ साथ भोतिकता पर भी व्रत का अद्भुत प्रभाव रहता हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाए तो व्रत एक औषधि के समान हैं जो हमारे शरीर मैं उत्पन्न विकारों को नष्ट कर हमारे स्वास्थ्य को निरोगी बनाता हैं, वर्तमान परिप्रेक्ष्य मैं जब मनुष्य

रोगी हो जाता हैं तो मेडिसिन के बल पर दवाईयों के द्वारा शरीर को ठीक करनें की कौशिश करता हैं परन्तु चिकित्सक भी यही कहते हैं कि स्वास्थ्य को ठीक करनें के लिए अल्प भोजन का सेवन कीजिए या सप्ताह मैं व्रत करनें के लिए कहते हैं जिससे की रोगी का शरीर निरोगी हो सके। जनसाधारण भी आज जान रहा हैं कि व्रतसे हमारे शरीर मैं मानसिक शांति के साथ साथ शारीरिक ऊर्जा का भी लाभ प्राप्त होता हैं। जिस प्रकार से शरीर मैं मुख्य स्थान मुख का हैं उसी प्रकार किसी भी पूजा या अनुष्ठान मैं बैठसे से पूर्व प्रमुख स्थान व्रत और उपवास का हैं। व्रत के द्वारा अनेक विकृतियों का शमन हो जाता हैं, किस वर्ष के किस माह मैं कोन सा व्रत करें जिससे हमारा जीवन सर्वाधिक दीर्घायु बना रहें अच्छे विचारों का प्रवेश हमारे मन मैं होता रहे इन सभी प्रकार का लाभ हमें विधि पूर्वक व्रत करनें से प्रै होता हैं। व्रत से मन एकाग्रता की और, शारीरिक शुद्धि, सात्विक विचार, बुद्धि का विकास सद्विचार, , ज्ञान, तथा श्रद्धा, भक्ति, बढ़ती रहती हैं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मैं वह व्यक्ति प्रसन्नता पूर्वक सफलता प्राप्त करता रहता हैं।

2.11 पारिभाषिक शब्दावली

सत्यवादी सत्य बोलने वाला
जागरणजगना
उपवास। समीप रहकर वास करना
समर्पण। कर्म, मन, वाचा से अर्पित करना
संकल्प प्रतिज्ञा
नित्यहमेशा
चन्द्रायन जो व्रत चन्द्रायन मैं किया जाता हैं
सर्वाधिकसबसे ज्यादा
मध्यान्ह दिन का समय
अपराह्न सायंकाल का समय
चिकित्सक डॉक्टर
क्षेत्रस्थान
षोडश 16प्रकार से
पंचोपचार5प्रकार से

2.12अभ्यास प्रश्न

1. मन की शुद्धि के लिए क्या करना चाहिए।
2. व्रत प्रारम्भ करनें से पूर्व किसान विचार करते हैं।
3. मुहूर्त का विचार कब किया जाता हैं।
4. सूर्योदय से प्रारंभ करना चाहिए।
5. उपवास से क्या प्राप्त होता हैं
6. व्रत करनें के लिए किन किन सामग्री की आवश्यकता होती हैं।
7. व्रत के कितने प्रकार हैं।
8. देवव्रत मैं किसकी उपासना की जाती हैं।
9. बुध का व्रत करनें से कोन देवता प्रसन्न होते हैं
10. पूर्णिमा के व्रत मैं किस देवता की पूजा की जाती हैं।

2.13अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. व्रत ।
2. मुहूर्त शास्त्र का।
3. शुभ कार्य तथा व्रत करनें के लिए ।
4. व्रत।
5. आत्मिक शांति, ऊर्जा की प्राप्ति।
6. फूल,फल, रौली चंदन
7. मुख्य 10
8. देवताओं की
9. गणेश जी
10. चन्द्रमा की

2.14 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

व्रत परिचय

श्रीमद भगवत महापुराण

शाण्डिल्योपनिषद

श्रीजाबालदर्शन

2.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्रत किसे कहते हैं व्रत और उपवास का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
2. व्रत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए व्रत विधि का वर्णन कीजिए।
3. मुहुर्त शास्त्र का उपवास मैं उपयोगिता बताईए।
4. व्रत के कितने प्रकार हैं उन सभी का विस्तृत वर्णन कीजिए।
5. व्रत और उपवास की वैज्ञानिकता को स्पष्ट कीजिए।

इकाई –3 शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 पक्ष का परिचय
3.4 व्रत का महत्त्व
3.5 शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत
3.6 बोध प्रश्न
3.7 सारांशः
3.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)–220 से संबंधित है। इस इकाई का शीर्षक है- शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत।मनुष्य-जीवनको सफल करनेके कामोंमें व्रतकी बड़ी महिमामानी गयी है। 'देवल' का कथन है कि व्रत और उपवासके नियम-पालनसे शरीरको तपाना ही तप है। व्रत अनेक हैं और अनेक व्रतों के प्रकार भी अनेक हैं। यहाँ उनका कुछ उल्लेख किया गया है। लोकप्रसिद्धि में व्रत और उपवास दो हैं और ये कायिक,वाचिक, मानसिक, नित्य, नैमित्तिक, काम्य, एकभुक्त, अयाचित,मितभुक्, चान्द्रायण और प्राजापत्य के रूपमें किये जाते हैं। मनुष्य को पुण्य के आचरण से सुख और पाप के आचरण से दु:ख होता है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपने अनुकूल सुख की प्राप्ति और अपने प्रतिकूल दु:ख की निवृत्ति चाहता है। मानव की इस परिस्थिति को अवगत कर त्रिकालज्ञ और परहित में रत ऋषिमुनियों ने वेद, पुराण, स्मृति और समस्त निबंधग्रंथों को आत्मसात् कर मानव के कल्याण के हेतु सुख की प्राप्ति तथा दु:ख की निवृत्ति के लिए अनेक उपाय कहे हैं। उन्हीं उपायों में से व्रत और उपवास श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय हैं। व्रतों के विधान करनेवाले ग्रंथों में व्रत के अनेक अंगों का वर्णन देखने में आता है। उन अंगों का विवेचन करने पर दिखाई पड़ता है कि उपवास भी व्रत का एक प्रमुख अंग है। इसीलिए अनेक स्थलों पर यह कहा गया है कि व्रत और उपवास में परस्पर अंगागि भाव संबंध है। अनेक व्रतों के आचरणकाल में उपवास करने का विधान देखा जाता है।यहॉ हम इस इकाई में शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत सम्बन्धित विषयों का अध्ययन विस्तार पूर्वक करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीयव्रतों को परिभाषित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीयव्रतों केमहत्त्व को समझा सकेंगे।
- शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीयव्रतोंनिरूपण करने में समर्थ होंगे।
- शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीयव्रत कब -कब किया जाता है आप जान सकेगें।

3.3 पक्ष का परिचय

जिसका देव और पितृकार्यों के अर्थपृथक्-पृथक् परिग्रहण किया जाय उस (कालविशेष) –

को पक्ष कहते हैं अथवा जिसमें चन्द्रमा की कलाएँ पूर्ण अथवा क्षीण हों उसे पक्ष कहते हैं। यथा -

देवकार्यार्थं पितृकार्यार्थं वा पक्ष्यते गृह्यते य: कालविशेष: स पक्ष:।

ऐसे दो पक्ष 'शुक्ल' और 'कृष्ण' के नामसे प्रसिद्ध हैं। शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष होता है। कष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तक कृष्ण पक्ष होता है।

ये दोनों पक्ष धर्मशास्त्र के अनुसार'देव' निमित्तके जप, ध्यान, उपासना, होम, यज्ञ, प्रतिष्ठा अथवासौभाग्य-वृद्धिके सदनुष्ठान आदिमें और 'पितृ ' निमित्तके श्राद्ध,तर्पण, हन्तकार या महालयादि कार्योंमें उपयुक्त किये जाते हैं ।

3.4 व्रत का महत्त्व

भारतवर्ष में व्रत-पूजा का बड़ा महत्त्व है। हमारे व्रत, पर्व और त्योहार सनातन धर्म की दृष्टि से भारतवर्ष में अनेक व्रत, पर्वऔर त्योहार भी होते चले आ रहे हैं। भारतीय जनता और विशेष करके घर की मातायें इनकी परम्परा को आज तक अक्षुण्य बनाये हैं। यद्यपि आज तक इन विषयों पर क्यों?और कैसे ? का प्रश्न उठाना लोगों के लिए एक साधारण सी बात हो गई है। उस पर तर्क अवश्य होता है, तथापि हमें उसकी गहराई, महत्ता पर ध्यान देना चाहिए। हमारे त्योहार, व्रतऔर पर्व प्रत्येक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ऋषियों ने बड़ी सूक्ष्मबुद्धि से इनका निर्माण करके हमारे कल्याण का मार्ग- शोधनकिया। इन से समाजिक, लौकिक, व्यावहारिक तथा राष्ट्रीयलाभ हैं। व्यक्तिगत कल्याण, समष्टिगत उन्नति राष्ट्रोत्थानसभी कुछ इसमें छिपा हुआ है । व्रत से कायिक, वाचिक, मानसिक शुद्धि होती है, पापों का शमन होता है इन्द्रिय दमन होताहै, अन्त:करण शुद्ध होता है । निर्मलता से प्रेम, सद्भावना आदिदैवी सम्पत्ति का विस्तार होता है। रोग भी एक प्रकार का पापही है वह भी व्रतोपवास से नष्ट हो जाता है । ज्योतिष शास्त्रके अनुसार उसका विधान किया गया है जिससे ग्रह नक्षत्रादिका भी प्रभाव उस पर पड़ता है। शारीरिक शुद्धि, तथा आध्यात्मिक उन्नति होती है। श्रद्धा, भक्ति सद्विचार उत्पन्न होतेहैं— संकल्प शक्ति प्रबल हो जाती है । तेज, ओज सभी कुछ आ जाता है यह व्रत का महिमा है।

3.5 शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत

कृष्णपक्ष

कार्तिकस्नान –

धर्म कर्मादिकी साधनाके लिये स्नान करनेकी सदैव आवश्यकता होती है। इसके सिवा आरोग्यकी अभिवृद्धि और उसकी रक्षाके लिये भी नित्य स्नानसे कल्याण होता है। विशेषकर माघ,

वैशाख और कार्तिकका नित्य स्नान अधिक महत्त्वका है। मदनपारिजातमें लिखा है कि- 'कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः । जपन् हविष्यभुक्छान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ' कार्तिक मासमें जितेन्द्रिय रहकर नित्य स्नान करे और हविष्य (जौ, गेहूँ, मूँग तथा दूध- दही और घी आदि) - का एक बार भोजन करे तो सब पाप दूर हो जाते हैं। इस व्रतको आश्विनकी पूर्णिमासे प्रारम्भ करके ३१ वें दिन कार्तिक शुक्ल पूर्णिमाको समाप्त करे । इसमें स्नानके लिये घरके बर्तनोंकी अपेक्षा कुँआ, बावली या तालाब आदि अच्छे होते हैं और कूपादिकी अपेक्षा कुरुक्षेत्रादि तीर्थ, अयोध्या आदि पुरियाँ और काशीकी पाँचों नदियाँ एक-से-एक अधिक उत्तम हैं । ध्यान रहे कि स्नानके समय जलाशयमें प्रवेश करनेके पहले हाथ-पाँव और मैल अलग धो ले। आचमन करके चोटी बाँध ले और जल - कुशसे संकल्प करके स्नान करे । संकल्पमें कुशा लेनेके लिये अंगिराने लिखा है कि 'विना दर्भैश्च यत् स्नानं यच्च दानं विनोदकम् । असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥' स्नानमें कुशा, दानमें संकल्पका जल और जपमें संख्या न हो तो ये सब फलदायक नहीं होते ।'यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं कि धर्मप्राण भारतके बड़े-बड़े नगरों, शहरों या गाँवोंमें ही नहीं, छोटे-छोटे टोलेतकमें भी अनेक नर-नारी (विशेषकर स्त्रियाँ) बड़े सबेरे उठकर कार्तिकस्नान करतीं, भगवान्‌के भजन गातीं और एकभुक्त, एकग्रास, ग्रास- वृद्धि, नक्तव्रत या निराहारादि व्रत करती हैं और रात्रिके समय देवमन्दिरों, चौराहों, गलियों, तुलसीके बिरवों, पीपलके वृक्षों और लोकोपयोगी स्थानोंमें दीपक जलातीं और लम्बे बाँसमें लालटेन बाँधकर किसी ऊँचे स्थानमें 'आकाशी दीपक' प्रकाशित करती हैं।

करकचतुर्थी –

यह व्रत कार्तिक कृष्णकी चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थीको किया जाता है। यदि वह दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो या दोनों ही दिन न हो तो 'मातृविद्धा प्रशस्यते' के अनुसार पूर्वविद्धा लेना चाहिये । इस व्रतमें शिव- शिवा, स्वामिकार्तिक और चन्द्रमाका पूजन करना चाहिये और नैवेद्यमें (काली ट्टीके कच्चे करवेमें चीनीकी चासनी ढालकर बनाये हुए) करवे या घीमें सेंके हुए और खाँड मिले हुए आटेके लड्डू अर्पण करने चाहिये । इस व्रतको विशेषकर सौभाग्यवती स्त्रियाँ अथवा उसी वर्षमें विवाही हुई लड़कियाँ करतीहैं और नैवेद्यके १३ करवे या लड्डू और १ लोटा, १ वस्त्र और १ विशेष करवा पतिके माता-पिताको देती हैं। व्रतीको चाहिये कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके 'मम सुख सौभाग्य-पुत्रपौत्रादिसुस्थिरश्रीप्राप्तये करकचतुर्थीव्रतमहं करिष्ये ।' यह संकल्प करके बालू (सफेद मिट्टी) - की वेदीपर पीपलका वृक्ष लिखे और उसके नीचे शिव-शिवा और षण्मुखकी मूर्ति अथवा चित्र स्थापन करके 'नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संततिं शुभाम् । प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे ॥' से

शिवा (पार्वती)-का षोडशोपचार पूजन करे और 'नमः शिवाय' से शिव तथा ' षण्मुखाय नमः' से स्वामिकार्तिकका पूजन करके नैवेद्यका पक्वान्न (करवे) और दक्षिणा ब्राह्मणको देकर चन्द्रमाको अर्घ्य दे और फिर भोजन करे। इसकी कथाका सार यह है किशाकप्रस्थपुरके वेदधर्मा ब्राह्मणकी विवाहिता पुत्री वीरवतीने करकचतुर्थीका व्रत किया था। नियम यह था कि चन्द्रोदयके बाद भोजन करे। परंतु उससे भूख नहीं सही गयी और वह व्याकुल हो गयी। तब उसके भाईने पीपलकी आड़ में महताब (आतिशबाजी) आदिका सुन्दर प्रकाश फैलाकर चन्द्रोदय दिखा दिया और वीरवतीको भोजन करवा दिया। परिणाम यह हुआ कि उसका पति तत्काल अलक्षित हो गया और वीरवतीने बारह महीनेतक प्रत्येक चतुर्थीका व्रत किया तब पुनः प्राप्त हुआ।

कार्तिकी अमावास्या –

इस दिन प्रातः - स्नानादि करनेके अनन्तर देव, पितृ और पूज्यजनोंका अर्चन करे और दूध, दही तथा घी आदि श्राद्ध करके अपराह्णके समय नगर, गाँव या बस्तीके प्रायः सभी मकानोंको स्वच्छ और सुशोभित करके विविध प्रकारके गायन, वादन, नर्तन और संकीर्तन करे और प्रदोषकालमें दीपावली जाकर मित्र, स्वजन या सम्बन्धियोंसहित आधी रातके समय सम्पूर्ण दृश्योंका निरीक्षण करे। उसके बाद रात्रिके शेष भागमें सूप (छाजला) और डिंडिम (डमरू) आदिको वेगसे बजाकर अलक्ष्मीको निकाले।

दीपावली –

लोकप्रसिद्धिमें प्रज्वलित दीपकोंकी पंक्ति लगा देनेसे 'दीपावली' और स्थान – स्थानमें मण्डल बना देनेसे ' दीपमालिका' बनती है, अतः इस रूपमें ये दोनों नाम सार्थक हो जाते हैं। इस प्रकारकी दीपावली या दीपमालिका सम्पन्न करनेसे 'कार्तिके मास्यमावास्या तस्यां दीपप्रदीपनम्। शालायां ब्राह्मणः कुर्यात् स गच्छेत् परमं पदम्॥' के अनुसार परमपद प्राप्त होता है। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि 'कार्तिककी अमावास्याको अर्धरात्रिके समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थोंके मकानोंमें जहाँ-तहाँ विचरण करती हैं। इसलिये अपने मकानोंको सब प्रकारसे स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली अथवा दीपमालिका बनानेसे लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और उनमें स्थायीरूपसे निवास करती हैं। इसके सिवा वर्षाकालके किये हुए दुष्कर्म (जाले, मकड़ी, धूल-धमासे और दुर्गन्ध आदि) दूर करनेके हेतुसे भी कार्तिकी अमावास्याको दीपावली लगाना हितकारी होता है। यह अमावास्या प्रदोषकालसे आधी राततक रहनेवाली श्रेष्ठ होती है। यदि वह आधी राततक न रहे तो दोषव्यापिनी लेना चाहिये।

पितृव्रत –

आशविन कृष्णपक्ष शास्त्रोंमें मनुष्योंके लिये देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ ऋण - ये तीन ऋण बतलाये गये हैं। इनमें श्राद्धके द्वारा पितृ ऋणका उतारना आवश्यक है; क्योंकि जिन माता-पिताने हमारी आयु, आरोग्य और सुख-सौभाग्यादिकी अभिवृद्धिके लिये अनेक यत्न या प्रयास किये उनके ऋणसे मुक्त न होनेपर हमारा जन्मग्रहण करना निरर्थक होता है। उनके ऋण उतारनेमें कोई ज्यादा खर्च हो, सो भी नहीं है; केवल वर्षभरमें उनकी मृत्यु- तिथिको सर्वसुलभ जल, तिल, यव, कुश और पुष्प आदिसे उनका श्राद्ध सम्पन्न करने और गोग्रास देकर एक या तीन, पाँच आदि ब्राह्मणोंको भोजन करा देनेमात्रसे ऋण उतर जाता है; अतः इस सरलतासे साध्य होनेवाले कार्यकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । इसके लिये जिस मासकी जिस तिथिको माता-पिता आदिकी मृत्यु हुई हो उस तिथिको श्राद्धादि करनेके सिवा, आश्विन कृष्ण (महालय) पक्षमें भी उसी तिथिको श्राद्ध-तर्पण - गोग्रास और ब्राह्मण भोजनादि करना - कराना आवश्यक है; इससे पितृगण प्रसन्न होते हैं और हमारा सौभाग्य बढ़ता है । पुत्रको चाहिये कि वह माता-पिताकी मरण- तिथिको मध्याह्नकालमें पुनः स्नान करके श्राद्धादि करे और ब्राह्मणोंको भोजन कराके स्वयं भोजन करे । जिस स्त्रीके कोई पुत्र न हो, वह स्वयं भी अपने पतिका श्राद्ध उसकी मृत्यु - तिथिको कर सकती है। भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमासे प्रारम्भ करके आश्विन कृष्ण अमावस्यातक सोलह दिन पितरोंका तर्पण और विशेष तिथिको श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। इस प्रकार करनेसे 'पितृव्रत' यथोचितरूपमें पूर्ण होता है।

संकष्टचतुर्थीव्रत –

यह व्रत मार्गशीर्ष कृष्णकी चन्द्रोदयव्यापिनी पूर्वविद्धा चतुर्थीको करना चाहिये । उस दिन प्रातः स्नानादिके पश्चात् व्रत करनेका संकल्प करके सायंकालके समय अनेक प्रकारके गन्ध-पुष्पादिसे गणेशजीका पूजन करे । चन्द्रोदय होनेपर उनका पूजन करे और अर्घ्य देनेके पश्चात् वायन-दान करके भोजन करे। इस व्रतसे स्त्रियोंके सौभाग्यकी वृद्धि होती है ।

शिवरात्रि –

यह व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशीको किया जाता है। इसको प्रतिवर्ष करनेसे यह 'नित्य' और किसी कामनापूर्वक करनेसे 'काम्य' होता है । प्रतिपदादि' तिथियोंके अग्नि आदि अधिपति होते हैं। जिस तिथिका जो स्वामी हो उसका उस तिथिमें अर्चन करना अतिशय उत्तम होता है । चतुर्दशीके स्वामी शिव हैं (अथवा शिवकी तिथि चतुर्दशी है) । अत: उनकी रात्रिमें व्रत किया जाने से इस व्रतका

नाम 'शिवरात्रि' होना सार्थक हो जाता है। यद्यपि प्रत्येक मासकी कृष्णचतुर्दशी शिवरात्रि होती है और शिवभक्त प्रत्येक कृष्णचतुर्दशीका व्रत करते ही हैं, किन्तु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशीके निशीथ (अर्धरात्रि) - में ' शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।'ईशानसंहिताके इस वाक्यके अनुसार ज्योतिर्लिंगका प्रादुर्भाव हुआ था, इस कारण यह महाशिवरात्रि मानी जाती है।

माघस्नान -

माघ, कार्तिक औरवैशाख महापुनीत महीने माने गये हैं। इनमें तीर्थस्थानादिपर यास्वदेशमें रहकर नित्यप्रति स्नान-दानादि करनेसे अनन्त फल होताहै। स्नान सूर्योदयके समय श्रेष्ठ है। सके बाद जितनाविलम्ब' हो उतना ही निष्फल होता है। स्नानके लिये काशी औरप्रयाग उत्तम माने गये हैं। वहाँ न जा सके तो जहाँ भी स्नानकरे, वहीं उनका स्मरण करे।

जानकीव्रत –

यह व्रत फाल्गुनकृष्णअष्टमीको किया जाता है। इसमें नकनन्दिनी श्रीजानकीजीकापूजन होता है। गुरुवर वसिष्ठजीके कहनेपर भगवान् रामचन्द्रजीनेसमुद्रतटकी तपोमय भूमिपर बैठकर यह व्रत किया था। अतःसर्व-साधारणको चाहिये कि वे अपनी अभीष्टसिद्धिके लिये इसव्रतको अवश्य करें। इसमें सर्वधान्य (जौ - चावल आदि) - के चरु(खीर) - का हवन और अपूप (पूए) आदिका नैवेद्य अर्पणकिया जाता है। इसमें 'व्रतमात्रेऽष्टमी कृष्णा पूर्वा शुक्लेऽष्टमीपरा' के अनुसार पूर्वविद्धा अष्टमी ली जाती है। अन्यवैष्णवग्रन्थोंके मतानुसार वैशाख शुक्ल नवमीको जानकीजीकाजन्म हुआ था, जो जानकी नवमीके नामसे प्रसिद्ध है।

शुक्लपक्ष

रामनवमी –

इस व्रतकी चारों जयन्तियों में गणना है। यह चैत्र शुक्ल नवमी को किया जाता है। इसमें मध्याह्नव्यापिनी शुद्धा तिथि ली जाती है। यदि वह दो दिन मध्याह्नव्यापिनी हो या दोनों दिनों में ही न हो तो पहला व्रत करना चाहिये। इसमें अष्टमी का वेध हो तो निषेध' नहीं, दशमी का वेध वर्जित है। यह व्रत नित्य, नैमित्तिक और काम्य - तीन प्रकारका है। नित्य होने से इसे निष्काम भावना रखकर आजीवन किया जाय तो उसका अनन्त और अमिट फल होता है और किसी निमित्त याकामनासे किया जाय तो उसका यथेच्छ फल मिलता है। भगवान् रामचन्द्रका जन्म हुआ, उस समय चैत्र

शुक्ल नवमी, गुरुवार, पुष्य (या दूसरे मतसे पुनर्वसु), मध्याह्न और कर्क लग्न था । उत्सवके दिन ये सब तो सदैव आ नहीं सकते, परंतु जन्मक्ष कई बार आ जाता है; अत: वह हो तो उसे अवश्य लेना चाहिये। 'जो मनुष्य रामनवमी का भक्ति और विश्वासके साथ व्रत करते हैं, उनको महान् फल मिलता है।

गोवर्धनपूजा–

दीपावलीके दूसरे दिन प्रभातके समय मकानके द्वारदेशमें गौके गोबरका गोवर्धन बनाये। शास्त्रमें उसको शिखरप्रयुक्त, वृक्ष - शाखादिसे संयुक्त और पुष्पादिसे सुशोभित बनानेका विधान है; किंतु अनेक स्थानोंमें उसे मनुष्यकेआकारका बनाकर पुष्पादिसे भूषित करते हैं । चाहे जैसा हो, उसका गन्ध-पुष्पादिसे पूजन करके 'गोवर्धन धराधार गोकुल- त्राणकारक । विष्णुबाहुकृतोच्छ्राय गवां कोटिप्रदो भव ॥' से प्रार्थना करे। इसके पीछे भूषणीय गौओंका आवाहन करके उनका यथाविधि पूजन करे और 'लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥' से प्रार्थना करके रात्रिमें गौसे गोवर्धनका उपमर्दन कराये ।

अन्नकूट–

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको भगवान्के नैवेद्यमें नित्यके नियमित पदार्थोंके अतिरिक्त यथासामर्थ्य (दाल, भात, कढ़ी, साग आदि 'कच्चे'; हलवा, पूरी, खीर आदि 'पक्के'; लड्डू, पेड़े, बर्फी, जलेबी आदि 'मीठे'; केले, नारंगी, अनार, सीताफल आदि 'फल' - फूल; बैगन, मूली, साग-पात, रायते, भुजिये आदि ' सलूने' और चटनी, मुरब्बे, अचार आदि खट्टे-मीठे - चरपरे) अनेक प्रकारके पदार्थ बनाकर अर्पण करे और भगवान्के भक्तोंको यथाविभाग भोजन कराकर शेष सामग्री आशार्थियोंमें वितरण करे । अन्नकूट यथार्थमें गोवर्धनकी पूजाका ही समारोह है। प्राचीन कालमें व्रजके सम्पूर्ण नर-नारी अनेक पदार्थोंसे इन्द्रका पूजन करते और नाना प्रकारके षड्सपूर्ण (छप्पन भोग, छत्तीसों व्यंजन) भोग लगाते थे। किंतु श्रीकृष्णने अपनी बालकावस्थामें ही इन्द्रकी पूजाको निषिद्ध बतलाकर गोवर्धनका पूजन करवाया और स्वयं ही दूसरे स्वरूपसे गोवर्धन बनकर अर्पण की हुई सम्पूर्ण भोजन-सामग्रीका भोग लगाया। यह देखकर इन्द्रने व्रजपर प्रलय करनेवाली वर्षा की, किंतु श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वतको हाथपर उठाकर और व्रजवासियोंको उसके नीचे खड़े रखकर बचा लिया ।

रक्षाबन्धन–

यह श्रावण शुक्ल पूर्णिमाको होता है। इसमें पराद्धव्यापिनी तिथि ली जाती है। यदि वह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वा लेनी चाहिये। यदि उस दिन भद्रा हो तो उसका त्याग करना चाहिये। भद्रामें श्रावणी और फाल्गुनी दोनों वर्जित हैं; क्योंकि श्रावणीसे राजाका और फाल्गुनीसे प्रजाका अनिष्ट होता है। व्रतीको चाहिये कि उस दिन प्रातः स्नानादि करके वेदोक्त विधिसे रक्षाबन्धन, पितृतर्पण और ऋषिपूजन करे शूद्र हो तो मन्त्रवर्जित स्नान-दानादि करे। रक्षाके लिये किसी विचित्र वस्त्र या रेशम आदिकी 'रक्षा' बनावे।उसमें सरसों, सुवर्ण, केसर, चन्दन, अक्षत और दूर्वा रखकर रंगीन सूतके डोरेमें बाँधे और अपने मकानके शुद्ध स्थानमें कलशादि स्थापन करके उसपर उसका यथाविधि पूजन करे। फिर उसे राजा, मन्त्री, वैश्य या शिष्ट शिष्यादिके दाहिने हाथमें 'येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥' इस मन्त्रसे बाँधे। इसके बाँधनेसे वर्षभरतक पुत्र-पौत्रादिसहित सब सुखी रहते हैं। कथा यों है कि एक बार देवता और दानवोंमें बारह वर्षतक युद्ध हुआ, पर देवता विजयी नहीं हुए, तब बृहस्पतिजीने सम्मति दी कि युद्ध रोक देना चाहिये। यह सुनकर इन्द्राणीने कहा कि मैं कल इन्द्रके रक्षा बाँधूंगी, उसके प्रभावसे इनकी रक्षा रहेगी और यह विजयी होंगे। श्रावण शुक्ल पूर्णिमाको वैसा ही किया गया और इन्द्रके साथ सम्पूर्ण देवता विजयी हुए।

विजयादशमी

आश्विन शुक्ल दशमीको श्रवणका सहयोग होनेसे विजयादशमी होती है। इस दिन राज्य - वृद्धिकी भावना और विजयप्राप्तिकी कामनावाले राजा 'विजयकाल' में प्रस्थान करते हैं।

शरत्पूर्णिमा –

इसमें प्रदोष और निशीथ दोनोंमें होनेवाली पूर्णिमा ली जाती है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिये। १—इस दिन काँसीके पात्रमें घी भरकर सुवर्णसहित ब्राह्मणको दे तो ओजस्वी होता है, २ – अपराह्नमें हाथियोंका नीराजन करे तो उत्तम फल मिलता है और ३- अन्य प्रकारके अनुष्ठान करे तो उनकी सफल सिद्धि होती है। इसके अतिरिक्त आश्विन शुक्ल निशीथव्यापिनी पूर्णिमाको प्रभातके समय आराध्यदेवको सुश्वेत वस्त्राभूषणादिसे सुशोभित करके षोडशोपचार पूजन करे और रात्रिके समय उत्तम गोदुग्धकी खीरमें घी और सफेद खाँड मिलाकर अर्द्धरात्रिके समय भगवान्के अर्पण करे। साथ ही पूर्ण चन्द्रमाके मध्याकाशमें स्थित होनेपर उनका पूजन करे और पूर्वोक्त प्रकारकी खीरका नैवेद्य अर्पण करके दूसरे दिन उसका भोजन करे।

महाष्टमी–

आश्विन शुक्ल अष्टमीको देवीकी उपासनाके अनेक अनुष्ठान होते हैं, इस कारण यह महाष्टमी मानी जाती है। इसमें सप्तमीका वेध वर्जित और नवमीका ग्राह्य होता है। इस दिन देवी शक्ति धारण करती हैं और नवमीको पूजा समाप्त होती है; अतएव सप्तमीवेधसंयुक्त महाष्टमीको पूजनादि करनेसे पुत्र, स्त्री और धनकी हानि होती है। यदि अष्टमी मूलयुक्त और नवमी पूर्वाषाढ़ायुक्त हो अथवा दोनोंसे युक्त हो तो वह महानवमी होती है। यदि सूर्योदयके समय अष्टमी और सूर्यास्त के समय नवमी हो और भौमवार हो तो यह योग अधिक श्रेष्ठ होता है। महाष्टमीके प्रातः कालमें पवित्र होकर भगवतीकी वस्त्र, शस्त्र, छत्र, चामर और राजचिह्नादिसहित पूजा करे। यदि उस समय भद्रा हो तो सायंकालके समय करे और अर्द्धरात्रिमें बलिप्रदान करे। कई स्थानोंमें इस दिन 'अखिलकारिणी' (खिलगानी) देवीका पूजन किया जाता है। वह भद्रावर्जित सायंकाल या प्रात:काल किसीमें भी किया जा सकता है । उसमें त्रिशूलमात्रकी पूजा होती है।

यमद्वितीया

कार्तिक शुक्ल द्वितीयाको यमका पूजन किया जाता है, इससे यह 'यमद्वितीया' कहलाती हैं और इस दिन भाई अपनी बहिन के घर भोजन करते हैं, इसलिये यह 'भइया दूज' नामसे भी विख्यात है। हेमाद्रिके मत से यह द्वितीया मध्याह्नव्यापिनी पूर्वविद्धा उत्तम होती है। स्मार्तमतमें आठ भागके दिनके पाँचवें भागकी श्रेष्ठ मानी है और स्कन्दके कथनानुसार अपराह्णव्यापिनी अधिक अच्छी होती है।

शुक्लैकादशी -

भाद्रपद शुक्ल 'पद्मा'एकादशीको प्रातः स्नानादिके अनन्तर भगवान्का यथाविधि पूजनकरके उपवास करे और रात्रिके समय हरिस्मरणसहित जागरणकरके दूसरे दिन पूर्वाह्णमें पारणा करे ।"यह स्मरण रहे कि प्रभातसमय यदि श्रवण नक्षत्रके मध्यभागकी (लगभग २०) घड़ीका अंशहो तो उसमें पारणा न करे। यह भी स्मरण रहे कि मध्याह्नसे पहलेश्रवणका मध्य अंश न उतरे तो जल पीकर पारणा करे । प्राचीनकालमें सूर्यवंशके चक्रवर्ती मान्धाताने अपने राज्यकी तीन वर्षकीअनावृष्टिको मिटानेके लिये अंगिरा ऋषिके आदेशसे इसी 'पद्माएकादशी' के व्रतका अनुष्ठान किया था, उससे मान्धाताके राज्यमेंसर्वत्र सदैव अनुकूल वर्षा होती रही।यदि इस दिन श्रवण नक्षत्रहो तो यही 'विजया एकादशी' होती है। इसके व्रतसे सब प्रकारकेअभीष्ट सिद्ध होते हैं। इस दिन भगवान् वामनजीका पूजन

करनाआवश्यक होता है। व्रतीको चाहिये कि भाद्रपद शुक्ल एकादशीकोप्रातः-स्नानादि करके भगवान् वामनजीकी सुवर्णकी मूर्ति बनवावेऔर 'मत्स्य, कूर्म, वाराह' आदिके नामोच्चारणसहित गन्ध-पुष्पादिसभी उपचारोंसे उसका यथाविधि पूजन करे। दिनभर उपवास रखेऔर रात्रिमें जागरण करके दूसरे दिन फिर उसका पूजन करकेउपस्थित देय द्रव्यादि ब्राह्मणोंको देकर उनको भोजन करावे औरफिर स्वयं भोजन करके व्रत समाप्त करे।

तुलसीविवाह–

पद्मपुराणमें कार्तिकशुक्ल नवमीको तुलसीविवाहका उल्लेख किया गया है; किंतु अन्यग्रन्थोंके अनुसार प्रबोधिनीसे पूर्णिमापर्यन्तके पाँच दिन अधिक फलदेते हैं। व्रतीको चाहिये कि विवाहके तीन मास पूर्व तुलसीके पेड़कोसिंचन और पूजनसे पोषित करे। प्रबोधिनी या भीष्मपंचक अथवाज्योतिःशास्त्रोक्त विवाह मुहूर्तमें तोरण- मण्डपादिकी रचना करकेचार ब्राह्मणोंको साथ लेकर गणपति-मातृकाओंका पूजन, नान्दीश्राद्धऔर पुण्याहवाचन करके मन्दिरकी साक्षात् मूर्तिके साथ सुवर्णकेलक्ष्मीनारायण और पोषित तुलसीके साथ सोने और चाँदीकी तुलसीकोशुभासनपर पूर्वाभिमुख विराजमान करे और सपत्नीक यजमानउत्तराभिमुख बैठकर 'तुलसी विवाह - विधि' के अनुसार गोधूलीयसमयमें 'वर' (भगवान्) - का पूजन, 'कन्या' (तुलसी) - का दान,कुशकण्डीहवन और अग्नि-परिक्रमा आदि करके वस्त्राभूषणादि देऔर यथाशक्ति ब्राह्मण - भोजन कराकर स्वयं भोजन करे।

कार्तिकीका उद्यापन–

कार्तिकशुक्ल चतुर्दशीको गणपति-मातृका, नान्दीश्राद्ध, पुण्याहवाचन, र्वतोभद्र,ग्रह और हवनकी यथापरिमित वेदी बनवाकर रात्रिके समय उनपरउक्त देवोंका स्थापन और पूजन करे। इसके लिये अपनी सामर्थ्यकेअनुसार सुवर्णकी भगवान्की सायुध-मूर्ति बनवाकर व्रतोद्यापनकौमुदी याव्रतोद्यापन-प्रकाशादिके अनुसार सर्वतोभद्रमण्डल स्थापित किये हुएसुवर्णादिके कलशपर उक्त मूर्तिका यथाविधि स्थापन, प्रतिष्ठा औरपूजन करके रात्रिभर जागरण करे और पूर्णिमाके प्रभातमें प्रातः स्नानादिकरके गोदान, अन्नदान, शय्यादान, ब्राह्मणभोजन (३० जोड़ा-जोड़ी) और व्रतविसर्जन करके जाति - बान्धवोंसहित भोजन करे।

वसंत पंचमी–

श्री पञ्चमी और सरस्वती पूजा के नाम से भी जाना जाता है. इस दिन माँ सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है. माँ सरस्वती को ज्ञान, संगीत, कला, विज्ञान, और शिल्प-कला की देवी माना जाता है. यह दिन विद्या आरम्भ या अक्षर अभ्यास्यम के लिये काफी शुभ माना जाता है. इसलिए आज के दिन माता-पिता अपने बच्चे को माता सरस्वती के आशीर्वाद के साथ विद्या आरम्भ कराते हैं. यह त्यौहार हिन्दू कैलेंडर में पञ्चमी तिथि को मनाया जाता है. ऐसा बताया जाता है कि जिस दिन पञ्चमी तिथि सूर्योदय और दोपहर के बीच में व्याप्त रहती है उस दिन को सरस्वती पूजा के लिये उपयुक्त माना जाता है.

3.6 बोध प्रश्न :

1 –विजयादशमी किसपक्ष में मनाया जाता है।

A .शुक्ल पक्ष B. कृष्ण पक्ष C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

2-दीपावलीकिस पक्ष में किया जाता है।

A .चैत्र मास B. कृष्ण पक्ष C. श्रावण मास D. शुक्ल पक्ष

3 –रक्षाबन्धनकिस पक्ष में होता है

A .भाद्रपदमासB. शुक्ल पक्षC. कृष्ण पक्ष D. कार्तिक मास

4 –महाष्टमीकिस पक्ष में होता है

A .शुक्ल पक्षB. वैशाख C. श्रावण मास D. कृष्ण पक्ष

3.7 सारांशः–

यह इकाई 3शुक्लपक्षीय एवं कृष्णपक्षीय व्रत शीर्षक से संबंधित है।इस इकाई से आप शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष के व्रत को अध्ययन किया है। इस इकाई को पढने के बाद आप जान चुके है कि कैन सा व्रत किस पक्ष में होता है और उस का क्या फल होता है। व्रत से कायिक, वाचिक, मानसिक शुद्धि होती है, पापों का शमन होता है इन्द्रिय दमन होताहै, अन्त:करण शुद्ध होता है। निर्मलता से प्रेम, सद्भावना आदिदैवी सम्पत्ति का विस्तार होता है। रोग भी एक प्रकार का पापही है वह भी व्रतोपवास से नष्ट हो जाता है। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार उसका विधान किया गया है जिससे ग्रह नक्षत्रादिका भी प्रभाव उस पर पड़ता है। शारीरिक शुद्धि, तथा आध्यात्मिक उन्नति होती है। श्रद्धा, भक्ति सद्विचार उत्पन्न होतेहैं

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. व्रत परिचय - गीताप्रस गोरखपुर

2. सनातन धर्म का वैज्ञानिक रहस्य – हिन्दी प्रचारक मंडल

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर –

1. शुक्ल पक्ष
2. कृष्ण पक्ष
3. शुक्ल पक्ष
4. शुक्ल पक्ष

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न -

1. शुक्लपक्षके प्रमुख व्रत का परिचय देते हुए उसके महत्वों पर प्रकाश डालियें।

2. कृष्णपक्षके प्रमुख व्रत को विस्तार पूर्वक लिखिये।

इकाई – 4 चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत

इकाई की संरचना

4.1 **प्रस्तावना**

4.2 उद्देश्य

4.3 व्रत का परिचय

4.4 चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत

4.5 बोध प्रश्न

4.6 सारांशः

4.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई -4 के बी. ऐ. कर्मकाण्ड विषय के तृतीय सेमेस्टर की BAKA(N)– 220 यह इकाई **चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत** शीर्षक से संबंधित है।भारतमें व्रतोंका सर्वव्यापी प्रचार है। सभी श्रेणीके नर-नारीसूर्य-सोम - भौमादिके एकभुक्तसाध्य व्रतसे लेकर एकाधिक कईदिनोंतकके अन्नपानादिवर्जित कष्टसाध्य व्रतोंतकको बड़ी श्रद्धासेकरते हैं। इनके फल और महत्त्व भी प्रायः सर्वज्ञात हैं। फिर भी यहसूचित कर देना अत्युक्ति न होगा कि 'मनुष्योंके कल्याणके लिये व्रतस्वर्गके सोपान अथवा संसार-सागरसे तार देनेवाली प्रत्यक्ष नौका है।'

यहॉ हम इस इकाई में **चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत** सम्बन्धित विषयों का अध्ययन विस्तार पूर्वक करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रतों को परिभाषित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रतों केमहत्त्व को समझा सकेंगे।
- चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रतोंनिरूपण करने में समर्थ होंगे।
- चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत कब -कब किया जाता है आप जान सकेगें।

4.3 व्रत का परिचय

व्रत के लक्षण के विषय में हेमाद्रि व्रत खण्ड में लिखा हैकि किसी लक्ष्य को सामने रखकर विशेष संकल्प के साथ लक्ष्यसिद्धि के अर्थ की जाने वाली क्रिया विशेष का नाम व्रत है।व्रत नित्य, नैमित्तिक और काम्य के भेद से तीन प्रकार के होतेहैं। एकादशी आदि के व्रत नित्य व्रत हैं, पापाय आदि निमित्तको लेकर अनुष्ठान किये गये चान्द्रायण आदि व्रत नैमित्तिकहैं और किसी विशेष तिथि में किसी विशेष कामना के साथअनुष्ठित व्रत काम्य व्रत कहलाते हैं।

व्रत तथा उपवास में बड़ा लाभ अन्तर्निहित है, एवं इसमेंसभी लोगों का अधिकार है। कहा गया है कि-

व्रतोपवास नियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा।

वर्णाः सर्वेऽपिमुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः ।।

अर्थात् व्रत, उपवास, नियम तथा शरीरिक तप के द्वारासभी वर्ण के मनुष्य पापमुक्त होकर पुण्य प्रभाव से उत्तम गतिप्राप्त करते हैं इसमें कोई भी संशय नहीं है। वेदों में भी व्रत कावर्णन है यथा-

'वयंसोमव्रते तव' (यजुर्वेद ३।५६)

'अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि (यजुर्वेद १५)

हेमाद्रि व्रतखण्ड में भी लिखा है कि चारों वर्ण के स्त्रीपुरुषों का व्रत में अधिकार है-

"चतुर्णामपि वर्णानां स्त्री पुं साधारण्येन व्रतेष्वाधिकारः ।"

व्रत से आध्यात्मिक लाभ के साथ ही साथ आधिदैविक औरआधिभौतिक लाभ भी होता है। जिसका वर्णन इस प्रकार है-

एकादशी अमावस्या पूर्णिमा आदि तिथियों पर प्रायः व्रतकिया जाता है। इन तिथियों पर ग्रहों नक्षत्रों का आकर्षण भीपृथ्वी पर अधिक रहता है तथा शरीर में पार्थिव तत्त्व कीप्रधानता रहने के कारण शरीर पर भी उसका प्रभाव पड़ता है।इस लिये इन तिथियों पर व्रत तथा उपवास स्वास्थ्य के लियेबहुत ही लाभदायक तथा हितकारी होता है। व्रत के समयऋषियों ने कुछ ऐसे नियम बना दिये हैं जिससे मनुष्य कीउद्दाम प्रवृत्तियां स्वयं ही शान्त हो जाती हैं। आहार न होनेसे विषय वृत्ति नष्ट होती है। भगवान् श्री कृष्णजी ने भीश्रीमद्भगवद् गीता में कहा है कि निराहारी जीव के विषयनिवृत्त हो जाते हैं-

'विषया विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः '(गीता २।५६)

व्रत में संयम के कारण इन्द्रियों की उत्तेजना तथा विकारशान्त होते हैं। व्रत के दूसरे दिन शरीर, इन्द्रिय तथा मननिर्मल हो जाता है और पाचन यन्त्र स्वस्थ होकर शक्ति अर्जनकरके सुचारु रूप से कार्य करने लगता है।

4.4चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत

1 . चैत्र माह का प्रमुख व्रत

गौरीव्रत –

यह चैत्र कृष्ण प्रतिपदासेचैत्र शुक्ल द्वितीयातक किया जाता है। इसको विवाहिता और कुमारीदोनों प्रकारकी स्त्रियाँ करती हैं। इसके लिये होलीकी भस्मऔर काली मिट्टी – इनके मिश्रणसे गौरीकी मूर्ति बनायी जाती हैऔर प्रतिदिन प्रात:कालके समय समीपके पुष्पोद्यानसे फल,पुष्प, दूर्वा और जलपूर्ण कलश लाकर उसको गीत- मन्त्रोंसेपूजती हैं। यह व्रत विशेषकर अहिवातकी रक्षा और पतिप्रेमकीवृद्धिके निमित्त किया जाता है।

होलामहोत्सव–

यह उत्सवहोलीके दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदाको होता है। लोकप्रसिद्धिमें इसेधुरेडी, छारंडी, फाग या बोहराजयन्ती कहते हैं। नागरिक नर-नारीइसे रंग, गुलाल, गोष्ठी, परिहास और गायन-वादनसे और लोगधूल-धमासा, जलक्रीडा और धमाल आदि से सम्पन्न करते हैं।आजकल इस उत्सवका रूप बहुत विकृत और उच्छृंखलतापूर्ण होगया है। लोगोंको सभ्यताके साथ भगवद्भावसे भरे हुए गीत आदिगाकर यह उत्सव मनाना चाहिये। इस उत्सवके चार उद्देश्य प्रतीतहोते हैं— (१) जनता जानती है कि होलीके जलानेमें प्रह्लादके निरापदनिकल जानेके हर्षमें यह उत्सव सम्पन्न होता है। (२) शास्त्रोंमें इसदिन इसी रूपमें 'नवान्नेष्टि' यज्ञ घोषित किया गया है, अतःनवप्राप्त नवान्नके सम्मानार्थ यह उत्सव किया जाता है। (३) यज्ञकीसमाप्तिमें भस्मवन्दन और अभिषेक किया जाता है, किंतु ये दोनोंकृत्य विशेषकर कुत्सित रूपमें होते हैं। (४) वैसे माघ शुक्लपंचमीसे चैत्रशुक्ल पंचमीपर्यन्तका वसन्तोत्सव स्वतः होता ही है।

संकष्टचतुर्थीव्रत–

यदि निकट भविष्यमेंकिसी अमिट संकटकी शंका हो या पहलेसे ही संकटापन्न अवस्थाबनी हुई हो तो उसके निवारणके निमित्त संकटचतुर्थीका व्रत करनाचाहिये। यह सभी महीनोंमें कृष्ण चतुर्थीको किया जाता है। इसमेंचन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि वह दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो प्रथम दिनका व्रत करे।

शीतलाष्टमी–

इस देशमें शीतलाष्टमीकाव्रत केवल चैत्र कृष्ण अष्टमीको होता है; किंतु स्कन्दपुराणमेंचैत्रादि ४ महीनोंमें इस व्रतके करनेका विधान है। इसमेंपूर्वविद्धा अष्टमी ली जाती है।

संतानाष्टमी–

यह व्रत भी चैत्र कृष्णअष्टमीको ही किया जाता है। इसमें प्रातः स्नानादिके बादश्रीकृष्ण और देवकीका गन्धादिसे पूजन करे और मध्याह्नमेंसात्त्विक पदार्थोंका भोग लगाये।

कृष्णैकादशी–

यह व्रत चैत्रादिसभी महीनोंके शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षोंमें किया जाता है ।फल दोनोंका ही समान है। शुक्ल और कृष्णमें कोई विशेषतानहीं है। जिस प्रकार शिव और विष्णु दोनों आराध्य हैं, उसीप्रकार कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षोंकी एकादशी उपोष्य है ।विशेषता यह है कि पुत्रवान् गृहस्थ शुक्ल एकादशी औरवानप्रस्थ, संन्यासी तथा विधवा दोनोंका व्रत करें तो उत्तमहोता है । इसमें शैव और वैष्णवका भेद भी आवश्यक नहीं;क्योंकि जो जीवमात्रको समान समझे, निजाचारमें रत रहे औरअपने प्रत्येक कार्यको विष्णु और शिवके अर्पण करता रहे, वहीशैव और वैष्णव होता है। अतः दोनोंके श्रेष्ठ बर्ताव एक होनेसेशैव और वैष्णवोंमें अपने-आप ही अभेद हो जाता है। इससर्वोत्कृष्ट प्रभावके कारण ही शास्त्रोंमें एकादशीका महत्त्व' अधिकमाना गया है।

प्रदोषव्रत –

यह व्रत शिवजीकी प्रसन्नताऔर प्रभुत्वकी प्राप्तिके प्रयोजनसे प्रत्येक मासके कृष्णऔर शुक्ल दोनों पक्षोंमें त्रयोदशीको किया जाता है। शिवपूजनऔर रात्रि-भोजनके अनुरोधसे इसे 'प्रदोष" कहते हैं । इसका समयसूर्यास्तसे दो घड़ी रात बीतनेतक है। जो मनुष्य प्रदोषके समयपरमेश्वर (शिवजी) - के चरण-कमलका अनन्य मनसेआश्रय लेता है उसके धन-धान्य, स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धव औरसुख-सम्पत्ति सदैव बढ़ते रहते हैं । यदि कृष्ण पक्षमें सोमऔर शुक्ल पक्षमें शनि हो तो उस प्रदोषका विशेष फलहोता है । कृष्ण-प्रदोषमें प्रदोषव्यापिनी परविद्धा त्रयोदशी लीजाती है ।

नवरात्र–

ये चैत्र, आषाढ़, आश्विनऔर माघकी शुक्ल प्रतिपदासे नवमीतक नौ दिनके होते हैं;परंतु प्रसिद्धिमें चैत्र और आश्विनके नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं।इनमें भी देवीभक्त आश्विनके नवरात्र अधिक करते हैं । इनकोयथाक्रम वासन्ती और शारदीय कहते हैं । इनका आरम्भ चैत्र औरआश्विन शुक्ल प्रतिपदाको होता है । अतः यह प्रतिपदा' सम्मुखी'शुभ होती है।

रामनवमी –

इस व्रतकी चारों जयन्तियोंमेंगणना है। यह चैत्र शुक्ल नवमीको किया जाता है। इसमें मध्याह्नव्यापिनीशुद्धा तिथि ली जाती है । यदि वह दो दिन मध्याह्नव्यापिनीहो या दोनों दिनोंमें ही न हो तो पहला व्रत करना चाहिये । इसमेंअष्टमीका वेध हो तो निषेध' नहीं, दशमीका वेध वर्जित है। यहव्रत नित्य, नैमित्तिक और काम्य - तीन प्रकारका है। नित्यहोनेसे इसे निष्काम भावना रखकर आजीवन

किया जाय तोउसका अनन्त और अमिट फल होता है और किसी निमित्त याकामनासे किया जाय तो उसका यथेच्छ फल मिलता है। भगवान्रामचन्द्रका जन्महुआ, उस समय चैत्र शुक्ल नवमी, गुरुवार,पुष्य (या दूसरे मतसे पुनर्वसु), मध्याह्न और कर्क लग्न था ।उत्सवके दिन ये सब तो सदैव आ नहीं सकते, परंतु जन्मक्ष कई बारआ जाता है; अत: वह हो तो उसे अवश्य लेना चाहिये।'जो मनुष्यरामनवमीका भक्ति और विश्वासके साथ व्रत करते हैं, उनको महान्फल मिलता है।

2. वैशाख मास के प्रमुख व्रत

वैशाखस्नान –

चैत्र शुक्ल पूर्णिमासे वैशाख शुक्ल पूर्णिमातकप्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदयसे पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुआँ,बावली, सरोवर अथवा अपने घरपर ही शुद्ध जलसे स्नान करे औरनित्यकृत्यके अतिरिक्त — ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' या 'हरे रामहरे राम०' मन्त्रका यथाशक्ति जप करके एक बार भोजन करे ।इकतीस दिनतक ऐसा क्रम रखनेसे अनेक प्रकारके रोग और दोषदूर होते हैं एवं प्रभाव तथा पुण्य बढ़ता है।

संकष्टचतुर्थी –

यह व्रत प्रत्येक महीनेकी कृष्णचतुर्थीको किया जाता है। इसमें चन्द्रोदयतक रहनेवाली चतुर्थीग्रहण की जाती है। यदि दो दिन ऐसी चतुर्थी हो तो 'मातृविद्धाप्रशस्यते' के अनुसार तृतीयासे युक्त व्रत करना चाहिये। उसदिन सायंकाल के समय स्नान करके गणेशजीका पूजन करे औरचन्द्रोदय होनेपर उन्हें अर्घ्य दे।

चण्डिकानवमी–

यह व्रत वैशाखके दोनों पक्षोंमेंनवमीको किया जाता है। उस दिन प्रातः स्नानके पश्चात् लालधोती पहनकर सुगन्धयुक्त पुष्पादिसे चण्डिका देवीका पूजन करेऔर पुष्पांजलि अर्पण कर उपवास रखे। इस व्रतका सविधिअनुष्ठान करनेवाला मनुष्य हंस, कुन्द और चन्द्रमाके समानगौरवर्ण एवं ध्रुवके समान तेजस्वी दिव्य स्वरूप धारणकर उत्तमविमानपर आरूढ़ हो देवलोकमें आदर पाता है।

कृष्णैकादशी –

वैशाख कृष्णकी एकादशीका नाम वरूथिनीहै। इसका व्रत करनेसे सब प्रकारके पाप-ताप दूर होते हैं, अनन्तशान्ति मिलती है और स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होते हैं। व्रतीकोचाहिये कि वह दशमीको हविष्यान्नका एक बार भोजन करे । कांस्यपात्रमांस और मसूरादि ग्रहण न करे। फिर एकादशीको उपवास करे,उस दिन जूआ और निद्रा आदिका त्याग रखे। रात्रिमें भगवन्नाम-स्मरणपूर्वक जागरण करे और द्वादशीको मांस - कांस्यादिका परित्यागकरके यथाविहित पारणा करे। (वास्तवमें द्यूतक्रीड़ा आदिका तथामांस आदिका सदा ही त्याग करना चाहिये)।

प्रदोषव्रत –

यह सुप्रसिद्ध व्रत है। प्रत्येक मासकी कृष्ण-शुक्ल त्रयोदशीको किया जाता है। इसका विशेष विवरण वैशाखशुक्लमें देखिये। व्रतीको चाहिये कि वह व्रतके दिन सूर्यास्तके समयपुनः स्नान करके शिवजीके समीप बैठकर उनका भक्तिसहित पूजनकरे और सूर्यास्तसे दो या तीन घड़ी रात्रि व्यतीत होनेसे पहले हीभोजन करके शिवका स्मरण करे।

अमाव्रत —

अमावास्या पर्वतिथि है। इसमें दान, पुण्य, जप,तप और व्रत करनेसे बहुत फल होता है। विशेषरूपसे इस तिथिकोश्राद्ध करनेसे पितृगण प्रसन्न होते हैं।

अक्षयतृतीया–

वैशाख शुक्ल तृतीयाको अक्षयतृतीयाकहते हैं। यह सनातनधर्मियोंका प्रधान त्यौहार है। इस दिन दिये हुएदान और किये हुए स्नान, होम, जप आदि सभी कर्मोंका फलअनन्त' होता है - सभी अक्षय हो जाते हैं; इसीसे इसका नाम अक्षया हुआ है। इसी तिथिको नर-नारायण, परशुराम और हयग्रीव अवतारहुए थे; इसलिये इस दिन उनकी जयन्ती मनायी जाती है तथा इसीदिन त्रेतायुग भी आरम्भ हुआ था। अतएव इसे मध्याह्नव्यापिनीग्रहण करना चाहिये। परंतु परशुरामजी प्रदोषकालमें प्रकट हुए थेइसलिये यदि द्वितीयाको मध्याह्नसे पहले तृतीया आ जाय तो उसदिन अक्षयतृतीया, नर-नारायण - जयन्ती, परशुराम जयन्ती और हयग्रीवजयन्ती सब सम्पन्न की जा सकती हैं और यदि द्वितीया अधिक होतो परशुराम जयन्ती दूसरे दिन होती है। यदि इस दिन गौरीव्रत भीहो तो 'गौरी विनायकोपेता' के अनुसार गौरीपुत्र गणेशकी तिथिचतुर्थीका सहयोग अधिक शुभ होता है। अक्षयतृतीया बड़ी पवित्रऔर महान् फल देनेवाली तिथि है।

परशुराम जयन्ती –

परशुरामजीका जन्म वैशाख शुक्ल तृतीयाकोरात्रिके प्रथम प्रहरमें हुआ था, अत: यह प्रदोषव्यापिनी ग्राह्य होती है।यदि दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो दूसरा व्रत करना चाहिये।

वैशाखी अष्टमी–

इसके निमित्त वैशाखशुक्ल अष्टमीको आमके रससे स्नान करके अपराजिता देवीकोउशीर और जटामासीके जलसे स्नान करावे। फिर पंचगन्ध(जायफल,पूगफल, कपूर, कंकोल और लौंग) - का लेपन करे और गन्ध-पुष्पादिसे पूजन करके घी, शक्कर तथा खीरका भोग लगावे। स्वयंउपवास करे और दूसरे दिन नवमीको ब्राह्मण - भोजन कराकरभोजन करे तो समस्त तीर्थोंमें स्नान करनेके समान फल होता है।

श्रीजानकी नवमी –

वैष्णवोंके मतानुसार वैशाख शुक्लनवमीको भगवती जानकीका प्रादुर्भाव हुआ था। अतएव इस दिनव्रत रहकर उनका जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिये।

वैशाखी व्रत -

वैशाखी पूर्णिमा बड़ी पवित्र तिथि है। इस दिन दान-धर्मादिकेअनेक कार्य किये जाते हैं। अतः यह उदयसे उदयपर्यन्त हो तोविशेष श्रेष्ठ होती है। अन्यथा कार्यानुसार लेनी चाहिये। इस दिन(१) धर्मराजके निमित्त जलपूर्ण कलश और पकवान देनेसेगोदानके समान फल होता है। (२) यदि पाँच या सातब्राह्मणोंको शर्करासहित तिल दे तो सब पापोंका क्षय हो जाताहै। (३) इस दिन शुद्ध भूमिपर तिल फैलाकर उसपर पूँछ औरसींगोंसहित काले मृगका चर्म बिछावे और उसे सब प्रकारकेवस्त्रों सहित दान करे तो अनन्त फल होता है। (४) यदि तिलोंकेजलसे स्नान करके घी, चीनी और तिलोंसे भरा हुआ पात्रविष्णुभगवान्‌को निवेदन करे और उन्हींसे अग्निमें आहुति देअथवा तिल और शहदका दान करे, तिलके तेलके दीपकजलावे, जल और तिलोंका तर्पण करे अथवा गंगादिमें स्नान करेतो सब पापोंसे निवृत्त होता है। (५) यदि इस दिन एक समयभोजन करके पूर्णिमा, चन्द्रमा अथवा सत्यनारायणका व्रत करे तोसब प्रकारके सुख, सम्पदा और श्रेयकी प्राप्ति होती है।

3. ज्येष्ठमास के प्रमुख व्रत

संकष्टचतुर्थीव्रत –

ज्येष्ठकृष्णा चतुर्थीको,जो चन्द्रोदयतक रहनेवाली हो, प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करकेव्रतके संकल्पसे दिनभर मौन रहे। सायंकालमें पुनः स्नान करकेगणेशजीका और चन्द्रोदय होनेपर चन्द्रमाका पूजन करे तथाशंखमें दूध, दूर्वा, सुपारी और गन्धाक्षत लेकर 'ज्योत्स्नापतेनमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते । नमस्ते रोहिणीकान्त गृहाणार्घ्यंनमोऽस्तु ते॥' इस मन्त्रसे चन्द्रमाको 'गौरीसुत नमस्तेऽस्तुसततं मोदकप्रिय। सर्वसंकटनाशाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥इस मन्त्रसे गणेशजीको और 'तिथीनामुत्तमे देवि गणेशप्रियवल्लभे।गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदायिके ॥' इस मन्त्रसे चतुर्थीकोअर्घ्य दे तथा वायन दान करके भोजन करे।

कृष्णैकादशीव्रत –

एकादशीका व्रतकरनेवाला दशमीको जौ, गेहूँ और मूँगके पदार्थका एक बार भोजनकरे। एकादशीको प्रातः स्नानादि करके उपवास रखे और द्वादशीकोपारण करके भोजन करे । इस एकादशीका नाम 'अपरा' है। इसकेव्रतसे अपार पाप दूर होते हैं । जो लोग सद्वैद्य होकर गरीबोंका इलाजनहीं करते, षट्शास्त्री होकर बिना माँ-बाप बच्चोंको नहीं पढ़ाते,सद्व्रत राजा होकर भी गरीब प्रजाको कभी नहीं सँभालते, सबलहोकर भी अपाहिजको आपत्तिसे नहीं बचाते और धनवान् होकरभी आपद्ग्रस्त परिवारोंको सहायता नहीं देते, वे नरकमें जानेयोग्यपापी होते हैं । किंतु अपराका व्रत ऐसे व्यक्तियोंको भी निष्पापकरके वैकुण्ठमें भेज देता है।

प्रदोषव्रत -

यह कृष्ण, शुक्ल दोनों पक्षकी प्रदोषव्यापिनीत्रयोदशीको किया जाता है। उस दिन सायंकालके समयशिवजीका पूजन करके दो घड़ी रात जानेके पहले एक बारभोजन करना चाहिये। विशेष बातें ऊपर लिखी जा चुकी हैं।

अमाव्रत –

इस दिन परलोकस्थ पितृगणोंको प्राप्त करानेकेलिये कई प्रकारके दान-पुण्य किये जाते हैं तथा तीर्थस्नान, जप-तपऔर व्रतादिका भी नियम है। इन सबके पुण्यांश सूर्य – किरणोंसेआकर्षित होकर परलोकमें यथायोग्य प्राप्त होते हैं।

वटसावित्रीव्रत –

यह व्रत स्कन्द और भविष्योत्तरकेअनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमाको और निर्णयामृतादिके अनुसारअमावस्याको किया जाता है । इस देशमें प्रायः अमावस्याको हीहोता है । संसारकी सभी स्त्रियोंमें ऐसी कोई शायद ही हुई होगी,जो सावित्रीके समान अपने अखण्ड पातिव्रत्य और दृढ़ प्रतिज्ञाकेप्रभावसे यमद्वारपर गये हुए पतिको सदेह लौटा लायी हो । अतः, सधवा, बालिका, वृद्धा, सपुत्रा, अपुत्रा सभी स्त्रियोंकोसावित्रीका व्रत अवश्य करना चाहिये ।

पार्वती - पूजा–

ज्येष्ठ शुक्ला तृतीयाकोपार्वतीका जन्म हुआ था। अतः स्त्रियोंको चाहिये कि वे अपनेसुखऔर सौभाग्यादिकी वृद्धिके लिये इस दिन उनका प्रीतिपूर्वक पूजनकरें तथा विविध प्रकारके फल, पुष्प और नैवेद्यादि अर्पण करकेगायन-वादन और नृत्यके साथ उनका जन्मोत्सव मनावें ।

शिव - पूजा –

ज्येष्ठ मासके कृष्ण या शुक्लकिसी पक्षकी अष्टमीको शिवजीका और केवल शुक्लाष्टमीकोशुक्लादेवीका यथाविधि पूजन करे । शुक्लादेवीने जब दानवोंकासंहार किया था, तब देवताओंने उनका पूजन किया था । अतःआपत्तियोंकी निवृत्तिके लिये मनुष्योंको भी यह व्रत करना चाहिये ।

उमा ब्राह्मणी–

ज्येष्ठ शुक्ल नवमीकोउपवास करके ब्राह्मणी नामकी श्वेतवर्णा पार्वतीका भक्तिसहितपूजन करे और ब्राह्मण तथा ब्राह्मणकी कन्याको दूध मिले हुएभातका भोजन कराकर रात्रिमें स्वयं भोजन करे ।

दशहराव्रत'–

ज्येष्ठ शुक्ला दशमीकोहस्त नक्षत्रमें स्वर्गसे गंगाका आगमन हुआ था। अतएव इस दिनगंगा आदिका स्नान, अन्न-वस्त्रादिका दान, जप-तप – उपासनाऔर उपवास किया जाय तो दस प्रकारके पाप (तीन प्रकारके,कायिक, चार प्रकारके वाचिक और तीन प्रकारके मानसिक) दूरहोते हैं। यदि इस दिन १ ज्येष्ठ, २ शुक्ल, ३ दशमी, ४ बुध, ५ हस्त,६ व्यतीपात, ७ गर, ८ आनन्द, ९ वृषस्थ रवि और १० कन्याकाचन्द्र हो तो यह अपूर्वयोग' महाफलदायक होता है। इसमें योगविशेषका बाहुल्य होनेसे पूर्वा या पराका विचार समयपर करकेजिस दिन उपर्युक्त योग अधिक हों उस दिन स्नान, दान, जप, तप,व्रत और उपवास आदि करने चाहिये । यदि ज्येष्ठ अधिक मास होतो ये काम शुद्धकी अपेक्षा

मलमासमें करनेसे ही अधिक फल होताहै। दशहरा दिन दशाश्वमेधमें दस प्रकार स्नान करके शिवलिंगकादस संख्याके गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और फल आदिसे पूजनकरके रात्रि को जागरण करे तो अनन्त फल होता है।

निर्जलैकादशीव्रत –

यह व्रत ज्येष्ठ शुक्लाएकादशीको किया जाता है। इसका नाम निर्जला है; अतः नामकेअनुसार इसका व्रत किया जाय तो स्वर्गादिके सिवा आयु औरआरोग्यवृद्धिके तत्त्व विशेषरूपसे विकसित होते हैं। व्यासजीकेकथनानुसार यह अवश्य सत्य है कि 'अधिमाससहित एक वर्षकीपचीस एकादशी न की जा सकें तो केवल निर्जला * करनेसे ही पूराफल प्राप्त हो जाता है ।' निर्जला व्रत करनेवाला पुरुष अपवित्रअवस्थाके आचमनके सिवा बिन्दुमात्र जल भी ग्रहण न करे। यदिकिसी प्रकार उपयोगमें ले लिया जाय तो उससे व्रत भंग हो जाताहै। दृढ़तापूर्वक नियमपालनके साथ निर्जल उपवास करके द्वादशीकोस्नान करे और सामर्थ्यके अनुसार सुवर्ण और जलयुक्त कलशदेकर भोजन करे तो सम्पूर्ण तीर्थोंमें जाकर स्नान-दानादि करने केसमान फल होता हैएक बार बहुभोजी भीमसेनने व्यासजीके मुखसे प्रत्येक एकादशीकोनिराहार रहनेका नियम सुनकर विनम्र भावसे निवेदन किया कि'महाराज ! मुझसे कोई व्रत नहीं किया जाता । दिनभर बड़ी तीव्रक्षुधा बनी ही रहती है। अतः आप कोई ऐसा उपाय बतला दीजियेजिसके प्रभावसे स्वतः सद्गति हो जाय ।' तब व्यासजीने कहा कि'तुमसे वर्षभरकी सम्पूर्ण एकादशी नहीं हो सकती तो केवल एकनिर्जला कर लो, इसीसे सालभरकी एकादशी करनेके समान फलहो जायगा ।' तब भीमने वैसा ही किया और स्वर्गको गये ।

शुक्लप्रदोष –

यह कृष्ण - शुक्ल दोनों पक्षोंमें प्रतिमासकिया जाता है। इसके नियम, विधान और पूजापद्धति आदिऊपर लिखे जा चुके हैं। आगे जो कुछ विशेष होगा यथास्थानलिख दिया जायगा ।

पंचतपव्रत –

ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशीकोपूर्वोक्त पाँच अग्नि प्रज्वलित करके दिनभर 'पंचधूनी' तपे औरसायंकालमें शिवजीकी प्रसन्नताके लिये सुवर्ण - धेनुका दान देकरभोजन करे तो शिवजीकी प्रसन्नता होती है ।

4. आषाढ़मास के प्रमुख व्रत

संकष्टचतुर्थी व्रत–

इसके सम्बन्धमें पहले वर्णन होचुका है उसके अनुसार पूर्वविद्धा चन्द्रोदयव्यापिनीमें व्रत करकेचन्द्रमाको अर्घ्य दे और हविष्यान्नका भोजन करे।

एकादशीव्रत–

आषाढ़ कृष्ण एकादशीकोप्रातः स्नानादि करके 'मम सकलपापक्षयपूर्वककुष्ठादिरोग-निवृत्तिकामनया योगिन्येकादशीव्रतमहं करिष्ये।' संकल्प करकेपुण्डरीकाक्षभगवान्का यथाविधि पूजन करे, उनके चरणोदकसे सबअंगोंका मार्जन करे और उपवास करके रात्रिमें जागरण करेतो कुष्ठादि सब रोगोंकी निवृत्ति हो जाती है। प्राचीन कालमेंकुबेरके कोपसे हेममालीको कोढ़ हो गया था, उसने महामुनिमार्कण्डेयजीके आज्ञानुसार योगिनी एकादशीका उपवास किया,जिससे उसकी सम्पूर्ण व्याधियाँ मिट गयीं और कुबेरने उसे अपनीसेवामें वापस बुला लिया।

प्रदोषव्रत –

यह नित्य - व्रत है। प्रत्येक त्रयोदशीकोकिया जाता है। इसके विधानादि गत महीनोंमें लिखे जा चुकेहैं। आगे जो कुछ विशेष होगा, यथासमय प्रकट किया जायगा।

रथयात्रा -

आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाको पुष्यनक्षत्रहो तो सुभद्रासहित भगवान्को रथमें विराजित कर यात्रा करावेऔर वापस पधार आनेपर यथास्थान स्थापित करे। इस दिनपुरीमें श्रीजगदीशभगवान्को सपरिवार विशाल रथपर आरूढ़करके भ्रमण करवाते हैं। उस दिन वहाँ रथयात्राका अद्वितीयउत्सव होता है। देश-देशान्तरके लाखों नर-नारी एकत्र होते हैं।उसी दिन अन्यत्र (जयपुर आदिमें) भगवान् रामचन्द्रजीको रथारूढ़करके मन्दिरसे दूसरी जगह ले जाकर वाल्मीकिरामायणके युद्धकाण्डकापाठ सुनाते हैं और वहीं मुक्ताधान्यसे बीजवपन करके चातुर्मासीयकृषिकार्यका शुभारम्भ करते हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि उस दिनभगवद्भक्तोंके यहाँ व्रत होता है और महोत्सव मनाया जाता है।

स्कन्दषष्ठीव्रत –

यह व्रत पंचमीयुक्त कियाजाता है। आषाढ़ शुक्ल पंचमीको उपवास करे। षष्ठीको स्कन्दकापूजन करे और फिर एक बार भोजन करे। यह षष्ठी तिथि कुमारकार्तिकेयजीकी तिथि है, इसलिये इसे कौमारिकी कहते हैं।

अम्बिकाव्रत –

आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशीकोउपवास करके पूर्णिमाके प्रातः काल अम्बिकादेवीका विधिवत् पूजनकरनेसे यज्ञके समान फल होता है और व्रती विष्णुलोकमें जाता है।

विश्वेदेवपूजन–

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमाकोपूर्वाषाढ़ा हो तो महाबली दस विश्वेदेवोंका पूजन करे, इससेउनकी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

शिवशयनव्रत–

आषाढ़ शुक्लपूर्णिमाको जटाजूटकी व्यवस्थाके विचारसे शिवजी सिंह – चर्मकेविस्तरपर शयन करते हैं, अतः उस दिन पूर्वविद्धा पूर्णिमामें शिवपूजनकरके रुद्रव्रत करनेसे शिवलोककी प्राप्ति होती है।

वायुधारिणी पूर्णिमा (ज्योतिःशास्त्र) –

आषाढ़ शुक्लपूर्णिमाको सूर्यास्त के समय गणेशादिका पूजन करके सुदीर्घशंकुके अग्रभागमें मन्दवायुके संचालनमात्रसे संचालित होनेवालेतूलिकापुष्प (रूईके फोये) - को लटकाकर सीधा खड़ा करे औरजिस दिशाकी हवा हो उसके अनुसार * शुभाशुभ निश्चित करेअक्षय तृतीयाके अनुसार इस पूर्णिमाको भी कलशस्थापन करकेअनेक प्रकारकी वनौषधि, धान्य, प्रख्यात देश और उनकेअधिपति एवं विख्यात व्यक्तियोंके नाम पृथक्-पृथक् तौलकरकपड़े की अलग-अलग पोटलियोंमें बाँधकर कलशके समीपस्थापन करते हैं और दूसरे दिन उसी प्रकार फिर तौलकर उनकेन्यून, सम और अधिक होनेपर अन्नादिके मँहगे, सस्ते एवंदेशविशेष और व्यक्तियोंके ह्रास, यथावत् और वृद्धि होनेका ज्ञानप्राप्त करते हैं।

व्यासपूजा पूर्णिमा–

आषाढ़ शुक्लपूर्णिमाको प्रातः स्नानादि नित्य-कर्म करके ब्राह्मणोंसहित'गुरुपरम्परासिद्ध्यर्थं व्यासपूजां करिष्ये ।' से संकल्प करकेश्रीपर्णीवृक्षकी चौकीपर तत्सम धौतवस्त्र फैलाकर उसपर प्रागपर(पूर्वसे पश्चिम) और उदगपर (उत्तर से दक्षिण) - को गन्धादिसेबारह-बारह रेखा बनाकर व्यास - पीठ निश्चित करे और दसों दिशाओंमेंअक्षत छोड़कर दिग्-बन्धन करे । फिर ब्रह्म, ब्रह्मा,

परापरशक्ति,व्यास, शुकदेव, गौडपाद, गोविन्दस्वामी और शंकराचार्यका नाममन्त्रसेआवाहनादि पूजन करके अपने दीक्षागुरु (तथा पिता, पितामह,भ्राता आदि)-का देवतुल्य पूजन करे। विशेष विस्तृत विधानशंकराचार्यविरचित 'व्यासपूजाविधि' में देखना चाहिये।

5. श्रावण मास के प्रमुख व्रत

अशून्यशयनव्रत –

यह श्रावण कृष्ण द्वितीयासेमार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीयापर्यन्त किया जाता है । इसमें पूर्वविद्धा तिथिली जाती है। यदि दो दिन पूर्वविद्धा हो या दोनों दिन न हो तोपरविद्धा लेनी चाहिये। इसमें शेषशय्यापर लक्ष्मीसहित नारायण शयनकरते हैं, इसी कारण इसका नाम अशून्यशयन है । यह प्रसिद्ध है किदेवशयनीसे देवप्रबोधिनीतक भगवान् शयन करते हैं। साथ ही यहभी प्रसिद्ध है कि इस अवधिमें देवता सोते हैं और शास्त्रसे यही सिद्धहोता है कि द्वादशीको भगवान्, त्रयोदशीको काम, चतुर्दशीको यक्ष,पूर्णिमाको शिव, प्रतिपदाको ब्रह्मा, द्वितीयाको विश्वकर्मा और तृतीयाकोउमाका शयन होता है। व्रतीको चाहिये कि श्रावण कृष्ण द्वितीयाकोप्रातः स्नानादि करके श्रीवत्सचिह्नसे युक्त चार भुजाओंसे भूषितशेषशय्यापर स्थित और लक्ष्मीसहित भगवान्का गन्ध-पुष्पादिसेपूजन करे। दिनभर मौन रहे । व्रत रखे और सायंकाल पुनः स्नानकरके भगवान्का शयनोत्सव मनावे। फिर चन्द्रोदय होनेपर अर्घ्यपात्रमेंजल, फल, पुष्प और गन्धाक्षत रखकर 'गगनांगणसंदीपक्षीराब्धिमथनोद्भव। भाभासितदिगाभोग रमानुज नमोऽस्तु ते ॥'(पुराणान्तर) – इस मन्त्रसे अर्घ्य दे और भगवान्को प्रणाम करकेभोजन करे।

कज्जली तृतीया –

यदि श्रावण कृष्ण तृतीयाकोश्रवण नक्षत्र हो तो विष्णुका पूजन करके व्रत करे। इसमेंपरविद्धा ग्राह्य होती है।

स्वर्णगौरीव्रत (स्कन्दपुराण) –

यह श्रावण कृष्ण तृतीयाकोकिया जाता है। उस दिन प्रातः स्नानादि करके शुद्ध भूमिकी मृत्तिकासेगौरीकी मूर्ति बनावे। उसके समीप सूत या रेशमके १६ तारका डोराबनाकर उसमें १६ गाँठ लगाकर स्थापित करे। फिर गौरीका आवाहनादिषोडश उपचारोंसे पूजन करके डोरेको दाहिने हाथमें बाँधे और व्रतकरे। इस प्रकार १६ वर्ष करनेके बाद उद्यापन करे। उद्यापनमें एकवेदीपर अष्टदल बनाकर

उसपर कलश स्थापित करे और कलशपरशिवगौरीकी सुवर्णमयी मूर्ति प्रतिष्ठित करके यथाविधि पूजन करेऔर प्रार्थना करके स्वर्णादिनिर्मित और १६ ग्रन्थियुक्त डोरेका पूजनकरे

संकष्टचतुर्थी (भविष्योत्तरपुराण) –

यह व्रत श्रावण कृण्ण चतुर्थी को किया जाता है इसमें चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी ली जाती हैं। यदि दो दिन वैसी हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वविद्धा लेना चाहिये।

शीतलासप्तमी –

यह व्रत श्रावणकृष्ण सप्तमीको किया जाता है। इसमें मध्यानव्यापिनी तिथि लीजाती है। पूजाविधि और स्तोत्रपाठादि चैत्रके समान हैं। कथा यह हैकि हस्तिनापुरके राजा इन्द्रद्युम्नकी धर्मशीला नामकी रानीके महाधर्मनामका पुत्र और गुणोत्तमा नामकी पुत्री थी । समयपर पुत्रीका विवाहहुआ । रथारूढ़ होकर पति - पत्नी घर गये । दैवयोगसे रास्तेमें पतिअदृश्य हो गये। पतिवियोग मानकर पत्नीने विलाप किया । अन्तमेंशीतल उपचारोंसे शीतलादेवीका पूजन करनेसे पतिदेव प्रकट हुएऔर प्रसन्नचित्तसे घर जाकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत किये।

कुमारीपूजा–

श्रावण कृष्णऔर शुक्ल दोनों पक्षकी नवमीको चाँदीकी बनी हुई कुमारीनामकी देवीका पूजन करे । मलयज चन्दन, कनेरके पुष्प, दशांगधूप, घृतपूर्ण दीपक और घीमें पकाये हुए मोदकादिसे पूजनकरके ब्राह्मण, ब्राह्मणी और कुमारीको भोजन करावे। स्वयंबिल्वपत्र भक्षण करे तो परम तत्त्व प्राप्त होता है।

कृष्णैकादशी–

श्रावण कृष्ण एकादशीकोउपवास करके श्रीकृष्णका पूजन करे । तुलसीदल और उसकीमंजरी चढ़ावे। घीका दीपक प्रज्वलित रखे और यथाशक्ति दानदे तो अनन्त फल होता है। इसका नाम 'कामिका' है।

प्रदोषव्रत–

यह प्रत्येक त्रयोदशीको किया जाता है।परंतु श्रावणमें सोम प्रदोष हो तो वह विशेष फल देता है। उसदिन ग्रामसे बाहर किसी पुष्पोद्यानके शिवमन्दिरमें जाकर शिवपूजन करे और दो घड़ी रात्रि जानेसे

पहले एक बार भोजन करेतो शिवजी प्रसन्न होते हैं। इसके सिवा श्रावणमें शिवजीकेप्रीत्यर्थ चार सोमव्रत और होते हैं, जो श्रावणके अन्तर्गत ही हैं।

अमाव्रत –

देशभेदके अनुसार श्रावण कृष्ण अमावस्याको'हरिता' (या हरियाली अमा) कहते हैं। इस दिन किसी एकान्तस्थानके जलाशयपर जाकर स्नान-दानादि करे और ब्राह्मणोंकोभोजन करावे तो पितृगण प्रसन्न होते हैं।

दूर्वागणपति –

यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थीकोकिया जाता है। इसमें मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदिवह दो दिन हो या दोनों दिन न हो तो 'मातृविद्धा प्रशस्यते' केअनुसार पूर्वविद्धा व्रत करना चाहिये उस दिन प्रातः स्नानादि करकेसुवर्णके गणेशजी बनवावे जो एकदन्त, चतुर्भुज, गजानन औरस्वर्णसिंहासनस्थ हों। उनके अतिरिक्त सोनेकी दूर्वा बनवावे। फिरसर्वतोभद्र - मण्डलपर कलश स्थापन करके उसमें स्वर्णमय दूर्वालगाकर उसपर उक्त गणेशजीका स्थापन करे। उनको रक्तवस्त्रादिसेविभूषित करे और अनेक प्रकारके सुगन्धित पत्र, पुष्पादिसे पूजनकरे। बेलपत्र, अपामार्ग, शमीपत्र, दूब और तुलसीपत्र अर्पण करे।फिर नीराजन करके 'गणेश्वर गणाध्यक्ष गौरीपुत्र गजानन। व्रतंसम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादिभानन॥' इससे प्रार्थना करे। इस प्रकारतीन या पाँच वर्ष करनेसे सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होते हैं।

नागपंचमी –

यह व्रत श्रावण शुक्ल पंचमीको किया जाताहै। लोकाचार या देश-भेदवश किसी जगह कृष्णपक्षमें भी होता है।इसमें परविद्धा पंचमी ली जाती है। इस दिन सर्पोंको दूधसे स्नानऔर पूजन कर दूध पिलानेसे, वासुकीकुण्डमें स्नान करने, निजगृहके द्वारमें दोनों ओर गोबरके सर्प बनाकर उनका दधि, दूर्वा,कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, मोदक और मालपुआ आदिसे पूजा करनेऔर ब्राह्मणोंको भोजन कराकर एकभुक्त व्रत करनेसे घरमें सर्पोंकाभय नहीं होता है। यदि 'ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा' के परिमितजप करे तो सर्पविष दूर होता है।

पापनाशिनी सप्तमी –

यह व्रत श्रावणशुक्ल सप्तमीको हस्त नक्षत्र होनेसे उदयव्यापिनीमें किया जाताहै । उस दिन जगद्गुरु चित्रभानुका पूजन करके दान, पुण्य, हवनऔर व्रत करे तो किये हुएका अक्षय फल होता है और प्रत्येकप्रकारके पाप ताप दूर हो जाते हैं ।

दुर्गाव्रत –

श्रावण शुक्ल अष्टमीको प्रातः-स्नानादि नित्यकर्म करके पुनः स्नान करे और भीगे वस्त्र धारण कियेहुए ही देवीको स्नान कराके खीरका नैवेद्य भोग लगावे और स्वयं भीउसीका एक बार भोजन करे तो भगवती दुर्गाकी प्रसन्नता प्राप्त होती है।

शुक्लैकादशीव्रत–

श्रावण शुक्लकीएकादशी पवित्रा, पुत्रदा और पापनाशिनी होती है। इसके लियेपहले दिन मध्याह्नमें हविष्यान्नका एकभुक्तव्रत करके एकादशीकोप्रातः-स्नानादिके अनन्तर 'मम समस्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रावणशुक्लैकादशीव्रतमहं करिष्ये।' यह संकल्प करकेभक्तिभाव और विधानसहित भगवान्का पूजन करे और अनेकप्रकारके फल, पत्र, पुष्प और नैवेद्य अर्पण करके नीराजन करे।उसके बाद रात्रिके समय गायन, वादन, नर्तन, कीर्तन और कथाश्रवण करते हुए जागरण करे। दूसरे दिन पारणा करके यथाशक्तिब्राह्मण-भोजन करवाकर स्वयं भोजन करे । इस व्रतसे पापोंका नाशऔर पुत्रादिकी प्राप्ति होती है। पहले द्वापरयुगके आदिमें माहिष्मतीके राजामहीजित्के पुत्र नहीं था । उससे राजा - प्रजा दोनों चिन्तित थे । उन्होंने घोरवनमें तप करते हुए लोमश ऋषिसे प्रार्थना की, तब उन्होंने श्रावणशुक्ल एकादशीका व्रत करनेकी आज्ञा दी। तदनुसार ग्रामवासियोंसहितराजाने व्रत किया और उसके प्रभावसे उनको पुत्र प्राप्त हुआ ।

रक्षाबन्धन–

यह श्रावणशुक्ल पूर्णिमाको होता है। इसमें पराद्धव्यापिनी तिथि ली जाती है।यदि वह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वा लेनी चाहिये । यदिउस दिन भद्रा हो तो उसका त्याग करना चाहिये । भद्रामें श्रावणीऔर फाल्गुनी दोनों वर्जित हैं; क्योंकि श्रावणीसे राजाका और फाल्गुनीसेप्रजाका अनिष्ट होता है । व्रतीको चाहिये कि उस दिन प्रातः स्नानादिकरके वेदोक्त विधिसे रक्षाबन्धन, पितृतर्पण और ऋषिपूजन करेशूद्र हो तो मन्त्रवर्जित स्नान-दानादि करे। रक्षाके लिये किसी विचित्रवस्त्र या रेशम आदिकी 'रक्षा' बनावे।उसमें सरसों, सुवर्ण, केसर,चन्दन, अक्षत और दूर्वा रखकर रंगीन सूतके डोरेमें

बाँधे और अपनेमकानके शुद्ध स्थानमें कलशादि स्थापन करके उसपर उसका यथाविधिपूजन करे। फिर उसे राजा, मन्त्री, वैश्य या शिष्ट शिष्यादिके दाहिनेहाथमें **'येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामनुबध्नामिरक्षे मा चल मा चल ॥'**इस मन्त्रसे बाँधे। इसके बाँधनेसे वर्षभरतकपुत्र-पौत्रादिसहित सब सुखी रहते हैं। कथा यों है कि एक बारदेवता और दानवोंमें बारह वर्षतक युद्ध हुआ, पर देवता विजयी नहींहुए, तब बृहस्पतिजीने सम्मति दी कि युद्ध रोक देना चाहिये। यहसुनकर इन्द्राणीने कहा कि मैं कल इन्द्रके रक्षा बाँधूंगी, उसके प्रभावसेइनकी रक्षा रहेगी और यह विजयी होंगे। श्रावण शुक्ल पूर्णिमाकोवैसा ही किया गया और इन्द्रके साथ सम्पूर्ण देवता विजयीहुए।

6. भाद्रपद मास के प्रमुख व्रत

कज्जलीतृतीया–

यद्यपि यह व्रतवाक्य-विशेष या देश-भेदसे श्रावणमें किया जाता है, किंतुभाद्रपद कृष्ण तृतीयाको व्यापकरूपमें होता है। माहेश्वरी वैश्यइस दिन जौ, गेहूँ, चने और चावलके सत्तूमें घी, मीठा और मेवाडालकर उसके कई पदार्थ बनाते और चन्द्रोदयके बाद उसीकाएक बार भोजन करते हैं। इस कारण यह व्रत 'सातूड़ी तीज'अथवा 'सतवा तीज' कहलाता है।

विशालाक्षी यात्रा–

इसके निमित्त भाद्रपदकृष्ण तृतीयाको व्रत किया जाता है। इसमें रात्रिव्यापिनी तिथि लेतेहैं। इस दिन केवल उपवास और जागरण किया जाता है औरभाद्रपद शुक्ल तृतीयाको सुवर्णनिर्मित गौरीका गन्धादिसे पूजन करतेहैं। नैवेद्यमें गुड़के पूआ और यात्रामें विशालाक्षी मुख्य हैं।

संकष्टचतुर्थी–

यह परिचित व्रत प्रत्येककृष्ण चतुर्थीको होता है। इसमें चन्द्रोदयव्यापिनी तिथि ली जाती है।रात्रिमें चन्द्रमाको अर्घ्य देकर और पूजनीय पुरुषोंको वायन देकरभोजन किया जाता है। विशेष विधान पहले लिखा जा चुका है।

बहुलाव्रत –

यह मध्यप्रदेशमें भाद्रपद कृष्ण चतुर्थीकोकिया जाता है।

चन्द्रषष्ठी–

यह भाद्र कृष्ण षष्ठीकोकिया जाता है। इसमें चन्द्रोदयव्यापिनी तिथि ली जाती है। इसेविशेषकर विवाहिता या अविवाहिता लड़कियाँ ही करती हैं औरचन्द्रोदय होनेपर उन्हें अर्घ्य देती हैं।

पुत्रव्रत–

इसके लिये भाद्रपद कृष्णसप्तमीको उपवासकर विष्णुका पूजन करे और दूसरे दिन 'ॐक्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' इस मन्त्रसेतिलोंकी १०८ आहुति देकर ब्राह्मणोंको भोजन करावे औरबिल्वफल खाकर षड्रस (मधुर, अम्ल, लवण, कषाय, तिक्तऔर कटु) भक्षण करे। इस प्रकार प्रत्येक कृष्ण सप्तमीको करके।वर्ष व्यतीत होनेपर दो गोदान करे तो पुत्रकी प्राप्ति होती है।

(७) जन्माष्टमी–

यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमीको किया जाता है। भगवान् श्रीकृष्णकाजन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवारको रोहिणी नक्षत्रमें अर्धरात्रिकेसमय वृषके चन्द्रमामें हुआ था । अतः अधिकांश उपासक उक्त बातोंमेंअपने-अपने अभीष्ट योगका ग्रहण करते हैं। शास्त्रमें इसके शुद्धाऔर विद्धा दो भेद हैं। उदयसे उदयपर्यन्त शुद्धा और तदुत सप्तमीया नवमीसे विद्धा होती है। शुद्धा या विद्धा भी - समा, न्यूना याअधिकाके भेदसे तीन प्रकारकी हो जाती हैं और इस प्रकार अठारहभेद बन जाते हैं, परंतु सिद्धान्तरूपमें तत्कालव्यापिनी (अर्धरात्रिमेंरहनेवाली) तिथि अधिक मान्य होती है। वह यदि दो दिन हो–यादोनों ही दिन न हो तो (सप्तमीविद्धाको सर्वथा त्यागकर) नवमी-विद्धाका ग्रहण करना चाहिये। यह सर्वमान्य और पापघ्नव्रत बाल,कुमार, युवा और वृद्ध – सभी अवस्थावाले नर-नारियोंके करनेयोग्यहै। इससे उनके पापोंकी निवृत्ति और सुखादिकी वृद्धि होती है। जोइसको नहीं करते, उनको पाप होता है। इसमें अष्टमीके उपवाससेपूजनऔर नवमीके (तिथिमात्र) पारणासे व्रतकी पूर्ति होती है। व्रतकरनेवालेको चाहिये कि उपवासके पहले दिन लघु भोजन करे।

उमा-महेश्वरव्रत–

यह भाद्रपद कृष्ण अष्टमीकोकरना चाहिये। इसमें सायंकालके समय उमा और महेश्वरकापूजन करके एकभुक्त व्रत करे।

कृष्णैकादशीव्रत–

यह सुपरिचितव्रत भाद्रपद कृष्ण एकादशीको किया जाता है। इसका नाम'अजा' एकादशी है। इसके व्रतसे पुनर्जन्मकी बाधा दूर हो जातीहै। प्राचीन कालमें चक्रवर्ती हरिश्चन्द्रने इसी व्रतसे अपनी बिगड़ीहुई दशासे उद्धार पाया था।

मौनव्रत–

यह व्रत भाद्रपद शुक्लप्रतिपद्को पूर्ण होता है, किंतु श्रावण शुक्ल पूर्णिमासे ही इसकाप्रारम्भ किया जाता है। उस दिन किसी जलाशयपर जाकर स्नान करेऔर कोमल दूर्वाके १६ अंकुरोंका डोरा बनाकर उसमें १६ गाँठ लगावेफिर गन्धादिसे उसका पूजनकर स्त्री बाँयें हाथमें और पुरुष दाहिनेहाथमें धारण करे। इसके बाद जल लाने, गेहूँ पीसने, उनसे नैवेद्य बनानेऔर अन्य आयोजन करने आदिमें सर्वथा मौन रहे। तत्पश्चात् भाद्रपदकृष्ण प्रतिपदाको जलाशयपर जाकर स्नानादि नित्यकर्म करके देव,ऋषि, मनुष्य और पितरोंका तर्पण करे और फिर सदाशिवकाआवाहनादि षोडशोपचारसे पूजन करके 'जन्मजन्मान्तरेष्वेव भावाभावेनयत् कृतम्। क्षन्तव्यं देव तत् सर्वं शम्भो त्वां शरणं गतः ॥' सेप्रार्थना करे। इस प्रकार १६ दिन करके भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदाकोब्राह्मण-भोजनादि करवाकर स्वयं भोजन करे तो इससे पुत्र-पौत्रादिकीप्राप्ति और पापादिकी निवृत्ति होती है।

हरितालिका –

भाद्रस्य कजलीकृष्णा शुक्ला च हरितालिका।' के अनुसार भाद्रशुक्ल ३ को'हरितालिका' का व्रत किया जाता है। इसमें मुहूर्तमात्र हो तो भी परातिथि ग्राह्य की जाती है। (क्योंकि द्वितीया पितामहकी और चतुर्थीपुत्रकी तिथि है; अतः द्वितीयाका योग निषेध और चतुर्थीका योगश्रेष्ठ होता है।

ऋषिपंचमी –

भाद्रपद शुक्ल पंचमीको ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र वर्णकी स्त्रियोंको चाहिये कि वे नद्यादिपरस्नानकर अपने घरके शुद्ध स्थलमें हरिद्रा आदिसे चौकोर मण्डलबनाकर उसपर सप्तर्षियोंका स्थापन करें और गन्ध, पुष्प, धूप, दीपतथा नैवेद्यादिसे पूजनकर 'कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथगौतमः। जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः ॥ दहन्तु पापंमे सर्वं गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः ॥' से अर्घ्य दें। इसके बाद अकृष्ट(बिना बोयी हुई) पृथ्वीमें पैदा हुए शाकादिका आहार करकेब्रह्मचर्यपालनपूर्वक व्रत करें। इस प्रकार सात वर्ष करके आठवेंवर्षमें सप्तर्षियोंकी सुवर्णमय सात मूर्ति बनवाकर कलश-स्थापनकरके यथाविधि पूजनकर सात गोदान और सात युग्मक ब्राह्मण-भोजन

कराके उनका विसर्जन करें। किसी देशमें इस दिन स्त्रियाँपंचताड़ी तृण एवं भाईके दिये हुए चावल आदिकी कौए आदिकोबलि देकर फिर स्वयं भोजन करती हैं।

सूर्यषष्ठी–

सप्तमीप्रयुक्त भाद्रपद शुक्लषष्ठीको स्नान, दान, जप और व्रत करनेसे अक्षय फल होताहै। विशेषकर सूर्य का पूजन, गंगाका दर्शन और पंचगव्यप्राशनसेअश्वमेधके समान फल होता है। पूजामें गन्ध, पुष्प, धूप, दीपऔर नैवेद्य मुख्य हैं।

श्रीराधाष्टमी

भाद्रपद शुक्ला अष्टमीको जगज्जननी पराम्बा भगवती श्रीराधाकाजन्म हुआ था, अतएव इस दिन राधा-व्रत करना चाहिये। स्नानादिकेउपरान्त मण्डपके भीतर मण्डल बनाकर उसके मध्यभागमें मिट्टी यातााँबेका कलश स्थापित करे। उसके ऊपर ताँबेका पात्र रखे। उसपात्रके ऊपर दो वस्त्रोंसे ढकी हुई श्रीराधाकी सुवर्णमयी सुन्दरप्रतिमा स्थापित करे। फिर वाद्यसंयुक्त षोडशोपचारद्वारा स्नेहपूर्णहृदयसे उसकी पूजा करे। पूजा ठीक मध्याह्नमें ही करनी चाहिये।शक्ति हो तो पूरा उपवास करे अन्यथा एकभुक्त व्रत करे। फिर दूसरेदिन भक्तिपूर्वक सुवासिनी स्त्रियोंको भोजन कराकर आचार्यकोप्रतिमा दान करे। तत्पश्चात् स्वयं भी भोजन करे। इस प्रकार इसव्रतको समाप्त करना चाहिये। विधिपूर्वक राधाष्टमीव्रतके करने सेमनुष्य व्रजका रहस्य जान लेता तथा राधा-परिकरोंमें निवास करता है।

शुक्लैकादशी -

भाद्रपद शुक्ल 'पद्मा'एकादशीको प्रातः स्नानादिके अनन्तर भगवान्का यथाविधि पूजनकरके उपवास करे और रात्रिके समय हरिस्मरणसहित जागरणकरके दूसरे दिन पूर्वाह्णमें पारणा करे।"यह स्मरण रहे कि प्रभातसमय यदि श्रवण नक्षत्रके मध्यभागकी (लगभग २०) घड़ीका अंशहो तो उसमें पारणा न करे। यह भी स्मरण रहे कि मध्याह्नसे पहलेश्रवणका मध्य अंश न उतरे तो जल पीकर पारणा करे। प्राचीनकालमें सूर्यवंशके चक्रवर्ती मान्धाताने अपने राज्यकी तीन वर्षकीअनावृष्टिको मिटानेके लिये अंगिरा ऋषिके आदेशसे इसी 'पद्माएकादशी' के व्रतका अनुष्ठान किया था, उससे मान्धाताके राज्यमेंसर्वत्र सदैव अनुकूल वर्षा होती रही।""""यदि इस दिन श्रवण नक्षत्रहो तो यही 'विजया एकादशी' होती है। इसके व्रतसे सब प्रकारकेअभीष्ट सिद्ध होते हैं। इस दिन भगवान् वामनजीका पूजन करनाआवश्यक होता है। व्रतीको चाहिये कि भाद्रपद शुक्ल एकादशीकोप्रातः-स्नानादि करके भगवान्

वामनजीकी सुवर्णकी मूर्ति बनवावेऔर 'मत्स्य, कूर्म, वाराह' आदिके नामोच्चारणसहित गन्ध-पुष्पादिसभी उपचारोंसे उसका यथाविधि पूजन करे। दिनभर उपवास रखेऔर रात्रिमें जागरण करके दूसरे दिन फिर उसका पूजन करकेउपस्थित देय द्रव्यादि ब्राह्मणोंको देकर उनको भोजन करावे औरफिर स्वयं भोजन करके व्रत समाप्त करे।

4.5 बोध प्रश्न :

1 –रामनवमी किस मास में मनाया जाता है।

A .चैत्र मास B. ज्येष्ठ मास C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

2- वट सावित्री व्रत किस मास में किया जाता है।

A .चैत्र मास B. ज्येष्ठ मास C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

3 –जन्माष्टमी व्रत किस मास में होता है

A .भाद्रपदमासB. ज्येष्ठ मास C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

4 – परशुराम जयन्ती किस मास में होता है

A .चैत्र मास B. वैशाख C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

4.6 सारांशः–

यह इकाई 4 **चैत्र से भाद्रपद मास पर्यन्त प्रमुख व्रत** शीर्षक से संबंधित है।इस इकाई से आप चैत्र से भाद्रप मास के व्रत को अध्ययन किया है। इस इकाई को पढने के बाद आप जान चुके है कि कैन सा व्रत किस मास में होता है और उस का क्या फल होता है। व्रत से कायिक, वाचिक, मानसिक शुद्धि होती है, पापों का शमन होता है इन्द्रिय दमन होताहै, अन्त:करण शुद्ध होता है। निर्मलता से प्रेम, सद्भावना आदिदैवी सम्पत्ति का विस्तार होता है। रोग भी एक प्रकार का पापही है वह भी व्रतोपवास से नष्ट हो जाता है। ज्योतिष शास्त्रके अनुसार उसका विधान किया गया है जिससे ग्रह नक्षत्रादिका भी प्रभाव उस पर पड़ता है। शारीरिक शुद्धि, तथा आध्यात्मिक उन्नति होती है। श्रद्धा, भक्ति सद्विचार उत्पन्न होतेहैं

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. व्रत परिचय - गीताप्रस गोरखपुर

2. सनातन धर्म का वैज्ञानिक रहस्य – हिन्दी प्रचारक मंडल

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर –

5. चैत्र मास
6. ज्येष्ठ मास
7. भाद्रपद
8. वैशाख

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न -

1. चैत्र , वैशाख मास के प्रमुख व्रत का परिचय देते हुए उसके महत्वों पर प्रकाश डालियें।
2. श्रावण , भाद्रपद मास के प्रमुख व्रत को विस्तार पूर्वक लिखिये।

इकाई -5 आश्विन से फाल्गुन मास पर्यन्त प्रमुख व्रत

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 व्रत का स्वरुप

5.4 आश्विन, कार्तिक ,मार्गशीर्ष, पोष, मास परिचय

5.5 आश्विन मास के प्रमुख व्रत

5.6 **कार्तिक, मार्गशीर्ष मास के मुख्य व्रत**

5.7 पोष,माघ ,फाल्गुन माह के विशेष व्रत l

5.8 आधुनिक परिपेक्ष्य में व्रतों से लाभ l

5.9 मासों के अनुसार व्रतों का प्रभाव एवं नियम

5.10सारांश

5.11 पारिभाषिक शब्दावली

5.12अभ्यास प्रश्न

5.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.14 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

5.15 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 से सम्बंधित है इस इकाई में आप व्रत के बारे मैं जान सकेंगे प्राचीन भारतीय परम्परा मैं व्रत को मानव जीवन का अंग माना गया हैं। भारतीय परंपरा में व्रत हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जाना जाता रहा हैं। प्रायः सभी पुराणों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि हमारे ऋषि-मुनि, महात्मा ,साधु ,संत, व्रत-उपवास के द्वारा ही सयम कर शरीर, मन एवं आत्मा की शुद्धि करते हुए अलौकिक शक्ति को प्राप्त करते थे। चारों युगों में सतयुग में ही साधु महात्मा और ऋषियों ने व्रतों का पालन श्रद्धा और भक्ति के द्वारा किया। वैदिककाल में ऋषियों ने व्रतों को आत्मिक उन्नति, आत्मकल्याण और लोकमंगल केसे हो सके इन सभी कार्यो को करते रहते थे। कलियुग में जब पाप के कर्मों की वृद्धि होने लगी और पुण्य क्षीण हुए, तो पुण्यार्जन के लिए अनेक प्रकार के व्रतों को करने का प्रचलन काफी तेजी से बढ़ा और वे लोकजीवन में प्रसिद्ध हो गए। व्रतों और त्योहारों की धारा गंगा की धारा की भांति भारतवासियों को पावन करने लगी। इनका स्वरूप भी धीरे-धीरे पुरुष व नारी वर्ग में विभाजित हो गया। जहां पुरुषों के व्रत, त्योहारों में देवपूजा के साथ पारिवारिक सुख, संतान सुख, व्यापारिक-लाभ, यात्रा-लाभ, सुख-शांति की कामना प्रमुखता से प्रकट होती है, वहीं स्त्रियों के व्रत एवं उत्सवों में पारिवारिक कलह-शांति, पातिव्रत्य-धर्मपालन, संतान सुख, अखंडसौभाग्य की प्राप्ति होती है। भारत के व्रत, पर्व एवं त्योहार देश की सभ्यता और संस्कृति के नाम से जाने जाते हैं। हमारे तत्त्वज्ञ , ऋषि-महर्षियों ने व्रत, पर्व एवं त्योहारों का आरम्भ इसी दृष्टि से की, जिससे कि महान् प्रेरणाओं और घटनाओं का प्रकाश जनमानस में धर्मधारण, सामाजिकता की भावना, कर्त्तव्यनिष्ठा, परमार्थ, लोकमंगल, जागृति, सद्भावना, जेसे वातावरण में विकसित सत्प्रवृत्तियों के माध्यम से विकसित हों तथा समाज को समुन्नत और सुविकसित केसे बनाया जा सके। इसके लिए अनेक प्रकार के व्रत पर्व-त्योहार मनाए जाते हैं। व्रतों का नियमानुसार पालन करने से सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते रहते है l प्रत्येक माह के अनुसार व्रतों का पालन करना आवश्यक होता हैं। व्रत करनें के लिए कोन सा महीन शुभ माना जाता हैं किस किस माह मैं व्रत करनें से आत्मिक शांति मिलती हैं। इन सभी का आप इस ईकाई मैं अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

- इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-
- आश्विन माह की विशेषता क्या हैं समझ सकेंगे।

- कार्तिक, मार्गशीर्ष, माह के प्रमुख व्रतों को जान सकेंगे।
- किस माह मैं व्रत करनें से अधिक लाभ प्राप्त हो सके समझ पायेंगे।
- व्रत के महत्व को समझ सकेंगे।

5.3 व्रत का स्वरुप

प्राचीन भारतीय संस्कृति में तथा शास्त्रो पुराणों वेदों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में व्रत ,उपवास तथा व्रत उपवास करने के नियम तथा इसकी विधि क्या है, इस विषय में हमारे प्राचीन ऋषि मुनि और महात्माओं ने घोर तपस्या कर इन सभी विषयों के बारे में उल्लेख किया है।कि व्रत तथा उपवास का हमारे जीवन में कितना महत्व है, यह वर्णन स्कन्द पुराण, पदम् पुराण, वायु पुराण, और भागवत पुराण, श्रीमद्भागवत गीता, आदि में किया गया हैं। इन सभी प्रकार के ग्रंथों का अध्ययन करने से व्रत उपवास के विषय में ज्ञात होता है कि व्रत और उपवास हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है। सनातन परम्परा में परमात्मा की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग के द्वार व्रत उपवास करके परमात्मा की प्राप्ति करना प्रथम लक्ष्य था। परंतु व्रत और उपवास का वर्तमान सन्दर्भ में शरीरिक आधिव्याधि, रोगादि को दूर करना मानसिक शांति, तथा अनेक प्रकारके लाभ भी प्राप्त होते हैं।वर्तमान सन्दर्भ में समाज का निर्माण कैसे हो राष्ट्र का निर्माण केसे हो इन सभी का निर्माण व्रत और उपवास के द्वारा ही सकता हैं। .

आश्विन मास परिचय

वेदों से ही वेदागों की उत्पत्ति होती हैं वेदागं मैं ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा गया हैं। काल शास्त्र मैं मासों का विचार मुहुर्तो का विचार व्रत करनें के लिए किया जाता हैं।जब सूर्य कन्या राशि मैं प्रवेश करता हैं तो आश्विन माह प्रारम्भ हो जाता हैं। वेदों से लेकर पुराणों मैं भी आश्विन माह का उल्लेख मिलता हैं। काल शास्त्रानुसार आश्विन मास को शुभ माह कहां गया हैं। जिसमें की अनेक प्रकार के व्रतादि शुभ कार्य किये जाते हैं।

कार्तिक मास

जब सूर्य तुला राशि मैं प्रवेश करता हैं, तो कार्तिक महीने का आरंभ माना जाता हैं।हमारे शास्त्रों मैं कार्तिक महीने को शुभ माह कहां गया हैं। जिसमें शुभ मांगलिक कार्य संपन्न किये जाते हैं जो

निम्नलिखित हैं। व्रत , पर्व, त्योहारों को कार्तिक मास में मनाना शुभ माना गया है। शास्त्रों में कहा गया है की कार्तिक मैं भगवान चार माह में शयन से जागते हैं। इस माह मैं मांगलिक कार्य के साथ साथ कार्त्तिक स्नान करनें का भी विधान हैं।

मार्गशीर्ष मास

जब भगवान सूर्य वृश्चिक राशि मैं प्रवेश करते हैं तो मार्गशीर्ष मास का आरंभ माना जाता हैं,इस मास में सभी प्रकार के मांगलिक कार्य किये जाते हैं। जिस महीने की पूर्णिमा तिथि जिस नक्षत्र से युक्त रहती हैं,उस नक्षत्र के आधार पर ही इस मास का नाम रखा जाताहैं। मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा तिथि मृगशिरा नक्षत्र से युक्त होती हैं। इसलिए इस मास को मार्गशीर्ष मास कहा गया हैं। इसके विभिन्न नाम भी हैं, अगहन, मगसर, इत्यादि, नामों से भी जाना जाता हैं। यह महीना पवित्र माना जाता हैं इस महीने मैं सभी प्रकार के धार्मिक, आध्यात्मिक,तथा सभी संस्कारों को किया जाता हैं। भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवत गीता मैं कहते हैं।

वृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्
मासानां मार्गशीर्षS हमृतूनां कुसुमाकरः।।

गीता अ.10 /35

अर्थात् गायन करनें योग्य श्रुतियों मैं वृहत्साम, छंदों मैं गायत्री छंद हूं,तथा महीनों मैं मार्गशीर्ष, ऋतुओं मैं बंसन्त मैं हूं। इस उद्देश्य से भी यह मास अधिक पवित्र के साथ साथ व्रत , उपवास के लिए भी प्रशस्त हैं। जिसके करनें से सुख तथा समृद्धि प्राप्त होती हैं।

पौष मास

विक्रम संवत्सर से पौष मास को 10 मास कहां जाता हैं, जिस दिन पौष मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र मैं रहता हैं, वह मास पौष मास कहलाता हैं इस मास मैं भगवान सूर्य की उपासना भंग देव के नाम से की जाती हैं।इस पौष माह को अशुभ मास भी कहा जाता है। जब सूर्य धनु राशि मैं प्रवेश करता हैं तो पौष मास का आरंभ माना जाता हैं। इस मास मैं मांगलिक कार्य वर्जित कहे गये हैं। यदि कोई व्यक्ति शुभ कार्य को करता हैं तो उसे निष्फल की प्राप्ति होती हैं। इसलिए मासानुसार व्रत करना चाहिए।

माघ मास

इस माघ मास को पवित्र मास कहा गया हैंजब भगवान् सूर्य का मकर राशि मैं प्रवेश करते हैं। तो उत्तरायण का प्रारम्भ हो जाता हैं। जो देवताओं का दिन कहलाता हैं ,इस महीने से सभी प्रकार के शुभ संस्कारों को किया जाता हैं, जन्म से लेकर विवाह संस्कार पर्यन्त इन सभी को किया जाता हैं जिससे की व्रत का लाभ सभी को प्राप्त हो सके। भगवान शंकर की भक्ति भी इस माह मैं की जाती हैं। यज्ञ तथा इष्टापूर्त कर्मों के बिना ही उत्तम गति प्राप्त करना चाहते हों, तो माघ में प्रातःकाल जागरण कर गंगा में स्नान करके गौ, भूमि, तिल, वस्त्र, सुवर्ण और धान्य आदि वस्तुओं का दान किये बिना ही वे मनुष्य माघ मास में सदा प्रातःकाल स्नान कर उपवास, कृच्छ्र और पराक आदि व्रतों के द्वारा अपने शरीरको तपाते हैं। उनको उतना फल प्राप्त नही होता हैं जितना की माघ स्नान से प्राप्त हो जाता हैं। वैशाखमें जल और अन्नका दान उत्तम, कार्तिक में तपस्या और पूजा की प्रधानता, तथा माघ में जप, होम, और दान की विशेषता मानी गयी हैं। जो मनुष्य माघमास में प्रातःस्नान, नाना प्रकारका दान और भगवान् विष्णुस्तोत्र-पाठ का परायण करते हैं, वे मनुष्य ही परमधाम में आनन्दपूर्वक निवास करते हैं। प्रिय वस्तुके त्याग और नियमों के पालन से माघ सदा धर्म का साधक होता है ।और अधर्म की जड़ काट देता है। यदि सकाम भाव से माघस्नान किया जाय तो उससे मनोवांछित फलकी सिद्धि होती है और निष्काम भाव से स्नान आदि करने पर वह मोक्ष देनेवाला होता है। निरन्तर दान करनेवाले, वन में रहकर साधना करनेवाले और सदा अतिथि सत्कार करते हैं। वे मनुष्य परमलोक को प्राप्त होते हैं, यही फल माघ स्नान करनेवालों को भी प्राप्त होता हैं। शास्त्रों में यह भी कहा गया है की मनुष्यों के पुण्य समाप्त होने पर वह मनुष्य स्वर्ग से वापस आ जाता है। परन्तु माघस्नान करनेवाले मानव कभी भी वहाँ से लौटकर नहीं आते है यही विशेषता माघ महीने ज्ञात होती हैं। इससे बढ़कर कोई तप और इससे बढ़कर कोई महत्त्वपूर्ण साधन नहीं है। यही परम हितकारक और तत्काल पापों का नाश करनेवाला है। महर्षि भृगु ने मणिपर्वत पर विद्याधर से कहा था - 'जो मनुष्य माघ के महीने में, जब उषःकाल की लालिमा बहुत अधिक हो, गाँव से बाहर नदी या पोखरे में नित्य स्नान करता है, वह पिता और माता के कुल की सात-सात पीढ़ियोंका उद्धार करके वाला होता हैं। जैसे चन्द्रमा कृष्णपक्ष में क्षीण होता और शुक्लपक्ष में बढ़ता है, उसी प्रकार माघ मास में स्नान करने पर पाप क्षीण होता और पुण्यराशि बढ़ती है। जैसे समुद्रमें नाना प्रकारके रत्न उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार माघ स्नान से आयु, धन और स्त्री आदि सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। जैसे कामधेनु और चिन्तामणि मनोवांछित भोग देती हैं, उसी प्रकार माघस्नान सब मनोरथों को पूर्ण करता है। सत्ययुग में तपस्या को, त्रेतामें ज्ञान को, द्वापर में भगवान के पूजन को और कलियुग में दान को उत्तम साधन माना गया है; परन्तु माघ मास का स्नान सभी युगों में

उतम माना गया है।

कृते तपः परं ज्ञानं त्रेतायां यजनं तथा।
द्वापरे च कलौ दानं माघः सर्वयुगेषु च ॥
माघे निमग्नाः सलिले सुशीते
विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति ॥

फाल्गुनमास

जब सूर्य कुंभ राशि मैं प्रवेश करता है तो फाल्गुन माह का आरंभ माना जाता हैं। इस फाल्गुन माह मैं अनेक प्रकार के व्रतादि लोक मांगलिक पर्वों को भी मनाया जाता हैं। जिससे की इन व्रतों का लाभ हमें प्राप्त हो सके। कार्तिकमास भगवान् विष्णु को सदा ही प्रिय लगता है। कार्तिक मास में भगवान् विष्णु के नाम से व्रत, उपवास किया जाता हैं, जिस से परमात्मा अपना आशिर्वाद देते रहते हैं। सभी मासों में कार्तिक मास को उत्तम कहा गया हैं। यह पुण्यमय वस्तुओं में सबसे अधिक पुण्यतम और पावन पदार्थों में सबसे अधिक पावन है। इस कार्तिक मास में जो भी ३३ कोटि देवता हैं। वे मनुष्य के द्वारा किये गये स्नान, दान, भोजन, व्रत, तिल, धेनु, सुवर्ण, रजत, भूमि, वस्त्र आदि के दानों को विधिपूर्वक ग्रहण करते हैं। कार्तिक मास में जो कुछ भी दान दिया जाता है, जप,तप किया जाता है, उसे सर्वशक्तिमान् भगवान् विष्णु उसे अक्षय फल की प्राप्ति कराते हैं। उस काल में अन्नदान का महत्त्व अधिक था ।जिससे पापों का सर्वथा नाश हो जाता था आज के काल में भी जो इन सभी प्रकार के दान,पुण्य,करता है वो भी अक्षय फल को प्राप्त करता हैं। कार्तिक मास के समान कोई मास नहीं, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं, वेदों के समान कोई शास्त्र नहीं और गंगाजी के समान दूसरा कोई तीर्थ नहीं है।

न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम् ।
न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गंगया समम् ॥

पुराणपुरुष भगवान् नारायण की इस समय आराधना नहीं की और ब्राह्मणों के मुखरूपी अग्नि में अन्न की आहुति नहीं दी तो उन मनुष्योंका जन्म व्यर्थमाना जाता हैं। जो मनुष्य कार्तिकमास में प्रतिदिन गीता का पारायण करता है, उसे अनन्त फल की प्राप्ति होती हैं।

कार्तिके मासि विप्रेन्द्र यस्तु गीतां पठेन्नरः ।
तस्य पुण्यफलं वक्तुं मम शक्तिर्न विद्यते ॥

गीतायास्तु समं शास्त्रं न भूतं न भविष्यति ।
सर्वपापहरों नित्यं गीतैका मोक्षदायिनी ॥
स्क०पु०वै०का०मा०

5.5 आश्विन मास के प्रमुख व्रत

1.जीवित्पुत्रिका व्रत,
2.इंदिरा एकादशी व्रत
3.विजयादशमी व्रत,
4.पापांकुशा एकादशी व्रत,
5.शरद पूर्णिमा व्रत,
6.नवरात्र व्रत,
7.पितृ व्रत,
8.अशोक व्रत,
9.पद्मनाभ व्रत,

1.जीवित्पुत्रिका व्रत-

जो स्त्री जीवत्पुत्रिका का व्रत करती हैं, उनका उद्देश्य पुत्र के जीवन की रक्षा करना होता है. ता कि उनको आजीवन पुत्रशोक न हो सके। यदि पुत्र को अधिक समस्या है तो इस व्रत के करने से वो सभी समस्याओ से मुक्त हो होकर उसे पूर्ण आयु को प्राप्त करता हैं। पुत्र की रक्षा के लिए यह व्रत किया जाता हैं। कहा जाता है कि इस व्रत के दिन प्राचीनकाल के अत्यंत प्रसिद्ध धर्मात्मा राजा जीमूतवाहन गरुड़ को प्रसन्न करके शंखचूड़ के सभी वंशधरों को मृत्युलोक से वापस लाने में सफल हुए थे।

पूजन विधि- :

यह व्रत आश्विन मास कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। इस व्रत को करने का विधान केवल पुत्रवती महिलाओं के लिए ही है। इस दिन व्रती महिलाएं दैनिक कर्मों, स्नानार से निवृत्त होकर भगवान् सूर्यनारायण की मूर्ति को स्नान कराकर विधि-विधानानुसार पूजन किया जाता हैं।

इस व्रत कथा का वर्णन महाभारत में वर्णित हैं। जब महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका, तो पांडवों की अनुपस्थिति में अश्वत्थामा ने अपने साथियों के साथ उनके शिविरों में घुसकर अनेक सैनिकों का वध कर दिया। यहां तक कि द्रौपदी के सोए हुए पुत्रों की थी पांडव समझकर उनके सिर काट कर हत्या कर दी। दूसरे ही दिन केशव को सारथी बनाकर अर्जुन में अपवत्थामा का पीछा कर उसे कैद कर लिया। 'ब्राह्मणों का वध नहीं करना चाहिए' ऐसा विचार कर श्रीकृष्ण और धर्मराज की सहमति से अश्वत्थामा का सिर मुंडवाकर उसे आजाद कर दिया गया। अपने इस जपमान से अश्वत्थामा बुरी तरह से चिढ़ा और पांडवों का बीजनाश करने पर उद्यत हो गया। उसने अपना अमोय अस्त्र निकाला और अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ पर चला दिया। यहां भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों की सहायता के लिए आए। उन्होंने सूक्ष्म रूप धारण कर उत्तरा के गर्भ में प्रवेश किया और अमोघ अस्त्र को अपने शरीर पर झेल लिया। इस तरह उत्तरा के गर्भ में पल रहे शिशु की रक्षा हो गई। लेकिन जब पुत्र का जन्म हुआ, तो वह काफी कमजोर व निष्क्रिय था। भगवान् कृष्ण ने उसमें शक्ति का संचार किया। यहीं पुत्र आगे चलकर परीक्षित के नाम से पांडव वंश का भावी कर्णधार बना। इस प्रकार परीक्षित को जीवनदान प्रदान करने वाले व्रत का नामकरण 'जीवत्पुत्रिका' किया गया था ।

2.इंदिरा एकादशी व्रत

पितरों की शांति एवं उनके उद्धार के लिए इस एकादशी का यानी पितरों के उद्धार के लिए यह व्रत किया जाता हैं। जिन पितरों पिको संस्कार विधि विधान से नही हुवा हो जो मोक्ष को प्राप्त नही हुवे हो उन पितरो की मुक्ति के लिए यह इंदिरा एकादशी का व्रत करना चाहिए। पुरुषों के लिए विशेष रूप से फलदायी यह एकादशी महापुण्य देने वाला व्रत हैं। शास्त्रों में कहा गया हैं की इस व्रत की कथा को सुनने मात्र से वाजपेय-यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

पूजन विधि-: यह व्रत आश्विन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को किया जाता है। दोपहर के समय श्राद्ध से पूर्व पहले स्नान कर शालग्राम-शिला के आगे विधि-विधानुसार पितरों का श्रध्दा पूर्वक श्राद्ध करे। समय भोजन करके भूमि पर शयन करें। एकादशी के दिन दैनिक कार्यों स्नानादि से निवृत्त होकर शालग्राम भगवान को पंचामृत से स्नान करकर के विष्णु भगवान का पूजन के साथ पितरों का पूजन करना चाहिए।इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण में इस प्रकार मिलता है- सतयुग में महिष्मतीपुरी में इंद्रसेन नामक एक प्रबल प्रतापी राजा राज करता था। वह पुत्र, पौत्र, धन-धान्य से संपन्न था और भगवान् विष्णु का परम भक्त था। उसके माता व पिता स्वर्गवासी हो चुके थे। एक दिन अचानक देवर्षि नारद उसके पास पहुंचे, तो राजा ने उनका बहुत स्वागत सत्कार किया। फिर उनसे

पूछा-देवर्षि! कृपया बताइए कि यहां पधारने का कष्ट कैसे किया? इस पर नारद बोले- "हे राजन्! मैंने धर्मराज की सभा में तुम्हारे पुण्यवान पिता को किसी व्रत को भी न करने के दोष से पीड़ित देखा। उन्होंने मुझे तुम तक यह संदेश पहुंचाने को कहा है कि किसी पूर्वजन्म के पाप से तुम्हारे पिता यमराज की सभा में हैं। अतः तुम इंदिरा एकादशी का व्रत करके उसका पुण्य उन्हें भेज देना, ताकि उसके प्रभाव से तुम्हारे पिता स्वर्ग जा सकें।" नारद ने इंदिरा एकादशी के व्रत का पूरा विधि-विधान बताकर राजा को व्रत करने को कहा राजा ने इस व्रत को पूर्ण श्रद्धा-भाव से संपन्न किया और पितरों का श्राद्ध भी किया। राजा के ऊपर स्वर्ग से पुष्पों की वर्षा हुई। उसका पिता समस्त दोषों से मुक्त हो गया और गरुड़ पर चढ़कर वैकुंठ लोक चला गया। अंत में राजा भी इस लोक में सब सुखों को भोगकर विष्णुलोक में दीर्घकाल तक निवास करता रहा।

4.पापांकुशा एकादशी व्रत

पापों से मुक्ति प्राप्ति के लिए इस एकादशी का व्रत किया जाता हैं। यह व्रत बाल्य, यौवन या वृद्धावस्था किसी भी अवस्था में करने पर व्यक्ति अपने आध्यात्मा से भी मुक्त हो जाता है, क्योंकि इससे मनुष्य को उसके सब पापों के नष्ट होने के कारण नरक लोक जाने से वह बच जाता है। इस एकादशी को (पापांकुशा एकादशी के नाम से जाना जाता है। यानी पापरूपी हाथी को पुण्यरूपी अंकुश से वेधने के कारण यह एकादशी 'पापांकुशा एकादशी कहलाती है। यह व्रत करने से माता-पिता एवं स्त्री-पुरुष की 10 पीढ़ी तक के पापों का शमन होकर हो जाता है। इस दिन पद्मनाभ भगवान् की पूजा करने से व्रती की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, शरीर की आरोग्यता, सुंदर स्त्री और धन-धान्य की प्राप्ति होती है। स्वर्ग जाने और मोक्ष प्राप्त करने का अवसर मिलता है। जितेंद्रिय मनुष्य को चिरकाल तक घोर तप करने पर जिस फल की प्राप्ति होती है, उसी फल को भगवान् को नमन करने मात्र से प्राप्त किया जा सकता है। यह व्रत आश्विन माह के शुक्लपक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा भगवान् पद्मनाभ की पूजा का विशेष महत्त्व माना जाता है। व्रती प्रातःकाल उठकर नित्यकर्मों, स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् विष्णु की मूर्ति को स्नान कराकर विधिवत् पूर्ण श्रद्धा, भक्ति भाव से पूजन करना चाहिये। इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मांडपुराण में इस प्रकार हुआ है- प्राचीन समय में विंध्यपर्वत पर 'क्रोधन' नामक एक बहेलिया रहता था। नाम के अनुरूप ही वह स्वभाव से बड़ा क्रूर एवं झगड़ालू था। सदैव लूट-पाट, मदिरापान जैसे दुर्व्यसनों में फंसा रहता था। सारा जीवन पापककर्मो में बिताने के बाद जब उसका अंत समय आया, तो यमराज के दूतों

ने एक दिन पूर्व ही उसको ले जाने की सूचना दे दी। यह सुनकर वह मृत्यु-भय से कांपता हुआ वह महर्षि अंगिरा के आश्रम में पहुंचकर उनसे बोला- "हे ऋषिश्रेष्ठ! मुझे नरक अवश्य भोगना पड़ेगा, क्योंकि मैंने सारे जीवन में पापकर्म ही किए हैं।

5.शरद पूर्णिमा व्रत,

नवरात्र और विजयादशमी के बाद आने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण पर्व है-शरद-पूर्णिमा। भगवान श्रीकृष्ण ने जगत् की भलाई के लिए रासोत्सव का यह दिन निर्धारित किया है, क्योंकि इस रात्रि को ही 16 कलाओं से पूर्ण चंद्रमा अपनी अमृतमयी चंद्रिका धरा पर बिखेरता है। शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा व पृथ्वी की दूरी बहुत कम होती है, इसीलिए अमृत-प्राप्ति की इच्छा से लोग शरद-पूर्णिमा की रात्रि को दूध, दूध की खीर, घी और चीनी मिलाकर जमाने के लिए चंद्रमा की किरणों में रख देते हैं। शरद-पूर्णिमा के दिन माताएं अपनी संतान की मंगलकामना के लिए व्रत रखती हैं और देवी-देवताओं की पूजा करती हैं। इस दिन मंदिरों में पूजन अर्चन किया जाता है। वर्ष में केवल शरद-पूर्णिमा की रात्रि को ही चंद्रमा अपनी षोडश कलाओं वाला होता है। यह व्रत बहुत ही पवित्र माना जाता हैं। इसमें प्रदोष और निशीथ दोनों में होनेवाली पूर्णिमा ली जाती है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिये। १- इस दिन काँसी के पात्र में घी भरकर सुवर्ण सहित ब्राह्मण को दे तो ओजस्वी होता है, २- अपराह्न में हाथियों का नीराजन करे तो उत्तम फल प्राप्त होता है। आश्विन निशीथ व्यापिनी पूर्णिमा को प्रभात के समय आराध्यदेव को वस्त्राभूषणादि से सुशोभित करके षोडशोपचार पूजन करना चाहिये। पूर्ण चन्द्रमाके मध्य आकाश में दिखाई देने पर पूजन कर खीर का भोग लगाना चाहिये। एक बार राधाजी ने भगवान् कृष्ण की अनन्य प्रेयसी मुरली (बांसुरी) से पूछा- "हे मुरली! सुमने ऐसा कौन-सा तप किया है, जो गिरिधर के मुख पर लगकर उनके अधरों का रसपान करती शाती हो, यह सुनकर मुरली ने मुस्करा कर कहा- "राधिके! मैंने इसके लिए बहुत ही कठोर तप किया है। मैं शांत स्थल पर जन्मी, एक दिन एक कठोर हृदय व्यक्ति ने मेरे ऊपर लोहे के औजार का प्रयोग कर मेरे अंगों को काट-काटकर नष्ट कर दिया। इससे मेरा गर्व ही चूर-चूर नहीं हुआ, बल्कि असाध्य पीड़ा को भी मैंने भोगा। मेरे दुःखों का यहीं पर अंत नहीं हुआ। उसी व्यक्ति ने यंत्र के जरिए मुझमें सात छिद्र बनाए। इसके मुझे दर्द होने लगा , लेकिन उस व्यक्ति पर कोई असर नहीं पड़ा। मुझे घर ले जाकर एक कोने में पटक दिया गया। वहीं से बालकृष्ण मुझे चुपचाप उठा लाए और जिस समय मेरी जन्मस्थली में जाकर कदंब के पेड़ के नीचे खड़े होकर शरद पूर्णिमा की चंद्र ज्योत्सना में मुझे अपने अधरों पर रखकर, में सारे दुःख कष्टों, को भूलकर तन्मय हो उठी। उस तन्मयता

में ही उन्हीं की स्वर रागिनी में गूंज उठी। उस समय मेरी गूंज को सुनकर सारे व्रजवासी अपना अस्तित्त्व भूल गए और जिधर मेरा स्वर गूंज रहा था, उसी दिशा में दौड़ पड़े। उस मदमाती रात्रि में अमृतवर्षा के समय श्रीकृष्ण ने महारास रचाया। इस तरह मेरे जीवन का संगीत सबको सुनना उपलब्ध हुआ

5.6 कार्तिक, मार्गशीर्ष मास के प्रमुख व्रत

1. अहोई अष्टमी व्रत,
2. करवा चौथ व्रत,
3. रमा एकादशी व्रत,
4. नरक चतुर्दशी व्रत,
5. यमद्वितीया व्रत,
6. आरोग्य व्रत,
7. सार्वभौम व्रत,
8. आरोग्य व्रत,

1.अहोई अष्टमी व्रत

पुत्र की दीर्घायु के लिए यह व्रत किया जाता है। कार्तिक कृष्णपक्ष की सप्तमी या अष्टमी के पुत्र की दीर्घ आयु एवं सुख-समृद्धि के लिए माताएं अहोई देवी की पूजा करके यह व्रत धारण करती हैं।अहोई अष्टमी तिथि को पूरा दिन व्रत रखकर सब प्रकार की कच्ची रसोई बनाई जाती हैं।घर के दीवार में आठ कोष्ठक की एक पुतली लिखी जाती है। उसी के समीप स्यही से आकृति बनाई जाती है। जमीन पर यन्त्र का निर्माण कर कलश की स्थापना की जाती हैं। रसोई का थाल लगाकर भोग के लिए तैयार रखा जाता है। कलश-पूजन के बाद का विधिवत पूजन किया जाता हैं। उसके बाद दूध और चावल का भोग लगाकर यह व्रत किया जाता हैं।

2.करवाचौथ व्रत

करकचतुर्थी व्रत (करवाचौथ) के नाम से भी जाना जाता हैं। वामनपुराण में इस व्रत का वर्णन मिलता हैं। यह व्रत कार्तिक कृष्ण की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी को किया जाता है। यदि वह दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो या दोनों ही दिन न हो तो 'मातृविद्धा प्रशस्यते' के अनुसार पूर्वविद्धा लेना चाहिये।

इस व्रत में स्वामि कार्तिक और चन्द्रमा का पूजन किया जाता हैं। भोग में नैवेद्य को मे काली मिट्टी के कच्चे करवे में नैवेद्य बनाकर परमात्मा को अर्पण करना चाहिये। इस व्रतको विशेषकर सौभाग्यवती स्त्रियाँ अथवा उसी वर्ष में विवाहित हुई कन्याये भी इस व्रत को करती हैं। व्रत के दिन प्रातःस्नानादि नित्यकर्म करके 'मम सुखसौभाग्यपुत्रपौत्रादिसुस्थिरश्रीप्राप्तये करक चतुर्थीव्रतमहं करिष्ये।' ऐसा कहकर संकल्प करना चाहिए, तथा सफेद मिट्टी की बेदी का निर्माण करके पीपल का वृक्ष नाम लिखे और उसके नीचे शिव-शिवा और षण्मुख को मूर्ति अथवा चित्र स्थापन करके 'नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संतति शुभाम् । प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे।से पार्वती का षोडशोपचार पूजन कर और 'नमः शिवाय' से शिव तथा 'वण्मुलाच नमः' से स्वामिकार्तिक का पूजन करके नैवेद्य का भोग लगाकर चन्द्रमा को अर्घ्य देकर व्रत को संपन किया जाता हैं।

3.नरक चतुर्दशी व्रत

शास्त्रों में नरक चतुर्दशी व्रत का वर्णन मिलता हैं। कि पूजन और व्रत यमराज को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। जिसका उद्देश्य नरक से मुक्ति पाना है, क्योंकि यमराज के रुष्ट होने से प्राणी को नरक में दी जाने वाली यातनाओं का कष्ट भोगना पड़ता है। दैत्यराज बलि के वामन भगवान से मांगे वरदान के अनुसार उस दिन जो व्यक्ति यमराज को दीपदान करता है, उसको यम-यातना नहीं होती हैं। तथा उसके घर में सदेव लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध करके पृथ्वी को भारमुक्त किया था। उसी के उपलक्ष्य में इस व्रत को किया जाता हैं। इस पर्व पर स्नान करने के पूर्व शरीर पर तिल के तेल की मालिश करने का अधिक महत्व बताया गया है। यदि चतुर्दशी के दिन दीपावली हो तो तेल में लक्ष्मी और जल में गंगाजी निवास करती है, यह व्रत कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को रखा जाता है। इस दिन शरीर पर तिल के तेल की मालिश करके सूर्योदय के पूर्व स्नान करने का विधान बताया गया है। स्नान के दौरान अपामार्ग को शरीर पर स्पर्श करना चाहिए। स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर तर्पण करके तीन अंजलि भरकर जल अर्पित करें। इसे तीन दिन तक करना चाहिए। जिनके माता-पिता जीवित हों, उनको भी नरक चतुर्दशी के दिन जलांजलि अर्पित कर यमराज और भीष्म का तर्पण करने का विधान हैं। इसी दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। जिससे इस व्रत का नाम नरक चतुर्दशी पड़ा।

मार्गशीर्ष व्रत -

1.भैरव अष्टमी व्रत,

2.उत्पन्ना एकादशी व्रत,

3.मोक्षदा एकादशी व्रत,

3.धन्य व्रत, संकष्ट चतुर्थी व्रत,

4. प्रदोष व्रत,

5. द्वादशादित्य व्रत,

6. शिव चतुर्दशी व्रत,

1.भैरव अष्टमी व्रत

पुराणों में वर्णन मिलता है कि 'भैरव' भगवान शंकर के ही स्वरुप हैं। इसी दिन मध्यान के समय शिवजी के प्रिय गण भैरवनाथ का जन्म हुआ था। भैरव से काल को भी भय रहता था। इसीलिए इन्हें 'कालभैरव' के नाम से भी जाना जाता है। अनेकों स्थान में भैरव जी के अनेक मंदिर स्थापित हैं।जो मनुष्य कालभैरव का उपवास रखकर जागरण करने पूजन करता हैं उस मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। भैरव जी के उपवास के लिए रविवार और मंगलवार का दिन शुभ माने गये हैं। यदि इन दिनों में से किसी भी दिन **अष्टमी** तिथि हो, तो उसका विशेष माहात्म्य होता है। ऐसी मान्यता है कि भैरव अष्टमी के दिन प्रातःकाल पितरों का श्राद्ध और तर्पण करने के बाद कालभैरव की पूजा करनी चाहिये।इस व्रत को करने से लौकिक, पारलौकिक बाधाओं से मुक्ति मिलती है। यह व्रत मार्गशीर्ष अगहन मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को रखा जाता है। इस दिन उपवास रखकर संकल्प करें। प्रातःकाल दांतों को साफ कर स्नान करें। तर्पण करके प्रत्येक प्रहर में कालभैरव एवं ईशान नाम के शिवशंकर भोलेनाथ का विधिपूर्वक पूजन करके तीन बार अर्घ्य दें। मध्यरात्रि में कालभैरव की आरती कर। शंकर भगवान तथा भैरवनाथ की कथा का श्रवण करना चहिये।

2.उत्पन्ना एकादशी व्रत

उत्पन्ना एकादशी के व्रत का उल्लेख हमारे प्राय सभी पुराणों में मिलता हैं। सतयुग में 'मुर' नाम का एक राक्षस हुआ था , जिसने ऋषि-मुनि, एवं देवताओं कष्ट पहुंचाकर प्राणिमात्र को त्रस्त कर रखा था। यहां तक कि उसने ब्रह्मा वसु, आदित्य, वायु, अग्नि चार देवताओं को भी जीत लिया। उसका नाश करने के लिए इस तिथि को एक शक्ति उत्पन्न हुई। इसी शक्ति के कारण इस तिथि का नाम उत्पन्ना एकादशी' पड़ा। इस दिन इस व्रत को करने से सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति मिलती हैं। यह व्रत मार्गशीर्ष अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को रखा जाता है। एकादशी के दिन ब्राह्मबेला में उठकर दैनिक

कर्म स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् श्रीकृष्ण का जल, चंदन, धूप, रोली, पुष्प, अक्षत आदि से विधिवत् पूजन करना चाहिए। इस व्रत को करने से सभी प्रकार की मनोकामनाए पूर्ण होती हैं।

3.धन्यव्रत

वाराहपुराण के अनुसार यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षों की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर प्रत्येक शुक्ल या कृष्ण प्रतिपदा को पूरा वर्ष व्रत किया जाता हैं। व्रत के दिन रात्रि के समय विष्णु का पूजन करते समय - 'वैश्वानराय पादौ', 'अग्नये उदरम्', 'हविर्भुजे उरः', 'द्रविणोदाय भुजे', 'संवर्ताय शिरः' और 'ज्वलनायेति सर्वाङ्गम्' पूजयामि से अङ्ग पूजा करके गन्ध-पुष्पादि अर्पण करना चाहिए। वर्ष के अन्त में व्रत के पूर्ण होने पर स्वर्ण अग्नि मूर्ति बनवाकर उसे लाल वस्त्र से भूषित करके लाल रंग के गन्ध-पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। भविष्यपुराण के अनुसार सङ्कष्टचतुर्थीव्रत मार्गशीर्ष कृष्ण की चन्द्रोदयव्यापिनी पूर्वविद्धा चतुर्थी को करना चाहिये। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि के पश्चात् व्रत करने का संकल्प करके सायंकाल के समय अनेक प्रकार के गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का पूजन करके इस व्रत को पूर्ण करना चाहिए।

पौषमास व्रत

1. सफलता एकादशी व्रत,
2. पुत्रदा एकादशी व्रत,
3. ईशान व्रत,

1. सफलता एकादशी व्रत

सफला एकादशी का व्रत-उपवास करने से प्रत्येक कार्य में सफलता और रुके हुवे कार्य पूर्ण होते हैं। व्रत करने वाले के सारे मनोरथ सफल होते हैं। इसीलिए इस व्रत को सफला एकादशी कहते हैं। इसकी गणना समस्त एकादशी व्रतों में शीर्षस्थान पर की गई है। जेसे पक्षियों में गरुड़, यज्ञों में अश्वमेध, नदियों में जाह्नवी (गंगा), देवों में विष्णु हैं। उसी प्रकार व्रतों में सफला एकादशी का व्रत श्रेष्ठ माना गया है।

2.पुत्रदा एकादशी व्रत

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि पौष मास शुक्लपक्ष एकादशी का व्रत और अनुष्ठान भद्रावली के राजा सुकेतु को इस दिन पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई थी। तभी से इसका नाम पुत्रदा अर्थात पुत्र एकादशी के नाम से जाना जाता हैं।

विधि- इस व्रत को पौष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को षोडशोपचार पूजा के द्वारा किया जाता हैंl पुत्र की प्राप्ति के लिए यह व्रत किया जाता हैंl

मकर संक्रांति व्रत

1.षट्तिलका एकादशीव्रत,
2.अचला सप्तमी व्रत
3.जया एकादशीव्रत,
4.मन्दार षष्ठी व्रत,
5.माघी पूर्णिमा व्रत,
6.तिलक द्वादशी व्रत,
7.भीम द्वादशी व्रत,

1.**षट्तिलका एकादशीव्रत**

इस एकादशी के दिन छह प्रकार के तिलों क द्वारा नारायण का ध्यान किया जाता हैंl इसी तिलों के द्वारा पट्टतिला एकादशी के नाम से जाना जाता हैं । जो मनुष्य इस व्रत को पूर्ण विधि-विधानानुसार पालन करके पूरा करता है, उसे बुरे कर्मों और पापों से मुक्ति मिलती हैl तथा उसका जीवन सुखमय बनता है। व्रत और उपवास के बराबर अन्य कोई व्रत श्रेष्ठ दिखाई नही देता, इस एकादशी के दिन काली गो , काले तिलों का दान करने का विशेष महत्व है।

2.अचला सप्तमी व्रत

यह अचला सप्तमी सूर्यनारायण की प्रसन्नता के लिए किया जाता हैंl इस शुभ दिन में स भगवान सूर्य को गंगाजल से अर्घ्य देकर दान किया जाता हैंl सूर्य की ओर मुख करके ध्यान कर जल का अर्घ्यदान करने से शारीरिक चर्मरोग, अनेक व्याधियों ,विकारों का शमन हो जाता हैंl यह व्रत माघ मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी को किया जाता है। स्त्री सूर्यनारायण की प्रसन्नता के लिए यह व्रत रखती हैं। पष्टी के दिन केवल एक बार भोजन ग्रहण कर, उसी दिन से सूर्यनारायण का विधिपूर्वक पूजन प्रारंभ कर सप्तमी को प्रातःकाल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर किसी नदी या तालाब में जाकर दीप धारण करके सूर्य की ओर मुख कर स्तुति करके अर्घ्यपात्र में गंगाजल, रोली, अक्षत तथा रक्तवर्ण का पुष्प रखकर

अर्घ्य देना चाहिये। भविष्यपुराण में वर्णन मिलता है कि प्राचीनकाल में इंदुमती नाम की एक रूपवती वेश्या थी। एक दिन वह महात्मा वसिष्ठ के आश्रम में पहुंची और हाथ जोड़कर प्रणाम करने के बाद कहने लगी- "हे मुनिराज ! मैंने आज तक कोई धार्मिक कार्य जैसे- दान, हवन, व्रत, उपवास या किसी भी तरह का भगवान् का पूजन कभी भक्ति से नहीं किया। मैं हमेशा भौतिक सुखों को भोगने में लगी रही। अब भव-सागर से मेरी मुक्ति कैसे होगी, यही चिंता मुढे समय विदश्य किए रहती है। कृपाकर आप मुझे कोई ऐसा व्रत, दान आदि कर्म बताएं, जिसके अनुष्ठान मुझे मोक्ष प्राप्त हो सके। उस ऋषि ने कहा देवी तुम इस अचला सप्तमी का विधि विधान से व्रत करो तुम्हारे सारे पाप दूर हो जायेगे। उस देवी ने अचला सप्तमी का व्रत करना प्रारंभ कर सारे दुखों से मुक्त हो गयी।

3.जया एकादशीव्रत

दुख-दरिद्रता एवं कष्ट से मुक्ति के लिए जया एकादशी व्रत किया जाता हैं। तथा इस व्रत को पवित्र माना गया है। जो भी मनुष्य जया एकादशी व्रत के दिन श्रद्धाभाव से भगवान् विष्णु का पूजन करते हैं, उनको वैकुंठ की प्राप्ति होती है। यह व्रत माघ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस दिन का व्रत शुद्ध मन से करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है।

फाल्गुन व्रत

1.विजया एकादशी व्रत,

2.महाशिवरात्रि व्रत,

3.आमलकी एकादशी व्रत,

4.जानकी व्रत,

5.पयोव्रत

6.मधुक तृतीया व्रत,

7.मनोरथ चतुर्थी व्रत,

8.लक्ष्मी सीतष्टमी व्रत,

9.बुधाष्टमी, आनन्द नवमी व्रत,

10.पापनाशिनी व्रत

11.महेश्वर व्रत,

12.नन्दत्रयोदशी व्रत,

13.महेश्वर व्रत,

14.फाल्गुनी पूर्णिमा व्रत,

15.वृषदान व्रत,

16.लक्ष्मीनारायण व्रत,

1. विजया एकादशी व्रत,

इस एकादशी के दिन ही भगवान् श्रीराम लंका पर आक्रमण करने के लिए समुद्र तट पर पहुंचे और इस व्रत को पोडशोपचार विधि से शिवपूजन कर समुद्र पर पुल बांधने में सफल हुए थे। इस व्रत के प्रभाव से ही उन्होंने रावण पर विजय प्राप्त की थी। जो मनुष्य इस व्रत का पूर्ण श्रद्धापूर्वक नियम से पालन करता है, उसकी सर्वत्र सदा ही विजय होती है। उसके समस्त कष्ट दूर होते हैं। कार्य में सफलता प्रदान करने के कारण ही इसका नाम विजया एकादशी पड़ा है। यह व्रत फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस दिन साधक प्रातःकाल उठकर दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नानादि से शुद्ध होकर। भूमि पर सात प्रकार के अन्न (सप्तधान्य) रखकर उसके ऊपर मिट्टी का बना हुआ सुंदर कलश स्थापित कर शंकर जी की पूजा तथा अभिषेक कर सभी मनोकामनाये पूर्ण होती हैं।

2.महाशिवरात्रि व्रत

मन की शुद्धि और पापों के विनाश हेतु यह भगवान् शंकर का अत्यंत महत्वपूर्ण महाशिवरात्रि व्रत माना जाता हैं। इस व्रत को करने से मनुष्य सभी प्रकार के भय से मुक्त हो जाता हैं। सृष्टि के आरंभ में इसी दिन मध्य रात्रि को भगवान् शिव का ब्रह्मा की भौहों से रुद्ररूप में प्राकट्य हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय तांडव करते हुए भगवान् शिव ने ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर दिया था, इसलिए भी इसे 'महाशिवरात्रि' अथवा 'कालरात्रि कहा जाता है। महाशिवरात्रि शिव के लिंगरूप में उद्भव का दिन भी माना जाता सनातन परम्परा में महाशिवरात्रि व्रत का विशेष महत्त्व बताया गया है। महाशिवरात्रि के समान कोई दूसरा पापनाशक व्रत नहीं है। इस व्रत को करके मनुष्य अपने सभी पापों से मुक्त होकर अनन्त फल प्राप्त करता हैं।इस व्रत के करने से एक हजार अश्वमेध तथा सौ वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता हैं। शास्त्रों के अनुसार जो मनुष्य 14 वर्ष तक निरंतर इस व्रत का पालन करता है, उसके कहीं पीढ़ियों के पाप नष्ट होने के साथ साथ शिवलोक की भी प्राप्ति होती है। शिव महापुराण में कहा गया हैं कि महाशिवरात्रि का व्रत भगवान् शिव की पूजा-आराधना

के निमित्त ही बनाया गया है। इस व्रत को भगवान् श्रीराम, राक्षसराज रावण, दक्षकन्या सती, हिमालयकन्या पार्वती और विष्णुपली लक्ष्मी ने भी किया था । जो मनुष्य शास्त्रानुसार इस व्रत में उपवास रखकर रात्रि तक जागरण कर भगवान शंकर का अभिषेक करते उनके सभी प्रकार दुःख दूर हो जाते हैं। इस दिन पारद शिवलिंग का विधि-विधान से अभिषेक किया जाए, तो कहीं गुना फल की प्राप्ति होती हैं।

3 . पयोव्रत

श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित यह व्रत फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से द्वादशी पर्यन्त बारह दिन में पूर्ण किया जाता है। इस व्रत में गुरु-शुक्रादि का उदय और शुभ मुहूर्त देखकर फाल्गुनी अमावस्या को वन में जाकर

'त्वं देव्यादिवराहेण रसाया: स्थानमिच्छता।
उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय॥

इस मन्त्र से जंगली शूकर की खोदी हुई मिट्टीको शरीरमें लगाये और समीपके सरोवर में जाकर शुद्ध स्नान कर गौ के दूध से की खीर बनाकर दो तपस्वी ब्राह्मणों को उसका भोजन कराये और स्वयं भी उसी का भोजन करे। दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा को भगवान् को गौ के दूध से स्नान कराकर हाथ में जल लेकर 'मम सकलगुणगणवरिष्ठ महत्त्वसम्पन्नायुष्मत्पुत्रप्राप्तिकामनया विष्णुप्रीतये पयोव्रतमहं करिष्ये। "ऊ नमो भगवते वासुदेवाय नम" इस मन्त्र से आवाहनादि षोडशोपचार पूजन करके भगवान का ध्यान कर व्रत करना चाहिए।

4.अशोकव्रत

विष्णुधर्मोत्तरपुराण में वर्णन आता हैं कि यह व्रत फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन किया जाता हैं इस दिन पवित्र जल में मृत्तिका मिलाकर स्नान करे, मस्तक पर भी मृत्तिका का लेपन कर मृत्तिका का भक्षण भी करने का विधान हैं। तत्पश्चात् शुद्ध भूमि में वेदी बनाकर 'भूधर' नाम के देवता की कल्पना करके 'भूधराय नमः, इस नाम-मन्त्र से भूधर देवता का पूजन करे और 'धरणीं च तथा देवीमशोकेति च कीर्तयेत्। या विशोकां धरणि कृतवांस्त्वां जनार्दनः।इस मन्त्र से प्रार्थना कर इस व्रत को शुद्ध मन से करना चाहिए।

5.आमलकी एकादशी व्रत

शत्रुओं पर विजय एवं दुखों से मुक्ति के लिए आमलकी एकादशी का व्रत किया जाता हैं। इस व्रत को करने के लिए आंवले के वृक्ष के समीप जाकर भगवान विष्णु का ध्यान एवं पूजन करना

चाहिए क्योंकि इस वृक्षवर्मे भगवान नारायण का निवास होता है। इसीलिए एकादशी के दिन आमलक वृक्ष की पूजा की जाती है. जिससे उसका नाम आमल एकादशी पड़ा। यह व्रत फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस व्रत को करने से मनुष्य सभी तरह के पापों से मुक्त हो जाता हैं।

5.10 सारांश

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ गये होंगे की प्रत्येक महीने मैं अलग-अलग व्रतों का उल्लेखवेद, पुराणों मैं प्राप्त होता हैं। काल शास्त्रानुसार बारह मास होते हैं, जब भी जिस मास का प्रारंभ होता हैं तोउस समय काल यानि ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सूर्य का विचार किया जाता हैं। प्रत्येक महीने का प्रारंभ कालसूर्य किस राशी पर स्थित हैं उससे मास का ज्ञान किया जाता हैं चैत्र से लेकर फाल्गुन मास पर्यन्त सूर्य जिसराशि मैं संक्रान्ति के दिन प्रवेश करता है वह मास प्रारंभ हो जाता हैं। जैसे आजकल श्रावण मास चल रहा हैंयानि सूर्य कर्क राशि पर तीस दिन तक रहेगा। इसी प्रकार से शुभ मुहूर्त के द्वारा जो भी शुभ एवं पवित्र मासहैं उस मास मैं आने वाले व्रतों को विधि विधान के द्वारा व्रत करना चाहिए। प्राचीन भारतीय परम्परा मैंऋषियों के द्वारा व्रत पर्वों का चलन प्रारम्भ हुआ जो आज तक चल रही हैं यही तक नहीं अपितु सत्ययुग मैंभी साक्षात् देवता व्रतों का पालन करते थे तथा उपवास भी रखते रहे हैं। इससे यह ज्ञात होता हैं कि हमारीभारतीय संस्कृति कितनी उच्च कोटि की संस्कृति थी जिसका प्रचलन आज भी दिखाई पड़ता रहता हैं। प्राचीनकाल मैं राज्य व्यवस्था चलानें का एक नियम हुआ करता था उस राजव्यवस्था को चलानें वाले, कवि विद्वान,पंडित होते थे, जो इस व्यवस्था को देखते रहते थे,परन्तु आज के युग मैं यह विषय लुप्त हो चुके हैं। इसईकाई मैं आश्विन से लेकर फाल्गुन तक सभी प्रकार के कृष्ण,शुक्ल पक्षीय व्रतों जैसे आश्विन मैं नवरात्र ब्रत,नागपंचमीव्रत श्रावण पूर्णिमा व्रत इत्यादि सभी व्रतों के विषय मैं बताया गया हैं , कार्तिक मास मैंमहाशिवरात्रि व्रत, कार्तिक पूर्णिमा व्रत, मार्गशीर्ष मास मैं भी अनेक प्रकार के व्रतों के बारे मैं बताया गया हैं।पौष के व्रत ,माघ मास मैं संक्रान्ति व्रत, शंकर जी की आराधना के लिए सोमव्रत, प्रदोष व्रत, फाल्गुन मास मैंहोली पर्व, इत्यादि के बारे मैं विस्तृत चर्चा की गयी हैं। इसके अतिरिक्त स्कन्द-पुराण, पद्मपुराण, वायुपुराण, भागवत पुराण, भगवद्गीता, इत्यादि ग्रंथो मैं विस्तार से व्रतों का उल्लेख प्राप्त होता हैं। प्रत्येक मासकी अपनी अपनी विशेषता रही हैं ,उसी के अनुरूप व्रतों का विधि विधान के द्वारा मुहूर्त तथा वेदिक पद्धति,कर्मकांड के माध्यम से व्रत करना चाहिए, तत् पश्चात् व्रत का उद्यापन करना ही व्रत की पूर्णता मानी जातीहैं। इन सभी का अध्ययन करके हमने पाया की जिस प्रकार प्राणों को बचाने के लिए अन्न

की आवश्यकताहोती हैं उसी प्रकार से इस देहरुपी शरीर को निरोगी,तथा पवित्र बनानें के लिए व्रत तथा उपवास कीआवश्यकता होती हैं। जिससे मनुष्य इस देह मैं आकर जीवन के उद्देश्य पूर्ण कर सके।

5.11 पारिभाषिक शब्दावली

ऋषि - सदैव ईश्वरीय आराधना में लगने वाला तथा नित्य जनकल्याण हेतु शोध करने वाला।

महात्मा- जिनकी आत्मा महान है

आध्यात्मिक - भक्ति मार्ग

पुराण- जो पुराना होकर भी नवीन है

उपवास- समीप रहकर

प्राचीन - पिछले वर्षों से चला आ रहा हैं

उच्च- श्रेष्ठ

काल- समय

पर्व- उत्सव

नित्य- हमेशा

मध्यान्ह- दिन का समय

पयो व्रत - दूध से किया जाने वाला व्रत

5.12 अभ्यास प्रश्न

1.आश्विन मास का प्रारंभ कब होता हैं।

2.नवरात्र व्रत किस मास मैं आती हैं।

3.कार्तिक मास का प्रारंभ कब होता हैं।

4.शिवरात्रि व्रत किस मास मैं आती हैं।

5.वसन्त पंचमी का उत्सव कब होता हैं।

6.बारह महीने मैं सर्वश्रेष्ठ मास कोन सा हैं।

7.व्रतों का वर्णन कहां मिलता हैं ।

8.विजया एकादशी व्रत कब किया जाता हैं।

9.अचला सप्तमी का व्रत कब किया जाता हैं।

10.रमा एकादशी व्रत किस मास में किया जाता है।

11.अहोई अष्टमी व्रत किस फल की प्राप्ति के लिए किया जाता हैं।

12 .मार्गशीर्ष मैं कोन सा व्रत किया जाता हैं।

13.किस व्रत मैं भगवान सूर्य को जल चढ़ाया जाता हैं।

14 .आमलकी व्रत मैं किसका पूजन किया जाता हैंl

15. वर्तमान में व्रत करने से कोन सा लाभ होता हैंl

5.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. जब सूर्य कन्या राशि पर प्रवेश करता हैं।

2. आश्विन मास

3. कार्तिक मास का

4. फाल्गुन

5. माघ मैं

6. मार्गशीर्ष

7. पुराणों में

8. फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9. माघ शुक्ल पक्ष मैं।

10 .कार्तिक मास मैं।

11.दीर्घायु के लिए।

12.उत्पन्ना एकादशी व्रत।

13.अचला सप्तमी

14.आंवले के वृक्ष की

15. शारीरिक लाभ

5.14 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. व्रत परिचय

2.भगवद्गीता

3.भागवत महापुराण

4.ब्रह्मवैवर्तपुराण

5.वायव्य पुराण

6.स्कन्द-पुराण पुराण,

5.15 निबन्धात्मक प्रश्न

1.आश्विनादि मासों की विशेषताओं पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

2.फाल्गुन मास के किन्हीं तीन व्रतों का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।

3.वर्तमान सन्दर्भ मैं व्रत, उपवास के लाभों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

4.नवरात्र व्रत तथा एकादशी व्रत का उल्लेख कीजिए।

5.माघ मास के महात्म्य तथा माघी पूर्णिमा व्रत का वर्णन कीजिए।

खण्ड -2
पर्व परिचय

इकाई -1 पर्व का सामान्य परिचय

इकाई संरचना

1.1प्रस्तावना

1.2 उदेश्य

1.3 विषय परिचय

1.4 पर्वों का स्वरुप व परिचय

1.4.1 त्यौहार -

1.5 भारत में विविध पर्वोत्सव

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.9 संदर्भित ग्रन्थ

1.10 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना-

प्रिय विद्यार्थियो यह इकाई बी.ए. कर्मकाण्ड तृतीय समेस्टर की BAKA(N)-220 पाठ्यक्रम केद्वितीय खण्ड - पर्व परिचय से सम्बन्धित है।इसके अन्दर आप पर्व के विषय में गहनता से अध्ययन करेंगे कि पर्व क्या है , इनका महत्व और विधान इन सभी विषयों का समावेश इस इकाई के अन्तर्गत आप जानेंगे।सनातन धर्म में पर्व का अपर नाम त्यौहार भी है।पर्व मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं , धार्मिक और सांस्कृतिक समूचे भारत वर्ष में हर रोज कहीं न कहीं पर्व और त्यौहार मनाये जाते हैं , जो कि कुछ सांस्कृतिक दृष्टि से ओर कुछ आध्यात्मिक दृष्टि से , प्रत्येक माह में धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि में हिन्दू रीति-रीवाजों का अपना इतिहास रहा है जो कि सभी धर्म-पन्थों से विलक्षण है , प्रत्येक पर्व और त्यौहार आपसी सदभावना – भाईचार और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से निहित होते हैं।हमारे (सनातनी) पर्व त्योहारों में धार्मिक-अनुष्ठान , पूजा , प्रार्थना , भोग, जुलूस, संगीत और नृत्य, खाना-पीना, परोपकार की भावनाओं से प्रेरित गरीबों को अन्न – जल की सेवा और धार्मिक या पारंपरिक चरित्र की अन्य गतिविधियों का संयोजन हैं। इन गतिविधियों का मूल उद्देश्य शुद्धिकरण करना, दुर्भावनापूर्ण प्रभावों को दूर करना, समाज को नवीनीकृत करना, महत्वपूर्ण क्षणों को पार करना और प्रकृति की महत्वपूर्ण शक्तियों को उत्तेजित या पुनर्जीवित करना था (इसलिए उत्सव शब्द का अर्थ है शक्ति का उत्पादन और त्यौहार दोनों)। चूँकि हिंदू त्यौहार प्रकृति के चक्रीय जीवन से संबंधित हैं, इसलिए उन्हें इसे स्थिर होने से रोकना चाहिए। ये चक्रीय त्यौहार - जो कई दिनों तक चल सकते हैं - पूरे भारत में मनाए जाते हैं । आईये इसी क्रम में विषय का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

1.2 उदेश्य –

- इस इकाई के अध्ययन से विषय वस्तु का बोध हो पायेगा।
- इस इकाई के अंतर्गत हम पर्व क्या है ये जान पायेंगे।
- पर्वों का प्रकार और महत्व क्या है ये बोध होगा।
- भारतीय सभ्यता में लोक पर्व तथा सांस्कृतिक पर्वों का क्या महत्व है इसका बोध हो पायेगा।
- पर्व त्योहारों की धार्मिक महत्वता का भी बोध कर सकेंगे।

1.3विषय परिचय

सनातन धर्म हिंदू धर्म का ही अपर नाम है जिसका उपयोग संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में भी किया जाता है।वैदिक काल में भारतीय उपमहाद्वीप के धर्म के लिए 'सनातन धर्म' नाम मिलता है। 'सनातन' का अर्थ है - शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', अर्थात् जिसका न आदि है न अन्त।सनातन धर्म मूलतः भारतीय धर्म है, जो किसी समय समूचे बृहत्तर भारत (भारतीय उपमहाद्वीप) तक व्याप्त रहा

है और यह एक समय पर विश्व व्याप्त था परंतु विभिन्न कारणों से हुए भारी धर्मान्तरण के उपरांत भी विश्व के इस क्षेत्र की बहुसंख्यक जनसंख्या इसी धर्म में आस्था रखती है।विज्ञान जब प्रत्येक वस्तु, विचार और तत्व का मूल्यांकन करता है तो इस प्रक्रिया में धर्म के अनेक विश्वास और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं। विज्ञान भी सनातन सत्य को पकड़ने में अभी तक कामयाब नहीं हुआ है किंतु वेदांत में उलिखित जिस सनातन सत्य की महिमा का वर्णन किया गया है विज्ञान भी उसके सामने नतमस्तक है।हमारे ऋषि-मुनियों ने ध्यान - योग की गहरी अवस्था में ब्रह्म, ब्रह्मांड, अणु-अणीयान एवं आत्मा के रहस्य को जानकर उसे स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया था। वेदों में ही सर्वप्रथम ब्रह्म और ब्रह्मांड के रहस्य पर से पर्दा हटाकर 'मोक्ष' की धारणा को प्रतिपादित कर उसके महत्व को समझाया गया था। मोक्ष के बगैर आत्मा की कोई गति नहीं इसीलिए ऋषियों ने मोक्ष के मार्ग को ही सनातन मार्ग माना है। तात्पर्य यह है कि सनातन धर्म के प्रत्येक कार्य-गति-विधि , व्रत – उत्सव ,यज्ञ – अनुष्टान सभी विज्ञान ओर तर्क की कसौटी में खरे उत्तरते हैं।

उत्सव या पर्व या त्योहार किसी भी समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक असाधारण घटना है और उस समुदाय और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केन्द्रित है। इसे साधारणतः स्थानीय या राष्ट्रीय अवकाश या मेला के रूप में चिह्नित किया जाता है। एक उत्सव वैश्विक स्थानीयकरण के विशिष्ट मामलों के साथ-साथ उच्च संस्कृति-निम्न संस्कृति अन्तर-सम्बन्धों का गठन करता है। धर्म और लोककथाओं के बाद, एक महत्वपूर्ण उत्पत्ति कृषि है। भोजन इतना महत्वपूर्ण संसाधन है कि कई उत्सव फसल के समय से जुड़े होते हैं। अच्छी फसल के लिए धार्मिक स्मृति और धन्यवाद शरदृतु में होने वाली घटनाओं में मिश्रित होते हैं, जैसे कि उत्तरी गोलार्ध में हैलोवीन और दक्षिणी में ईस्टर।उत्सव अक्सर विशिष्ट साम्प्रदायिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम करते हैं, विशेष रूप से स्मरणोत्सव या देवताओं, देवी या सन्तों को धन्यवाद देने के सम्बन्ध में: उन्हें संरक्षकोत्सव कहा जाता है। वे मनोरंजन भी प्रदान कर सकते हैं, जो वृहदुत्पादित मनोरंजन के आगमन से पहले स्थानीय समुदायों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। उत्सव जो सांस्कृतिक या जातीय विषयों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, समुदाय के सदस्यों को उनकी परम्पराओं के बारे में सूचित करना चाहते हैं; कहानियों और अनुभवों को साझा करने वाले वृद्धों की भागीदारी परिवारों के बीच एकता का साधन प्रदान करती है।उत्सवों में भाग लेने वालों को अक्सर पलायनवाद, सामाजीकरण और भ्रातृत्व की इच्छा से प्रेरित किया जाता है, अभ्यास को भौगोलिक सम्बन्ध, सम्बन्धित और अनुकूलन क्षमता बनाने के साधन के रूप में देखा गया है

1.4 पर्वों का स्वरुप व परिचय

प्राय: विश्व में कहा जाता है कि भारत पर्व -त्योहारों का देश है। क्यूंकि यहाँ विविध जाति-धर्म-पन्थ संस्कृति एवं समुदाय के लोग रहते हैं अनेकता में एकता भारतवर्ष में ही दिखती है।इसलिए केवल हिन्दू धर्म की बात करें तो यहाँ पूरे वर्षभर में पर्व- त्यौहार ही मिलेंगे जिनमें से कुछ धार्मिक कुछ लौकिक एवं रास्ट्रीय पर्व आदि।यहाँ सालभर में प्रत्येक मास, दिन विशेष में अलग अलग प्रदेशों में

कोई न कोई त्यौहार अवश्य मनाया जाता रहता है। इसलिए त्योहारों को निश्चित संख्या में वर्गीकरण करना उचित नहीं होगा।यहाँ हम प्रमुख पर्वों की बात करेंगे जो धर्म-कर्म की दृष्टि से प्रसिद्द हैं।पर्वों एवं त्योहारों की यहाँ विशेष रूप से हिन्दुओं में , इतनी अधिकता है कि यहाँ तक कहा जाता है कि सप्ताह में केवल सात दिन होते हैं , परन्तु हिन्दुओं में एक सप्ताह में औसतन नौ त्यौहार होते हैं।एक सीमा तक यह व्यंग सत्य भी है परन्तु पर्वों की अधिकता की पृष्ठ भूमी में झांक लेना भी आवश्यक है तभी इसका रहस्य खुल सकता है। प्राचीन विश्व में कई उन्नत ओर विकसित संस्कृतियाँ थीं जिसमें चीन , असीरिया , मिस्र ,सुमेरियन , भारत , यूनान ओर मय संस्कृतियों का विकास उलेखनीय रहा।यद्यपि भारतवर्ष इन विकसित संस्कृतियों में से एक रहा है।परन्तु कई दृष्टियों से भारत की अपनी पृथक पहचान भी रही है।और संस्कृति के विभिन्न पक्षों की उपलब्धीयों की दृष्टि से अग्रगणी रहा है। इस देश को विश्व समुदाय में सोने की चिड़ियाँ कहने का तात्पर्य यह होता है कि वह देश प्रत्येक दृष्टि से सम्पन्न और विकसित है।

पर्व त्यौहार , उत्सव , मेला का आनंद सुख के वातावरण में सुखी जीवन से ही प्राप्त होते हैं।हमारे यहाँ त्योहारों की अधिकता की भी यही पृष्ठभूमी है।चूँकि हम प्रत्येक दृष्टि से सुखी ऑर सम्पन्न थे इसलिए हमने अपने आनंद को व्यक्त करने के लिए भांति-भांति के त्योहारों और उत्सवों का संयोजन कर लिया था।अनेक पर्व एवं त्यौहार फसलों की कटाई से समन्धित है तो अनेक दुसरे सामाजिक सद्भाव और जातीय समीकरण स्थापित करने के लिए हैं।इसके विपरीत कई ऐसे पर्व हैं जो मात्र महिलाओं के लिए हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो पुरुषों के लिए होते हैं।यह देश धर्म प्रिय रहा है इसलिए धार्मिक आख्यानों और पौराणिक कथाओं आदि से प्रेरणा ग्रहण करके सुचारू रूप से जीवन व्यतीत करने के लिए भी हैं जैसे किसी इच्छा की पूर्ति के लिए कोई व्रत – अनुष्ठान करना , काम्य पर्व कहा जाता है तो सामाजिक सद्भाव – सौहार्द हेतु या भेद-भाव दूर करने के लिए बनाये गए पर्वों को सामाजिक पर्व कहा जाता है। कई ऐसे भी पर्व हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम हैं।ऐसे पर्वों को किसी देवी- देवता , कथा आदि से जोड़कर उनको मनाने की प्रेरणा दी गई है।चूँकि यह देश बहुत बड़ा है , यहाँ अनेक जाति , सम्प्रदाय ,पन्थ के लोग रहते हैं , कुछ पर्व अपनी प्रथाओं ओर मान्यतों के आधार पर भी मनाये जाते हैं , सब का मूल आपसी भाईचारा परस्पर सद्भावना निहित रहती है , ये प्राय: सभी प्रकार के पर्वों का एक मुख्य आधार है व्रत ,पर्व ,उत्सव (त्यौहार) तीनों उत्सवों के भिन्न-भिन्न रूप हैं , तथापि किसी न किसी रूप में इनमें परस्पर विचित्र सामानता पाई जाती है।व्रत का विधान बहुधा आध्यात्मिक अथवा मानसिक शक्ति की प्राप्ति के लिए चित्त अथवा आत्मा की शुद्धि के लिए, संकल्प शक्ति की दृढ़ता के लिए ,ईश्वर में भक्ति और श्रधा के विकास के लिए ,वातावरण की पवित्रता , सतत्त कृतज्ञता तथा प्रकारान्तर से स्वास्थ्य लाभ की प्रगति के लिए है।यद्यपि भारतीय विचार धारा में व्रत का सामान्य अर्थ उपवास ही है।इनके उत्सव से साधारण जीवन में भी एक असाधारण सौन्दर्य खिल उठता है। हमारे देश की जीवन परम्परा में वर्ष पर्यन्त पर्व एवं त्योहारों की अटूट श्रृंखला पीरोई हुई है।विशेष दिनों में मनाये जाने पर भी वे अपने असाधारण उत्सव से जीवन और उसके उपकरणों को नवीनता दे जाते हैं।

1.4.1 त्यौहार -

त्यौहार का शाब्दिक अर्थ है प्रति वर्ष किसी निश्चित तिथि को मनाया जाने वाला कोई धार्मिक या सांस्कृतिक उत्सव। भारत में कई प्रकार के विभिन्न धर्मों के त्योहार मनाए जाते हैं जिन्हें हम तीन भागों में बांट सकते हैं –

1.धार्मिक त्योहार -

दीपावली

होली

दशहरा

रक्षाबंधन

क्रिसमस

ईद आदि।

धार्मिक त्योहारों के अंतर्गत किसी विशेष धर्म के त्योहार आते हैं। जिनमें देवी-देवताओं या किसी पौराणिक कहानी के मान्यता अनुसार ये त्यौहार मनाया जाते हैं। जैसे – दीपावली, होली, रक्षाबंधन, दशहरा, बसंत पंचमी, बुद्ध पूर्णिमा क्रिसमस, ईद आदि बहुत से धार्मिक त्यौहार हैं।

2.राष्ट्रीय त्योहार-

स्वतंत्रता दिवस

गणतंत्र दिवस

राष्ट्रीय त्योहारों के अंतर्गत ऐसे विशेष दिन शामिल होते हैं जिनका गौरवशाली इतिहास होता है और देश के नागरिक होने के नाते सभी धर्म के लोग इन राष्ट्रीय पर्व को मनाते हैं।

जैसे 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस, 14 नवंबर को बाल दिवस, 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस या गांधी जयंती, 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस आदि।

3. मौसमी त्यौहार -

लोहड़ी

पोंगल

ओणम आदि।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की 70% से अधिक जनसंख्या खेती पर निर्भर है और इसी वजह से यहां के किसान धरती को अन्न की देवी, माता मानते हैं और हर मौसम में नई फसल आने पर उत्सव मनाते हैं।जैसे पंजाब में लोहड़ी, दक्षिण भारत में पोंगल, असम में बिहू।

1.5 भारत में विविध पर्वोत्सव

त्यौहार जीवन से कहीं बड़े पैमाने पर विभिन्न चीजों का उत्सव होते हैं। वे नियमित अंतराल पर आते हैं और जीवन की एकरसता को तोड़ने में मदद करते हैं। इसके अलावा, वे आपको जीवन में छोटी और बड़ी चीजों का जश्न मनाने का मौका देते हैं। त्यौहार समुदायों में शांति और खुशी के वाहक होते हैं। दुनिया के सभी देशों में कुछ धार्मिक और सांस्कृतिक त्यौहार होते हैं। हालाँकि, भारत कई त्यौहार मनाने वाले सबसे बड़े देशों में से एक है। जैसा कि भारत एक बहुत ही सांस्कृतिक और विविध देश है , इसलिए यहाँ के त्यौहार भी हैं। वे राष्ट्रीय, धार्मिक और मौसमी की तीन सामान्य श्रेणियों में विभाजित हैं।

नव वर्ष से के नवरात्र (चैत्र) प्रारम्भ होकर , अक्षय तृतीया , वट-सावित्री , गंगा दशरा , गुरुपूर्णिमा , नागपंचमी ,पुन: रक्षा बन्धन , जन्माष्टमी ,गणेश पूजा , पित्रपक्ष महालया , शारदीय नवरात्र , विजय दशमी , दीपावली , पुन: मकरसं-क्रांति,शिव – महारात्रि, बसन्त पंचमी , होली तक।पर्व संस्कृति की यह रागिनी अपने उच्चतम स्वर पर पहुंचती है।ओर तब वर्ष की रागनी का अवसान होता है , एवं पुन: यही क्रम चलता है ...|

वर्ष की अविछिन्न रागिनी को जन्मोत्सव ,उपनयन, विवाह आदि के संस्कारों , मेलों ,यात्राओं आदि की तानें एवं आलापों ऑर भी सुन्दर एवं सम्पन्न बना देती है।

व्रत मनुष्य के व्यक्तिगत आंतरिक भक्ति भावों के निष्काम व नित्य रूप से आनंदित होने के कारक हैं।इनमें शुद्धता (शारीरिक एवं भाव) संकल्प तथा एकाग्रता , हवन आहुति नियंत्रित अनिवार्य नियम , निर्दिष्ट तिथियाँ विसर्जन एवं प्रसाद वितरण आदि तत्वों की अनिवार्यता है।ये साधक एवं भाव भावपूर्ति के व्यक्तिगत आरोपण है, इनमें बंधन या अनिवार्यता की सामाजिक एवं सामूहिक प्रवृति तो नहीं किन्तु प्रत्येक के स्वतंत्र संकल्पों के बन्धन की परावर्ती अनिवार्यता है।

यह व्यक्तिनिष्ठ है एवं प्रत्येक पर्व चित्त की एकाग्रता भाव सामर्थ्य एवं उल्लास से ही संचालित है। पुराणों तथा अन्य ग्रन्थों में व्रतों का साहित्य विशाल है।वैदिक साहित्य सूत्रों , रामायण , महाभारत , तथा हेमाद्रि आदि अनेक ग्रन्थों में इनका वर्णन मिलता है।इन्हीं गाथाओं के आधार पर हमारे देश में व्रत तथा उत्सव मनाये जाते हैं।व्रतों को कही श्रेणी में लिखा गया है।कुछ व्रतों में निराहार रहकर एक बार भोजन किया जाता है , व्रत की श्रेणीयों में कुछ व्रत उत्सव से जुड़े हैं।कुछ सामान्य रूप से धर्म एवं उपासना का सामान्य विधान है।इस प्रकार व्रतों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

ऋग्वेद में आमावस से पूर्व चतुर्दशी को 'सिनिवाली' तथा चतुर्दशी से युत (मिली हुई) पूर्णिमा अर्थात पूर्णिमा से पहले चतुर्दशी को 'अनुमति' कहा गया है।

तिथि शब्द तन से भी उत्पन्न है जिसका अर्थ है फैलना तिथि शब्द ईशा से 800 वर्ष पूर्व साधारण प्रयोग में था।हमारे व्रत तथा अधिकतर उत्सव तिथियां पर ही आधारित है अनुमति तिथि व्रत तथा

आराधना के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी गई है पद्म पुराण 4/841 /42 - 44 में आया है कि अहिंसा सत्य आस्तेयब्रह्मचर्य की कल्पना से दूर रहना इन्हें मानस व्रत कहा जाता है।

जिससे भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं।दिन में एक बार भोजन करना कायिक व्रत कहा गया है। विष्णु के नाम का स्मरण सत्य का सदा भाषण और आप निंदा किसी के निंदा न करना इन्हें वाचिक व्रत की संज्ञा पुराणों में दी गई है।हिमाद्री में बार तथा तिथि आदि में व्रत का वर्णन है| व्रताचरण से मनुष्य को उन्नत जीवन व्यतीत करने के योग्यता प्राप्त होती है ,संकल्प शक्ति का विकास होता है और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से व्यापकता आती है , व्रत के कारण स्वार्थ से अधिक परमार्थ भाव जागृत होता है, व्रत के लिए चारों बातों का ध्यान रखना परम आवश्यक है।जैसे- संकल्प नियम देव आराधना तथा लक्ष्य के प्रति जागरूकता व्रत से कायिक शौच उत्पन्न होता है ,और उससे वातावरण में भी शुद्धता आती है।इस प्रक्रिया से मानसिक शांति और मानसिक शांति से संतुलन में वृद्धि के कारण व्यक्ति अपने विवेक से अपने निर्णय लेने की क्षमता का विस्तार करता हैस्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ने के कारण व्याधियों से लड़ने की क्षमता का भी विकास होता है।भारतीय संस्कृति का यह लक्ष्य है कि पर्वोत्सवों पर हम गहराई से विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि हमारी सांस्कृतिक विचारधारा और विकास के बीच इन पर्वों में छिपे हुए हैं पर वह की विशाल शृंखला के कारण हमारे जीवन में जो उमंग उल्लास और जिजीविषा का उदय होता रहता है , उसी के कारण हमारी संस्कृति सुरक्षित एवं अक्षुण बनी हुई है पर्वों के कारण सामाजिक नवचेतना और दैनिक जीवन की नीरसता का अवसान होता है

| पर्व शब्द का अर्थ है - गांठ या संधि होता है हिंदू पर्व सदैव सन्धि काल में ही पड़ते हैं प्रत्येक संधि कल पर्व की दृष्टि से बहुत-बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। संधि काल का समय दुधारी तलवार के समान होता है कि इसमें लाभ हानि दोनों प्रकार की संभावनाएं एक साथ ही रहती है ऐसी स्थिति में संधि काल में विशेष संयम सावधानी और अनुशासित आहार बिहार की भी आवश्यकता पड़ती है हमारे ऋषियों ने मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से ही संधि काल पर पर्वों का नियमन किया है।ताकि हम सन्धिकाल के दुष्प्रभावों से बचते रहें। इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए पर्वों को कई श्रेणियां में विभक्त किया गया है।जैसे उपासना प्रधान हुए पर्वों को कई श्रेणियां में विभक्त किया गया है जैसे उपासना प्रधान , व्रत प्रधान ,यज्ञ प्रधान ,परंतु ऐसा नहीं है कि कुछ पर्व में इसका मुख्य विधान है उसमें दूसरे प्रकार के पर्वों का समावेश ना हो वास्तव में पर्वों का विभाजन भी एक प्रकार का सैद्धांतिक है क्योंकि व्यवहारिक स्तर पर सभी पर्वों को समान भाव पूजा पाठ अनुष्ठान संयम नियम के लिए व्यवहार में लिया जाता है।

व्रत के कौन लोग अधिकारी होते हैं इसमें अनेक मत-मत्तांतर है अधिकांश विद्वान इस मत को ही मानते हैं कि पर्व मानव मात्र के लिए बनाए गए हैं और उनमें जाति वर्ण संप्रदाय उच्च नीच का कोई भेद नहीं है इन प्रभु का जो उद्देश्य है उनमें मानव जीवन को स्वस्थ सुखी और संतुलित बनाने के साथ-साथ उनके चारित्रिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास के अच्छा रहस्य अंतर्निहित

है जो की सभी मानव समान है और सभी को नियमित संयमित जीवन जीने का अधिकार है इसलिए व्रत पर्व उत्सव भी सभी मनुष्य अपनी सुविधा एवं आवश्यकता के अनुसार कर सकते हैं।

स्कंद पुराण और कर्म पुराण में इस प्रसंग में स्पष्ट विचार उपलब्ध है-

निजवर्णसमाचारनिरत: शुद्धमानस:।अलुब्ध: सत्यवादी च सर्वभूतहितेरत:।|

अवेदनिन्दको धीमानाधिकारी व्रतादिषु।ब्रहामणा: क्षत्रिया वैश्या: शुद्रश्चैव द्विजोत्तमा।| स्कन्ध पुराण

व्रत का सामाजिक आध्यात्मिक अर्थ इन आचरण से है जो शुद्ध सरल और सात्विक हो तथा सुचिता पूर्ण मनोयोग और निष्ठा के साथ किया जाये पर्वों के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह प्रतीत होता है, कि कुछ पर्व वर्ण प्रधान भी रखे गए हैं जैसी रक्षाबंधन ब्राह्मणों के लिए दशहरा क्षत्रियों के लिए दीपावली वैश्यों के लिए तथा होली शूद्रों के लिए इससे यह भी आभास होता है कि कतिपय पर्वों को वर्ण विशेष से समन्ध करने का एक मात्र यहीं उदेश्य रहा होगा कि अपने-अपने व्यवसाय कर्म के अनुरूप अपनी – अपनी बुद्धी कुशलता प्रदर्शित करने का अवशर प्राप्त हो सके।परन्तु इसका ये अभिप्राय नहीं है कि और वर्ण उस पर्व को नहीं मना सकते पर्वों को मनाने की स्वतंत्रता धर्म में सभी को समान दृष्टि से है।परंतु यहां कोई हवा बंद कक्षा के समान पूरी तरह निश्चित नहीं है कि उसमें अन्य लोग भाग नहीं ले सकते धीरे-धीरे सभी प्रभु जाति वर्ण और उपजातियां के लिए खुल गए हैं और शताब्दियों से लोग पर्वों को मिल जुल कर मनाते हैं आज हमारा समाज सामाजिक रूप ले चुका है और आधुनिक संस्कृति भी सामाजिक हो गई है सामाजिक हो गई है हमारे समाज में अनेक धर्म संप्रदाय जाति उपजाति और देश देशांतर के लोग आदिकाल से रहते आए हैं परस्पर आदान-प्रदान साथ-साथ रहने एवं सामाजिक जीवन जीने के कारण सामाजिकता का विकास आवश्यक संभावित होता है इसलिए हिंदू पर्वों के साथ-साथ मुसलमान, ईसाई ,बौध, जैन, सिख, और आर्य समाज सभी के प्रमुख प्रमुख पर्वों को भारत में मिल – जुलकर आपसी भाईचारा के सौहार्द से मनाया जाता है|

बोधात्मक प्रश्न

1. 'सनातन' का अर्थ है
   क. शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला'
   ख. अनवरत
   ग. प्रगति शील
   घ. कोई नहीं
2. हिन्दू नव वर्ष के आरम्भ में कोनसा पर्व आता है।
   क. होली
   ख.दीपावली

ग.मकर संक्रांति

घ . चैत्र नवरात्र

3. व्रत मनुष्य के व्यक्तिगत आंतरिक भक्ति भावों के निष्काम व नित्य रूप से आनंदित होने के कारक हैं।

क. सत्य

ख.असत्य

4. भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे प्रचीन और समृद्ध सम्पन्न है।

क. सत्य

ख.असत्य

1.6 सारांश –

भारत विविधताओं से भरा देश है।यहां जितने धर्म है उतने ही त्यौहार और यहां हर त्यौहार की अपनी एक खासियत है, विशेषता है।और यही विशेषता भारत को विश्व में एक अलग पहचान दिलाती हैं।यहां हर व्यक्ति दूसरे धर्म के त्यौहार को भी उत्साह के साथ मनाता हैं।भारत को पारंपरिक और सांस्कृतिक उत्सव के देश के रुप में अच्छी तरह से जाना जाता है क्योंकि ये बहुधर्मी और बहुसंस्कृति का देश है। भारत में कोई भी हर महीने उत्सवों का आनन्द ले सकता है। यह एक धर्म, भाषा, संस्कृति और जाति में विविधताओं से भरा धर्मनिरपेक्ष देश है, ये हमेशा मेलों और त्योहारों के उत्सवों में लोगों से भरा रहता है। हर धर्म से जुड़े लोगों के अपने खुद के सांस्कृतिक और पारंपरिक त्योहार है। पूरे राष्ट्र में सभी धर्मों के लोगों द्वारा कुछ पर्व मनाये जाते हैं। ये अपने पीछे के महत्वपूर्ण इतिहास, रीति रिवाज और विश्वास के अनुसार अलग अंदाज में हर एक पर्व को मनाते हैं। हर एक उत्सव का अपना एक इतिहास, पौराणिक कथाएँ और मनाने का विशेष महत्व है। विदेशों में रह रहे भारत के लोग भारत के उत्सवों को बहुत उत्साह और जुनून के साथ मनाते हैं। जैसे कि विदित है - भारत एक ऐसा देश है जो विविधता में एकता का उदाहरण है क्योंकि यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई तथा जैन आदि धर्म एक साथ निवास करते हैं। कुछ त्योहारों को राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है जबकि कुछ क्षेत्रीय स्तर पर मनाये जाते हैं। पद्धति और धर्म के अनुसार उत्सवों को अलग-अलग वर्गों में वर्गीकृत किया गया है पूरी दुनिया में हिन्दू धर्म के लोगों द्वारा ढ़ेर सारे सांस्कृतिक और पारंपरिक उत्सव मनाये जाते हैं। हिन्दू धर्म को पूरे विश्व के सबसे प्राचीन संगठित धर्म के रुप में माना जाता है साथ ही साथ इसे दुनिया के तीसरे सबसे बड़े धर्म के रुप में भी गिना जाता है। हर हिन्दू त्योहार को मनाने की अपनी खास पद्धति है, देवी-देवताओं को गंगाजल चढ़ाना, व्रत रखना, जल्दी सुबह गंगाजल से स्नान करना, दान करना, कथा सुनना, होम, आरती आदि बहुत कुछ जिसके द्वारा पूजा की क्रिया संपन्न होती है। बिना किसी जाति, उम्र, और लिंग की परवाह किये हिन्दू धर्म के सभी लोग अपना त्योहार मिल-जुलकर मनाते हैं।हिन्दू त्योहारों की तारीख को हिन्दू कैलेंडर की तारीखों के अनुसार तय किया जाता है, चन्द्र

संबंधी कैलेंडर जो कि पूरे साल सूर्य और चन्द्रमा की चाल पर निर्भर करता है। ऐतिहासिक पौराणिक कथाओं के रुप में कुछ हिन्दू पर्वों को मनाया जाता है, कुछ मौसम के बदलने पर और कुछ पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए। कुछ त्योंहारों को तो खास संप्रदाय के लोग या भारतीय उपमहाद्वीप में ही मनाते हैं।कई सारे प्राचीन और पवित्र धार्मिक मूलग्रंथों (भगवत गीता, महाभारत, और रामायण, ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) हिन्दू देवी आदि की वजह से हिन्दू धर्म में बहुत सारी मान्यताएँ हैं। हिन्दू धर्म में देवी-देवताओं के जन्म और मरण के दिन को भी बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है जैसे नृत्य, गीत आदि से। इस प्रकार हमने भारत में पर्वोत्सवों के विषय में जाना।

1.7 शब्दावली

पर्व- उत्सव या पर्व या त्योहार किसी भी समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक असाधारण घटना है और उस समुदाय और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केन्द्रित है।
अपसंस्कृति – ऐसा आचार या पद्वति जो उच्च या श्रेष्ठ मूल्यों के विरुद्ध हो।
धर्म मूल – धारण करना या बनाये रखना।
आचार- आचरण (व्यवहार)
सांस्कृतिक – संस्कृति(परम्पराओं) से समन्धित।
विविधता – अलग – अलग विशेषता।

1.8 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

1. क
2.घ
3.क
4.क

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

व्रत-पर्व निर्णय
भारतीय व्रत एवं त्यौहार (शारदा प्रकाशन नई- दिल्ली)
निर्णय सिन्धु
धर्म सिन्धु
याज्ञवल्क्य स्मृति
भविष्यपुराण
कर्मकाण्ड समुच्चय
संस्कृत विकिपीडिया

मुहूर्त मार्तण्ड
मुहूर्त चिन्तामणि
मुहूर्त कल्पद्रुम

1.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. पर्वों का विस्तार पूर्वक परिचय दीजिए।
2. व्रत-पर्व-त्योहारों से क्या अभिप्राय है विस्तार पूर्वक समीक्षा कीजिए।
3. सनातन संस्कृति में त्योहारों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
4. पर्वों का क्या महत्व है भारतीय संस्कृति में विवेचना कीजिए।

इकाई -2 वैदिक सनातन परम्परा के प्रमुख पर्व

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उदेश्य

2.3 विषय परिचय

2.4 चैत्र मास की विशेषता तथा पर्वोत्सव –

2.4.1 रंग पंचमी

2.4.2 चैती आमावस्या –

2.4.3 कामदा एकादशी चैत्र शुक्ल एकादशी-

2.4.4 हनुमान जयंती

2.5वैशाख माह के प्रसिद्ध पर्व-त्यौहार –

2.5.1 अक्षय तृतीया

2.6 जेष्ठ माह के पर्व त्यौहार

2.6.1 गंगा दशहरा

2.7 आषाढ़ माह के पर्वोत्सव

2.7.1 जगन्नाथ पुरी यात्रा –

2.7.2 आषाढ़ गुप्त नवरात्र

2.7.3 व्यास पूर्णिमा

2.8 श्रावण मास के पर्व –

2.8.1 नाग पञ्चमी

2.8.2 रक्षा वन्धन श्रावणी उपाकर्म

2.9 भाद्रपद (भादौ) मास के पर्व –

2.9 .1 श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत-पर्व

2.10 आश्विन मास के प्रमुख पर्व

2.11 कार्तिक मास के प्रमुख पर्व

2.12 मार्गशीष माह के प्रमुख पर्व

2.13 पौष मास के प्रमुख पर्व

2.14 माघ माह के प्रमुख पर्व

2.15 फाल्गुन के पर्व

2.16 बोधात्मक प्रश्न

2.17 सारांश

2.18 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

2.19 सन्दर्भित व सहायक पाठ्य सामग्री

2.20 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो! पूर्व की प्रथम इकाई में आपने पर्व क्या है, कितने प्रकार के हैं इन सभी विषयों का गहनता के साथ अध्ययन किया। अब इसी क्रम में हम आगे द्वितीय इकाई का अध्ययन करेंगे। इस इकाई का शीर्षक है- **"वैदिक सनातन परम्परा के प्रमुख पर्व"** इसके अन्दर आप पर्व के विषय में गहनता से अध्ययन करेंगे तथा पर्व क्या है, इनका महत्व और विधान इन सभी विषयों का समावेश इस इकाई के अन्तर्गत आप जानेंगे। सनातन धर्म के कौन-कौन से प्रमुख पर्व मनाये जाते हैं तथा उन पर्वों के पौराणिक वैदिक महत्व को भी जानने का प्रयाश करेंगे। जैसे कि पूर्व में हमने जाना पर्व मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- धार्मिक और सांस्कृतिक समूचे भारत वर्ष में हर रोज कहीं न कहीं पर्व और त्यौहार मनाये जाते हैं, जो कि कुछ सांस्कृतिक दृष्टि से ओर कुछ आध्यात्मिक दृष्टि से, प्रत्येक माह में धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि में हिन्दू रीति-रीवाजों का अपना इतिहास रहा है जो कि सभी धर्म-पन्थों से विलक्षण है, प्रत्येक पर्व और त्यौहार आपसी सदभावना – भाईचार और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से निहित होते हैं।हमारे वैदिक सनातनी परम्परा में पर्व त्योहारों में धार्मिक-अनुष्ठान, पूजा, प्रार्थना, भोग, जुलूस, संगीत और नृत्य, खाना-पीना, परोपकार की भावनाओं से प्रेरित है। आईये जानते हैं हमारे वैदिक सनातन परम्परा के प्रमुख पर्व।

2.2 उदेश्य

- इस इकाई के अध्ययन से विषय वस्तु का बोध हो पायेगा।
- इस इकाई के अंतर्गत हम भारतीय वैदिक सनातन परम्परा के प्रमुख पर्व के विषय जान पायेंगे।
- वैदिक पर्मोरा के कौन-कौन से पर्व हैं बोध हो पाएगा।
- भारतीय सभ्यता में सनातन धर्म के पर्वों का क्या महत्व है इसका बोध हो पायेगा|
- पर्व त्योहारों की धार्मिक महत्वता का भी बोध कर सकेंगे।

2.3 विषय परिचय

सर्वप्रथम हम विषय को मध्य में रखते हुए वैदिक सनातनी परम्परा का संक्षेप में परिचय जानेंगे।तद क्रम में पर्वों का विशद अध्ययन करेंगे।प्रिय विद्यार्थियोंजैसे कि आप सभी परिचित हैं - 'सनातन' का शाब्दिक अर्थ है - शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', यानी जिसका न आदि है न अन्त। सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म के नाम से भी जाना जाता है। इसे दुनिया के सबसे प्राचीनतम धर्म के रूप में भी जाना जाता है। भारत की सिंधु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिह्न

मिलते हैं। वैदिक धर्म, प्राचीन इंडो-यूरोपीय भाषी लोगों का धर्म है जो वर्तमान ईरान के क्षेत्र से लगभग 1500 ईसा पूर्व भारत में आए थे। इसका नाम वेदों के रूप में जाने जाने वाले पवित्र ग्रंथों के संग्रह से लिया गया है। वेदवाद भारत में धार्मिक गतिविधि का सबसे पुराना स्तर है जिसके लिए लिखित सामग्री मौजूद है। यह हिंदू धर्म को आकार देने वाली प्रमुख परंपराओं में से एक थी। वैदिक धर्म का ज्ञान जीवित ग्रंथों और कुछ ऐसे संस्कारों से प्राप्त होता है जो आधुनिक हिंदू धर्म के ढांचे के भीतर मनाए जाते हैं। आरंभिक वैदिक धार्मिक मान्यताओं में कुछ ऐसी मान्यताएँ शामिल थीं जो अन्य इंडो-यूरोपीय-भाषी लोगों, विशेष रूप से आरंभिक ईरानियों के साथ समान थीं।

पर्वों का आध्यात्मिक अर्थ उन आचरणों से है जो शुद्ध , सरल और सात्विक हो तथा शुचितापुर्वक मनोयोग ओर निष्ठा के साथ किये जाएँ।सनातन धर्म में शुचिता का बड़ा महत्व है। सनातन परम्परा के कुछ प्रमुख पर्व एवं त्यौहार इस प्रकार हैं - **धनतेरस , दीपावली, होली, नवरात्रि, दशहरा, महाशिवरात्रि पर्व, गणेश चतुर्थी का पर्व, रक्षाबंधन का पर्व, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, कड़क चतुर्थी करवा चौथ का पर्व , रामनवमी का पर्व, छठ पर्व, बसंत पंचमी का पर्व, रंग पंचमी का पर्व ,मकर संक्रांति, दुर्गा अष्टमी यानी दुर्गा पूजा का पर्व, भैया दूज जिसको भाई दूज कहते , हैं पोंगल लोहड़ी, हनुमान जयंती ,गोवर्धन पूजा, काली पूजा, विष्णु पूजा, कार्तिक पूर्णिमा, नरक चतुर्थी, रथ यात्रा, गौरी हब्बा उत्सव, महेश संक्रांति , हरतालिका तीज, पितृ श्राध , कुंभ उत्सव आदि।** उक्त पर्व समूचे भारतवर्ष एवं देश- विदेशों में रहने वाले सभी भारतीयों के द्वारा बड़े उत्साह एवं धूम-धाम से मनाये जाते हैं।

2.4 चैत्र मास की विशेषता तथा पर्वोत्सव –

वैदिक धर्म में मास विशेष में भी पर्वोत्सव मानाये जाते हैं। चैत्र मास की स्थिति अन्य मासों की अपेक्षा अधिक विचित्र और महत्वपूर्ण होती है।यह मास अन्य मासों की भान्ति दो भागों में अर्थात कृष्ण पक्ष ओर शुक्ल पक्ष में तो विभाजित है , पर सर्वाधिक आश्चर्यजनक पहलू यह है कि इसके दोनों भाग अलग- अलग संवत वर्षों में पड़ता है।इस मास की पहली विशेषता यह है कि इसका प्रथम भाग जो वर्ष का अंतिम अंग होता है, उसके अगले वर्ष में इस मास का द्वितीय भाग प्रारंभ का अंग बनता है| इस मास की दूसरी विशेषता यह है कि 40 दिन के होली पर्व का प्रभाव इस जनमानस पर अपने ही पूरे सवाब में रहता है ।चैत्र कृष्ण पंचमी को रंग पंचमी का पर्व दक्षिण भारत में होली को उत्सव की भांति रंगों का पर्व होता है। इस मास की तीसरी विशेषता यह है कि उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश एवं बिहार के प्रदेशों में क्षेत्र का एक विशेष पर्व होता है, जो लगभग पूरे मास चलता है इस मास

में भी होली उत्सव की भांति राग, रंग मौज, मस्ती का माहौल बना रहता है जिस प्रकार फाल्गुन में होली गीत खूब गए जाते हैं, उसी तरह चैत्र में गई जाने वाले लोकगीतों को चैती या चहिता कहते हैं। यह गीत विशेष रूप से वियोग या सहयोग श्रृंगार के होते हैं।जिनमें वियोग पति या पत्नी अथवा प्रेमी-प्रेमिका अपनी बिरहा वेदना को भिन्न-भिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं।लोक में चाहिता का रंग इतना घनघोर रूप से छा जाता है कि गांव-गांव में चैता गायको की टोलियां रात-रात भर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर जागरण करती है।इसलिए इस मास को उत्पत्ति चाहिए अर्थात उपद्रवी मास कहा गया है। एक गीत के बोल से भी संकेत मिलते हैं- **मिल चैत्र उत्पत्तिया हो रामा** , क्योंकि चैत में ही फसल पकने के बाद कट कर तैयार होती है और खेत खलियान में रखी जाती है। खलियान सामान्य रूप से गांव के बाहर या खेत में होते हैं।जो असुरक्षित स्थान माने जाते हैं मेरे विचार से चैत्र गायकी और चाहिता आयोजन की परंपरा इसी उद्देश्य से विकसित हो गई है, कि चोर - कुचक्कों से खलिहानों की रक्षा की जा सके, लोगबाग गायकी के बहाने ही रात में जागकर अपने धन संपत्ति खेत खलियान की रक्षा करते हैं चैत्र मास में सर्दी समाप्त हो जाती है।और नाम मात्र का गुलाबी जाड़ा रह जाता है।इसलिए घर से बाहर रहकर खेत खलिहान की रक्षा करना और गायकी का आनंद लेना किसी को कष्टदायक प्रतीत नहीं होता है ।चैत्र मास की चौथी विशेषता है कि इसके शुक्ल पक्ष का प्रथम दिन विक्रम नव संवत का प्रथम दिन अथवा नववर्ष का प्रारंभ होता है।इसकी पांचवी विशेषता यह है कि हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष में दो बार पढ़ने वाले नवरात्रों में से एक नवरात्र जिसे बसंतिक नवरात्र कहते , हैं नव संवत वर्ष के प्रारंभ के 9 दिनों में ही पड़ता है , जबकि दूसरा शुक्ल पक्ष के प्रथम नौ दिनों में मनाया जाता है इसकी छठी विशेषता यह है कि नवरात्रों के अंतिम दिन नवमी तिथि को भगवान राम का जन्म रामनवमी पर्व भी चैत्र में ही होता है। जो बड़ी धूमधाम से और श्रद्धा भाव से मनाया जाता है।हिंदुओं का यह अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है श्रद्धालु जन व्रत रखकर रामचरितमानस का पाठ करते हैं। इस दिन भगवान राम के शौर्य देशभक्ति मातृभक्ति परिजनों या पूर्व जनों के प्रति प्रेम भाव और माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र गुण के बारे में चिंतन मनन कर समाज के लिए मंगल कामना करते हैं।चैत्र मास में चाहिता गीतों का उल्लेख पूर्व पंक्तियों में किया जा चुका है| आएये एक चैत्र लोकगीत के कुछ अंश प्रस्तुत है- "**आओ राम चढ़ल साहित्व राम जन्म ले हो रामा घर घर बाजेला आनंद बधाइयां हो रामा आहो रामा कहु रे लूट वेल अन्य धांसू नाम हो रामा ऊ रामा कहु रे लूट वेल सोने के मुदरिया हो रामा कहु रे लूट आवेला रतन पदार्थ हो रामा आओ राम दशरथ लूट वेले अन्य सोनव हो रामा आहो रामा कई कई लूट वेले सोने के कुंदरिया हो रामा आओ राम कौशल्या लुटावा तेरे रतन पदार्थ हो रामा"2.4.1 होली का उत्सव**-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा होलिका दहन के

पश्चात अगले दिन रंगोत्सव का पर्व होता है बसंत ऋतु का यह चरमोत्कर्ष है।और इसे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है प्रातः काल से लेकर सहयोग कल तक रंग खेलने का माहौल बना रहता है इस पर्व की एक विशेषता यह है।की जाति पाति उच्च नीच सत्य मित्र सब रिश्ते नाते समान हो जाते हैं और लोग और हृदय का कलश यदि स्थाई रूप से संभव न हो तो भी इस दिन के लिए भूलकर सबसे प्रेम भाव से मिलने का प्रयास करते हैं।सभी को सब पर रंग डालने की छूट रहती है।यहां तक की लोक में प्रचलित है - कि **फाल्गुन में बाबा देवरा लागे** इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि रिश्तो नातों के साथ आयु का बंधन भी इस पर्व पर उसे स्वीकार नहीं करता।ऐसा उल्लास के माहौल में संगीत गीत नृत्य तो होना ही है , क्योंकि बिना उसके रंग और भांग का आनंद नहीं मिलता गांव में संगीत और नृत्य मंडलीय धूम घूम कर द्वारा द्वारा अपना कार्यक्रम शिक्षा से प्रस्तुत करती हैं।और बदले में इनाम बख्शीश हर घर से मिलता है।गांव के चौपाल में गीत नित्य का कार्यक्रम देर रात तक चलता रहता है।नृत्य के लिए लड़कों को लड़कियों के भेष में प्रस्तुत किया जाता है।जिसे अलग-अलग भाषा में पुकारा जाता है।अनेक नाचने वाले लड़के पेशेवर रहते हैं जो 16 से 18 वर्ष की आयु तक के होते हैं इसी कार्य में अपने आजीविका चलाते हैं नगरों मेंपूर्वाह्न को मेल – मिलाप का आयोजन होता है – मिठाइयां पकवान बांटे जाते हैं।

2.4.1 रंग पंचमी पर्व –

रंग पंचमी चैत्र कृष्ण पंचमी के दिन मनाया जाता है जैसे कि नाम से स्पष्ट है, कि यह पर वह भी रंगों का पर्व है दक्षिण भारत में जहां होली का प्रचलन कम है।वहां रंगों का पर्व आज के दिन ही मनाया जाता है।दक्षिण भारतीय लोग अत्यंत शालीनता एवं भद्रता से इस पर्व को मानते हैं और केवल रंगों का प्रयोग होता है।कहीं जगह उत्तर भारत में भी यह पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है जैसे -यह पर्व विशेषत: छतीस गढ़ , महारास्ट्र एवं मध्य प्रदेश में विशेष रूप से मन्या जाता है। इस दिन गाँव गाँव मे पकवान बनाये जाते है खूब धूम धाम से इसे बनाया जाता है इस पर्व को होली के पांचवे दिन बनाया जाता है। महाराष्ट्र में होली के बाद पंचमी के दिन रंग खेलने की परंपरा है। यह रंग सामान्य रूप से सूखा गुलाल होता है। विशेष भोजन बनाया जाता है जिसमे पूरनपोली अवश्य होती है। मछुआरों की बस्ती मे इस त्योहार का मतलब नाच, गाना और मस्ती होता है। ये मौसम रिशते (शादी) तय करने के लिये मुआफिक होता है, क्योंकि सारे मछुआरे इस त्योहार पर एक दूसरे के घरों को मिलने जाते है और काफी समय मस्ती मे व्यतीत करते हैं। राजस्थान में इस अवसर पर विशेष रूप से जैसलमेर के मंदिर महल में लोकनृत्यों में डूबा वातावरण देखते ही बनता है जब कि हवा में लाला नारंगी और

फ़िरोज़ी रंग उड़ाए जाते हैं। मध्यप्रदेश के नगर इंदौर में इस दिन सड़कों पर रंग मिश्रित सुगंधित जल छिड़का जाता है। लगभग पूरे मालवा प्रदेश में होली पर जलूस निकालने की परंपरा है। जिसे गेर कहते हैं। जलूस में बैंड-बाजे-नाच-गाने सब शामिल होते हैं। नगर निगम के फ़ायर फ़ाइटरों के वाटर (पानी) ट्रकों में रंगीन पानी भर कर जुलूस के तमाम रास्ते भर लोगों पर रंग डाला जाता है। जुलूस में हर धर्म के, हर राजनीतिक पार्टी के लोग शामिल होते हैं, प्राय: महापौर (मेयर) ही जुलूस का नेतृत्व करता है। प्राचीनकाल में जब होली का पर्व कई दिनों तक मनाया जाता था तब रंगपंचमी होली का अंतिम दिन होता था और उसके बाद कोई रंग नहीं खेलता था।

2.4.2 चैती आमावस्या –

चैती अमावस्या विक्रम संवत्सर का यह अंतिम पर्व होता है।क्योंकि अमावस्या की रात्रि के पश्चात का सूर्योदय नव संवत्सर के नव प्रभात में होता है।इस अमावस्या को संपूर्ण वर्ष की उपलब्धियां पर विचार करने का अवसर मिलता है।कि पूरे वर्ष में क्या खाया और क्या पाया साथ ही अगले वर्ष की योजनाएं भी बनाई जाती हैं। ताकि इस वर्ष के लेखे-जोखे से जो सीख मिली है उसका समुचित लाभ उठाते हुए अगले वर्ष का सदुपयोग किया जा सके।धर्मनिष्ठ लोग अमावस्या का व्रत रखते हैं, और रात्रि में भजन कीर्तन करके भगवान का स्मरण करते हैं अमावस्या के दिन दान-स्नान का भी बड़ा महत्व होता है।

2.4.3 नवसम्वतसर का नव प्रभात एवं राम नवमी पर्व–

पंचांग के अनुसार आज ही के दिन नए विक्रम संवत का श्री गणेश होता है।देश के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न पंचांग प्रचलित हैं परंतु प्रयास सभी की गणना की प्रक्रिया लगभग एक समान है इसीलिए सिंधी पंचांग बंगाली पंचांग महाराष्ट्र और आंध्र का उगादि पंचांग आदि सभी का नव वर्ष आज ही के दिन प्रारंभ होता है।सिंधी लोग इसे छेत्री चंद्र पर्व के रूप में मनाते हैं।प्राचीन पंचांग में केवल शक संवत ही ऐसा संवत्सर है जिसका प्रारंभ प्रतिवर्ष 22 या 23 मार्च से होता है।और इस प्रकार विक्रम संवत तथा शक संवत्सर में 15 से 20 दिन का अंतर पड़ जाता है।हमारे पुराने और शास्त्रों के अनुसार इस तिथि का कई अन्य दृष्टि से भी महत्व है।पहले मान्यता यह है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना इसी दिन की थी, दूसरी यह है -कि देवताओं ने सृष्टि के संचालन का कार्य भार भी इसी दिन ग्रहण किया था, तीसरी मान्यता है ,कि यह नव वर्ष ब्रह्मा का मुहूर्त प्रतीक है। क्यों कि सृष्टि के कर्ता वही हैं।चौथी मान्यता स्मृति कौस्तुभ नामक ग्रंथ के अनुसार यह है , कि इसी दिन रेवती नक्षत्र के विष्कुंभ योग में मत्स्य भगवान काअवतार हुआ था।हमारी मान्यताओं के अनुसार भगवान का यह प्रथम अवतार है कुल नौ अवतार अब तक हुए हैं दश वां अवतार भगवान् कल्कि का अब होना है।मत्स्य ,कच्छप ,वराह ,नरसिंह ,बामन, परशुराम, राम ,कृष्ण और बौद्ध अवतार दसवां अवतार जो कल की

भगवान का है कलयुग में ही किसी समय होगा।अवतारों के विकास की कल्पना आधुनिक विज्ञान के मानव विकास की कल्पना से पूर्णता मेल खाती है।हिंदू धर्म के अवतारों की बात को अगर देखा जाए तो यह भी मानवीय विकास की एक प्रक्रिया प्रतीत होती है। सर्वप्रथम मत्स्यावतार जल से ही उत्पन्न हुआ था, क्योंकि मत्स्य जल का प्राणी है ।तत्पश्चात कश्यप जो जल थल दोनों में रहता है। परंतु जल उसके लिए अधिक प्रिय है।फिर वराह अथवा शूकर अवतारवह थल का प्राणी है , यद्यपि इसे भी जल प्रिय है।तत्पश्चात कच्छप अवतार जो जल - थल दोनों में रहता है, परंतु जल उसके लिए अधिक प्रिय है।फिर वराह अथवा शुकर अवतार जल थल के प्राणी है।इसके बाद नरसिंह भगवान का अवतार हुआ जो मानव और पशु दोनों का सम्मिलित रूप है।इसके बाद वामन अवतार इस बात का संकेत है, कि मनुष्य का पूर्ण विकास नहीं हुआ था पशु योनि से निकलने के बाद उसके विकास की प्रक्रिया जारी रही और पशु योनि से और परशुराम अवतार में पूर्ण विकसित मनुष्य सामने आता है| परंतु उसके बुद्धि शौर्य और विधाता का विकास होने में कई युग लग गए एक अवतार के बाद दूसरा अवतार अनेक दृष्टियों से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उतरोत्तर होता गया।भगवान राम का अवतार मानवीय संवेदनाओं का पूर्ण तथा क्योंकि उन्होंने अपने मानवीय व्यवहार में सब का मन जीत लिया था।भगवान श्री कृष्णा में बल बुद्धि विवेक शौर्य कोर्ट नीति राजनीति सभी का चरमोत्कर्ष पाया जाता है इसलिए भगवान श्री कृष्ण को 16 कलाओं से परिपूर्ण बताया गया है।भगवान राम में केवल 12 कलाएं थी।आज का विज्ञान भी सिद्धांत को प्रतिपादित करता है।उसे हमारे ऋषि मुनियों ने कई हजार वर्ष पूर्व अपनी कल्पना से सिद्ध कर दिया था।हमारे अतीत की यही विशेषता है, कि हमने अपने आध्यात्मिक चिंतन और मनन से ऋषि आश्रमों में कठोर जब तक करते हुए यह उपलब्धियां प्राप्त की थी, जिनका संसार आज भी लोहा मानता है।नव संवत्सर का इसीलिए भी अधिक महत्व है कि बसंती नवरात्र भी इसी दिन प्रारंभ होता है। वर्ष के दो नवरात्रों में यह प्रथम नवरात्र होता है, धर्म प्रिय हिंदुओं के घरों में कलश स्थापना करके 9 दिन तक मां दुर्गा की विभिन्न और रूपों की पूजा आराधना की जाती है।दुर्गा सप्तशती के दूसरे अध्याय में एक कथा आई है।जो शक्ति माता की आराधना का आधार भक्तों के लिए प्रदान करती है।एक बार देवासुर संग्राम में बड़ी लम्बी अवधि तक युद्ध चला जिसमें अंततः देवता असुरों से हार गए और दोनों का राजा महिषासुर स्वयं इंद्रासन पर आसीन हो गया तत्पश्चात इंद्रलोक से सभी देवताओं का महिषासुर ने निष्कासन कर दिया था , निराश और छुद्र मन सेदेवता इंद्र के नेतृत्व में भगवान शंकर और भगवान विष्णु के यहां गए देवताओं की दीन हीन स्थिति देखकर तथा उनके दुखी हृदय का अनुमान कर शंकर और विष्णु दोनों ही आक्रोश से भर गए ,और उनकी भृकुटियाँ तन गई इसका वर्णन इस प्रकार दुर्गा सप्तशती में आया है प्रथम अध्याय में –

इथं विषम्या देवनां वचांसी मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भृकुटी कुटिला ननो।|

भगवान् विष्णु और शंकर के क्रोध अग्नि से प्रचलित शरीर से एक महान तेज निकला इसी प्रकार इंद्राज देवताओं के शरीर से भी एक तेज प्रकट हुआ दोनों तेजे ने एक जाकर होकर पर्वत का

आकार ले लिया जिसे देवताओं ने देखा उसे पर्वत से निकलती हुई ज्वालाएं चारों दिशाओं में फैलने लगी इस घटना का उल्लेख किस प्रकार आया है निर्गतम समाहा तेज पहिए क्या समझ अच्छा था आती वेट जैसा कुटम्ब ज्वाला व्याप्त दिगन्तरं जो तेज सभी देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुआ था वह एक कष्ट होकर एक नई में प्रकट हुआ इस प्रकार महाशक्ति का प्राकट्य हुआ अटलम तत्र तत्र जहां सर्व देव शरीराजाम यह कस्टम तद्भूतनी यह कस्टम तद्भव नई व्याप्त लोक कल्याण प्रसादइस प्रकार महाशक्ति का विभव हुआ जिसका पहला तत्व क्रोध है क्योंकि क्रोध का ही परिणाम है कि देवताओं के शरीर से क्रोध बाहर निकाला रामचरितमानस में भी भगवान राम के क्रोध का एक स्थान पर उल्लेख है जब राम ने लंका पहुंचने के लिए समुद्र से मार्ग देने का बहुत अनुयाई विनय किया परंतु समुद्र ने एक न सुनी तूने क्रोध आ गया दिन आया न मानत जल्द जड़ गए तीन दिन बीते बोले राम सकोप तब भैया बिना कोई न प्रीति यह क्रोध ही राम के अग्निबाण के संधान का कारण बना तात्पर्य यह है कि दोस्तों के संघार हेतु क्रोध प्रथम एवं आवश्यक तत्व होता है महाशक्ति में दूसरा तत्व एक तत्व एकता का है क्योंकि उनका आविर्भाव ही छोटे-बड़े सभी देवताओं के शरीर से निकले तेजके कारण हुआ।

यह संपूर्ण तेज समग्र रूप से पूजभूत होकर ही बाहर शक्ति की उत्पत्ति का कारक बना यदि यह तेज भिन्न-भिन्न दिशाओं में बिखर गया होता तो महाशक्ति की कल्पना ही नहीं की जा सकती इसलिए कहा गया है कि संदेश सकते क्योंकि बिना एकता के शक्ति नहीं आती है दुर्गा सप्तशती में ही आगे महाशक्ति के स्वरूप का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि शंकर के तेज से मां भगवती का मुखमंडल विष्णु के तेज से उनकी भुजाएं और ब्रह्मा के तेज से उनके पर सूर्य के तेज से उनकी उंगलियां बनी मां भगवती को शक्ति संपन्न करने के लिए शिव ने अपना त्रिशूल दिया विष्णु ने चक्र इंद्र ने बाजरा तथा पर्वतराज हिमालय ने उन्हें वहां के लिए सिंह प्रदान किया जड़ चेतन पशु पक्षी जीव असुरुदेव देव सबकी हुई रक्षा करती हैं सब की कामना पूर्ण करती हैं हमारे भारत में बिहार बंगाल और उड़ीसा में कथा प्रसिद्ध है जिसकी पुष्टि कुछ पुराने तथा तंत्र शास्त्रों ने भी की है कि रावण पर विजय कामना हेतु भगवान राम ने श्रद्धा सर्दियों नवरात्रि में उनकी आराधना की इनका प्रथम रूप शैलपुत्री है जो पर्वत राज हिमालय की पुत्री का अन्य नाम है इनका वाहन वृषभ हैसिंह नहीं नवदुर्गा में कुष्मांडा और महागौरी सिंह वाहिनी है शक्ति शब्द का अनुयाई इस प्रकार किया गया है कि 100 अक्षर ऐश्वर्या एवं पित्त पराक्रम का देवता है इस प्रकार मां शक्ति ऐश्वर्या एवं शक्ति दोनों को प्रदान करती है ब्रह्म में भांति भांति के कार्य करने की जो क्षमता है उसी का नाम सत्य है ब्रह्मा के ही विष्णु और महेश तीनों नाम है ब्रह्म के ही तीनों नाम है क्योंकि जगत की स्थिति उसका पालन पोषण और फिर श्रृंगार तीर्थ कार्यकर्ता हुआ ब्रह्म त्रिलोक में मान्य है यह त्रिभुज सत्य ही मां सरस्वती महालक्ष्मी महाकाली के रूप में जानी जाती है आदि गुरु शंकराचार्य ने शक्ति का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा है शिव शक्ति युक्त तो यदि बहुत ही सत्य प्रभावित्तम अर्थात भगवान अपनी शक्ति से संयुक्त ही जगदीश्वर होते हैं यह शक्ति ही जगत जननीकहलाती है।इस प्रकार चैत्र नवरात्र में अर्थात बसंतिक नवरात्र में शक्ति की उपासना की

जाती है जिस मां भगवती प्रसन्न होकर के अपने भक्तों को सर्वाधिक ऐश्वर्या भोग और मोक्ष की प्राप्ति करती है।

रामनवमी–

चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी के दिन मध्यान में अयोध्या की राजा दशरथ के घर रामलाल का जन्म हुआ था हिंदू संस्कृति में यह सर्वाधिक महत्व का दिन होता है श्रद्धालु या धार्मिक प्रवृत्ति के लोग व्रत रखते हैं रामचरितमानस का पाठ करते हैं और मंदिरों में जाकर के भगवान के विभिन्न रूपों का दर्शन कर पूर्ण लाभ प्राप्त करते हैं इसी दिन गोस्वामी तुलसीदास ने अयोध्या में सहयोग के तट पर रामचरितमानस के प्राणायाम का प्रारंभ किया था क्योंकि अयोध्या राम जन्म भूमि का स्थल है इसलिए वहां रामनवमी का पर्वत पर्व अत्यंत धूमधाम एवं हर्ष क्लास के साथ मनाया जाता है सरयू के तट पर रामनवमी का मेला कई दिनों तक चलता है भगवान राम का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में कौशल्या की कोख से हुआ था इसलिए रामनवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र मिलने पर ही इस पर्व का विशेष महत्व है यह नक्षत्र ना मिलने पर भी यदि नाम रामनवमी तिथि नवमी तिथि में दोपहर नवमी मिलती है तो यहां पर बना लिया जाता है हिंदुओं के तीन प्रमुख व्रत तथा अनुष्ठानों में रामनवमी का विशेष स्थान है

2.4.4 हनुमान जयंती-

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा बाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान नाम के एक वानर वीर राम को ऋषिमुख पर्वत के पास मिले उन्होंने सीता की खोज के लिए राम को हर प्रकार की सहायता देने का वचन दिया और इसके लिए वानर राज सुग्रीव को भी मान लेने का आश्वासन दिया हनुमान ने अपने पुरुषार्थ के बल पर लंका पुरी में जाकर सीता का पता लगा लिया तत्पश्चात उन्होंने राम दूध के रूप में अपनी अद्भुत वीरता शौर्य बुद्धिमत्ता एवं सास का परिचय दिया राम रावण युद्ध में हनुमान के वीरता का राम ने भी लोहा मान लिया लक्ष्मण जब मेघनाथ की शक्तिमान से मूर्छित होकर मुलाना आसान थे तो हनुमान ने ही पर्वत राज हिमालय से संजीवनी जड़ी लाकर उनके प्राणों की रक्षा की थी राम अवतार वैष्णो धाम के विश्वास के साथ हनुमान का भी देवीकरण हुआ फिर राम के पार्षद और पुनः स्वयं स्वतंत्र देवता के रूप में मान्य हो गई धीरे-धीरे हनुमान अथवा मारुति नंदन का एक पृथक संप्रदाय ही बन गया अपनी वीरता साहस और शौर्य के कारण हनुमान बालको युवकों छात्रों और पहलवानों के आराध्य एवं आदर्श हो गई राम के हनुमान के इतने प्रिया हो गए कि उन्होंने हनुमान को अमृता और अभय दान दे दिया शास्त्रों में ऐसा उल्लेख है कि जहां कहीं राम कथा होती है वह हनुमान अवश्य उपस्थित होकर सबके अंत में विराजमान होते हैं और कथा सुनने के पश्चात सर्वप्रथम चले जाते हैं आज स्थान स्थान पर हनुमान मंदिर बने हुए हैं जहां हनुमान जी का भव्य मूर्तियां हैं हनुमान जी को एक बंदर माना जाता है और उनकी शक्ल सूरत सभी बंदर की भांति चित्रित किए जाते हैं परंतु वास्तविकता यह है कि इस देश में आदिमानव में वानर नाम की एक जाती थी जिसका धार्मिक चिन्ह वानर अथवा उसकी लग्णता

थी कालांतर में मन और वानर दोनों को मिलाकर हनुमान जी की कल्पना की गई जिनके शरीर तो बंदर का है परंतु बुद्धि बल शौर्य साहब सभी कुछ मानव और देवता का मिश्रण है एक मान्यता के अनुसार हनुमान जी का जन्म चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था जिसके प्रमाण में स्कंद पुराण का निम्न श्लोक उदित किया जाता है कि हनुमान जी का जन्म पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र में महेश के प्रवेश के समय हुआ थाऐसा अवसर वर्ष में दो बार चैत्र पूर्णिमा एवं कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मिलता है इसलिए हनुमान जयंती के संबंध में बताइए कि नहीं है कुछ लोग कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को और कुछ अन्य लोग चैत्र पूर्णिमा को हनुमान जयंती का पर्व मनाते हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक माह में कोई- ना कोई प्रमुख व्रत-पर्व-उत्सव अवश्य होता है।

2.5 वैशाख माह के प्रसिद्ध पर्व-त्यौहार –

हिंदू नववर्ष के दूसरे माह वैशाख में अक्षय पुण्य देने वाली अक्षय तृतीया , वरुथिनी एकादशी, वैशाख अमावस्या, शनि जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, सीता नवमी, परशुराम जयंती, नृसिंह जयंती, वैशाख अमावस्या, मोहिनी एकादशी आदि व्रत पर्व त्यौहार आते हैं।

2.5.1 अक्षय तृतीया –

अक्षय तृतीया को आखा तीज के नाम से भी जाना जता है। वैशाख मास में शुक्ल पक्षकी तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है।इसी कारण इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है।वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है, किन्तु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तो में मानी गई है ।

अक्षय तृतीया का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्त्व है। मान्यता है कि इस दिन बिना कोई पंचांग देखे कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखण्ड, वाहन आदि की खरीददारी से सम्बन्धित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उदघाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन पितरों को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है। इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ तक कि इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है। यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ़ जाता हैं। इसके अतिरिक्त यदि यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है।

सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने।

दानकाले च सर्वत्र मन्त्र मेत मुदीरयेत्।।

अर्थात सभी महीनों की तृतीया में श्वेत पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है।

ऐसी भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है। इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है ।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था । इस दिन श्री बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से ही पुनः खुलते हैं। वृन्दावन स्थित श्री बाँके बिहारी जी मन्दिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं। धर्म सिन्धु एवं निर्णय सिन्धु ग्रन्थ के अनुसार अक्षय तृतीया 6 घटी से अधिक होना चाहिए। पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए। इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था।

ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारम्भ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं। तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया॥
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः। तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव॥

2.6 जेष्ठ माह के पर्व त्यौहार

जेष्ठ माह में जल का बहुत बड़ा महत्व है।ज्येष्ठ माह में भगवान् भास्कर (सूर्य) अपनी सम्पूर्ण प्रचंडता पे होते हैं , इसलिए इस माह में जो भी व्रत – पर्व होते हैं , उनमें जल संरक्षण व सदुपयोग का बड़ा महत्व है।सनातनी पञ्चांग के अनुसार, तीसरा माह ज्येष्ठ माह होता है. इसे जेठ माह भी कहा जाता है. अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार, यह माह मई और जून में पड़ता है. इस साल ज्येष्ठ माह 24 मई 2024 से आरंभ हो रहा है. हिंदू धर्म में इस माह का विशेष महत्व बताया गया है. इसे सबसे अधिक गर्मी वाला माह कहा जाता है. इस मास में व्रत त्योहारों की बात करें, तो निर्जला एकादशी, वट सावित्री, गंगा दशहरा, अपरा एकादशी, बुढ़वा मंगल, शनि जयंती आदि पड़ते।वैसे तो इस माह में अधिक व्रत ही हैं , परन्तु हमारे यहाँ (सनातनी) परम्परा में व्रतों को भी पर्व त्योहारों की भान्ति उत्साह से मनाया जाता है।

2.6.1 गंगा दशहरा पर्व –

गंगा दशहरा पर्व का महत्व हिन्दू धर्म में बहुत बड़ा है , क्यूंकि गौ,गंगा गीता ये धर्म के स्तम्भ रूप में माने जाते हैं इसलिए यह पर्व खास हो जाता है धर्म- क्रम की दृष्टि से भी और सभ्यता संस्कृति की दृष्टि से भी।ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गंगा दशहरा मनाया जाता है. हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, इस दिन मां गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था. अपने पूर्वजों की आत्मा के उद्धार के लिए भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए थे. गंगा दशहरा के दिन स्नान-दान करने का विशेष महत्व होता है. गंगा का इस पृथ्वी पर अवतरण की अनेकों पौराणिक मान्यता एवं कथाएँ है।

स्नान का महत्व –

पौराणिक कथाओं में कहा गया है कि गंगा दशहरा के दिन ही मां गंगा धरती पर अवतरित हुई थीं. कहा जाता है कि राजा भागीरथ की कठिन तपस्या और ब्रह्मा के वरदान के बाद कैलाश में महदेव की जटाओं से होकर मां गंगा हिमालय की वादियों और पर्वतीय दुर्गम पहाड़ों से गुजरती हुई गंगा दशहरा के दिन ही हरिद्वार केपूण्य पावन तीर्थ ब्रह्म कुंड में समाहित हुईं थीं. इसलिए गंगा दशहरा पर्व पर हरिद्वार में गंगा स्नान का काफी महत्व है।

इसलिए मनाया जाता है गंगा दशहरा: गंगा दशहरा मनाने की कहानी भगवान राम के वंशजों से जुड़ी है. राजा सगर की दो रानियां केशिनी और सुमति की कोई संतान नहीं थी. संतान प्राप्ति के लिए दोनों रानियां हिमालय में भगवान की पूजा अर्चना और तपस्या में लग गईं. तब ब्रह्मा के पुत्र महर्षि भृगु ने उन्हें वरदान दिया कि एक रानी से राजा को 60 हजार अभिमानी पुत्र की प्राप्ति होगी. जबकि दूसरी रानी से एक पुत्र की प्राप्ति होगी. केशिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया. जबकि सुमति के गर्भ से एक पिंड का जन्म हुआ, उसमें से 60 हजार पुत्रों का जन्म हुआ.| मान्यता के अनुसार, राजा सगर के 60 हजार पुत्र बेहद अभिमानी और परिवार से बिल्कुल अलग थे. जबकि केशिनी का पुत्र अंशुमान, सुशील और विवेकी गुणों का था. एक दिन राजा सगर ने अपने यहां पर एक अश्वमेघ यज्ञ करवाया. राजा ने अपने 60 हजार पुत्रों को यज्ञ के घोड़े को संभालने की जिम्मेदारी सौंपी. लेकिन देवराज इंद्र ने छलपूर्वक 60 हजार पुत्रों से घोड़ा चुरा लिया और कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया।सुमति के 60 हजार पुत्रों को घोड़े के चुराने की सूचना मिली तो सभी घोड़े को ढूंढने लगे. तभी वह कपिल मुनि के आश्रम पहुंचे. कपिल मुनि के आश्रम में उन्होंने घोड़ा बंधा देखा तो आक्रोश में घोड़ा चुराने की निंदा करते हुए कपिल मुनि का अपमान और उनके आश्रम में उत्पात मचाया. यह सब देख तपस्या में बैठे कपिल मुनि ने जैसे ही आंख खोली तो आंखों से ज्वाला निकली जिसने राजा के 60 हजार पुत्रों को भस्म कर दिया. इस तरह राजा सगर के सभी 60 हजार पुत्रों का अंत हो गया. लेकिन उनकी अस्थियां कपिल मुनि के आश्रम में ही पड़ी रही।

राजा भागीरथ ने की तपस्या: राजा सगर जानते थे कि उनके पुत्रों ने जो किया है, उसका परिणाम यही होना था. लिहाजा सभी के मोक्ष के लिए कोई उपाय खोजने बेहद जरूरी था. इसलिए

राजा सगर से लेकर राजा भागीरथ (सगर के वंशज दिलीप के पुत्र) यानी उनके पूर्वजों ने अनेकों प्रयास किया. लेकिन कोई भी इस प्रयास में सफल नहीं हो पाया. अंत में भागीरथ के प्रयास से ही ये संभव हो पाया.कहानियों में कहा गया है कि, भागीरथ की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर मां गंगा को हिमालय से धरती पर आना पड़ा. मां गंगा सबसे पहले पर्वत पर आईं. इसलिए उस दिन को हम गंगा सप्तमी के नाम से जानते हैं. और मां गंगा का आगमन जब मैदानी इलाके में हुआ, उस दिन को हम गंगा दशहरा पर्व के रूप में मनाते हैं. गंगा जब पहली बार मैदानी क्षेत्र में दाखिल हुई, तब जाकर हजारों सालों से रखी राजा सगर के पुत्रों की अस्थियों का विसर्जन हो पाया और राजा सगर के पुत्रों को मुक्ति मिली. यही कारण है कि आज भी देश के कोने-कोने से लोग अस्थि विसर्जन और श्राद्ध कर्म करने के लिए हरिद्वार आते है।

2.7 आषाढ़ माह के पर्वोत्सव

आषाढ़ माह में जैसे कि आप सभी को विदित होगा कि भव्य पुरी जगन्नाथ यात्रा निकाली जाती है. इसके अलावा इस माह में गुप्त नवरात्रि का पर्व आता है , योगिनी एकादशी से लेकर देवशयनी एकादशी तक, इस माह में कई खास व्रत-पर्व - त्योहार आते हैं।आइए जानते हैं आषाढ़ महीने के प्रमुख पर्व -त्योहार कौन से हैं और इस माह में किन नियमों का पालन करना चाहिए।

2.7.1 जगन्नाथ पुरी यात्रा –श्री जगन्नाथ मन्दिर एक हिन्दू मन्दिर है, जो भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण) को समर्पित है। यह भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत के स्वामी होता है। इनकी नगरी ही जगन्नाथपुरी या पुरी कहलाती है।इस मन्दिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है। यह वैष्णव सम्प्रदाय का मन्दिर है, जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है। इस मन्दिर का वार्षिक रथ यात्रा उत्सव प्रसिद्ध है। इसमें मन्दिर के तीनों मुख्य देवता, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र और भगिनी सुभद्रा तीनों, तीन अलग-अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं। श्री जगन्नथपुरी पहले नील माघव के नाम से पुजे जाते थे। जो भील सरदार विश्वासु के आराध्य देव थे। अब से लगभग हजारों वर्ष पुर्व भील सरदार विष्वासु नील पर्वत की गुफा के अन्दर नील माघव जी की पुजा किया करते थे । मध्य-काल से ही यह उत्सव अतीव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसके साथ ही यह उत्सव भारत के ढेरों वैष्णव कृष्ण मन्दिरों में मनाया जाता है, एवं यात्रा निकाली जाती है । यह मंदिर वैष्णव परम्पराओं और सन्त रामानन्द से जुड़ा हुआ है। यह गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के लिये खास महत्व रखता है। इस पन्थ के संस्थापक श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान की ओर आकर्षित हुए थे और कई वर्षों तक पुरी में रहे भी थे ।

2.7.2 आषाढ़ गुप्त नवरात्र –

यह पर्व पञ्चांग के अनुसार आषाढ़ महीने में शुक्ल पक्ष के पहले दिन (प्रतिपदा) से नौवें दिन (नवमी) तक मनाया जाता है। इस अवधि के दौरान, भक्त देवी दुर्गा के महाविद्या के दस रूपों का सम्मान करते हैं।

इन नवरात्र के समय साधना और तंत्र- मन्त्र की शक्तियों में साधक साधना करते हैं। इन नवरात्रों में भी पूजन का स्वरूप सामान्य नवरात्रों की ही तरह होता है।जैसे चैत्र और शारदीय नवरात्रों में मां दुर्गा के नौं रूपों की पूजा नियम से की जाती है उसी प्रकार इन गुप्त नवरात्रों में भी दस महाविद्याओं की साधना का बहुत महत्व होता है।गुप्त नवरात्रि - गुप्त नवरात्र में माता की शक्ति पूजा एवं अराधना अधिक कठिन होती है , और माता की पूजा गुप्त रूप से की जाती है इसी कारण इन्हें गुप्त नवरात्र की संज्ञा दी गई है।शाक्त ग्रन्थों एवं तन्त्र ग्रन्थों में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता है। इसनवरात्री में भक्तजन - पूजन में अखंड जोत प्रज्वलित करते हैं।तथा प्रात: काल एवं संध्या समय देवी पूजन-अर्चन करते हैं। गुप्त नवरात्र में तंत्र साधना करने वाले दस महाविद्याओं की साधना करते हैं. नौ दिनों तक दुर्गा सप्तशति का पाठ किया जाता है।साथ ही दशमहविद्याओं की साधना करते हैं।नवमी व दशमी को देवी को हवन – तर्पण – मार्जन – कन्यापूजन आदि से नवरात्र सम्पन्न करते हैं।

2.7.3 व्यास पूर्णिमा –

प्रिय विद्यार्थियों यहपर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जता है।जिसे गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है।हमारे शास्त्रों - पुराणों में महर्षि वेद व्यास को एक अत्यंत प्रसिद्ध विद्वान एवं वेदों की व्याख्याता ऋषि के रूप में माना गया है। जिन्हें गुरु के रूप में आज भी प्रतिष्ठा प्राप्त है। यद्यपि व्यास नाम के अनेक ऋषि हो चुके हैं, परंतु गुरु पूर्णिमा के अवसर पर केवल वेद - व्यास महर्षि का ही अभिनंदन पूजन होता है।इसदिन हम गुरु रूप में अपने जीवन के सभी गुरों का वंदन – पूजन करनी की प्रथा भारतीय संस्कृति में प्रचलित है।

2.8 श्रावण मास के पर्व –

श्रावणमास पञ्चांग के चैत्र माह से प्रारंभ होने वाले वर्ष का पाँचवा मास है। भारत में इस माह में वर्षा ऋतु होती है।और प्रायः बहुत अधिक गर्मी होती है। श्रावण मास, जिसे सावन का महीना भी कहा जाता है, भगवान शिव की पूजा करने और उनकी भक्ति के लिए श्रेष्ठ मना गया है।सावन माह में सोमवार को शिव आराधना का विशेष महत्व होता है।ऐसा माना जाता है कि यदि भक्त समर्पण के साथ भगवान शिव की पूजा करे तो भगवान शिव उनकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। श्रावण मास शिवजी को विशेष प्रिय है। भोलेनाथ ने स्वयं कहा है—

द्वादशस्वपि मासेषु श्रावणो मेऽतिवल्लभः ।

श्रवणार्हं यन्माहात्म्यं तेनासौ श्रवणो मतः ॥

श्रवणर्क्षं पौर्णमास्यां ततोऽपि श्रावणः स्मृतः।

यस्य श्रवणमात्रेण सिद्धिदः श्रावणोऽप्यतः ॥

अर्थात मासों में श्रावण मुझे अत्यंत प्रिय है। इसका माहात्म्य सुनने योग्य है अतः इसे श्रावण कहा जाता है। इस मास में श्रवण नक्षत्र युक्त पूर्णिमा होती है इस कारण भी इसे श्रावण कहा जाता है। इसके माहात्म्य के श्रवण मात्र से यह सिद्धि प्रदान करने वाला है, इसलिए भी यह श्रावण संज्ञा वाला है।

श्रावण मास के पर्व त्यौहार एवं व्रत-

श्रावण कृष्ण(पक्ष) प्रतिपदा : पार्थिव शिव पूजन प्रारंभ

श्रावण कृष्ण(पक्ष) पञ्चमी : मौना पञ्चमी

श्रावण कृष्ण(पक्ष) एकादशी : कामदा एकादशी व्रत

श्रावण कृष्ण(पक्ष) त्रयोदशी : प्रदोष व्रत

श्रावण कृष्ण(पक्ष) अमावस्या : हरियाली अमावस्या/हरेली पर्व

श्रावण शुक्ल(पक्ष) तृतीया : हरियाली/मधुश्रावणी तीज

श्रावण शुक्ल(पक्ष) पञ्चमी : नाग पञ्चमी

श्रावण शुक्ल(पक्ष) एकादशी : पुत्रदा एकादशी व्रत

श्रावण शुल्क(पक्ष) पूर्णिमा: रक्षाबन्धन

2.8.1 नाग पञ्चमी –

नाग पंचमी सनातनी परम्परा में एक प्रमुख त्योहार है । पंचांग के अनुसार सावन माह की शुक्ल पक्ष के पंचमी को नाग पंचमी के रूप में यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन नाग देवता या सर्प की पूजा की जाती है।शास्त्रों में नागों को दूध पिलाने को नहीं बल्कि दूध से स्नान कराने को कहा गया है। इस दिन नवनाग की पूजा की जाती है। आज के पावन पर्व पर वाराणसी (काशी) में नाग कुआँ नामक स्थान पर बहुत बड़ा मेला लगता है।किंवदन्ति है कि- इस स्थान पर तक्षक गरूड़ जी के भय से बालक रूप में काशी संस्कृत की शिक्षा लेने हेतु आये।परन्तु गूरू पत्नी के सखियों से तक्षक रुपी बालक के बारे में

बतलाने के कारण गरूड़ जी को इसकी जानकारी हो गयी,और उन्होंने तक्षक पर हमला कर दिया।परन्तु अपने गुरू जी के प्रभाव से गरूड़ जी ने तक्षक नाग को अभय दान कर दिया, उसी समय से यहाँ नाग पंचमी के दिन से यहाँ नाग पूजा की जाती है,यह मान्यता है, कि जो भी नाग पंचमी के दिन यहाँ पूजा अर्चना कर नाग कुआँ का दर्शन करता है, उसकी जन्मकुन्डली के सर्प दोष का निवारण हो जाता है।उत्तराखण्ड में भगवान् शेष नाग कही लोगों के ईष्ट देव भी हैं , वे इस पर्व (नागपंचमी) के दिन भगवान् नाग देवता की पूजा अर्चना बड़े श्रधा एवं विश्वास उत्साह से करते हैं।भारतीय संस्कृति परम्परापशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति सबके साथ आत्मीय संबंध जोड़ने का प्रयत्न किया है। हमारे यहां गाय की पूजा होती है। कई बहनें कोकिला-व्रत करती हैं। कोयल के दर्शन हो अथवा उसका स्वर कान पर पड़े तब ही भोजन लेना, ऐसा यह व्रत है। हमारे यहाँ वृषभोत्सव के दिन बैल का पूजन किया जाता है। वट-सावित्री जैसे व्रत में बरगद की पूजा होती है, परन्तु नाग पंचमी जैसे दिन नाग का पूजन जब हम करते हैं, तब तो हमारी संस्कृति की विशिष्टता पराकाष्टा पर पहुंच जाती है।गाय, बैल, कोयल इत्यादि का पूजन करके उनके साथ आत्मीयता साधने का हम प्रयत्न करते हैं, क्योंकि वे उपयोगी हैं। लेकिन नाग हमारे किस उपयोग में आता है, उल्टे यदि काटे तो जान लिए बिना न रहे। हम सब उससे डरते हैं। नाग के इस डर से नागपूजा शुरू हुई होगी, ऐसा कई लोग मानते हैं, परन्तु यह मान्यता हमारी संस्कृति से सुसंगत नहीं लगती। नाग को देव के रूप में स्वीकार करने में आर्यों के हृदय की विशालता का हमें दर्शन होता है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस गर्जना के साथ आगे बढ़ते हुए आर्यों को भिन्न-भिन्न उपासना करते हुए अनेक समूहों के संपर्क में आना पड़ा। वेदों के प्रभावी विचार उनके पास पहुँचाने के लिए आर्यों को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा।भारत वर्ष में सर्प पूजन- भारत देश कृषिप्रधान देश हैं सांप खेतों का रक्षण करता है, इसलिए उसे क्षेत्रपाल कहते हैं।

2.8.2 रक्षा वन्धन (श्रावणी उपाकर्म) –

यह पर्वसावन के महीने की पूर्णिमा को मनाया जाता है भारत व समूचे विश्व जहाँ भी भारतवासी रहते हैं वहां यहरक्षाबंधन का त्यौहार त्योहार बेहद उल्लासपूर्ण तरीके से मनाया जाता है।सबसे महत्व पूर्ण बात है कि - भाई-बहन के पवित्र रिश्तों की मिठास , यह पूरे भारत में मनाया जाता है। असल में श्रावण पूर्णिमा देश में हर प्रांत में अलग-अलग रूपों में मनायी जाती है । श्रावण पूर्णिमा को दक्षिण भारत में नारयली पूर्णिमा व अवनी अवित्तम, मध्य भारत में कजरी पूनम, उत्तर भारत में रक्षा बंधन और गुजरात में पवित्रोपना के रूप में मनाया जाता है। हमारे त्योहारों की यही विविधता ही तो भारत की विशिष्टता की पहचान है। आइए अब हम देखते हैं कि इस दिन को भारतवासी कैसे अलग-अलग रूपों में मनाते हैं।

श्रावणी उपाकर्म एवं संस्कृत दिवस –

प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा के पावन अवसर को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्रावणी पूर्णिमा अर्थात् रक्षा बन्धन ऋषियों के स्मरण तथा पूजा और समर्पण का पर्व माना जाता है। वैदिक साहित्य में इसे श्रावणी कहा जाता था। इसी दिन गुरुकुलों में वेदाध्ययन कराने से पहले यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। इस संस्कार को उपनयन अथवा उपाकर्म संस्कार कहते हैं। इस दिन पुराना यज्ञोपवीत भी बदला जाता है। ब्राह्मण यजमानों पर रक्षासूत्र भी बांधते हैं। ऋषि ही संस्कृत साहित्य के आदि स्रोत हैं, इसलिए श्रावणी पूर्णिमा को ऋषि पर्व और संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। राज्य तथा जिला स्तरों पर संस्कृत दिवस आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर संस्कृत कवि सम्मेलन, लेखक गोष्ठी, छात्रों की भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से संस्कृत के विद्यार्थियों,कवियों तथा लेखकों को उचित मंच प्राप्त होता है।सन् 1969 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के आदेश से केन्द्रीय तथा राज्य स्तर पर संस्कृत दिवस मनाने का निर्देश जारी किया गया था। तब से संपूर्ण भारत में संस्कृत दिवस श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन को इसीलिए चुना गया था कि इसी दिन प्राचीन भारत में शिक्षण सत्र शुरू होता था। इसी दिन वेद पाठ का आरंभ होता था तथा इसी दिन छात्र शास्त्रों के अध्ययन का प्रारंभ किया करते थे। पौष माह की पूर्णिमा से श्रावण माह की पूर्णिमा तक अध्ययन बन्द हो जाता था। प्राचीन काल में फिर से श्रावण पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा तक अध्ययन चलता था, वर्तमान में भी गुरुकुलों में श्रावण पूर्णिमा से वेदाध्ययन प्रारम्भ किया जाता है। इसीलिए इस दिन को संस्कृत दिवस के रूप से मनाया जाता है। आजकल देश में ही नहीं, जर्मनी आदि विदेशों में भी इस दिन पर संस्कृत उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसमें केन्द्र तथा राज्य सरकारों का भी योगदान उल्लेखनीय है। जिस सप्ताह संस्कृत दिवस आता है, वह सप्ताह कुछ वर्षों से संस्कृत सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। देश के समस्त विद्यालयों में इसको बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। उत्तराखण्ड में संस्कृत आधिकारिक द्वितीय राजभाषा घोषित होने से संस्कृत सप्ताह में प्रतिदिन संस्कृत भाषा में अलग अलग कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं होती हैं। संस्कृत के छात्र-छात्राओं द्वारा ग्रामों अथवा शहरों में झांकियाँ निकाली जाती हैं। संस्कृत दिवस एवं संस्कृत सप्ताह मनाने का मूल उद्देश्य संस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार करना है।

2.9 भाद्रपद (भादौ) मास के पर्व –

भाद्रपद को भादो मास भी कहा जाता है। इसके साथ ही ये चातुर्मास के चार में से दूसरा माह होता है। भाद्रपद मास में हिंदू धर्म के अनेक बड़े व्रत-त्योहार पड़ते हैं। इस माह में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, कजरी तीज, हरतालिका तीज, गणेशोत्सव, अजा एकादशी, ऋषि पंचमी जैसे त्योहार पड़ते हैं।

2.9 .1 श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत-पर्व-

इसी दिनभगवान् कृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के कारागार में वासुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से रात 12 बजे हुआ था।भगवान विष्णु ने धरती पर श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया जिस दिन

को हम श्री कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाते हैं। लोक कथाओं के अनुसार श्रीकृष्ण का जन्म कंस का वध करने के लिए हुआ था, जो कृष्ण के मामा थे। श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के बंदीगृह में हुआ था।और उन्हें बचाने के लिए वासुदेव ने इन्हें गोकुल में अपने चचेरे भाई नन्द बाबा के पास छोड़ आये थे । माता यशोदा ने बड़े ही लाड व प्यार से श्री कृष्ण का पालन पोषण किया। यह एक महत्वपूर्ण त्योहार है, विशेषकर हिन्दू धर्म की वैष्णव परम्परा में। भागवत पुराण (जैसे रास लीला वा कृष्ण लीला) के अनुसार कृष्ण के जीवन के नृत्य-नाटक की परम्परा, कृष्ण के जन्म के समय मध्यरात्रि में भक्ति गायन, उपवास (व्रत), रात्रि जागरण (रात्रि जागरण), और एक त्योहार (महोत्सव) अगले दिन जन्माष्टमी समारोह का एक भाग हैं। यह मणिपुर, असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश तथा भारत के अन्य सभी राज्यों में पाए जाने वाले प्रमुख वैष्णव और निर्साप्रदायिक समुदायों के साथ विशेष रूप से मथुरा और वृंदावन में मनाया जाता है।कृष्ण जन्माष्टमी के उपरान्त त्योहार नंदोत्सव होता है, जो उस अवसर को मनाता है जब नंद बाबा ने जन्म के सम्मान में समुदाय को उपहार वितरित किए।कृष्ण देवकी और वासुदेव आनकदुंदुभी के पुत्र हैं और उनके जन्मदिन को हिंदुओं द्वारा जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है, विशेष रूप से गौड़ीय वैष्णववाद परम्परा के रूप में उन्हें भगवान का सर्वोच्च व्यक्तित्व माना जाता है। जन्माष्टमी हिंदू परंपरा के अनुसार तब मनाई जाती है जब माना जाता है कि कृष्ण का जन्म मथुरा में भाद्रपद महीने के आठवें दिन में अगस्त और सितंबर के साथ अधिव्यपित) की आधी रात को हुआ था।कृष्ण का जन्म अराजकता के क्षेत्र में हुआ था। यह एक ऐसा समय था जब उत्पीड़न बड़े पैमाने पर था, स्वतंत्रता से वंचित किया गया था, बुराई सब ओर थी, और जब उनके मामा राजा कंस द्वारा उनके जीवन के लिए संकट था।श्रीकृष्ण जी भगवान विष्णु जी के अवतार हैं, जो तीनों लोकों के तीन गुणों सतगुण, रजगुण तथा तमोगुण में से सतगुण विभाग के प्रभारी हैं। भगवान का अवतार होने के कारण से श्रीकृष्ण जी में जन्म से ही सिद्धियां उपस्थित थी। उनके माता पिता वसुदेव और देवकी जी के विवाह के समय मामा कंस जब अपनी बहन देवकी को ससुराल पहुँचाने जा रहा था तभी आकाशवाणी हुई थी जिसमें बताया गया था कि देवकी का आठवां पुत्र कंस का अन्त करेगा। अर्थात् यह होना पहले से ही निश्चित था अतः वसुदेव और देवकी को कारागार में रखने पर भी कंस कृष्ण जी को नहीं समाप्त कर पाया।मथुरा के बंदीगृह में जन्म के तुरंत उपरान्त, उनके पिता वसुदेव आनकदुन्दुभि कृष्ण को यमुना पार ले जाते हैं, जिससे बाल श्रीकृष्ण को गोकुल में नन्द और यशोदा को दिया जा सके। जन्माष्टमी पर्व लोगों द्वारा उपवास रखकर, कृष्ण प्रेम के भक्ति गीत गाकर और रात्रि में जागरण करके मनाई जाती है। मध्यरात्रि के जन्म के उपरान्त, शिशु कृष्ण की मूर्तियों को धोया और पहनाया जाता है, फिर एक पालने में रखा जाता है। फिर भक्त भोजन और मिठाई बांटकर अपना उपवास पूरा करते हैं। महिलाएं अपने घर के द्वार और रसोई के बाहर छोटे-छोटे पैरों के चिन्ह बनाती हैं जो अपने घर की ओर चलते हुए, अपने घरों में श्रीकृष्ण जी के आने का प्रतीक माना जाता है।

जन्माष्टमी पर उपवास, भजन-गायन, सत्सङ्ग-कीर्तन, विशेष भोज-नैवेद्य बनाकर प्रसाद-भण्डारे के रूप में बाँटकर, रात्रि जागरण और कृष्ण मन्दिरों में जाकर मनाते हैं। प्रमुख मंदिरों में 'भागवत पुराण' और 'भगवद गीता' के पाठ का आयोजन होता हैं। कई समुदाय नृत्य-नाटक कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिन्हें रास लीला वा कृष्ण लीला कहा जाता है। रास लीला की परम्परा विशेष रूप से मथुरा क्षेत्र में, भारत के पूर्वोत्तर राज्यों जैसे मणिपुर और असम में और राजस्थान और गुजरात के कुछ भागों में लोकप्रिय है। कृष्ण लीला में कलाकारों की कई दलों और टोलियों द्वारा अभिनय किया जाता है, उनके स्थानीय समुदायों द्वारा उत्साहित किया जाता है, और ये नाटक-नृत्य प्रत्येक जन्माष्टमी से कुछ दिन पहले आरम्भ हो जाते हैं।

2.9.2 गणेश चतुर्थी पर्व (भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)

आदर्शोंके निधानरूपों को अंगीकृत करना भारत की प्राचीन परम्परा है।राम , कृष्ण , शिव , बुद्ध आदि कुछ आदर्श हैं।जिनसे अपना आध्यात्मिक सम्बन्ध जोड़कर हम गौरव का अनुभव कर्ट हैं।गणेश गजवदन , विनायक , लम्बोदर आदि अनेकों नामों से विख्यात गणेश जी हमारे लिए ऐसे आदर्श पुरुष हैं।गणेश चतुर्थी का पर्व भारतीयों का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है किन्तु महाराष्ट्र व कर्नाटका में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार इसी दिन भगवान श्री गणेश जी का जन्म हुआ था।गणेश चतुर्थी पर हिन्दू भगवान गणेशजी की पूजा की जाती है। कई प्रमुख जगहों पर भगवान गणेश की बड़ी प्रतिमा स्थापित की जाती है। इस प्रतिमा का नौ दिनों तक पूजन किया जाता है। बड़ी संख्या में आस पास के लोग दर्शन करने पहुँचते है। नौ दिन बाद गानों और बाजों के साथ गणेश प्रतिमा को किसी तालाब, महासागर इत्यादि जल में विसर्जित किया जाता है। गणेशजी को लंबोदर के नाम से भी जाना जाता है ।

2.10 आश्विन मास के प्रमुख पर्व –

हिन्दूपञ्चांग के बारह मासों में कई महीनों का विशेष महत्व है।क्यूंकि वे अनेक दृष्टियों से धर्म , आध्यात्म , भक्ति जीवन में रस संचार तथा लौकिक लोकाचार के लिए अति सम्पन्न हैं।इन्हीं में से से एक महीना अश्विन का भी होता है।वर्षा ऋतू के बाद आनेवाला यह माह स्वच्छता , प्रकाश , ज्ञान ,ओर उलास का मास है।यह महीना शरद ऋतू का प्रथम मास है।इसलिए इस मास का विशेष स्थान भी है।आश्विन माह व्रत-त्योहारों के लिहाज से महत्वपूर्ण है। इस महीने कई व्रत-त्योहार मनाए जाएंगे। शुरुआत पितृपक्ष से हो गई है। इसके बाद नवरात्रि, विजयदशमी, प्रदोष व्रत, पापांकुशा एकाशी व्रत और आखिरी में शरद पूर्णिमा है।

2.10.1 पितृ पक्ष श्राद्ध कर्म –

पितृपक्ष, जिसे श्राद्ध पक्ष के नाम से भी जाना जाता है, हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है। यह पर्व हर वर्ष अश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ होता है और अमावस्या तक चलता है। इस सोलह दिनों की अवधि में हिन्दू धर्मावलंबी अपने पितरों की आत्मा की शांति और तृप्ति के लिए विशेष अनुष्ठान, तर्पण, और पिंडदान करते हैं।पितृपक्ष का महत्व इस विचार पर आधारित है कि इस अवधि में पितरों की आत्माएं पृथ्वी पर आती हैं और अपने वंशजों से जल, पिंड, और अन्न की आकांक्षा करती हैं। पितरों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए किए गए इन अनुष्ठानों को अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। इन अनुष्ठानों के माध्यम से पितरों को तृप्त करने से उनके आशीर्वाद की प्राप्ति होती है, जो परिवार के समृद्धि, शांति, और उन्नति के लिए आवश्यक है।

2.10.2 शरद नवरात्रोत्सव एवं विजय दशमी पर्व –

शारदीय नवरात्र (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त)बासंतिक नवरात्रों का पौराणिक महत्व वृहत है।यह महा पर्व सनातनी परम्परा में भक्तों, साधकों के लिए एक अमृत वेला के सामान है , शाक्त परम्पराओं में यह एक अद्भुत भक्ति – उपासना का काल है।भगवती माता दुर्गा जिन्हे आदिशक्ति जगत जननी जगदम्बा भी कहा जाता है, भगवती के नौ मुख्य रूप है जिनकी विशेष पूजा व साधना नवरात्रि के दौरान और वैसे भी विशेष रूप से करी जाती है। इन नवों/नौ दुर्गा देवियों को पापों की विनाशिनी कहा जाता है, हर देवी के अलग अलग वाहन हैं, अस्त्र शस्त्र हैं परन्तु यह सब एक हैं और सभी परम भगवती दुर्गा जी से ही प्रकट होती है।

देवी कवच में नवदुर्गा के नामों का उल्लेख इस प्रकार है -

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा: प्रकीर्तिता:।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।।

पर्व का महत्व- इस पर्व का महत्व पौराणिक दृष्टि से बहुत बड़ा है यह पर्व समूचे भारत में बड़े उत्साह और भक्ति भाव से मनाया जाता है -वरात्र उत्सव देवी अंबा (विद्युत) का प्रतिनिधित्व है। वसंत की शुरुआत और शरद ऋतु की शुरुआत, जलवायु और सूरज के प्रभावों का महत्वपूर्ण संगम माना जाता है। ये दो समय मे मां दुर्गा की पूजा के लिए पवित्र अवसर माना जाता है। त्योहार की तिथियाँ चंद्र कैलेंडर के अनुसार निर्धारित होती हैं। नवरात्र पर्व, माँ-दुर्गा की अवधारणा भक्ति और परमात्मा की शक्ति (उदात्त, परम, परम रचनात्मक ऊर्जा) की पूजा का सबसे शुभ और अनोखा अवधि माना जाता है। यह पूजा वैदिक युग से पहले, प्रागैतिहासिक काल से चला आ रहा है। ऋषि के वैदिक युग

के बाद से,नवरात्र के दौरान की भक्ति प्रथाओं में से मुख्य रूप गायत्री साधना का हैं। नवरात्र में देवी के शक्तिपीठ और सिद्धपीठों पर भारी मेले लगते हैं । माता के सभी शक्तिपीठों का महत्व अलग-अलग हैं। लेकिन माता का स्वरूप एक ही है। कहीं पर जम्मू कटरा के पास वैष्णो देवी बन जाती है। तो कहीं पर चामुंडा रूप में पूजी जाती है। बिलासपुर हिमाचल प्रदेश मे नैना देवी नाम से माता के मेले लगते हैं तो वहीं सहारनपुर में शाकुंभरी देवी के नाम से माता का भारी मेला लगता है।

दशहरा (विजयादशमी)

हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। अश्विन (क्वार) मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। भगवान राम ने इसी दिन रावण का वध किया था तथा देवी दुर्गा ने नौ रात्रि एवं दस दिन के युद्ध के उपरान्त महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिये इस दशमी को 'विजयादशमी' के नाम से जाना जाता है (दशहरा = दशहोरा = दसवीं तिथि)। दशहरा वर्ष की तीन अत्यन्त शुभ तिथियों में से एक है, अन्य दो हैं चैत्र शुक्ल की एवं कार्तिक शुक्ल की प्रतिपदा। इस दिन लोग शस्त्र-पूजा करते हैं और नया कार्य प्रारम्भ करते हैं (जैसे अक्षर लेखन का आरम्भ, नया उद्योग आरम्भ, बीज बोना आदि)। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरम्भ किया जाता है उसमें विजय मिलती है। प्राचीन काल में राजा लोग इस दिन विजय की प्रार्थना कर रण-यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। इस दिन स्थान-स्थान पर मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण मेघनाद कुभंकरण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। दशहरा अथवा विजयदशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है, शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है। भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक है, शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों- काम,क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

2.10.3 शरद पूर्णिमापर्व –

शरद पूर्णिमा, जिसे कोजागरी पूर्णिमा व रास पूर्णिमा भी कहते हैं।पंचांग के अनुसार आश्विन मास की पूर्णिमा को कहते हैं। ज्योतिष के अनुसार, पूरे वर्ष में केवल इसी दिन चन्द्रमाँ सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है । हिन्दू धर्म में इस दिन कोजागर व्रत माना गया है। इसी को कौमुदी व्रत भी कहते हैं। इसी दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने महारास रचाया था। मान्यता है इस रात्रि को चन्द्रमा की किरणों से अमृत झड़ता है। तभी इस दिन उत्तर भारत में खीर बनाकर रात भर चाँदनी में रखने का विधान है।

2.11 कार्तिक मास के प्रमुख पर्व –

भारतीय संस्कृति में कार्तिक मास का धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व है। हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार यह पवित्र मास माना जाता है।कार्तिक मास में नित्य-नैमितिक कर्मों का बड़ा महत्व है।। धर्मशास्त्र के अनुसार जो व्यक्ति कार्तिक के पवित्र माह के नियमों का पालन करते हैं, वह वर्ष भर स्वास्थ्य सुख और समृद्धि पाते हैं। कार्तिक माह में स्नान-दान, व्रत-उपवास, दीपदान, तुलसी विवाह, कार्तिक कथा का माहात्म्य सुनने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है।तथा पापों – संतापों का शमन होता है। यूं तो कार्तिक मास में अनेक नियम, संयम का पालन करने का विधान है।शास्त्रों में वर्णन आता है कि - पद्म पुराण के अनुसार रात्रि में भगवान विष्णु के समीप जागरण, प्रातःकाल स्नान करना, तुलसी की सेवा में संलग्न रहना, उद्यापन करना और दीप-दान देना,आदि प्रमुख बातें है , जो धार्मिक दृष्टि से पालनीय है।इस माह में दीपोत्सव मनाया जाता है ,दीपावली भी इसी माह में आती है , दीप दान का महत्व इस माह में सर्वाधिक है , जिसकी कथाएं पुराणों में सम्यक रूप से आती है।

2.11.1 धनतेरस पर्व –

यह पर्व कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनाया जाता है , अर्थात दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस अथवा धन त्रयोदशी का त्यौहार मनाया जाता है।इस दिन नए बर्तन खरीदने की परंपरा है. इस दिन स्वर्ण अथवा रजत आभूषण खरीदने का भी रिवाज है। अपनी - अपनी परम्परानुसार लोग सामान खरीदते है. संध्या समय में घर के मुख्य द्वार पर एक बड़ा दीया जलाया जाता है।

2.11.2 नरक चतुर्दशी पर्व -इस त्यौहार को भारत वर्ष में कई –की स्थानों में बड़ी या छोटी दीपावली के नाम से भी जाना जाता है।दीपावली से एक दिन पहले छोटी दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है. इस दिन को नरक चतुर्दशी अथवा नरका चौदस भी कहते हैं. इस दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था. इसलिए इसे नरका चौदस कहा जाता है। इस दिन संध्या के समय में पूजा की जाती है।और अपनी - अपनी परंपरा के अनुसार दीये जलाए जाते हैं।

2.11.3 दिपावली –

कार्तिक पर्वों की श्रृंखला में पांच दिन के इस पर्व का यह मुख्य दिन होता है. इस दिन सुबह से ही घरों में चहल-पहल आरम्भ हो जाती है. एक-दूसरे को बधाई संदेश दिए जाते हैं. घर को सजाने का काम आरम्भ हो जाता है. संध्या समय में गणेश जी तथा लक्ष्मी जी का पूजन पूरे विधि-विधान से किया जाता है. पूजन विधि में धूप-दीप, खील-बताशे, रोली-मौली, पुष्प आदि का उपयोग किया जाता है. पूजन के बाद मिठाई खाने का रिवाज है।कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली का पर्व हर वर्ष मनाया जाता है. भारतवर्ष में हिन्दुओं का यह प्रमुख त्यौहार है। इस दिन सभी लोग सुबह से ही घर को सजने का कार्य आरम्भ कर देते हैं. संध्या समय में दीये जलाते हैं. लक्ष्मी तथा गणेश पूजन करते हैं. आस-पड़ौस में एक-दूसरे को मिठाइयां व उपहार बांटते हैं. रिश्तेदारों तथा मित्रों को मिठाइयों का

आदान-प्रदान कई दिन पहले से ही आरम्भ हो जाता है. रात में बच्चे तथा बड़े मिलकर पटाखे तथा आतिशबाजी जलाते हैं.

2.11.4 अन्नकूट पर्व-

दिवाली से अगले दिन अन्नकूट का पर्व मनाया जाता है. इस दिन मंदिरों में सभी सब्जियों को मिलाकर एक सब्जी बनाते हैं, जिसे अन्नकूट कहा जाता है. मंदिरों में इस अन्नकूट को खाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ लगी होती है. अन्नकूट के साथ पूरी बनाई जाती है. कहीं-कहीं साथ में कढ़ी-चावल भी बनाए जाते हैं।

2.11.5 गोवर्धन पूजा-

इसी दिन रात्रि समय में गोवर्धन पूजा भी की जाती है. गोवर्धन पूजा में गोबर से गोवर्धन बनाया जाता है और उसे भोग लगाया जाता है. उसके बाद धूप-दीप से पूजन किया जाता है. फिर घर के सभी सदस्य इस गोवर्धन की परिक्रमा करते हैं।

विश्वकर्मा दिवस- इसी दिन विश्वकर्मा दिवस भी मनाया जाता है. इस दिन मजदूर वर्ग अपने औजारों की पूजा करते हैं. फैक्टरी तथा सभी कारखाने इस दिन बन्द रहते हैं.

2.11.6 भैया दूज –

दिवाली का पर्व भैया दूज या यम द्वित्तीया के दिन समाप्त होता है. यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वित्तीया को मनाया जाता है. इस दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक करती हैं और मिठाई खिलाती हैं. भाई बदले में बहन को उपहार देते हैं.

2.12 मार्गशीष माह के प्रमुख पर्व –

मार्गशीर्ष मास भी अन्य प्रमुख माहों के सामान कई बड़े व्रत , पर्व , त्योहार पड़ रहे हैं। इस मास संकष्टी चतुर्थी, काल भैरव जयंती, उत्पन्ना एकादशी, दर्श अमावस्या, अन्वाधान, मार्गशीर्ष अमावस्या, धनु संक्रान्ति, विवाह पंचमी, गीता जयंती, मोक्षदा एकादशी, दत्तात्रेय जयंती और मार्गशीर्ष पूर्णिमा जैसे व्रत- पर्व आते हैं।

2.13 पौष मास के प्रमुख पर्व –

शास्त्रों के अनुसार, यह महीना व्रत त्योहारों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस दौरान कई मुख्य और बड़े त्योहार आते हैं. पौष मास में आने वाले त्योहार जिनमें संकट चौथ,

मकर संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, पुत्रदा एकादशी और सफला एकादशी जैसे व्रत त्योहार बेहद खास हैं.

2.14 माघ माह के प्रमुख पर्व

हमारे यहाँ (हिन्दू धर्मशास्त्र सनातनी परम्परा) में माघ के महीने में गंगा स्नान और गरीबों को दान देने का भी विशेष महत्व है।इसके साथ ही माघ माह में संकट-चौथ, मौनी अमावस्या, षटतिला एकादशी, बसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा, जया एकादशी, प्रदोष व्रत, विनायक चतुर्थी जैसे महत्वपूर्ण व्रत और त्योहार आने वाले हैं।धार्मिक मान्यता है कि माघ मास में किए गए कार्यों का फल व्यक्ति को कई जन्मों तक प्राप्त होता है. माघ मास में गंगा स्नान और गरीबों को दान देने का भी विशेष महत्व है, इसके साथ ही माघ माह में सकट चौथ, मौनी अमावस्या, षटतिला एकादशी, बसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा, जया एकादशी, प्रदोष व्रत, विनायक चतुर्थी जैसे महत्वपूर्ण व्रत और त्योहार आने वाले हैं।

2.15 फाल्गुन के पर्व

फाल्गुन माह साल का आखिरी महीना होता है। धार्मिक दृष्टिकोण से फाल्गुन के महीने को बहुत ही शुभ माना जाता है। इस माह में शिव जी, श्री कृष्ण और चंद्र देव की पूजा-उपासना की जाती है। साथ ही इस माह में होली, महाशिवरात्रि जैसे कई प्रमुख व्रत-त्योहार मनाए जाते हैं।

2.15 .1 महा शिवरात्रि पर्व–

भारतीय पर्वों की श्रृंखला में शिवरात्रि व्रत-पर्व का बड़ा महत्व है।यह एक प्रमुख त्यौहार है। यह भगवान शिव का प्रमुख पर्व है। माघ फागुन फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को महाशिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ था। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन सृष्टि का आरम्भ अग्निलिंग (जो महादेव का विशालकाय स्वरूप है) के उदय से हुआ। इसी दिन भगवान शिव का विवाह देवी पार्वती के साथ हुआ था। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव व पत्नी पार्वती की पूजा होती हैं। यह पूजा व्रत रखने के दौरान की जाती है। साल में होने वाली 12 शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है|भारत सहित पूरी दुनिया में महाशिवरात्रि का पावन पर्व बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है|

2.15.2 होली पर्व –

शास्त्रीय परम्परा के अनुसारहर साल फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को होली मनाई जाती है। रंगों , प्रेम और वसंत के त्योहार के रूप में मनाया जाने वाला एक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है।इस दिन लोग एक-दूसरे को अबीर-गुलाल और रंग लगाकर, सारे गिल-

शिकवे भूलकर साथ में होली का त्यौहार मनाते हैं। रंग और खुशियों के इस पर्व की धूम देश ही नहीं बल्कि विदेश के कई जगहों पर भी देखने को मिलती है।

2.16 बोधात्मक प्रश्न

1. वेद कितने हैं।

क. चार ख. पांच ग. सात घ. असंख्य

2. फाल्गुन चैत के प्रमुख त्यौहार हैं –

क. होली, महाशिवरात्रि ,नव रात्र ख. दीपावली , धन तेरस , ग. मकर संक्रांति , लोहड़ी घ. कोई नहीं

3. रामजन्मोत्सव को कहा जाता है –

क. एकादशी पर्व ख. रामनवमी ग. दीपावली घ. हनुमान जयंती

4.चैत नवरत्र को कहा जाता है

क.बासंतिक नवरात्र ख.शारदीय नवरात्र ग. दुर्गापूजा घ. कोई नहीं

2.17 सारांश

प्रिय विद्यार्थियों आपने इस इकाई के अंतर्गत समग्र रूप से अध्ययन किया ,कि वैदिक हिंदू धर्म अर्थात सनातन धर्म के अंतर्गत वर्ष भर में कितने प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं।जो प्रमुख हैं वैसे तो हिंदू धर्म में (सनातन धर्म) में कहा जाता है कि पूरे देश भर में हर एक दिन त्योहार मनाए जाते हैं।हिन्दू संस्कृति में उनके पर्व एव त्योहार का विशिष्ट महत्व है। ये पर्व एवं त्योहार किसी भी श्रेणी में क्यों ना हों उनका बाह्य रुप कैसा भी क्यों ना हों किन्तु उनका वास्तविक उद्देश्य जन साधारण में धार्मिक सामाजिक और अध्यात्मिक चेतना का जागृत करना मात्र है। किसी भी देश के पर्व-त्योहार का मात्र यहीं औचित्य है कि इन के द्वारा उनकी वास्तविक संस्कृति के दिग्दर्शन होते है और इसके माध्यम से

उस देश की विशेष संस्कृति का एक वास्तविक स्वरुप जन साधारण के सम्मुख प्रकट होता है मानव समाज की सफलता के लिए जहाँ व्यक्तिगत उन्नति और सत्प्रवृत्तियों को ग्राहय करने की आवश्यकता है वहीं सामाजिक संगठन सुदृढ़ बनाना और सामुदायिक सहयोग की भावना का विकास करना भी है। भारतीय संस्कृति में जितने भी पर्व-त्योहार का नियोजन किया गया हैं। उसका एक मात्र उद्देश्य है कि लोग आपस में प्रेमपूर्वक जीवन यापन करते हुए परस्पर सहयोग की भावना को विकसित करें। हमारे देश भारत में पर्वों और त्योहार की परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है जो विभिन्न ऋतुओं में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सभी समुदायों के द्वारा पूर्ण उल्लास और प्रसन्नता के साथ मनाये जाते है। हिन्दू धर्मावलम्बियों के द्वारा मनाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पर्व-त्योहार का अपना एक अलग महत्व व विशिष्ट पहचान हैं ।परंतु कुछ शास्त्रीय मान्यताओं से युक्त पर्व है, जिनके विषय में आपने विस्तार पूर्वक इस इकाई के अंतर्गत अध्ययन किया हिंदू धर्म में सैकड़ो त्योहार हैं जैसे-**धनतेरस , दीपावली, होली, नवरात्रि, दशहरा, महाशिवरात्रि पर्व, गणेश चतुर्थी का पर्व, रक्षाबंधन का पर्व, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, कड़क चतुर्थी करवा चौथ का पर्व , रामनवमी का पर्व, छठ पर्व, बसंत पंचमी का पर्व, रंग पंचमी का पर्व ,मकर संक्रांति, दुर्गा अष्टमी यानी दुर्गा पूजा का पर्व, भैया दूज जिसको भाई दूज कहते , हैं पोंगल लोहड़ी, हनुमान जयंती ,गोवर्धन पूजा, काली पूजा, विष्णु पूजा, कार्तिक पूर्णिमा, नरक चतुर्थी, रथ यात्रा, गौरी हब्बा उत्सव, महेश संक्रांति , हरतालिका तीज, पितृ श्राध , कुंभ उत्सव आदि**।लेकिन इनमें से कुछ त्यौहार है कुछपर्व है कुछ व्रत है पूजा और कुछ उपासना के युक्त भी सही है इन सभी में फर्क है हिंदू त्योहार कुछ खास इसलिए होते हैं - कि भारत में प्रत्येक समाज प्रांत के अलग-अलग त्यौहार उत्सव पर्व परंपरा और रीति रिवाज चले आ रहे हैं ।यह लंबे काल और वंश परंपरा का भी परिणाम है।हिन्दू धर्म में वैसे तो बहुत सारे त्योहार हैं। सभी त्योहार या पर्व धर्म, मौसम और उत्सव से जुड़े हुए हैं।

2.17 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

1. क, 2. क, 3. ख , 4. क

2.18 सन्दर्भित ग्रन्थ व सहायक पाठ्य सामग्री

पद्म पुराण

भारतीय व्रत एवं त्यौहार (शारदा प्रकाशन नई-दिल्ली) डॉ.राजेश्वरी शाण्डिल्य

व्रत-पर्व निर्णय

भारतीय व्रत एवं त्यौहार (शारदा प्रकाशन नई- दिल्ली)

निर्णय सिन्धु

धर्म सिन्धु

याज्ञवल्क्य स्मृति

भविष्यपुराण

कर्मकाण्ड समुच्चय

संस्कृतविकिपीडिया(https://astrobix.com/hindumarg/259-

https://hi.wikipedia.org/wiki/)

मुहूर्त मार्तण्ड

मुहूर्त चिन्तामणि

मुहूर्त कल्पद्रुम

2.19 पारिभाषिक शव्दावली –

पर्व-उत्सव या पर्व या त्योहार किसी भी समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक असाधारण घटना है और उस समुदाय और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केन्द्रित है।

अपसंस्कृति –ऐसा आचार या पद्वति जो उच्च या श्रेष्ठ मूल्यों के विरुद्ध हो।

धर्म मूल – धारण करना या बनाये रखना।

आचार- आचरण (व्यवहार)

सांस्कृतिक – संस्कृति(परम्पराओं) से समन्धित।

विविधता – अलग – अलग विशेषता।

2.20 निबन्धात्मक प्रश्न –

1.भारतीय सनातनी परम्परा में पर्वों का परिचय एवं महत्व के विषय में विस्तार पूर्वक लिखिए।

2.चैत्र माह के पर्व विशेष पर प्रकाश डालिए।

3.कार्तिक माह के पर्वों पर प्रकाश डालिए।

4.पर्वों का भारतीय संस्कृति पर क्या प्रभाव है विस्तारपूर्वक लिखिए।

इकाई -3 पर्वों का निर्धारण विधि

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उदेश्य

3.3विषय परिचय

3.4पञ्चांग का संक्षिप्त परिचय

3.5महीनों के नाम

3.6काल गणना - घटि, पल, विपल

3.7प्रमुख पर्व निर्णय

3.8एकादशी पर्व निर्णय

3.9पूर्णिमा एवं अमावस्या में पर्व

3.10 मेषादि संक्रांतियों का पुण्यकाल व पर्वोत्सव निर्णय

3.11 भगवान् अवतार पर्व निर्णय

3.12 अधिक मास एवं छह मास का विचार एवं निर्णय

3.13 बोधात्मक प्रश्न

3.14 सारांश

3.15 वोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

3.16 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.17 पारिभाषिक शव्दावली

3.18 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो यह इकाईबी.ए. कर्मकाण्ड तृतीय समेस्टर की BAKA(N)-220 पाठ्यक्रम केद्वितीय खण्ड –की तृतीय इकाई है जिसका शीर्षक **"पर्वों का निर्धारण विधि"**है।इसके अन्दर आप पर्व के विषय में गहनता से अध्ययन करेंगे साथ ही पर्वों का निर्धारण कैसे किया जाता है इसके विषय में गहनता से अध्ययन करेंगे।त्योहार की तिथियों को भारत शासन द्वारा प्रकाशित भारतीय राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग (कैलेंडर) के आधार पर निर्धारित करते हैं। व्रत, पर्व उत्सव धर्मशास्त्र के अनुसार निर्धारित होते हैं। जो सनातन धर्म के लिए प्रायः निर्णय सिन्धु ग्रन्थ और भारतीय ज्योतिष शास्त्र की मुहूर्त पद्वति पर आधारित होती है।

3.2 उदेश्य

- इस इकाई के अध्ययन से विषय वस्तु का बोध हो पायेगा।
- इस इकाई के अंतर्गत हम पर्वों के निर्णय हेतु शास्त्रीय सिद्धांतों को समझ पाएंगे।
- एकादशी प्रमुख व्रत – पर्वों का निर्णय व प्रकार को समझ सकेंगे।
- इस इकाई के माध्यम से पूर्णिमा आमावस्या का किस प्रकार निर्णय होता है , इसका बोध हो पायेगा।
- पर्वों का ज्योतिषीय पंचांगानुसार एवं धर्मशास्त्रीय पौराणिक मत से निर्णय कैसे होता है , ये बोध कर पायेंगे।
- वर्ष में आने वाले प्रमुख पर्वों का निर्णय कैसे किया जाता है , समझ सकेंगे।
- ग्रहण काल में कर्तव्यादि को तथा शुभाशुभ स्थिति का बोध हो सकेगा।

3.3 विषय परिचय –

भारतीय परम्परा में पर्व एक आयोजन होता है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक या आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार मनाया जाता है। पर्वों का मुख्य उद्देश्य आनंद, आदर्शों की पुनरावृत्ति, एकता और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देना होता है।त्योहार की तिथियों को भारत शासन द्वारा प्रकाशित भारतीय राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग के आधार पर निर्धारित करते हैं। व्रत, पर्व उत्सवों

का ज्योतिष शास्त्र एवं धर्मशास्त्र के अनुसार निर्धारण होता हैं। जो सनातन धर्म के धर्म के ग्रन्थों व ज्योतिष के मुहूर्त ग्रन्थों में आदेशित होता हैं जैसे-निर्णय सिन्धु धर्म सिन्धु आदि।किसी भी व्रत – पर्वों का निर्णय ज्योतिष में पञ्चांग के अनुसार तिथि-वार-नक्षत्रों का ज्ञान होना परमावश्यक है , तदुपरान्त किसी भी पर्व का निर्णय सम्भव है।पर्व किसी तिथि विशेष मुहूर्त को मनाये जाते हैं।अब हमको सबसे पहले ये जनना है , कि मुहूर्त क्या है , पञ्चांग क्या है तभी हम निर्णय की बात समझ पायेंगे।

3.4 पञ्चांग का संक्षिप्त परिचय

पञ्चाङ्ग से आशय उन सभी प्रकार के पञ्चाङ्गों से है जो परम्परागत रूप प्राचीन काल से भारत में प्रयुक्त होते आ रहे हैं।**"पंचानां समाहार: पञ्चांगम्"**पंचांग शब्द का अर्थ है , पाँच अंगो वाला। पंचांग में समय गणना के पाँच अंग हैं : तिथि , वार , नक्षत्र , योग , और करण। आइये विस्तारपूर्वक पञ्चांग के स्वरुप को जानते हैं।

3.4.1 वार–

भारतीय पंचांग प्रणाली में एक प्राकृतिक सौर दिन को दिवस कहा जाता है। सप्ताह में सात दिन होते हैं और उनको वार कहा जाता है। दिनों के नाम सूर्य , चन्द्र , और पांच प्रमुख ग्रहों पर आधारित हैं।

3.4.2तिथि-

के अनुसार मास में ३० तिथियाँ होतीं हैं, जो दो पक्षों में बंटीं होती हैं। चन्द्र मास एक अमावस्या के अन्त से शुरु होकर दूसरे अमा वस्या के अन्त तक रहता है। अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र का भौगांश बराबर होता है। इन दोनों ग्रहों के भोंगाश में अन्तर का बढना ही तिथि को जन्म देता है। तिथि की गणना निम्न प्रकार से की जाती है।एक दिन को तिथि कहा गया है जो पंचांग के आधार पर उन्नीस घंटे से लेकर छब्बीस घंटे तक की होती है। चंद्र मास में 30 तिथियाँ होती हैं, जो दो पक्षों में बँटी हैं। शुक्ल पक्ष में एक से चौदह और फिर पूर्णिमा आती है। पूर्णिमा सहित कुल मिलाकर पंद्रह तिथि। कृष्ण पक्ष में एक से चौदह और फिर अमावस्या आती है। अमावस्या सहित पंद्रह तिथि।

3.4.3 नक्षत्र–

आकाश में तारामंडल के विभिन्न रूपों में दिखाई देने वाले आकार को नक्षत्र कहते हैं। मूलत:

नक्षत्र 27 माने गए हैं। ज्योतिषियों द्वारा एक अन्य अभिजित नक्षत्र भी माना जाता है। चंद्रमा उक्त सत्ताईस नक्षत्रों में भ्रमण करता है। ये 27 नक्षत्र हैं -

1. अश्विनी, 2. भरणी, 3. कृत्तिका, 4. रोहिणी, 5. मृगशिरा, 6. आर्द्रा, 7. पुनर्वसु, 8. पुष्य, 9. अश्लेशा, 10. मघा, 11. पूर्वाफाल्गुनी, 12. उत्तराफाल्गुनी, 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाती, 16. विशाखा, 17. अनुराधा, 18. ज्येष्ठा, 19. मूल, 20. पूर्वाषाढा, 21. उत्तराषाढा, 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा, 25. पूर्व भाद्रपद, 26. उत्तर भाद्रपद, 27. रेवती।

3.4.4 योग–

योग 27 प्रकार के होते हैं। सूर्य-चंद्र की विशेष दूरियों की स्थितियों को योग कहते हैं। दूरियों के आधार पर बनने वाले 27 योगों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं:- विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, इन्द्र और वैधृति।27 योगों में से कुल 9 योगों को अशुभ माना जाता है तथा सभी प्रकार के शुभ कामों में इनसे बचने की सलाह दी गई है। ये अशुभ योग हैं: विष्कुम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ और वैधृति।

3.4.5 करण-

एक तिथि में दो करण होते हैं- एक पूर्वार्ध में तथा एक उत्तरार्ध में। कुल 11 करण होते हैं- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पाद, नाग और किंस्तुघ्न। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (14) के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध में चतुष्पाद, अमावस्या के उत्तरार्ध में नाग और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। भद्रा में शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं।

पक्ष–

प्रत्येक महीने में तीस दिन होते हैं। तीस दिनों को चंद्रमा की कलाओं के घटने और बढ़ने के आधार पर दो पक्षों यानी शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष में विभाजित किया गया है। एक पक्ष में लगभग पंद्रह दिन या दो सप्ताह होते हैं। एक सप्ताह में सात दिन होते हैं। शुक्ल पक्ष में चंद्र की कलाएँ बढ़ती हैं और कृष्ण पक्ष में घटती हैं।

3.5 महीनों के नाम

इन बारह मासों के नाम आकाशमण्डल के नक्षत्रों में से १२ नक्षत्रों के नामों पर रखे गये हैं। जिस मास जो नक्षत्र आकाश में प्रायः रात्रि के आरम्भ से अन्त तक दिखाई देता है या कह सकते हैं कि जिस मास की पूर्णमासी को चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी के नाम पर उस मास का नाम रखा गया है। चित्रा नक्षत्र के नाम पर चैत्र मास (मार्च-अप्रैल), विशाखा नक्षत्र के नाम पर वैशाख मास (अप्रैल-मई), ज्येष्ठा नक्षत्र के नाम पर ज्येष्ठ मास (मई-जून), आषाढ़ा नक्षत्र के नाम पर आषाढ़ मास (जून-जुलाई), श्रवण नक्षत्र के नाम पर श्रावण मास (जुलाई-अगस्त), भाद्रपद (भाद्रा) नक्षत्र के नाम पर भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर), अश्विनी के नाम पर आश्विन मास (सितम्बर-अक्टूबर), कृत्तिका के नाम पर कार्तिक मास (अक्टूबर-नवम्बर), मृगशीर्ष के नाम पर मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर), पुष्य के नाम पर पौष (दिसम्बर-जनवरी), मघा के नाम पर माघ (जनवरी-फरवरी) तथा फाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) का नामकरण हुआ है।महीनों के नामपूर्णिमा के दिन चन्द्रमा इस नक्षत्र में होता है।

चैत्र चित्रा, स्वाति

वैशाख विशाखा, अनुराधा

ज्येष्ठ ज्येष्ठा, मूल

आषाढ़ पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़

श्रावण श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा

भाद्रपद पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र

आश्विन रेवती, अश्विनी, भरणी

कार्तिक कृतिका, रोहिणी

मार्गशीर्ष मृगशिरा, आर्द्रा

पौष पुनवर्सु, पुष्य

माघ अश्लेषा, मघा

फाल्गुन पूर्व फाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी, हस्त।तिथियों के नाम निम्न हैं- पूर्णिमा (पूरनमासी), प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दूज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पंचमी (पंचमी), षष्ठी (छठ), सप्तमी (सातम), अष्टमी (आठम), नवमी (नौमी), दशमी (दसम), एकादशी (ग्यारस), द्वादशी (बारस), त्रयोदशी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस) और अमावस्या (अमावस)।

3.6 काल गणना - घटि, पल, विपल

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य सिद्धांत के अनुसार नव- विध कालमानों का मुहूर्त में प्रयोजन बताया गया है , जैसे – सौर , सावन , चान्द्र, नाक्षत्र , पित्र , गुरु (बार्हस्पत्य) , मनु , देव तथा ब्राह्म ये नव (नौ) प्रकार के काल मान हैं।इन्हीं नव कालमानों से समस्त कार्यों की सिद्धि होती है।हिन्दू पञ्चांग काल गणना में समय का आकलन अलग अलग माप प्रकार से हैं। एक सूर्यादय से दूसरे सूर्योदय तक का समय दिवस है , एक दिवस में एक दिन और एक रात होते हैं। दिवस से आरम्भ करके समय को साठ साठ के भागों में विभाजित करके उनके नाम रखे गए हैं । आईये कुछ ज्योतिषीय काल गणना के सूत्र जानते हैं -

१ दिवस = ६० घटी (६० घटि २४ घंटे के बराबर है या १ घटी = २४ मिनट , घटि को देशज भाषा में घडी भी कहा जाता है)

१ घटी = ६० पल (६० पल २४ मिनट के बराबर है या १ पल = २४ सेकेण्ड)

१ पल = ६० विपल (६० विपल २४ सेकेण्ड के बराबर है , १ विपल = ०.४ सेकेण्ड)

१ विपल = ६० प्रतिविपल।

इसके अतिरिक्त

१ पल = ६ प्राण (१ प्राण = ४ सेकेण्ड)

इस प्रकार एक दिवस में ३६०० पल होते हैं। एक दिवस में जब पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तो उसके कारण सूर्य विपरीत दिशा में घूमता प्रतीत होता है। ३६०० पलों में सूर्य एक चक्कर पूरा करता

है , इस प्रकार ३६०० पलों में ३६० अंश। १० पल में सूर्य का जितना कोण बदलता है उसे १ अंश कहते है।

3.7 प्रमुख पर्व निर्णय

भारतीय सनातनी परम्परा में पर्वों के निर्णय हेतु शास्त्रों ने ज्योतिष शास्त्र का आश्रय लिया है।काल गणना का के विना महूर्त पक्षों का निर्णय असम्भव है, क्यूंकि तिथियों की क्षय वृद्धि के निर्णय के पश्चात ही किसी तिथि विशेष पर्वों का पर्व काल तथा पूण्य काल का निर्णय सम्भव ही नहीं है।

3.7.1 सूर्य संक्रमण - संक्रान्ति पर्व निर्णय

भारतीय सनातनी परम्परा में संक्रान्ति का विशेष महत्व है , बारह महीनों में प्रत्येक मास के प्रारम्भ में संक्रांति आती है , आईये समझते हैं संक्रांति पर्व कया है , और इसका निर्धारण कैसे किया जाता है, क्यूंकि प्रत्येक मास में सर्व प्रथम संक्रान्ति का ही पर्व प्रमुखतया आता है।ग्रहधिष्ठाता तथा सर्वशक्तिमान ग्रह सूर्य है।यह पूर्व दिशा का स्वामी , सतोगुणी , अग्नितत्व , क्षत्रीय वर्ण , अश्वारूढ तथा वृद्ध पुरुष ग्रह है।इसे काल पुरुष की आत्मा भी कहा गया है , यह सदा – मार्गी एवं उदित रहता है।क्षितिज के कारण यह कहीं उदित और कहीं अस्त अवश्य दृष्टि गौचर होता है।एक जगह संध्या तो अन्यत्र , प्रात:काल होता है।इस प्रकार सूर्य के दृश्य और अदृश्य हो जाने के कारण हम सूर्योदय और सूर्यास्त कहते हैं।

संक्रान्ति कथन –

सूर्य का एक राशि पर संक्रमण काल ही "संक्रान्ति" कहलाता है।यह लगभग 30 दिन की अवधि है और एक वर्ष में बारह संक्रान्ति होती है।मिथुन, कन्या , धनु , मीन संक्रांतियाँ होती है।मिथुन , कन्या , धनु , मीन संक्रान्तियां षड्शीत्यायन ; मेष-तुला।विषव; वृष , सिंह , वृशिक , कुम्भ "विष्णुपद" कर्क "याम्यन तथा मकर संक्रान्ति "सोम्यायन" तथा मकर संक्रान्ति "सोम्यन" संज्ञक है।

संक्रान्ति पर्व (पुण्यकाल) निर्णय –

सामान्यत: सूर्य संक्रान्ति के प्रवृत्ति काल के पूर्व 16 घटी तथा 16 घटी पश्चात का समय "पुण्यकाल" कहा जाता है।यदि अर्द्धरात्रि के पहले सूर्य – संक्रमण हो तो पूर्वदिन के पर भाग में तथा

अर्द्धरात्री के अनन्तर हो तो आगामी दिन के पूर्वभाग में पूण्य – काल गिना जाता है।यदि ठीक आधीरात के समय ही संक्रान्ति का प्रवेश हो तो पूर्वापर दोनों दिन पुण्यकाल होता है।विभिन्न मेषादि संक्रांतियों के विशिष्ट पुण्यकाल , परिमाण निम्न – चक्र में दिए गये हैं।

स्पष्टार्थ चक्र

संक्रान्ति	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
पूण्य घटी	10	16	16	30	16	16	10	16	16	40	16	16
पूर्वापर	पूर्वापर	पूर्व	पर	पूर्व	पूर्व	पर	पूर्वापर	पूर्व	पर	पर	पूर्व	पर

विशेष –पूर्व पूण्य काल वाली संक्रान्ति यदि ठीक सूर्योदय के समय प्रवेश हो तो उतना ही पर (अग्रिम) घत्यात्मक पुण्यकाल जानना चाहिए।क्यूंकि रात्रि में पूण्य वर्जित है।यह पूण्यकाल सर्व शुभकर्म में निषिद्ध है।अर्थात , इस काल में यथा शक्ति दान और यथायोग्य ईश्वर स्मरण ही अपेक्षित है –

रवे: संक्रमण राशो संक्रान्तिरीति कथ्यते।

स्नानदान जपश्राद्धहोमादिषु महाफलम्।|(पुरुषार्थ चिन्तामणि)

वेध विचार –जिस स्थान पर सूर्य शुद्ध होता है उससे छठे स्थान पर कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।अन्यथा , वेध प्राप्त शुभ सूर्य का भी फल अशुभ फल होगा।

3.8 एकादशी पर्व निर्णय

भारतीय सनातनी परम्परा में संस्कृति का मूलाधार भी धर्म ही है।यहाँ का एक-एक कण धर्म की भावना से ओत-प्रोत है। इस सन्दर्भ में तैत्तिरीयारण्यक में कहा गया है – 'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा। लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति। धर्मेण पापमपनुदन्ति। धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति। अर्थात् , धर्म सम्पूर्ण विश्व की प्रतिष्ठा है। धर्म में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है। यही कारण है कि धर्म को श्रेष्ठ कहा गया है। और इस भारतीय संस्कृति तथा धर्म को सनातन कहा गया है।भारतीयों के लिए गर्भाधान से लेकर परलोकपर्यन्त पुत्रपौत्रादि परम्पराक्रम में प्रति क्षण अनुष्ठित कार्यों के लिए धर्म अपना प्रकाश डालता है। वेद, स्मृति, और विभिन्न पुराणों से इस धर्म का प्रतिपादन किया गया है।

चूँकि यह सनातन धर्म है अतः स्वयं भगवान् द्वारा प्रतिष्ठापित इस धर्म की रक्षा भी प्रभु स्वयमेव करते हैं। यही अवतार का रहस्य भी है।जब-जब इस सनातन धर्म में कोई विक्षेपादि होता है तब-तब हरि विभिन्न अवतार (अंशावतार, कलावतार आदि) लेकर इसको निर्माल्य प्रदान करते हैं। पुराणों में भगवान् विष्णु से समन्धित व्रत – पर्वों का निर्णय इस प्रकार है - जिसमें एकादशी, रामनवमी, जानकीनवमी, हनुमज्जन्मोत्सव, नृसिंहजयन्ती, कृष्णाष्टमी, वामनद्वादशी तथा रथयात्रादि व्रतों एवं उत्सव आदि है। इन सारे व्रतोत्सवों को कैसे निर्णीत होगा पुराणों में इस प्रकार है - एकादशी को हरिवासर कहा गया है। भविष्यपुराण का वचन है— **"शुक्ले वा यदि वा कृष्णे विष्णुपूजनतत्परः।**

एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि" ॥

अर्थात्, विष्णुपूजा परायण होकर दोनों पक्षों (शुक्ल और कृष्ण) की ही एकादशी में उपवास करना चाहिये। लिङ्गपुराण में तो और भी स्पष्ट कहा है—गृहस्थो ब्रह्मचारी च आहिताग्निस्तथैव च। एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि॥अर्थात्, गृहस्थ, ब्रह्मचारी, सात्त्विकी किसी को भी एकादशी [दोनों पक्षों (शुक्ल और कृष्ण)] के दिन भोजन नहीं करना चाहिये। अब प्रश्न उठता है कि एकादशी व्रत का निर्धारण कैसे हो? वशिष्ठस्मृति के अनुसार दशमी विद्धा एकादशी संताननाशक होता है और विष्णुलोकगमन में बाधक हो जाता है। यथा—दशम्येकादशी यत्र तत्र नोपवसद्बुधः। अपत्यानि विनश्यन्ति विष्णुलोकं न गच्छति॥अतः यह परमावश्यक है कि एकादशी दशमीविद्धा (पूर्वविद्धा) न हो। हाँ द्वादशीविद्धा (परविद्धा) तो हो ही सकती है क्योंकि 'पूर्वविद्धातिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्' (नारदपाञ्चरात्र)। लेकिन वेध-निर्णय का सिद्धान्त भी सर्वसम्मत नहीं है। निम्बार्क सम्प्रदाय में स्पर्शवेध प्रमुख है।उनके अनुसार यदि सूर्योदय में एकादशी हो परन्तु पूर्वरात्रि में दशमी यदि आधी रात को अतिक्रमण करे अर्थात् दशमी यदि सूर्योदयोपरान्त ४५ घटी से १ पल भी अधिक हो तो एकादशी त्याग कर महाद्वादशी का व्रत अवश्य करे। यथा—अर्धरात्रमतिक्रम्य दशमी दृश्यते यदि। तदा ह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत्॥

(कूर्मपुराण)। परन्तु कण्व स्मृति के अनुसार अरुणोदय के समय दशमी तथा एकादशी का योग हो तो द्वादशी को व्रत कर त्रयोदशी को पारण करना चाहिये। यथा—

अरुणोदयवेलायां दशमीसंयुता यदि । तत्रोपोष्या द्वादशी स्यात्त्रयोदश्यां तु पारणम्॥

यहाँ पुराण और स्मृति के निर्देश में भिन्नता पायी जा रही है अतः शास्त्र-सिद्धान्त से स्मृति-वचन ही बलिष्ठ होता है। अतः यही सिद्धान्त बहुमान्य है। अपने रामानन्द-सम्प्रदाय का मत है कि वैष्णवों को

वेध रहित एकादशी का व्रत रखना चाहिये।यदि अरुणोदय-काल में एकादशी दशमी से विद्धा हो तो उसे छोड़कर द्वादशी का व्रत करना चाहिये—एकादशीत्यादिमहाव्रतानि कुर्याद्विवेधानि हरिप्रियाणि। विद्धा दशम्या यदि साऽरुणोदये स द्वादशीन्तूपवसेद्विहाय ताम्॥(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ६७)। उदाहरणार्थ, भाद्रपद शु. ११ रविवार २०७० को उदया तिथि में एकादशी तो है पर पूर्ववर्ती दिन (शनिवार) दशमी की समाप्ति २८:४६ बजे हो रही है जो सूर्योदय (५:५२ बजे) से मात्र १घंटा ६ मि. अर्थात् पौने तीन घटी पहले है अतः अरुणोदय काल (२८:१६ बजे) में यह एकादशी दशमी-विद्धा है। फलतः इसे त्यागकर भाद्रपद शु. १२ सोमवार को पद्मा एकादशी का व्रत विहित है। यह वेध भी चार प्रकार का होता है- (१) सूर्योदय से पूर्व साढ़े तीन घटी का काल अरुणोदय वेध है (२) सूर्योदय से पूर्व २ घटी का काल अति-वेध है (३) सूर्य के आधे उदित हो जाने पर महावेध काल है तथा (४) सूर्योदय में तुरीय योग होता है। यथा—

घटीत्रयंसार्द्धमथारुणोदये वेधोऽतिवेधो द्विघटिस्तुदर्शनात्। रविप्रभासस्य तथोदितेऽर्द्धे सूर्येमहावेध इतीर्यते बुधैः॥ योगस्तुरीयस्तु दिवाकरोदये तेऽर्वाक् सुदोषातिशयार्थबोधकाः।

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ७१-७२)। सूर्योदयकाल से पूर्व दो मुहुर्त संयुक्त एकादशी शुद्ध है और शेष सभी विद्धा हैं—

पूर्णेति सूर्योदयकालतः या प्राङ्मुहूर्तद्वयसंयुता च। अन्या च विद्धा परिकीर्तिता बुधैरेकादशी सा त्रिविधाऽपि शुद्धा॥

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ७३)। शुद्धा एकादशी के भी तीन भेद हैं। यथा—

एका तु द्वादशी मात्राधिका ज्ञेयोभयाधिका। द्वितीया च तृतीया तु तथैवानुभयाधिका॥ तत्राद्या तु परैवास्ति ग्राह्या विष्णुपरायणैः। शुद्धाप्येकादशी हेया परतो द्वादशी यदि ॥ उपोष्य द्वादशीं शुद्धान्तस्यामेव च पारणम्। उभयोरधिकत्वे तु परोपोष्या विचक्षणैः॥

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ७४-७६) अर्थात्, एक वह जिसमें केवल द्वादशी अधिक हो, दूसरी जिसमें दोनों अधिक हों तथा तीसरी जिसमें दोनों में कोई भी अधिक न हो। (अब इनमें से किसे ग्रहण किया जाय। जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य-चरण का आदेश है –) इनमें से वैष्णवों को प्रथम एकादशी अर्थात् द्वादशी मात्र का ग्रहण करना चाहिये, यदि परे द्वादशी की वृद्धि हो तो शुद्ध एकादशी भी छोड़ देनी चाहिये। विज्ञ-जनों को एकादशीरहित शुद्ध षष्ठीदण्डात्मक द्वादशी में उपवास कर अगले दिन अवशिष्ट

द्वादशी में ही पारण भी कर लेना चाहिये। दोनों की अधिकता में पर का उपवास करना चाहिये। आगे आचार्य-चरण ने अष्टविध एकादशी का वर्णन इस प्रकार किया है—उन्मीलिनी वञ्जुलिनी सुपुण्याः सा त्रिस्पृशाऽथो खलु पक्षवर्द्धिनी । जया तथाऽष्टौ विजया जयन्ती द्वादश्य एता इति पापनाशिनी॥

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ७७) अर्थात्, उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्द्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ द्वादशियाँ अत्यन्त पवित्र हैं। पद्मपुराणानुसार भी—

एकादशी तु संपूर्णा वर्द्धते पुनरेव सा। द्वादशी न च वर्द्धेत कथितोन्मीलिनीति सा॥ संपूर्णैकादशी यत्र द्वादशी च यथा भवेत्। त्रयोदश्यां मुहुर्त्तार्द्धं वञ्जुली सा हरिप्रिया॥ शुक्ले पक्षेऽथवा कृष्णे यदा भवति वञ्जुली। एकादशीदिने भुक्त्वा द्वादश्यां कारयेद्व्रतम्॥यहाँ स्पष्टतः कहा गया है कि शुक्ल अथवा कृष्ण पक्ष को यदि वञ्जुली हो तो एकादशी को भोजन कर द्वादशी का व्रत करें। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी यह वर्णन आया है। यथा—

एकादशी भवेत्पूर्णा परतो द्वादशी भवेत्। तदा ह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत्॥ पर्वाच्युतजयावृद्धौ ईश दुर्गान्तकक्षये। शुद्धाष्येकादशी त्याज्या द्वादश्यां समुपोषणम् ॥ इनमें चार तिथिजन्य और चार नक्षत्रजन्य हैं जो इस प्रकार हैं-

१. उन्मीलनी अरुणोदय काल में सम्पूर्ण एकादशी अगले दिन प्रातः द्वादशी में वृद्धि को प्राप्त हो परन्तु द्वादशी की वृद्धि किसी भी दशा में न हो। २. वञ्जुली:- एकादशी की वृद्धि न होकर द्वादशी की वृद्धि हो अर्थात् त्रयोदशी में मुहुर्तार्ध द्वादशी हो। (पारण द्वादशी मध्य होनी चाहिये)। उदाहरणार्थ आश्विन कृष्ण ११ सोमवार २०७० को एकादशी रहते हुए भी द्वादशी की वृद्धि परिलक्षित हो रही है अतः इन्दिरा एकादशी व्रत को सोमवार को त्यागकर मंगलवार को वञ्जुली महाद्वादशी के रुप में की जायेगी।ध्यान रहे कि पारण द्वादशी मध्य विहित होने के कारण इसे ०६:०४ तक कर लेनी चाहिए। ३. त्रिस्पर्शा:- अरुणोदय काल में एकादशी, सम्पूर्ण दिन-रात्रि में द्वादशी तथा पर दिन त्रयोदशी हो, किन्तु किसी भी दशामें दशमीयुक्त नहीं हो। ४. पक्षवर्द्धिनी:- अमावस्या अथवा पूर्णिमा की वृद्धि ।यथा वैशाख कृष्ण ११ रविवार २०७० को एकादशी वर्तमान होते हुये भी अमावस्या की वृद्धि होने के कारण वैशाख कृष्ण १२ सोमवार (पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी) को वरुथिनी एकादशी का उपवास विहित है। चार नक्षत्रयुक्त महाद्वादशी व्रत ये हैं यदि शुक्लपक्षीय द्वादशी १.पुनर्वसुयुता (जया) २. श्रवणयुता (विजया) ३. रोहिणीयुता (जयन्ती) तथा ४. पुष्ययुता (पापनाशिनी)। एकादशी (महाद्वादशी) व्रतोपवास का अन्त पारण के साथ होता है। कूर्मपुराणानुसार एकादशी को व्रत एवं द्वादशी को पारण होना चाहिए। किन्तु

त्रयोदशी को पारण नहीं होना चाहिए, क्योंकि वैसा करने से १२ एकादशियों के पुण्य नष्ट हो जाते हैं। उदाहरणार्थ चैत्र शु. ११ सं. २०७० (२२ अप्रिल २०१३ सोमवार) के दिन कामदा एकादशी है अतः परवर्ती दिन मङ्गलवार अर्थात् २३ अप्रिल २०१३ को पारण करना होगा। परन्तु ध्यान रहे कि पारण सूर्योदयोपरान्त ७:४९ बजे के पहले ही कर लेना होगा। परन्तु एक दिन पूर्व दशमीयुक्ता एकादशी हो और दूसरे दिन एकादशीयुक्ता द्वादशी तो उपवास तो द्वादशी को होता है, किन्तु यदि उपवास के बाद द्वादशी न हो तो त्रयोदशी के दिन पारण होगा।उदाहरणार्थ फाल्गुन कृष्ण ११ मंगलवार सं. २०७० (२५ फरवरी २०१४) के अरुणोदयकाल में दशमी है और सूर्योदय में एकादशी है अतः आचार्य-चरण के अनुसार यह एकादशी दशमीविद्धा अतः अकरणीय है। अतः विजया एकादशी का व्रतोपवास फाल्गुन कृष्ण १२ बुधवार सं. २०७० (२६ फरवरी २०१४) को होगा। परन्तु अगले दिन गुरुवार २७ फरवरी २०१४ को त्रयोदशी तिथि है अतः द्वादशी तिथि की अप्राप्ति में त्रयोदशी को ही पारण होगा।जैसा कि वायुपुराण में कहा है-

कलाप्येकादशी यत्र परतो द्वादशी न चेत्। पुण्यं क्रतुशतस्योक्तं त्रयोदश्यां तु पारणम्॥

एक और भी बात। पारण में आचार्य-चरण ने यह भी आदेश किया है कि - आषाढ़भाद्रोर्जसितेषु संगता मैत्रश्रवोऽन्त्यादिगताद्व्युपान्त्यैः। चेद्द्वादशी तत्र न पारणं बुधः पादैः प्रकुर्याद्व्रतवृंदहारिणी॥(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ७८)। अर्थात् यदि द्वादशी आषाढ़, भाद्र और कार्तिक मास शुक्लपक्ष में अनुराधा, श्रवण, रेवती के आदि चरण, द्वितीय चरण और तृतीय चरण के साथ संयुक्त हो तो उसमें विद्वान् पारण न करे, क्योंकि वह समस्त व्रतों का नाशक है। अतः व्रतोपवास हेतु एकादशी-निर्णय एवं व्रत-समाप्ति के लिए उसके पारण-काल का निर्णय एकादशी का परमावश्यक अङ्ग है। यहाँ पर यह भी ध्यान देना गौरव की बात है कि एकादशी-सम्बन्धी आचार्यचरणनिर्दिष्ट उपरोक्त व्यवस्था हेमाद्रि (चतुर्वर्ग चिन्तामणि के रचयिता, कालखंड १२६०-७०) तथा चंडेश्वर (गृहस्थरत्नाकर आदि के रचयिता, कालखंड १३००-१३७०) के समकालीन है जिसका बहुत से विज्ञजन व्यवहार कर रहे हैं परन्तु उनके लिए तो रौरव की बात है जो लोग इसे अपनी परम्परा द्वारा उपदिष्ट मान रहे हैं। धर्म की आड़ में सत्य को छिपाना भी महान अधर्म है जिससे वैष्णवों को बचना चाहिए॥ ॥https://jagadgururambhadracharya.org ३१/०८/२०२४

3.9 पूर्णिमा एवं अमावस्या में पर्व

एक चंद्रमा के दो पक्ष होते हैं शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्ष की 15 तिथियां में चंद्र में शुक्ला तत्व की वृद्धि तथा कृष्ण पक्ष की 15 तिथियां में कृष्ण तत्व की वृद्धि होती है पूर्णिमा शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि है इस दिन सूर्य तथा चंद्रमा 6 राशि के अंतर पर होते हैं अतः पृथ्वी से दिखाई

देने वाला चंद्रमा का भाग पूर्ण प्रकाशित होता है अतः एक चंद्रमा में केवल एक दिन चंद्रमा पूर्ण दिखाई देता है वह है पूर्णिमा तिथि पूर्णतया की तिथि मानी जाती है इस तिथि के स्वामी स्वयं चंद्र देव हैं इस तिथि को चंद्रमा का संपूर्ण होता है तथा सूर्य चंद्रमा से सप्तम राशि में होते हैं इस तिथि पर जल और वातावरण में विशेष ऊर्जा जाती है अतः पूर्णिमा के दिन नदियों तथा सरोवरों में स्नान का विशेष महत्व है ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चंद्र एक जलीय ग्रह है तथा धरती के जल से इसका संबंध है जब पूर्णिमा आती है तो समुद्र में ज्वार भाटा उत्पन्न होता है क्योंकि चंद्रमा समुद्र के जल को अपनी ओर आकर्षित करता है पूर्णिमा के दिन जल की गति तथा गुण में परिवर्तन आ जाते हैं।वैज्ञानिकों के अनुसार इस दिन चंद्रमा का प्रभाव और वेग काफी तेज होता है इन कर्म से शरीर के अंदर हमारे रक्त में न्यूरो सेल्स क्रियाशील हो जाते हैं ऐसी स्थिति में इंसान ज्यादा उत्तेजित या भावुक रहता है एक बार नहीं प्रत्येक पूर्णिमा को ऐसा होता रहता है अतः स्पष्ट है कि चंद्रमा की स्थिति का प्रभाव मानव जीवन पर है,| कृष्ण पक्ष की 15वीं तिथि को अमावस्या कहते हैं कृष्ण पक्ष में चंद्रमा के शुक्लत्व में न्यूनता तथा क्रिसित में वृद्धि होती है अमावस्या के दिन चंद्रमा पूर्ण कृष्णा हो जाता है जिसके कारण पृथ्वी पर रहने वाले लोग उसे दिखाई नहीं पाते उसे देख नहीं पाते इस दिन सूर्य तथा चंद्र राशि अंश कल अधिक से समान होते हैं यह घटना चंद्र मास में केवल एक ही दिन घटित होती है अतः धर्म शास्त्रों में इसे विशेष पर्व के रूप में वर्णित किया गया है इस पर्व में दान स्नान पूजा पाठ पिंडदान इत्यादि का विशेष महत्व है।

3.9.1 पूर्णिमा के पर्व पूर्णिमा के पर्व-

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा की इस परिभाषा के अनुसार अमावस्या से लेकर द्वितीय अमावस्या तक का समय एक चांद मास होता है यानी एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक की समय को एक चंद्र मास कहते हैं किंतु धर्मशास्त्र की दृष्टि से उत्तर भारत में पुर्णिमांत से पुर्णिमांत तक का एक चंद्रमा होता है 1 वर्ष में 12 चंद्रमास होते हैं जिसके अनुसार 12 पुर्णिमाएं 1 वर्ष में घटित होती हैं धर्म शास्त्रों एवं पुराणों के अनुसार जब तक दान इत्यादि स्नान जप-अप दान स्थान अधिक क्रिया की दृष्टि से तथा धार्मिक अनुष्ठान पद्धति की दृष्टि से प्रत्येक पूर्णिमा का अपना विशेष महत्व है हमारे धर्म ग्रंथो में प्रत्येक पूर्णिमा के अवसर पर विशेष व्रत एवं उत्सव करने का वर्णन प्राप्त होता है जो निम्नलिखित है।

चैत्र पूर्णिमा –

चैत्र पूर्णिमा वर्ष की प्रथम पूर्णिमा होती है एकमत से इस दिन हनुमान जयंती मनाई जाती है माना जाता है कि इस दिन भगवान श्री राम के परम भक्त हनुमान जी का जन्म हुआ था इस दिन व्रत करने से हनुमत जी की कृपा प्राप्त होती है।

बैसाख पूर्णिमा-

वैशाख मास की पूर्णिमा बुद्ध जयंती के रूप में मनाई जाती है इसे बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है भूत पूर्णिमा बहुत धर्म में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख त्यौहार है बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।इसी दिन इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और इस दिन का इस दिन का महानिर्वाण भी हुआ था। पूर्णिमा को एकमात्र से दक्षिण भारत में बट सावित्री पूर्णिमा के रूप में माना जाता है।इस दिन महिलाएं व्रत रखती हैं।बट वृक्ष की पूजा करती हैं। हिंदू धर्म में बरगद का वृक्ष पूजनीय माना जाता है।शास्त्रों के अनुसार इस वृक्ष में सभी देवी देवताओं का वास होता है| इस वृक्ष की पूजा करने से अखंड सौभाग्यता की प्राप्ति होती है।

आषाढ़ पूर्णिमा-

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं गुरु पूर्णिमा का पर्व भारत में बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया जाता है इस दिन गुरुओं का सम्मान किया जाता है और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है शास्त्रों में गुरु के विशेष महिमा बताई गई है गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है हमारे शास्त्रों में गुरु पूर्णिमा का पर्व जी ने भी इसका वर्णन किया है गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा का नाम से जाना जाता है।

भाद्रपद पूर्णिमा–

भाद्रपद की पूर्णिमा के दिन उमा महेश्वर व्रत मनाया जाता है शरद पूर्णिमा आसान मास की पूर्णिमा के दिन शरद पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है शरद पूर्णिमा को पूजा गरीब पूर्णिमा या रास पूर्णिमा भी कहते हैं।ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पूरे साल में केवल इसी दिन चंद्रमा 16 कलाओं से परिपूर्ण होता है हिंदू धर्म में इस दिन को उजागर व्रत मनाया गया है इसी को कौमुदी व्रत भी कहते हैं।इसी दिन श्री कृष्ण ने महारास रचाया था। मानता हैं; कि शिवरात्रि को चंद्रमा की किरण से अमृत की वर्षा होती है। इस दिन उत्तर भारत में खीर बनाकर रात भर चांदनी में रखकर दूसरे दिन से प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है।मानता है कि चंद्र की किरणों से निकलने वाले अमित को खीर ग्रहण करती है।शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु की पूजा की जाती है।शरद पूर्णिमा का श्रीमद् भागवत महापुराण में तथा स्कंद पुराण में विस्तृत वर्णन है।

कार्तिक पूर्णिमा –

कार्तिक की पूर्णिमा के दिन पुरस्कार के भाव में लिखा आयोजन होता है।महाभारत में पुष्कर राज के विषय में वर्णन आया है, कि तीनों लोकों में मृत्यु लोक महान है और मृत्यु लोक में देवताओं का सर्वाधिक प्रिय स्थान भी पुष्कर है। चारों धामों की यात्रा करके भी यदि कोई व्यक्ति पुष्कर सरोवर में स्नान नहीं करता है ;तो उसके द्वारा तीर्थ पर अर्जित किए गए सारे पूर्ण निष्फल हो जाते हैं।लोक प्रचलित मान्यताओं के अनुसार सारे तीरथ बार-बार पुश करते थे एक बार यही कारण है कि तीर्थ यात्री चारों धाम की यात्रा के बाद पुष्कर की यात्रा जरूर करते हैं तीर्थराज पुरस्कार को पृथ्वी का तीसरा नेत्र भी माना जाता है पुष्कर को तीर्थ का सम्राट और तीर्थ गुरु नाम से भी जाना जाता है।कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहां स्नान दान इत्यादि करने का महत्व सर्वाधिक है।

माघ पूर्णिमा-

माघ पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान और दान करने का विशेष महत्व है धर्म शास्त्रों के अनुसार माघ पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु स्वयं गंगा नदी में स्नान करते हैं इसलिए माघ पूर्णिमा के दिन जो भी गंगा स्नान करता है उसके सभी तरह के पूर्ण प्राप्त होते हैं पद्म पुराण के अनुसार भगवान विष्णु जब तक और स्नान से बाकी महीना में उत्पन्न प्रसन्न नहीं होते हैं उतने की जितना मार्ग स्नान से होते हैं।

फाल्गुन मास की पूर्णिमा-

तिथि जो की होलिका दहन के होलिका दहन पर्व के रूप में मनाई जाती है।होलिका दहन बदला रहित तिथि में होता है पंचांग के अनुसार होली के दिन से नए संबंध की शुरुआत होती है।चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन धरती पर प्रथम मानव मनु का जन्म हुआ था तथा इसी दिन कामदेव का पुनर्जन्म हुआ था पौराणिक कथाओं के अनुसार नरसिंह रूप में भगवान विष्णु से दिन प्रकट हुए थे भागवत अवतारों का वर्णन हमने पूर्व में विस्तृत रूप से स्वास्थ्य प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है तो इस प्रकार साल में आने वाली 12 पूर्णिमा का महत्व है प्रत्येक पूर्णिमा में दान स्थान का विशेष महत्व है।और पूर्णिमा तिथि के प्रारंभ से लेकर के अंत तक किए गए सभी कम एक्शन फल प्राप्त करते हैं।

अमावस्या के स्वामी–

चंद्रमा की 16वीं कला को अम्मा कहा गया है जिसमें चंद्रमा की 16 कलाओं की शक्ति शामिल है अमावस्या के दिन चंद्र नहीं दिखाई देता था जिसका अच्छा और उदय नहीं होता है उसे अमावस्या कहा गया है अमावस्या सूर्य और चंद्र के मिलन का कल है इस दिन दोनों ही एक ही राशि

में अंश कल विकलाअधि पर रहते हैं वैसे तो प्रत्येक अमावस्या महत्वपूर्ण है परंतु पर्व की दृष्टि से वह धर्म शास्त्रीय दृष्टि से सोमवती अमावस्या बहुमत्य अमावस्या मौनी अमावस्या शनि अमावस्या हरियाली अमावस्या दिवाली अमावस्या सर्वप्रथम अमावस्या आदि अमावस्या का विशेष महत्व है आईए जानते हैं की विविध अमावस्या में किन-किन कार्यों को करने का स्वास्थ्य प्रावधान है वह धर्म शास्त्रीय मत है।

सोमवती अमावस्या-

जैसे कि नाम से विद्युत हो रहा है सॉन्ग सोम यानि सोमवार को पढ़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहते हैं इस दिन व्रत रखने से चंद्र से संबंधित दोष दूर होते हैं तथा इससे सभी कामनाएं पूर्ण होती है।महिलाएं अपने पति की दीर्घायु के लिए सोमवती अमावस्या का व्रत एवं अनुष्ठान करती है|

मौनी अमावस्या-

मौनी अमावस्या माघ मास की अमावस्या है। इसे अध्यात्म रूप से महत्वपूर्ण दिन माना जाता है हमारे शास्त्रों एवं पुराणों के अनुसार जब सागर मंथन से भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए तब उसे समय देवताओं अक्षरों से अमृत कलश को लेकर प्लेस हो गया देवता तथा दानव एक दूसरे से अमृत कलश चीन के कारण अमृत की कुछ भी ने बूंदें छलक कर विधिक भारत के प्रति में गिरी जैसे हरिद्वार नासिक उज्जैन आदि यही कारण है कि यहां की नदियों में स्नान करने पर अमृत स्नान का पूर्ण प्राप्त होता है यह तिथि अगर सोमवार के दिन पड़े तो इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है यदि सोमवार के साथ ही महाकुंभ का भी सहयोग हो तो इसका महत्व अनंत गुना हो जाता है सांसों में कहा गया है कि सतयुग में जो पुणे तब से मिलता है द्वापर में हरी भक्ति से त्रेता में ज्ञान से कलयुग में दान से लेकिन माघ मास की अमावस्या में संगम स्नान हर युग में अनंत पूर्ण फलदाई होता है तथा स्थितिको पवित्र नदियों में स्नान करने के पश्चात समर्थ के अनुसार अन्य वस्त्राधिका दान इत्यादि देना चाहिए मौनी अमावस्या का व्रत पालन करने से अनेक प्रकार के अशुद्ध का नाश होता है|

शनि अमावस्या-

शनिवार को आने वाली अमावस्या को शनि अमावस्या कहते हैं इस दिन व्रत रखने से ग्रह पीड़ा व सैन्य सनी धन्य पीड़ा का नाश होता है।

महालय अमावस्या-

अमावस्या को पितृपक्ष की सर्वप्रथम अमावस्या भी कहते हैं इस दिन अनुदान और तर्पण आदि करने से हमारे पूर्वज प्रसन्न होते हैं सर्वोपित्र अमावस्या या महालय अमावस्या के दिन उन पितरों का साथ कम किया जाता है जिनके निधन की किसी ज्ञात नहीं होती है इस तिथि को अपने पितरों को तृप्त करके प्रसन्नतापूर्वक गीता किया जाता है किसी कारणवश जो लोग पितृपक्ष में 15 दिन यानी पाक्षिक साथ कर्म और तर्पण नहीं कर पाते हैं वह सर्वप्रथम आवश्यक में तर्पण एवं साथ कर्म करते हैं तो निश्चित ही पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

हरियाली अमावस्या-

श्रावण मास की अमावस्या हरियाली अमावस्या कहलाती है इस दिन वृक्षारोपण करने का महत्व है इस दिन पितरों की शांति हेतु भी अनुष्ठान किए जाते हैं भारतीय संस्कृत में प्राचीन काल से पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है पर्यावरण को संरक्षित करने की दृष्टि से ही पेड़ पौधों में ईश्वरीय रूप को स्थान देकर उनकी पूजा करने का विधान हमारी सनातनी परंपरा में बताया गया है जल में जैसे वरुण देवता की परिकल्पना कर नदियों में सरोवरों को स्वच्छ और पवित्र रखने की बात कही गई है जिसकी विस्तृत चर्चा हमने पूर्व की इकाइयों में की है।

दीपावली अमावस्या-

जैसे कि आप लोग जानते हैं कि दीपोत्सव का त्योहार दीपावली का त्योहार हमारे देश में एवं समूचे संसार में जहां-जहां भारतीय हैं या भारतीय संस्कृति से जो परिचित हैं वे लोग बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाते हैं इस अमावस्या को दीपोत्सव रूप में भी मनाया जाता है इस दिन की रात सबसे घनी होती है पुराणों के अनुसार इस दिन माता लक्ष्मी ने विष्णु को पति के रूप में स्वीकार किया था अतः इस दिन लक्ष्मी पूजा का विशेष महत्व है दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम अपने 14 वर्ष के वनवास को काटकर के पुनः अयोध्या लौटे थे और अयोध्या वासियों ने अपने प्रिय राजा के आगमन से अत्यंत प्रसन्न होकर के भगवान श्री राम की स्वागत हेतु अयोध्या में दीप जला करके अंधकार महिला रात्रि को प्रकाशित किया था कार्तिक मास की सगन काली अमावस्या की वह रात्रि देवों से वह प्रकाश से दीपों के प्रकाश से जगमगा उठी थी तब से आज तक प्रत्येक वर्ष यह पर्व प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है समूचे भारत वर्ष में और दीपावली में पूजा पाठ का विशेष महत्व है पुराणों में शास्त्रों में लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए यह अत्यंत दुर्लभ दिन है।कुछ ग्रहणी अमावस्या की अमावस्या

को धर्म ग्रंथो में कुशल पत्नी अमावस्या के नाम से जाना जाता है इस दिन पूरे साल में किए जाने वाली पूजा पाठ और अन्य धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त श्राद्ध में उपयोग आने वाली उसको एकत्रित किया जाता है कुछ एक विशेष प्रकार की घास होती है हिंदू धर्म में अनेक धार्मिक कार्यों में उत्साह का प्रयोग अत्यंत आवश्यक होता है।

3.10 मेषादि संक्रांतियों का पुण्यकाल व पर्वोत्सव निर्णय

तिथिनिर्णय।चैत्रशुक्लप्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ होता है।उसमें उदयकाल व्यापिनी प्रतिपदा ग्राह्य है।क्यूंकि हेमाद्रि में ब्रह्मपुरण का यह वचन लिखा है कि – सृष्टि की आदि में चैत्र सुदी प्रतिपदा के दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने सम्पूर्ण संसार की रचना करी थी।यदि दोनों दिन सूर्योदय व्यापिनी हो अथवा दोनों ही दिन उदयव्यापिनी न हो तो पहली ही ग्रहण करनी चाहिए।

सूर्य संक्रांति पर्वों का निर्णय एवं महत्व-

संक्रांति में पुण्य काल हमारे धर्म शास्त्रीय ग में एवं ज्योतिष शास्त्र के ग में संक्रांति के पुण्य काल के महत्व को विशेष रूप से एवं विस्तार पूर्वक बताया गया है कि इस काल में जपड़न पूजा स्नान आदि फल आदि का फल अनंत गुना हो जाता है जिस समय सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तन होता है वह स्पष्ट कल से सामान्य दोनों तरफ 16 16 घड़ियां पुण्य कल अर्थात पवित्र मानी जाती है स्पष्ट संक्रांति काल से 16 घाटी पहले से प्रारंभ होकर 16 घाटी बात तक का समय पुण्य काल माना जाता है ऐसा शास्त्रीय मानता है अर्ध रात्रि के पहले ही तथा बाद में संक्रांति हो तो पहले और पिछले दिन के पर भाग और पूर्व भाग में संक्रांति का पुण्य काल माना जाता है अर्थात यदि अर्धरात्रि से पहले संक्रांति हो तो पहले दिन के पिछले भाग में पुण्य कल मनाया जाता है यदि अर्धरात्रि के बाद संक्रांति हो तो पिछले दिन के पूर्व भाग में पूर्ण कल मनाया जाता है शास्त्र में आता है कि पूर्ण निश्चित है यदि संक्रमण हास्य दिनांक दुय्यम पुण्य मत हो दया स्टार्ट पूर्वम परस्ताद यदि सौम्या यह यानी देने पूर्व रुपए रितु पुनियाअर्थात यदि स्पष्ट अर्धरात्रि में संक्रांति हो तो दोनों दोनों में पुण्य कल होता है सूर्योदय से पहले तथा बाद में कर्क और मकर की संक्रांति हो तो कम से पहले दिन में और पिछले दिन में पुण्य कल जानना चाहिए अर्थात सूर्योदय से पहले कर्क संक्रांति हो तो पहले दिन में पुणे कल और सूर्यास्त के बाद मकर संक्रांति हो तो पिछले दिन में पुण्य कल मनाया जाता है आधे उदय हुए और आधे अस्त हुए सूर्य के मंडल से पूर्व तथा बाद में कम से तीन-तीन घड़ियां संध्या काल कहा है अर्थात जिस समय सूर्य का बम आधा उदित होता है उसे कल से तीन घाटी पूर्व तथा आधे उदित हुए सूर्य के

बाद की तीन घड़ी प्रातः संध्या काल का है इसी प्रकार आदि अष्टमी सूर्य के बाद की तीन घड़ी सहायक संध्या कही है यदि प्रातः संध्या में दक्षिणायन की प्रवृत्ति हो तो सूर्योदय से प्रसाद पुण्य कल होता है तथा साइन और संध्या में उत्तरायण की प्रवृत्ति हो तो सूर्य के अस्त्र से पहले पुण्य कल जानना चाहिए।

मकर संक्रांति पर्व –

सूर्य की 12 रशियन या 12 सक्रांतियों में मकर संक्रांति का विशेष महत्व है संपूर्ण भारतवर्ष में सनातन धर्म और लंबी इस पर्व को श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाते हैं इस दिन भगवान सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं तथा उत्तर की ओर चलना प्रारंभ करते हैं जैसे कि पूर्व में चर्चा हुई हमारे यहां दो आएं हैं उत्तरायण एवं दक्षिणायन तो आज के ही दिन से यानी मकर के सूर्य यानी मकर संक्रांति के पर्व से ही भगवान सूर्य जो है उत्तर की ओर चलना प्रारंभ करते हैं आधुनिक ज्ञान विज्ञान भी वर्ष के महत्व को स्वीकार करता है।कि मकर संक्रांति की समय नदियों में वाष्पन क्रिया होती है।इससे समस्त प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।इसलिए इस दिन नदियों में स्नान करने का विशेष महत्व है हमारे पौराणिक एवं इतिहास ग्रंथ महाभारत आदि में वर्णन आता है कि पितामह भीष्म ने सूर्य के उत्तरायण होने पर ही अपनी शिक्षा से अपने शरीर का परित्याग किया था और यही कारण है कि उत्तरायण में देहात त्यागने वाली की आत्माएं कुछ कल के लिए देवलोक में चली जाती है।तथा पुनर्जन्म के चक्र से उन्हें छुटकारा मिल जाता है ऐसी शास्त्र मान्यताएं उत्तरायण पर्व को धर्म शास्त्रीय दृष्टि से अगर देखे तो इस दिन दान करने से स्नान करने से जप करने से तप करने से अनंत में हल्की प्राप्त होती हैऔर इस दिन स्नान का तो सर्वाधिक महत्व है शास्त्रों में कहा गया है कि जो इस दिन स्नान नहीं करता है वह सदैव वर्ष भर रोगी रहता है और जो उसे दिन स्नान करता है उसके शरीर के समस्त तप दूर होते हैं।अधिक मास एवं छह मास का विचार एवं निर्णय भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस पर्व में 12 मार्च से अधिक 13 मार्च आता है वह मास अधिक मास कहलाता है।ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार मांस चार प्रकार के होते हैं सौरमास चंद्रमास सावन मास तथा नक्षत्र मास वर्ष में 13 में मास की उत्पत्ति कैसे होती है इसके लिए ज्योतिषीय दृष्टि से मास को समझना परम आवश्यक है।

3.11 भगवान् अवतार पर्व निर्णय

चैत्र शक्ल तृतीया को मत्स्य जयन्ती होती है।प्रसंग वश इसी प्रकार दशावतार जयन्तियों का निर्णय किया जाता है।पुराण समुच्य में कहा गया है कि – चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन मत्स्य, वैशाख मास की आमावस्या के दिन कूर्म श्रावण सुदी छठ के दिन वराह वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन नरसिंह

जी भाद्रशुक्ल द्वादशी के दिन वामन वैशाख सुदी तृतीया के दिन परशुराम जी , चैत्रशुक्ल नवमी को रामचन्द्र जी , भाद्रपद वदी कि अष्टमी को श्रीकृष्ण , आश्विन शुक्ल दशमी को बुद्ध और श्रावण शुक्ल छटी को कल्कि इस प्रकार क्रम वार अवतार हुए।उपरोक्त वचन हेमाद्री और निर्णय सिन्धु के आधार पर हैं।श्रावण के तृतीया के दिन नारायण ने कच्छप रूप धारण किया था।भादौ शुक्ल पञ्चमी को वराह की जयंती होती है।वैशाख की चतुर्दशी को नरसिंह भगवान् का प्रादुर्भाव हुआ था।भादौ शुक्ल द्वादशी को भगवान् वामन ,वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन परशुरामजी और चैत्र नवमी को कौशल्या के गर्भ से श्री रामचन्द्र भगवान् का जन्म हुआ था।श्रावण / भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को श्री कृष्ण , और पौष शुक्ल तृतीया को बौध भगवान् का प्राकट्य हुआ था , तथा माघ शुक्ल तृतीया को भगवान् कल्कि का।अतएव इन्हीं दिनों में उक्त देवताओं की पूजा प्रतिष्ठा का विधान शास्त्रों में आदेशित है।चैत्र शुक्ल अष्टमी के दिन भवानी पार्वती की उत्पत्ति हुई थी।वह अष्टमी नवमी युक्त ग्राह्य है।क्यूंकि व्रह्म वैवर्त पुराण में लिखा है कि – अष्टमी नवमी युक्त और नवमी अष्टमी युक्त लेनी चाहिए।ऐसा निर्णय सिन्धु का वचन है।इसी प्रकार चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी होती है।

अक्षय तृतीया –वैशाखशुक्ल तृतीया अक्षय तृतीया कहलाती है।वह पूर्वाह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए।यदि दोनों दिन पूर्वाह्न व्यापिनी हो तो अगली ग्राह्य है।यह निर्णय नारद पुराण में कहा है कि – वैशाख शुक्ल पक्ष में रोहिणी नक्षत्र तृतीया वुध अथवा सोमवासर युक्त अत्यंत दुर्लभ है।

वृष की संक्रान्ति पहली सोलह घड़ी पुण्यकाल है।यदि रात्रि में संक्रान्ति हो तो उसका पुण्यकाल प्रथम ही कह चुके हैं।मिथुन संक्रान्ति में पिछली सोलह घड़ी पुण्यकाल मानी जाती है।मिथुन की संक्रान्ति में पिछली सोलह घड़ी पुण्यकाल मानी जाती है।यदि रात्री में संक्रान्ति अर्कि हो तो उसका पुण्यकाल अगले दिन होता है।आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन पुरी रथ यत्रा का उत्सव मनाया जाता है। ऐसा स्कन्ध पुराण का वचन है।इसी क्रम में व्रह्म पुराण का वचन है कि – आषाढ़ शूक्ल द्वादशी के दिन पापों को हरनेवाले विष्णु भगवान् शेष शय्या के ऊपर क्षीर सागर में सदा शयन करते हैं।तथा कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागते हैं।कर्क की संक्रान्ती में प्रथम तीस घड़ी पुण्यकाल मानी जाती है।यदि सूर्योदय के अंतर संक्रान्ति हो तो पीची ही पुण्यकाल माना जाता है।और रात्री में यदि अर्द्ध रात्री से प्रथम हो तो पहले दिन यदि अर्द्ध रात्रि सी पीछे हो तो अगले दिन पांच घड़ियाँ पुण्यकाल मनाई जाती है।श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन मधुस्रवा तीज होती है यह पर्व गुर्जर प्रदेश (गुजरात) में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।

3.12 अधिक मास एवं छह मास का विचार एवं निर्णय

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस पर्व में 12 माह से अधिक 13 माह आता है।वह मास अधिक मास कहलाता है।ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार मास चार प्रकार के होते हैं| सौरमास ,चंद्रमास, सावन मास, तथा नक्षत्र मास वर्ष में 13 वें मास की उत्पत्ति कैसे होती है ; इसके लिए ज्योतिषीय दृष्टि से मास को समझना परम आवश्यक है| अधिक मास अधिक मास एवं छाया मास विचार ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस वर्ष में 12 मास से अधिक 13वां मास आता है। वह अधिक मास कहलाता है।ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार मांस चार प्रकार के होते हैं जैसे सौर मास चंद्र मास सावन मास तथा नक्षत्र मास वर्ष में 13 वें मास की उत्पत्ति कैसे होती है; इसके लिए ज्योतिष की दृष्टि से मास को समझना आवश्यक है।

सौर मास-

सूर्य से संबंधित मास सूर्य अपनी कक्षा में भ्रमण करते हुए जितने समय में एक अंश का भोग करता है वह सौर दिन कहलाता है।इस प्रकार 30 अंश अर्थात एक राशि का भोग काल सौर मास तथा 12 राशि अथवा 360 अंश का भोग कल एक सौर वर्ष कहलाता है अर्थात एक सौर मास में 30 और दिन तथा सौर वर्ष में 360 सौर दिन होते हैं।

चान्द्र मास –

चान्द्र मास चंद्रमा से संबंधित मांस चंद्रमास कहलाता है।अमान्त के समय सूर्य चंद्र तथा पृथ्वी एक कद्पोत वृत्त में होते हैं। चंद्रमा की गति अधिक होने के कारण चंद्र अपनी कक्षा में भ्रमण करता हुआ सूर्य से आगे निकल जाता है।दोनों सूर्य चंद्र का अंतर जब 12 अंश का होता है तो एक तिथि पूर्ण होती है 12 से 24 अंश के अंतर पर दूसरी तिथि तथा 24 से 36 अंश के अंतर पर तीसरी तिथि इसी क्रम में 360 अंश का अंतर होने पर तीसरी तिथि पूरी होती है इस तरह चंद्रमास में 30 तिथियां तथा एक चांद वर्ष में 360 चंद्र दिन होते हैं।

सावन मास –

सूर्योदय से सूर्योदय तक का समय सावन दिन कहलाता है तथा एक सौ वर्ष में 365 दिन 15 घाटी 30 फल 22 विपाल होते हैं अर्थात एक सौ वर्ष में 365 बार सूर्य का उदय होता है।

अधिक मास-

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार संक्रांति माससस पोटाशिया अर्थात जिस मास में सूर्य की संक्रांति नहीं होती है| वह मांस अधिक मास कहलाता है| एक अधिक मास से लेकर द्वितीय अमावस्या पर्यंत एक चंद्र मास होता है।दो अमावस्याओं के मध्य सूर्य की संक्रांति अर्थात सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश होना आवश्यक है।जिस चंद्र मास में सूर्य की संक्रांति नहीं होती है।वह मास अधिक कहलाता है।यानी अधिक मास कहलाता है।अर्थात प्रथम अमावस्या से पूर्ण सूर्य संक्रांति तथा द्वितीय अमावस्या के पश्चात संक्रांति इस प्रकार दो अमावस्या के मध्य संक्रांति ना होने के कारण अधिक मास का लक्षण घटित होता है।अधिक मास की उत्पत्ति सौरमास तथा चान्द्रमास का अंतर अधिक मास होता है इसका ज्ञान सावन मास के माध्यम से किया जा सकता है| एक चंद्रमा में 29 सावन दिन अर्थात 31 घाटी 50 पाल तथा एक सौर मास में 30 सावन दिन 26 घाटी 17 पाल 31 सफल होते हैं शास्त्रों में यह अधिक मास , मल मास ,अहनस्पति पुरुषोत्तम मास आदि कई नाम से यह विख्यात है।

क्षयमास –

आचार्य भास्कराचार्य के अनुसार जिस मास में सूर्य की दो सक्रांतियां होती है ।वह चंद्रमा मास क्षय मास कहलाता है ।ज्योतिष के इस नियम के अनुसार चंद्रमा में दो अमावस्या के मध्य में सूर्य की संक्रांति हो वही मास चैत्र वैशाख आदि संज्ञा को प्राप्त करता है। यदि दो अमावस्या के मध्य में सूर्य दो बार राशि परिवर्तन करें अर्थात प्रथम अमावस्या से प्रसाद सूर्य का राशि परिवर्तन तथा द्वितीय अमावस्या से पूर्ण सूर्य का द्वितीय राशि परिवर्तन इस प्रकार एक चंद्रमा में सूर्य के दो बार राशि परिवर्तन के कारण इस मास को क्षय मास कहते हैं।आचार्य भास्कर के अनुसार जिस वर्ष में क्षयमास होता है; उसे वर्ष दो अधिकमास भी होते हैं।उनके अनुसार प्रत्येक 19 वर्ष बाद या 141 वर्ष के बाद यह छाई मास्क संभावित होता है।

क्षय मास में कर्तव्य कर्म विचार-

धर्मशास्त्र के अनुसार अधिक मास भी एक विशेष पर्व है।अधिक मास प्राचीन काल से निंदा की गयी है।ऐतरेय ब्राह्मण में आया है; देवों ने सोम की लता 13वें मास में खरीदी , जो व्यक्ति से बेचता है; वह पतितहो जाता। है अतः 13 वाँ मास फलदायक नहीं होता है।ऐसी शास्त्रीय मान्यताएं है।| इसी प्रकार 13वां संसर्प एवं अहंसा पति कहा गया है ऋग्वेद में हम का तात्पर्य पाप से है ;यह अतिरिक्त मास है अतः अधिमास्य अधिक मास नाम पड़ गया है।इसे मलमास इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह काल का माल है अथर्ववेद में मालिन मास भी कहा गया है।यह मास धार्मिक कृतियों के

लिए निम्न माना जाता है कुछ पुराने में अधिवास को पुरुषोत्तम मास कहा गया है तथा पुरुषोत्तम विष्णु का पर्यायवाची शब्द है पौराणिक कथाओं के अनुसार अधिक मास का कोई स्वामी नहीं था तो इस विषय को लेकर वह विष्णु लोग पहुंचे और भगवान श्री हरि से अनुरोध किया कि सभी मानस अपने स्वामियों के आधिपत्य में हैं। और उनसे प्राप्त अधिकारों के कारण वे स्वतंत्र एवं निर्भय रहते हैं एक ही में भाग्य हैं हूं जिसका कोई स्वामी नहीं है अतः हे प्रभु मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिलाइए अधिक मास की प्रार्थना को सुनकर श्री हरि ने कहा है वनवास मेरे अंदर जितने भी सद्गुण हैं वह तुम्हें प्रदान कर रहा हूं और मेरा विख्यात नाम पुरुषोत्तम है मैं तुम्हें दे रहा हूं और तुम्हारा मैं ही स्वामी हूं तभी से मलमास का नाम पुरुषोत्तम मास कहा गया है भगवान श्री हरि की कृपा से इस मास में भगवान का कीर्तन भजन दान पुण्य करने वाले मृत्यु के प्रसाद श्री हरि के धाम को प्राप्त होते हैं इसका वर्णन अग्नि पुराण में भी आता है धर्म शास्त्रों में अधिक मास की भांतिछह मास को भी एक विशेष पर्व माना गया है जो की एक चंद्रमास पर्यंत चलता है मलमास में भगवान का भजन व्रत दान धर्म श्रेष्ठ माना गया है मलमास में दान की विशेष महिमा है यह माना जाता है कि समाज में दिए गए दान के भगता को फल दाता भगवान विष्णु स्वयं है मलमास के दौरान गंगा जी बहुत नदियों में स्नान और तीर्थन भी पुणे दी माना जाता है|

3.13 बोधात्मक प्रश्न

1.अक्षय तृतीया कब होती है।

क. वैशाख शुक्ल तृतीया ख. चैत्र शुक्ल नवमी ग. ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया घ. कोई नहीं

2. जगन्नाथ रथ यात्रा का उत्सव कब मनाया जाता है।

क. आषाढ़ शुक्ल द्वितीया ख. वैशाख कृष्ण तृतीया ग. श्रावण शुक्ल पञ्चमी घ. कोई नहीं।

3.दीपावली पर्व होता है।

क. कार्तिक अमावस्या ख. पौष अमावस्या ग. आश्विन अमावस्या घ. मार्गशीष अमावस्या

4. सोमवती अमावस्या होती है।

क. सोमवार को ख. मंगल वार को ग. शनिवार को घ. कोई नहीं

3.14 सारांश

हमारे धर्मशास्त्रीय व्यवस्था में किसी भी पर्व या संस्कारों का निर्णय करने के लिए मुहूर्त शास्त्र का परम योगदान होता है , साथ ही धर्म सूत्रों के आचार एवं नियमों की प्राधान्यतायें भी होती है।आज के इतिहासकारों का कहना है कि भारतीय ज्योतिषीय को आज तक अपने अस्तित्व को बनाये रखने में मुहूर्तों , की मांग ने ज्योतिषीयों को ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन अध्यापन चलता रहा तथा इस

शास्त्र से समन्धित ग्रन्थों का निरंतर प्रकाशन होता रहा है।मुहूर्त शास्त्र का उदेश्य कार्य की निर्विघ्नता पूर्वक सिद्धि के लिए शुद्धतम काल का निर्धारण करना है।जिसके लिए एक विस्तृत एवं विभिन्न प्रकार के परीक्षणों से गुजरना पड़ता है।मुहूर्त के निर्धारण में काल की विभिन्न परिभाषाएं , ग्रहों के उदयास्त एवं बेध , वार, नक्षत्र , योग, एवं करण का अवलोकन करना होता है।नक्षत्रों एवं राशियों की विभिन्न संज्ञायें हैं; यथा – स्थिर , चर , उग्र, क्रूर आदि।कार्य की प्रकृति के अनुसार ही इनका चयन किया जाता है।वार, तिथि और नक्षत्रों के संयोग से विविध प्रकार के शुभ एवं अशुभ योग उत्पन्न होते हैं।यथा – सिद्धि योग , रवि योग , यमघंट योग , विष योग , भद्रा , आदि।सभी अशुभ योगों के एवं दोषों से रहित तथा कार्य के लिए विहित पंचांगों (तिथि, वार,नक्षत्र ,योग , करण) की उपलब्धि होने पर अभीष्ट कार्य सम्बन्धि समय स्थिर किया जाता है।यही मुहूर्त निर्धारण कहलाता है।

3.15 वोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

1.क 2. क 3. क 4. क

3.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची

पद्म पुराण
भारतीय व्रत एवं त्यौहार (शारदा प्रकाशन नई-दिल्ली) डॉ.राजेश्वरी शाण्डिल्य
व्रत-पर्व निर्णय
भारतीय व्रत एवं त्यौहार (शारदा प्रकाशन नई- दिल्ली)
निर्णय सिन्धु
धर्म सिन्धु
याज्ञवल्क्य स्मृति
भविष्यपुराण
कर्मकाण्ड समुच्चय
संस्कृत विकिपीडिया(https://astrobix.com/hindumarg/259-https://hi.wikipedia.org/wiki/)
मुहूर्त मार्तण्ड
मुहूर्त चिन्तामणि
मुहूर्त कल्पद्रुम
स्कन्ध पुराण

वामन पुराण
धर्म सिन्धु
निर्णय सिन्धु
याज्ञवल्क्य स्मृति
भगवत पुराण
https://jagadgururambhadracharya.org ३१/०८/२०२४

3.17 पारिभाषिक शव्दावली –

पर्व-उत्सव या पर्व या त्योहार किसी भी समुदाय द्वारा मनाया जाने वाला एक असाधारण घटना है और उस समुदाय और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलुओं पर केन्द्रित है।

अपसंस्कृति –ऐसा आचार या पद्वति जो उच्च या श्रेष्ठ मूल्यों के विरुद्ध हो।

धर्म मूल – धारण करना या बनाये रखना।

आचार- आचरण (व्यवहार)

सांस्कृतिक – संस्कृति(परम्पराओं) से समन्धित।

विविधता – अलग – अलग विशेषता।

पूर्णिमा –चान्द्रमास वह तिथि जो सूर्य और चन्द्र की छ: राशि के अंतर पर होती है और पूर्ण प्रकाश युक्त होती है , अर्थात चन्द्र के शुक्लत्व की पूर्णता।

अमावस्या – चान्द्र मास की वह तिथि जव सूर्य और चन्द्र एक ही राशि के कला, अंश पर होते हैं , और प्रकाश का आभाव रहता है अर्थात कृष्णता का प्रभाव।

3.18 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पर्व निर्णय में तिथियों की भूमिका पर प्रकश डालिए।
2. सूर्य संक्रांति क्या है विस्तार पूर्वक परिचय दीजिए।
3. मकर सक्रंती पर्व के महत्व पर विस्तार से लिखें।
4. वैष्णव मत में एकादशी का निर्णय और महत्व लिखें।

खण्ड -3
प्रमुख व्रत

इकाई -1 एकादशी व्रत

इकाई की संरचना –

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 एकादशी व्रत का सामान्य परिचय

1.4 मासों के अनुसार व्रत परिचय

1.5 सारांश

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई व्रत परिचय नामक पुस्तक के तृतीय खण्ड के प्रथम इकाई एकादशी व्रत से सम्बन्धित है| इस इकाई में आप एकादशी व्रत के महत्व सरल रूप में समझ सकेंगे, संसार में जीव की स्वाभाविक प्रवृत्ति भोगों की ओर रहती है, परंतु भगवत्संनिधि के लिये भोगों से वैराग्य होना ही चाहिये। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण के ये वचन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यज्ञ, दान और तपरूप कर्म किसी भी स्थिति में त्याग ने योग्य नहीं हैं, अपितु कर्तव्य रूप में इन्हें अवश्य करना चाहिये। शास्त्रों में 'तप' के अन्तर्गत व्रतों की महिमा बतायी गयी है। सामान्यतः व्रतों में सर्वोपरि एकादशी व्रत कहा गया है। जैसे नदियों में गंगा, प्रकाशक तत्त्वों में सूर्य, देवताओं में भगवान् विष्णु की प्रधानता है, वैसे ही व्रतों में एकादशी व्रत की प्रधानता है। एकादशी व्रत के करने से सभी रोग-दोष शान्त होकर लम्बी आयु, सुख-शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य 'भगवत्प्राप्ति' भी होती है।संसारके सब कार्योंको करते हुए भी कम-से- कम पक्षमें एक बार हम अपने सम्पूर्ण भोगोंसे विरत होकर 'स्व' में स्थित हो सकें और उन क्षणों में हम अपनी सात्त्विक वृत्तियों से भगवच्चिन्तन में संलग्न हो जायें, इसीके लिये एकादशी व्रत का विधान है।

1.2उद्देश्य

- एकादशी के महत्व को समझने में सहायक हो सकेंगे|
- स्मार्तत एवं वैष्णव सम्प्रदायों के अनुसार एकादशी व्रत के समझ सकेंगे|
- एकादशी कितनी होती है, इन्हें जान पायेंगे|
- प्रत्येक एकादशी के विषय में जानने में सफल हो सकेंगे|

1.3 एकादशी व्रत का सामान्य परिचय

हिंदू धर्म में हर एक पर्व पर व्रत का विशेष महत्व होता है और उसे रखने के अलग-अलग नियम होते है. व्रत के नियमों का अगर पालन सही तरीके से न किया जाए तो व्रती को व्रत का शुभ फल प्राप्त नहीं होता है|वैदिक काल की अपेक्षा पौराणिक युग में अधिक व्रत देखने में आते हैं। उस काल में व्रत के प्रकार अनेक हो जाते हैं। व्रत के समय व्यवहार में लाए जानेवाले नियमों की कठोरता भी कम हो जाती है तथा नियमों में अनेक प्रकार के विकल्प भी देखने में आते हैं। उदाहरण रूप में जहाँ एकादशी के दिन उपवास करने का विधान है, वहीं विकल्प में लघु फलाहार और वह भी संभव न हो तो फिर एक बार ओदनरहित अन्नाहार करने तक का विधान शास्त्रसम्मत देखा जाता है। इसी प्रकार किसी भी व्रत के आचरण के लिए तदर्थ विहित समय अपेक्षित है। "वसंते ब्राह्मणोऽग्नी नादधीत"अर्थात् वसंत ऋतु में ब्राह्मण अग्निपरिग्रह व्रत का प्रारंभ करे, इस श्रुति केअनुसार जिस प्रकार

वसंत ऋतु में अग्निपरिग्रह व्रत के प्रारंभ करने का विधान है वैसे ही चांद्रायण आदि व्रतों के आचरण के निमित्त वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण तक का विधान है। इस पौराणिक युग में तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों की बहुलता है। कुछ व्रत अधिक समय में, कुछ अल्प समय में पूर्ण होते हैं।किसी भी व्रत के अनुष्ठान के लिए देश और स्थान की शुद्धि अपेक्षित है। उत्तम स्थान में किया हुआ अनुष्ठान शीघ्र तथा अच्छे फल को देनेवाला होता है। इसलिए किसी भी अनुष्ठान के प्रारंभ में संकल्प करते हुए सर्वप्रथम काल तथा देश का उच्चारण करना आवश्यक होता है। व्रतों के आचरण से देवता, ऋषि, पितृ और मानव प्रसन्न होते हैं। ये लोग प्रसन्न होकर मानव को आशीर्वाद देते हैं जिससे उसके अभिलषित मनोरथ पूर्ण होते हैं। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक किए गए व्रत और उपवास के अनुष्ठान से मानव को ऐहिक तथा आमुष्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

स्मार्तत एवं वैष्णव सम्प्रदायों के अनुसार एकादशी व्रत की तिथि का निर्णय दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम निर्णय के अनुसार जहां एकादशी या द्वादशी का क्षय या वृद्धि न हो। यह निर्णय का सामान्य प्रकार है। इस सामान्य नियम को इन तीन भागों में विभाजित किया हैं -

1 अरुणोदय में दशमीविद्ध एकादशी नियम।
2 सूर्योदय में दशमीविद्धा एकादशी नियम ।
3. शुद्धा (अरुणोदय और सूर्योदय-दोनो कालो में दशमी से अविद्ध) एकादशी नियम।

अरुणोदय में दशमीविद्वाएकादशी नियम यदि दशमी अरुणोदयकाल को स्पर्श कर रही हो (यानी दशमी का समाप्तिकाल 56 घडी से अधिक हो) तो दशमी द्वारा अरुणोदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में वैष्णव दूसरे दिन त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते है तथा स्मार्त उसी दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत करते हैं, अर्थात दशमी द्वारा अरुणोदयवेध स्मात्तों को त्याज्य नहीं है, वैष्णवों को त्याज्य है। जैसा कीगरुडपुराण में कहा गया है

दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः ।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम् ।।

सूर्योदय में दशमीविदा एकादशी नियम यदि दशमी सूर्योदयानन्तर कुछ क्षणों के लिए भी विद्यमान हो तो दशमी द्वारा सूर्योदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में स्मार्त एव वैष्णव दोनो उस दिन व्रत नहीं करते, अपितु दूसरे दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत करने का विधान है, अर्थात् दशमी द्वारा सूर्योदयवेध दोनो सम्प्रदायों को अग्राह्य है।

दोनों का वेध एकादशी शुद्ध शुद्ध एकादशी नियम यदि दशमी द्वारा अरुणोदय और सूर्योदय न हो

(अर्थात् दशमी का समाप्तिकाल 56 घड़ी से अधिक न हो) तो मानी जाती है। शुद्ध एकादशी की स्थिति में स्मार्तत एवं वैष्णव दोनों उसी दिन (द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन ही) व्रत करते है।

दूसरा नियम एक विशेष नियम है जिसका प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जब एकादशी अथवा द्वादशी की क्षय अथवा वृद्धि हो। इस विशेष नियम को इन छः भागों में बाटा गया है -

1 एकादशीवृद्धि द्वादशीक्षय नियम
2 द्वादशीवृद्धि नियम
3 एकादशीवृद्धि नियम।
4 द्वादशीक्षय नियम
5 एकादशीक्षय द्वादशीवृद्धि नियम ।
6. एकादशीक्षय नियम ।

एकादशीवृद्धि द्वादशीक्षय

एकादशी की वृद्धि होने के साथ ही द्वादशीका क्षय भी हो तो स्मात्तों को एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी इन तिथियों सेका क्षय भी हो तो स्मात्तो को एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी इन तिथियों से युक्त दिन में व्रत नहीं करना चाहिए। अपितु षष्टि घट्यात्मक एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। परन्तु वैष्णवों को एकादशी, द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से युक्त दिन में ही व्रत करना चाहिए। यह नियम दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध दोनों स्थितियों में प्रभावी होता है।
कूर्मपुराण के अनुसार एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से मिश्रित दिन मे पुत्र-पौत्रों वाले गृहस्थी (स्मात्त) को व्रत नहीं करना चाहिए

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी। उपवासं न कुर्वीत पुत्र-पौत्रसमन्वितः ।।

यह वाक्य यहां स्मार्त्ता को षष्टिघट्यात्मक एकादशी तिथि वाले दिन और प्रकारान्तर से एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से मिश्रित दिन में वैष्णवो को व्रत करने का निर्देश करता है। इस स्थिति में एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से युक्त दिन में व्रत का विधान वैष्णवों के लिए कहा गया है।

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी त्रिभिः मिश्रा तिथिः प्रोक्ता सर्वपापहरा सदा ।।

द्वादशी वृद्धि

द्वादशी की वृद्धि होने पर स्मात्तों के लिए द्वादशीयुता एकादशी के दिन तथा वैष्णवों के लिए षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत का विधान है। दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध दोनों स्थितियों में यह नियम भी समान रूप से लागू होता है।

एकादशीवृद्धि

एकादशी की वृद्धि होने पर स्मात्तों एव वैष्णवों के लिए द्वादशीयुत एकादशी के दिन ही व्रत करने का विधान है। यह नियम भी दशमी द्वारा अरुणोदय का वेध एवं अवेध दोनो स्थिति में समान है। इस विषय में नारद पुराण में कहा गया है।

सम्पूर्णकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा। सर्वैरेवोत्तरा कार्या परतो द्वादशी यदि ।।

अर्थात् पहले दिन यदि षष्टियट्यात्मक एकादशी हो और दूसरे दिन भी वह एकादशी विद्यमान हो, तो सभी (स्मार्त तथा वैष्णवों) को दूसरे दिन व्रत करना चाहिए, परन्तु नियमानुसार द्वादशी का क्षय नही होना चाहिए।

द्वादशीक्षय

पद्मपुराण के अनुसार द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त को दशमीयुत एव वैष्णवों को द्वादशी त्रयोदशीयुत एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः ।।

इस वाक्यानुसार एकादशी, द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से मिश्रित दिन में स्मात्तो (गृहस्थी) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है।

एकादशीक्षय द्वादशीवृद्धि

व्यास के अनुसार यदि एकादशी का क्षय और साथ ही द्वादशी की वृद्धि भी हो तो स्मार्त और वैष्णव दोनों को षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन व्रत करना चाहिए -

एकादशी यदा लुप्ता परतो द्वादशी भवेत् ।उपोष्या द्वादशी तत्र यदीच्छेत्परमां गतिम् ।।

एकादशीक्षय

यदि एकादशी का क्षय हो तो स्मार्त्त दशमीयुता एकादशी के दिन तथा वैष्णव त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते है।

इस प्रकार उक्त नियमों को अनुसरण कर एकादशी व्रत का आचरण करना चाहिए।

1.4 मासों के अनुसार व्रत परिचय

एकादशी व्रत पंचांग के अनुसार चान्द्रमास की ग्यारहवी तिथि की एकादशी सज्ञा है। यह तिथि एक मास में शुक्लपक्ष एव कृष्णपक्ष में दो बार आती है। यह व्रत प्रत्येक पक्ष की एकादशी में स्मार्त एवं वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों द्वारा अपनेअपने सम्प्रदायानुसार सिद्धान्तों के आधार पर निर्णय करके - भिन्न नाम है-किया जाता है। शास्त्रों में प्रत्येक पक्ष की एकादशी के भिन्न, जो इस प्रकार है-

चैत्र	शुक्लपक्ष कामदा एकादशी	कृष्णपक्ष पापमोचिनी एकादशी
वैशाख	शुक्लपक्ष मोहिनी एकादशी	कृष्णपक्ष वरूथनी एकादशी
ज्येष्ठ	शुक्लपक्ष निर्जला एकादशी	कृष्णपक्ष अपरा एकादशी
आषाढ	शुक्लपक्ष देवशयनी एकादशी	कृष्णपक्ष योगिनी एकादशी
श्रावण	शुक्लपक्ष पवित्रा एकादशी	कृष्णपक्ष कामदा एकादशी
भाद्रपद	शुक्लपक्ष पद्मा एकादशी	कृष्णपक्ष अजा एकादशी
आश्विन	शुक्लपक्ष कुशा ग्रहण एकादशी	कृष्णपक्ष इन्दिरा एकादशी
कार्तिक	शुक्लपक्ष देवप्रबोधिनी एकादशी	कृष्णपक्ष रमा एकादशी
मार्गशीर्ष	शुक्लपक्ष मोक्षदा एकादशी	कृष्णपक्ष उत्पन्ना एकादशी
पौष	शुक्लपक्ष पुत्रदा एकादशी	कृष्णपक्ष सफला एकादशी
माघ	शुक्लपक्ष जया एकादशी	कृष्णपक्ष षट्तिला एकादशी
फाल्गुन	शुक्लपक्ष आमला एकादशी	कृष्णपक्ष विजया एकादशी

अधिक मास के दोनों (शुक्ल तथा कृष्ण) पक्षों की एकादशियो का नाम पुरुषोत्तमा एकादशी होता है।

कामदा एकादशी

चैत्र शुक्लपक्ष कि एकादशीका नाम कामदा एकादशी है। यह परम पुण्यमयी है। पापरुपी ईंधन के लिए तो वह दावानल ही है ।कामदा एकादशी ब्रह्महत्या आदि पापों तथा पिशाचत्व आदि दोषों का नाश करनेवाली है। इसके महात्म को पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है ।ऐसी मान्यता है कि कामदा एकादशी का व्रत रखने से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिल जाती है, कामदा एकादशी के पुण्य के प्रभाव से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं|

पापमोचनी एकादशी

चैत्र कृष्णपक्ष में जो एकादशी आती है, उसका नाम पापमोचनी एकादशी है, उसका व्रत को विधि विधानपूर्वक करने पर समस्त जन्म-जन्मान्तर के जाने अनजाने किये गयेपापों का विनाश हो

जाता है ।इसके महात्म को पढ़ने और सुनने से सहस्र गौदान का फल मिलता है। ब्रह्महत्या, सुवर्ण की चोरी, सुरापान और गुरुपत्नीगमन करनेवाले महापातकी भी इस व्रत को करने से पापमुक्त हो जाते हैं। यह व्रत बहुत पुण्यमय है ।वह शाप से उद्धार करनेवाली तथा सब पापों का क्षय करनेवाली है।

मोहिनी एकादशी

वैशाख केशुक्लपक्ष कि एकादशी का नाम मोहिनी एकादशी है |पौराणिक कथाओं अनुसार जब समुद्र मंथन से निकले अमृत को लेकर देवताओं और असुरों में भयानक युद्ध छिड़ गया था तब जगत के पालनहार भगवान श्री हरि विष्णु ने अमृत को राक्षसों से बचाने के लिए मोहिनी अवतार लिया था। भगवान विष्णु के मोहिनी स्वरूप ने सभी असुरों को मोहमाया में फसाकर उनका ध्यान भंग कर दिया और उन्होंने वहाँ मौजूद देवतओं को पीला दिया ,जिसके बाद सभी देवता अमर हो गये | कहा जाता हैं कि जिस दिन भगवान विष्णु ने अपना मोहिनी रूप धारण किया था उस दिन एकादशी तिथि थी। तभी से इस एकादशी का नाम मोहिनी एकादशी पड़ गया।मोहिनी एकादशीका व्रत जगत के पालनहार भगवान विष्णु को समर्पित है। इसे करने से साधक के संचित पुण्यों में वृद्धि होती है और पिछले जन्म सहित इस जन्म के पापों का नाश हो जाता है।

वरुथिनी एकादशी

वैशाख कृष्णपक्ष की एकादशी वरुथिनी के नाम से प्रसिद्ध है ।पदम पुराण के अनुसार वरुथिनी एकादशी का व्रत करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है। मान्यता है कि जितना पुण्य कन्यादान और अनेक वर्षों तक तप करने पर मिलता है, उतना ही पुण्य वरुथिनी एकादशी का व्रत करने से मिलता है। मनुष्य वरूथनी एकादशी का व्रत करके साधक विद्यादान का फल भी प्राप्त कर लेता है। यह एकादशी सौभाग्य देने वाली, सब पापों को नष्ट करने वाली तथा अंत में मोक्ष देने वाली है एवं दरिद्रता का नाश करने वाली और कष्टों से मुक्ति दिलाने वाली भी मानी गई है।यह इस लोक और परलोक में भी सौभाग्य प्रदान करनेवाली है।

निर्जला एकादशी

ज्येष्ठ मास में सूर्य वृष राशि पर हो या मिथुन राशि पर, शुक्लपक्ष में जो एकादशी हो, उसका यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करो। केवल कुल्ला या आचमन करने के लिए मुख में जल डाल सकते हो, उसको छोड़कर किसी प्रकार का जल विद्वान पुरुष मुख में न डाले, अन्यथा व्रत भंग हो जाता है।

एकादशी को सूर्यौदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्यौदय तक मनुष्य जल का त्याग करे तो यह व्रत पूर्ण होता है। तदनन्तर द्वादशी को प्रभातकाल में स्नान करके ब्राह्मणों को विधिपूर्वक जल और सुवर्ण का दान करे। इस प्रकार सब कार्य पूरा करके जितेन्द्रिय पुरुष ब्राह्मणों के साथ भोजन करे। वर्षभर में जितनी एकादशीयाँ होती हैं, उन सबका फल निर्जला एकादशी के व्रत को करने से मनुष्य प्राप्त कर लेता है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। मनुष्य निर्जला एकादशी के दिन स्नान, दान, जप, होम आदि जो कुछ भी करता है, वह सब अक्षय होता है, यह भगवान श्रीकृष्ण का कथन है। निर्जला एकादशी को विधिपूर्वक उत्तम रीति से उपवास करके मानव वैष्णवपद को प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाता है, वह पाप का भोजन करता है। इस लोक में वह चाण्डाल के समान है और मरने पर दुर्गति को प्राप्त होता है।

अपरा एकादशी

जेष्ठ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम 'अपरा' है। यह बहुत पुण्य प्रदान करनेवाली और बड़े बडे पातकों का नाश करनेवाली है।ब्रह्महत्या से दबा हुआ, गोत्र की हत्या करनेवाला, गर्भस्थ बालक को मारनेवाला, परनिन्दक तथा परस्त्रीलम्पट पुरुष भी अपरा एकादशी का व्रत से निश्चय ही पापरहित हो जाता है।जो झूठी गवाही देता है, माप तौल में धोखा देता है, बिना जाने ही नक्षत्रों की गणना करता है और कूटनीति से आयुर्वेद का ज्ञाता बनकर वैध का काम करता है, ये सब नरक में निवास करनेवाले प्राणी हैं। परन्तु अपरा एकादशी से ये भी पापरहित हो जाते हैं। यदि कोई क्षत्रिय अपने क्षात्रधर्म का परित्याग करके युद्ध से भागता है तो वह क्षत्रियोचित धर्म से भ्रष्ट होने के कारण घोर नरक में पड़ता है। जो शिष्य विद्या प्राप्त करके स्वयं ही गुरुनिन्दा करता है, वह भी महापातकों से युक्त होकर भयंकर नरक में गिरता है। किन्तु 'अपरा एकादशी के व्रत को विधि पुर्वक करने से ऐसे मनुष्य भी सदगति को प्राप्त होते हैं।

शयनी एकादशी

आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम 'शयनी' है। यह एकादशी महान पुण्यमयी, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करनेवाली, सब पापों को हरनेवाली तथा उत्तम व्रत है। आषाढ़ शुक्लपक्ष में शयनी एकादशी के दिन जिन्होंने कमल पुष्प से कमललोचन भगवान विष्णु का पूजन तथा एकादशी का उत्तम व्रत किया है, उन्होंने तीनों लोकों और तीनों सनातन देवताओं का पूजन कर लिया। जो मनुष्य इस व्रत का अनुष्ठान करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है, इस कारण यत्नपूर्वक इस एकादशी का व्रत करना चाहिए।

योगिनी एकादशी

आषाढ़ के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। यह बड़े बडे पातकों का नाश करनेवाली है। संसारसागर में डूबे हुए प्राणियों के लिए यह सनातन नौका के समानहै।यह 'योगिनी' का व्रत ऐसा पुण्यशाली है कि अठ्ठासी हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो फल मिलता है, वही फल योगिनी एकादशी का व्रत करनेवाले मनुष्य को मिलता है। योगिनी महान पापों को शान्त करनेवाली और महान पुण्य फल देनेवाली है। इस माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।

पुत्रदा एकादशी

श्रावण मास के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है, वह पुत्रदा के नाम से विख्यात है। वह मनोवांछित फल प्रदान करनेवाली है ।पुराणों में उल्लेख है कि प्रायश्चितरुप पुण्य से पाप नष्ट होते हैं, अत: ऐसे पुण्यकर्म का उपदेशकीजिये, जिससे उस पाप का नाश हो जाय ।इसका माहात्म्य सुनकर मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है तथा इहलोक में सुख पाकर परलोक में स्वर्गीय गति को प्राप्त होता है।

कामिका एकादशी

श्रावण मास में जो कृष्णपक्ष की एकादशी होती है, उसका नाम कामिका है। उसके स्मरणमात्र से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। उस दिन श्रीधर, हरि, विष्णु, माधव और मधुसूदन आदि नामों से भगवान का पूजन करना चाहिए ।भगवान श्रीकृष्ण के पूजन से जो फल मिलता है, वह गंगा, काशी, नैमिषारण्य तथा पुष्कर क्षेत्र में भी सुलभ नहीं है। सिंह राशि के बृहस्पति होने पर तथा व्यतीपात और दण्डयोग में गोदावरी स्नान से जिस फल की प्राप्ति होती है, वही फल भगवान श्रीकृष्ण के पूजन से भी मिलता है ।अत: मानवों को इसका व्रत अवश्य करना चाहिए। यह स्वर्गलोक तथा महान पुण्यफल प्रदान करनेवाली है। जो मनुष्य श्रद्धा के साथ इसका माहात्म्य का श्रवण करता है, वह सब पापों से मुक्त हो श्रीविष्णुलोक में जाता है।

पद्मा एकादशी

भादों के शुक्लपक्ष की एकादशी पद्मा के नाम से विख्यात है। उस दिन भगवान हृषीकेश की पूजा होती है। यह उत्तम व्रत अवश्य करने योग्य है ।पद्माएकादशी के दिन जल से भरे हुए घड़े को वस्त्र से ढकँकर दही और चावल के साथ ब्राह्मण को दान देना चाहिए, साथ ही छाता और जूता भी देना चाहिए। दान करते समय निम्नांकित मंत्र का उच्चारण करना चाहिए :

नमो नमस्ते गोविन्द बुधश्रवणसंज्ञक ॥
अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वसौख्यप्रदो भव।
भुक्तिमुक्तिप्रदश्चैव लोकानां सुखदायकः ॥

बुधवार और श्रवण नक्षत्र के योग से युक्त द्वादशी के दिन बुद्धश्रवण नाम धारण करनेवाले भगवान गोविन्द ! आपको नमस्कार है नमस्कार है, मेरी पापराशि का नाश करके आप मुझे सब प्रकार के सुख प्रदान करें। आप पुण्यात्माजनों को भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले तथा सुखदायक हैं।

अजा एकादशी

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम 'अजा' है। वह सब पापों का नाश करनेवाली बतायी गयी है। भगवान हृषीकेश का पूजन करके जो इसका व्रत करता है उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं| जो मनुष्य ऐसा व्रत करते हैं, वे सब पापों से मुक्त हो स्वर्गलोक में जाते हैं। इसके पढ़ने और सुनने से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

नमो नमस्ते गोविन्द बुधश्रवणसंज्ञक ॥
अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वसौख्यप्रदो भव।
भुक्तिमुक्तिप्रदश्चैव लोकानां सुखदायकः ॥

बुधवार और श्रवण नक्षत्र के योग से युक्त द्वादशी के दिन बुद्धश्रवण नाम धारण करनेवाले भगवान गोविन्द ! आपको नमस्कार है नमस्कार है, मेरी पापराशि का नाश करके आप मुझे सब प्रकार के सुख प्रदान करें। आप पुण्यात्माजनों को भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले तथा सुखदायक हैं।

पापांकुशा एकादशी

आश्विन के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है, वह पापांकुशा के नाम से विख्यात है। वह सब पापों को हरनेवाली, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करनेवाली, शरीर को निरोग बनानेवाली तथा सुन्दर स्त्री, धन तथा मित्र देनेवाली है। यदि अन्य कार्य के प्रसंग से भी मनुष्य इस एकमात्र एकादशी को उपास कर ले तो उसे कभी यम यातना नहीं प्राप्त होती ।लोक में जो मानव दीर्घायु, धनाढय, कुलीन और निरोग देखे जाते हैं, वे पहले के पुण्यात्मा हैं। पुण्यकर्त्ता पुरुष ऐसे ही देखे जाते हैं। इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ, मनुष्य पाप से दुर्गति में पड़ते हैं और धर्म से स्वर्ग में जाते हैं।

इन्दिरा एकादशी

आश्विन के कृष्णपक्ष में जो एकादशी आती है,उसका नाम इन्दिरा एकादशी है। उसके व्रत के प्रभाव से बड़े बड़े पापों का नाश हो जाता है। नीच योनि में पड़े हुए पितरों को भी यह एकादशी सदगति देनेवाली है।आश्विन मास के कृष्णपक्ष में दशमी के उत्तम दिन को श्रद्धायुक्त चित्त से प्रातःकाल स्नान करो। फिर मध्याह्नकाल में स्नान करके एकाग्रचित्त हो एक समय भोजन करो तथा रात्रि में भूमि पर सोओ। रात्रि के अन्त में निर्मल प्रभात होने पर एकादशी के दिन दातुन करके मुँह धोओ। इसके बाद भक्तिभाव से निम्नांकित मंत्र पढ़ते हुए उपवास का नियम ग्रहण करो-

अघ स्थित्वा निराहारः सर्वभोगविवर्जितः।

श्वो भोक्ष्ये पुण्डरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ॥

कमलनयन भगवान नारायण, आज मैं सब भोगों से अलग हो निराहार रहकर कल भोजन करुँगा। अच्युत ! आप मुझे शरण दें।तत्पश्चात् सवेरा होने पर द्वादशी के दिन पुनः भक्तिपूर्वक श्रीहरि की पूजा करो। उसके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर भाई बन्धु, नाती और पुत्र आदि के साथ स्वयं मौन होकर भोजन करो। इस विधि से व्रत करने पर सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते है|

प्रबोधिनी एकादशी

कार्तिक मास के शुक्लपक्ष में पड़ने वाली एकादशीका नाम प्रबोधिनी एकादशी है| मनुष्य को भगवान की प्रसन्नता के लिए कार्तिक मास की इस एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए| जिस वस्तु का त्रिलोक में मिलना दुष्कर है, वह वस्तु भी कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की 'प्रबोधिनी एकादशी' के व्रत से मिल जाती है। इस व्रत के प्रभाव से पूर्व जन्म के किये हुए अनेक बुरे कर्म क्षणभर में नष्ट हो जाते है ।जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस दिन थोड़ा भी पुण्य करते हैं, उनका वह पुण्य पर्वत के समान अटल हो जाता है। उनके पितृ विष्णुलोक में जाते हैं। ब्रह्महत्या आदि महान पाप भी 'प्रबोधिनी एकादशी' के दिन रात्रि को जागरण करने से नष्ट हो जाते हैं ।जो मनुष्य इस एकादशी व्रत को करता है, वह धनवान, योगी, तपस्वी तथा इन्द्रियों को जीतनेवाला होता है, क्योंकि एकादशी भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय है।

रमा एकादशी

कार्तिक के कृष्णपक्ष में रमा नाम की विख्यात और परम कल्याणमयी एकादशी होती है ।यह चिन्तामणि तथा कामधेनु के समान सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाली है ।यह परम उत्तम है और बड़े-बड़े पापों को हरनेवाली है ।यह चिन्तामणि तथा कामधेनु के समान सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाली है ।

मोक्षदा एकादशी

मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी मोक्षदा के नाम से विख्यात है| जो यह कल्याणमयी मोक्षदा एकादशी का व्रत करता है, उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और मरने के बाद वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यह मोक्ष देनेवाली मोक्षदा एकादशी मनुष्यों के लिए चिन्तामणि के समान समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है। इसके माहात्मय के पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

उत्पन्ना एकादशी

उत्पन्ना एकादशी हेमन्त ऋतु में मार्गशीर्ष मास के कृष्णपक्षकी एकादशी को कहा जाता है| जो मनुष्य इस एकादशी को उपवास करता है, वह वैकुण्ठधाम में जाता है, जहाँ साक्षात् भगवान गरुड़ध्वज विराजमान रहते हैं। जो मानव हर समय एकादशी के माहात्मय का पाठ करता है, उसे हजार गौदान के पुण्य का फल प्राप्त होता है। जो दिन या रात में भक्तिपूर्वक इस माहात्म्य का श्रवण करते हैं, वे नि:संदेह ब्रह्महत्या आदि पापों से मुक्त हो जाते हैं। एकादशी के समान पापनाशक व्रत दूसरा कोई नहीं है।

पुत्रदा एकादशी

पौष मास के शुक्लपक्ष की जो एकादशी है, उसका नाम पुत्रदा है ।जो मनुष्य पुत्र कि प्राप्ति करना चाहते हैं उन्हें एकाग्रचित्त होकर पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिये ,इस व्रत को विधिपूर्वक करने से निश्चित ही वे इस लोक में पुत्र पाकर मृत्यु के पश्चात् स्वर्गगामी होते हैं।इसलिये जो भी संतति कि प्राप्ति करना चाहता है, पुत्रदा का उत्तम व्रत अवश्य करना चाहिए। इसके माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है।

सफला एकादशी

पौष मास के कृष्णपक्ष में जो एकादशी होती है, उसका नाम सफला एकादशी है| जो इस सफला एकादशी का उत्तम व्रत करता है, वह इस लोक में सुख भोगकर मरने के पश्चात् मोक्ष को प्राप्त होता है। संसार में वे मनुष्य धन्य हैं, जो सफला एकादशी के व्रत में लगे रहते हैं, उन्हीं का जन्म सफल है। महाराज! इसकी महिमा को पढ़ने, सुनने तथा उसके अनुसार आचरण करने से मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल पाता है।

जयाएकादशी

माघ मास के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है, उसका नाम जया है। वह सब पापों को हरनेवाली उत्तम तिथि है। पवित्र होने के साथ ही पापों का नाश करनेवाली तथा मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करनेवाली है। इतना ही नहीं , वह ब्रह्महत्या जैसे पाप तथा पिशाचत्व का भी विनाश करनेवाली है। इसका व्रत करने पर मनुष्यों को कभी प्रेतयोनि में नहीं जाना पड़ता। इसलिए प्रयत्नपूर्वकजया नाम की एकादशी का व्रत करना चाहिए।

षटतिलाएकादशी

माघ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी षटतिला के नाम से विख्यात है, जो सब पापों का नाश करनेवाली है नारायण का विधिवत पूजन करके उन्हें अर्ध्य से जल देने का विधान है।अर्ध्य देने का मंत्र इस प्रकार है-

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ।

भगवान का मन में स्मरण करते हुये बोले सच्चिदानन्दस्वरुप श्रीकृष्ण आप बड़े दयालु हैं । हम आश्रयहीन जीवों के आप आश्रयदाता होइये। हम संसार समुद्र में डूब रहे हैं, आप हम पर प्रसन्न होइये । कमलनयन ! विश्वभावन ! सुब्रह्मण्य ! महापुरुष ! सबके पूर्वज ! आपको नमस्कार है ! जगत्पते ! मेरा दिया हुआ अर्घ्य आप लक्ष्मीजी के साथ स्वीकार करें।'

तत्पश्चात् ब्राह्मण की पूजा करें। उसे जल का घड़ा, छाता, जूता और वस्त्र दान करें। दान करते समय ऐसा कहें : 'इस दान के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण मुझ पर प्रसन्न हों।अपनी शक्ति के अनुसार श्रेष्ठ ब्राह्मण को काली गौ का दान करें। द्विजश्रेष्ठ ! विद्वान पुरुष को चाहिए कि वह तिल से भरा हुआ पात्र भी दान करे। उन तिलों के बोने पर उनसे जितनी शाखाएँ पैदा हो सकती हैं, उतने हजार वर्षों तक वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है । तिल से स्नान होम करे, तिल का उबटन लगाये, तिल मिलाया हुआ जल पीये, तिल का दान करे और तिल को भोजन के काम में ले।'

इस प्रकार छ: कामों में तिल का उपयोग करने के कारण यह एकादशी 'षटतिला' कहलाती है, जो सब पापों का नाश करनेवाली है।

आमलकीएकादशी

फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम आमलकी है। इसका पवित्र व्रत विष्णुलोक की प्राप्ति करानेवाला है। इस व्रत को विधि-विधान पूर्वक करने से सम्पूर्ण तीर्थों के तीर्थाटन से जो पुण्य प्राप्त होता है तथा सब प्रकार के दान देने दे जो फल मिलता है, वह सब इस व्रत को करने से प्राप्त होते है| इस व्रत से समस्त यज्ञों की अपेक्षा भी अधिक फल मिलता है| यह दुर्धर्ष व्रत मनुष्य को सब पापों से मुक्त करनेवाला है|

विजयाएकादशी

फाल्गुन के कृष्णपक्ष में जोएकादशीआती है, उसका नाम विजयाहै, यह व्रत करने से सर्वत्र विजय कि प्राप्ति होती है।दशमी के दिन सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी का एक कलश स्थापित कर उस कलश को जल से भरकर उसमें पल्लव डाल दें। उसके ऊपर भगवान नारायण के सुवर्णमय विग्रह की स्थापना करें । फिर एकादशी के दिन प्रात: काल स्नान करें । कलश को पुन: स्थापित करें । माला, चन्दन, सुपारी तथा नारियल आदि के द्वारा विशेष रुप से उसका पूजन करें। कलश के ऊपर

सप्तधान्य और जौ रखें। गन्ध, धूप, दीप और भाँति भाँति के नैवेघ से पूजन करें। कलश के सामने बैठकर उत्तम कथा वार्ता आदि के द्वारा सारा दिन व्यतीत करें और रात में भी वहाँ जागरण करें। अखण्ड व्रत की सिद्धि के लिए घी का दीपक जलायें। फिर द्वादशी के दिन सूर्योदय होने पर उस कलश को किसी जलाशय के समीप (नदी, झरने या पोखर के तट पर) स्थापित करें और उसकी विधिवत् पूजा करके देव प्रतिमासहित उस कलश को वेदवेत्ता ब्राह्मण के लिए दान कर दें।

पद्मिनी एकादशी

अधिक मास की शुक्लपक्ष की एकादशीपद्मिनी एकादशी के नाम से विख्यात है| अधिक मास की एकादशी अनेक पुण्यों को देनेवाली है, इस एकादशी के व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाता है। यह अनेक पापों को नष्ट करनेवाली तथा मुक्ति और भक्ति प्रदान करनेवाली है।अधिक मास की शुक्लपक्ष की 'पद्मिनी एकादशी' का व्रत निर्जल करना चाहिए। यदि मनुष्य में निर्जल रहने की शक्ति न हो तो उसे जल पान या अल्पाहार से व्रत करना चाहिए। रात्रि में जागरण करके नाच और गान करके भगवान का स्मरण करते रहना चाहिए। प्रति पहर मनुष्य को भगवान या महादेवजी की पूजा करनी चाहिए।पहले पहर में भगवान को नारियल, दूसरे में बिल्वफल, तीसरे में सीताफल और चौथे में सुपारी, नारंगी अर्पण करना चाहिए। इससे पहले पहर में अग्नि होम का, दूसरे में वाजपेय यज्ञ का, तीसरे में अश्वमेघ यज्ञ का और चौथे में राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। इस व्रत से बढ़कर संसार में कोई यज्ञ, तप, दान या पुण्य नहीं है। एकादशी का व्रत करनेवाले मनुष्य को समस्त तीर्थों और यज्ञों का फल मिल जाता है।

परमा एकादशी

अधिक मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम परमा एकादशी है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं तथा मनुष्य को इस लोक में सुख तथा परलोक में मुक्ति मिलती है। भगवान विष्णु की धूप, दीप, नैवेध, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए।जो मनुष्य परमा एकादशी का व्रत करता है, उसे समस्त तीर्थों व यज्ञों आदि का फल मिलता है। जिस प्रकार संसार में चार पैरवालों में गौ, देवताओं में इन्द्रराज श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार मासों में अधिक मास उत्तम है। इस मास में पंचरात्रि अत्यन्त पुण्य देनेवाली है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और पुण्यमय लोकों की प्राप्ति होती है।

बोध प्रश्न -

1 माघ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को कहते है|
2 पौष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम है|

3 एकादशीयों की कुल संख्या है।

4 पापमोचनी एकादशी कौन से मास में आती है|

5 आश्विन के कृष्णपक्ष में जो एकादशी आती है,उसका नाम है।

6 निर्जला एकादशी कौन से मास में होती है|

1.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से हमने यह समझाने का प्रयास किया है एकादशीव्रत का क्या महत्व मानव जीवन में है| जैसा कि एकादशी का व्रत कब-कब किया जाना चाहिये, व किन तिथियों में इसे करने से लाभ प्राप्त होताहै| कौन सी एकादशी तिथि का व्रत स्मार्त सम्प्रदाय के लिये उत्तम है, और कौन से वैष्णव संप्रदाय के लिये उपयुक्त इसी प्रकार से कितनी एकादशी के व्रत हो सकते हैं| इसके बारे में भी इस इकाई के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है तथा प्रत्येक एकादशी व्रत को करने से क्या फल प्राप्त होगा उसके बारे में भी सूक्ष्म वर्णन के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है, हमें आशा है कि छात्र इस इकाई को पड़ने के बाद एकादशी व्रत से सम्बंधित अपनी जिज्ञाशाओं को इसके माध्यम से अच्छी तरह समझने में सहायक हो सकेंगे।

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. षटतिलाएकादशी
2. पुत्रदा एकादशी
3. 26
4. चैत्र मास के कृष्णपक्ष में
5. इन्दिरा एकादशी
6. ज्येष्ठ शुक्लपक्ष में

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

व्रतराज, खेमराज श्रीकृष्णदास अकादमी प्रकाशन, बम्बई-4.

कल्याण, धर्मशास्त्राड़क, गीताप्रेस गोरखपुर

निर्णय सिन्धु, पं. ज्वाला प्रसाद मिश्रा, व्याख्याकार खेमराज, श्रीकृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई, 2012

धर्मसिन्धु, काशीनाथ उपाध्याय, साई सतगुरू पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1986

पुरुषार्थ चिन्तामणि, विष्णु भट्ट, आनन्दाश्रममुद्रालय, 1907
मनुस्मृति, भाष्यकार डा. सुरेन्द्रकुमार, सम्पादक श्रीराजवार शास्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 2005
याग्यवल्क्य समृति, भाष्यकार डा. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 1994
पर्व विवेक, प्रो प्रियव्रत शर्मा, अभिजीज प्रकाशन, सैक्टर-6, पचकुला

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. एकादशी व्रत के महत्व पर प्रकाश डालिये|
2. एकादशियाँ कितनी होती है, उनका वर्णन कीजिये|

इकाई 2 प्रदोष व्रत

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 प्रदोष व्रत परिचय

2.4 प्रदोष व्रत के प्रकार

2.5 प्रदोष व्रत का पोराणिक महात्म्य

2.6 प्रदोष व्रत विधि, उद्धापन, शांति विधान

2.7 प्रदोष व्रत मुहूर्त

2.8 प्रदोष व्रत महत्व

2.9 सारांश

2.10 पारिभाषिक शब्दावली

2.11 अभ्यास प्रश्न

2.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.13 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

2.14 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 से सम्बंधित है। इस इकाई में आप प्रदोष व्रत के बारे मैं विधिपूर्वक जान सकेंगे। प्राचीन सनातन परम्परा में व्रत को मानव जीवन का प्रमुख अंश माना गया हैं। सायंकाल किये जाने वाले व्रत को प्रदोष व्रत कहते हैं। यह व्रत हर मास की त्रयोदशी तिथि पर होने वाला व्रत हैं। सनातन संस्कृति मैं प्रदोष व्रत को महत्वपूर्ण व्रत माना गया हैं। व्रत तो और भी बहुत प्रकार से देखनें को मिलते हैं परन्तु शास्त्रों में पुराणों में, उपनिषदों में तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में बहुत प्रकार के व्रतों का अवलोकन करनें के बाद यह लगता हैं कि सभी व्रतों का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं, परन्तु इन सभी व्रतों में प्रदोष व्रत का एक अलग ही स्थान रहा हैं। यह व्रत महीने के दोनों पक्षों में त्रयोदशी तिथि को किया जाने वालाव्रत हैं। इस व्रत के करनें से मनुष्य मात्र के सभी प्रकार के कष्टों का शमन हो जाता हैं तथा वह सुख की अनुभूति करनें लगता हैं। इस प्रदोष व्रत नामक ईकाई मैं हम व्रतों के विषय मैं तथा प्रदोष व्रत की विधि को जानने का प्रयास करेंगे। भारतीय परंपरा में साधु महात्मा और ऋषियों ने व्रतों का पालन श्रद्धा और भक्ति के द्वारा किया। वैदिककाल में ऋषियों ने व्रतों को आत्मिक उन्नति, आत्मकल्याण और लोकमंगल केसे हो सके, इन सभी कार्यो को करते रहते थे। हमारे तपस्वी , ऋषि-महर्षियों, साधु संतो ने व्रत, पर्व एवं त्योहारों का आरम्भ इसी दृष्टि से की, जिससे कि महान् प्रेरणाओं और घटनाओं का प्रकाश जनमानस में धर्मधारण, सामाजिकता की भावना, कर्त्तव्यनिष्ठा, परमार्थ, लोकमंगल, जागृति, सद्भावना, जेसे वातावरण में विकसित सत्प्रवृत्तियों के माध्यम से विकसित हों तथा समाज को समुन्नत और सुविकसित केसे बनाया जा सके। इसी आधार को रखते हुये उन महत्माओ ने व्रत पर्व-त्योहार , तथा प्रमुख व्रतों के विषय में समाज में जाकर के इसका प्रचार किया की सभी मनुष्य अब पाप कर्म को छोड़कर सत्य मार्ग पर आगे चले, इन व्रतों को धारण कर अपने जीवन को सुखमय बनाये। व्रतों का नियमानुसार पालन करने से सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते रहते है प्रत्येक माह के अनुसार व्रतों का पालन करना आवश्यक होता हैं। व्रत करनें के लिए कोन सा महीन शुभ माना जाता हैं किस किस माह मैं व्रत करनें से आत्मिक शांति मिलती हैं। इन सभी का आप इस ईकाई मैं अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- प्रदोष व्रत क्या है व्रत के बारे मैं समझा सकेंगे।
- प्रदोष व्रत धारण करनें के नियम को जान सकेंगे।
- व्रतों में प्रदोष व्रत का महत्वपूर्ण स्थान हैं जान पाएँगे।
- प्रदोष व्रत विधि तथा पूजन मन्त्रों के बारे में समझ सकेगे।
- प्रदोष व्रत के कितने प्रकार हैं जान सकेगे।

2.3 प्रदोष व्रत परिचय

प्रत्येक चन्द्र मास की त्रयोदशी तिथि के दिन प्रदोष व्रत रखने का विधान है, यह व्रत कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष दोनों पक्षों में किया जाता है। सूर्यास्त के बाद के 2 घण्टे 24 मिनट का समय प्रदोष काल के नाम से जाना जाता है. प्रदेशों के अनुसार यह बदलता रहता है. सामान्यत: सूर्यास्त से लेकर रात्रि आरम्भ तक के मध्य की अवधि को प्रदोष काल का शुभ समय कहा जाता है।ऐसा माना जाता है कि प्रदोष काल में भगवान भोलेनाथ कैलाश पर्वत पर प्रसन्न मुद्रा में नृत्य करते रहते है, त्रयोदशी तिथि में पडने वाले प्रदोष व्रत का विधि पूर्वक पालन करना चाहिए।यह व्रत उपवासक को धर्म, मोक्ष से जोडने वाला और अर्थ, काम के बंधनों से मुक्त करने वाला होता है. इस व्रत में भगवान शंकर के पूजन के साथ साथ उनकी भक्ति करने का विधान है। जो भी भक्त भगवान शिव की कर्मणा, मनसा, और वाचा,से आराधना करते हैं। उनके सारे कार्य सफल हो जाते हैं।शास्त्रों के अनुसार प्रदोष व्रत को रखने से गायों के दान देने के समान फल प्राप्त होता है. प्रदोष व्रत को लेकर एक पौराणिक तथ्य सामने आता है कि " एक दिन जब चारों और अधर्म की स्थिति होगी, अन्याय और अनाचार का एकाधिकार होगा, मनुष्य में स्वार्थ भाव अधिक होगी. तथा व्यक्ति सत्कर्म करने के स्थान पर गलत कार्यो को अधिक करेगा।उस समय में जो व्यक्ति त्रयोदशी का व्रत रख, भगवान की आराधना करेगा, उस पर शंकर की कृपा होती हैं l इस व्रत को रखने वाला व्यक्ति जन्म- जन्मान्तर के शुभ कार्यों से निकल कर मोक्ष की प्राप्ति करता है। तथा उसे उतम लोक की प्राप्ति होती है।

2.4 प्रदोष व्रत के प्रकार

शास्त्रों में सात प्रकार के व्रतों का वर्णन प्राप्त होता हैं, जो आगे वर्णित हैं।

1. रवि प्रदोष व्रत
2. सोम प्रदोष व्रत
3. भौम प्रदोष व्रत
4. बुध प्रदोष व्रत
5. गुरु प्रदोष व्रत
6. शुक्र प्रदोष व्रत
7. शनि प्रदोष व्रत

1. रवि प्रदोष व्रत

जिस दिन रविवार ,तथा त्रयोदशी तिथि आती हो वह रवि प्रदोष व्रत के नाम से या भानुप्रदोष के नाम से जानी जाती हैं। जिसे रवि प्रदोष व्रत कहते हैं। इस शुभ दिन में नियम पूर्वक प्रदोष व्रत का उपवास करना चाहिए। रवि प्रदोष का सम्बन्ध सूर्य से होता हैं , जो भी गुण सूर्य के होते है वह गुण रवि प्रदोष व्रत करने वाले के अन्दर होते हैं।

2. सोम प्रदोष व्रत

"सोमवार त्रयोदशी प्रदोष व्रत करने से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं ।इस व्रत को करने से व्रती के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।

व्रत कथा

एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रातः होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी ।एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला । ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई। वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण-पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को

देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ दिओं बाद अंशुमति के माता-पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसा ही किया। ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण-पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के माहात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण-पुत्र के दिन अच्छे आने लगे, वैसे ही शंकर भगवान अपने भक्तों के कष्टों को दूर करते हैं।

3.भोम प्रदोष व्रत

मंगल त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत प्रदोष व्रत कहलाता हैं। यह व्रत व्याधियों का नाश ऋण से मुक्ति के लिए किया जाता हैं। इस व्रत को करने से सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

व्रत कथा

एक नगर में एक वृद्धा निवास करती थी। उसके मंगलिया नामक एक पुत्र था। वृद्धा की हनुमान जी पर गहरी आस्था थी। वह प्रत्येक मंगलवार को नियमपूर्वक व्रत रखकर हनुमान जी की आराधना करती थी। उस दिन वह न तो घर लीपती थी और न ही मिट्टी खोदती थी। वृद्धा को व्रत करते हुए अनेक दिन बीत गए। एक बार हनुमान जी ने उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने की सोची। हनुमान जी साधु का वेश धारण कर वहां गए और पुकारने लगे -"है कोई हनुमान भक्त जो हमारी इच्छा पूर्ण करे?' पुकार सुन वृद्धा बाहर आई और बोली- 'आज्ञा महाराज?' साधु वेशधारी हनुमान बोले- 'मैं भूखा हूं, भोजन करूंगा।तू थोड़ी जमीन लीप दे।' वृद्धा दुविधा में पड़ गई। अंततः हाथ जोड़ बोली- "महाराज! लीपने और मिट्टी खोदने के अतिरिक्त आप कोई दूसरी आज्ञा दें, मैं अवश्य पूर्ण करूंगी साधु ने तीन बार प्रतिज्ञा कराने के बाद कहा- 'तू अपने बेटे को बुला। मै उसकी पीठ पर आग जलाकर भोजन बनाउंगा। वृद्धा के पैरों तले धरती खिसक गई, परंतु वह प्रतिज्ञाबद्ध थी। उसने मंगलिया को बुलाकर साधु के सुपुर्द कर दिया। मगर साधु रूपी हनुमान जी ऐसे ही मानने वाले नही थे। उन्होंने वृद्धा के हाथों से ही मंगलिया को पेट के बल लिटवाया और उसकी पीठ पर आग जलवाई। आग जलाकर, दुखी मन से वृद्धा अपने घर के अन्दर चली गई। इधर भोजन बनाकर साधु ने वृद्धा को बुलाकर कहा- 'मंगलिया को पुकारो, ताकि वह भी आकर भोग लगा ले।'

4. बुध प्रदोष व्रत

"बुध त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत बुध प्रदोष व्रत कहलाता हैं l जो भी इस व्रत का पालन करता हैं उसके सभी सिद्ध हो जाते हैंl

व्रत कथा

एक पुरुष का नया-नया विवाह हुआ था। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों के बाद वह पुरुष पत्नी को लेने उसके घर गया। बुधवार जो जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह नहीं माना और पत्नी के साथ चल पड़ा। नगर के बाहर पहुंचने पर पत्नी को प्यास लगी। पुरुष लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पुरुष पानी लेकर वापस लौटा उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया।वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई। दोनों पुरुष झगड़ने लगे। भीड़ इकट्ठी हो गई। सिपाही आ गए। हमशक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़गे। उन्होंने स्त्री से पूछा 'उसका पति कौन है?'वो नही बता पायी । तब वह पुरुष शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा- 'हे भगवान! हमारी रक्षा करें। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास-श्वशुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा करा लिया। मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा।' जैसे ही उसकी प्रार्थना पूरी हुई, दूसरा पुरुष अन्तर्धान हो गया।पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियमपूर्वक बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत करने लगे।

5 .गुरु प्रदोष व्रत

गुरुवार त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत गुरु प्रदोष व्रत के नाम से जाना जाता हैं।सूत जी कहते है जो - शत्रु विनाशक-भक्ति प्रिय, व्रत है यह अति श्रेष्ठ गुरु प्रदोष व्रत होता हैं।

व्रत कथा

एक बार इन्द्र और वृत्रासुर की सेना में घनघोर युद्ध हुआ। देवताओं ने दैत्य-सेना को पराजित कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। यह देख वृत्रासुर अत्यन्त क्रोधित हो स्वयं युद्ध को उद्यत हुआ। आसुरी माया से उसने विकराल रूप धारण कर लिया। सभी देवता भयभीत हो गुरुदेव बृहस्पति की शरण में पहूंचे। बृहसप्ति महाराज बोले- पहले मैं तुम्हे वृत्रासुर का वास्तविक परिचय दे दूं। वृत्रासुर बड़ा तपस्वी और

कर्मनिष्ठ है। उसने गन्धमादन पर्वत पर घोर तपस्या कर शिव जी को प्रसन्न किया। पूर्व समय में वह चित्ररथ नाम का राजा था। एक बार वह अपने विमान से कैलाश पर्वत चला गया। वहां शिव जी के वाम अंग में माता पार्वती को विराजमान्देख वह उपहासपूर्वक बोला-'हे प्रभो! मोह-माया में फंसे होने के कारण हम स्त्रियों के वशीभूत रहते हैं। किन्तु देवलोक में ऐसा दृष्टिगोचर नहीं हुआ कि स्त्री आलिंगनबद्ध हो सभा में बैठे।' चित्ररथ के यह वचन सुन सर्वव्यापी शिवशंकर हंसकर बोले- 'हे राजन! मेरा व्यावहारिक दृष्टिकोण पृथक है। मैंने मृत्युदाता-कालकूट महाविष का पान किया है, फिर भी तुम साधारणजन की भांति मेरा उपहास उड़ाते हो!' माता पार्वती क्रोधित हो चित्ररथ से संबोधित हुई- 'अरे दुष्ट! तूने सर्वव्यापी महेश्वर के साथ ही मेरा भी उपहास उड़ाया है। अतएव मैं तुझे वह शिक्षा दूंगी कि फिर तू ऐसे संतों के उपहास का दुस्साहस नहीं करेगा- अब तू दैत्य स्वरूप धारण कर विमान से नीचे गिर, मैं तुझे शाप देती हूं।' जगदम्बा भवानी के अभिशाप से चित्ररथ राक्षस योनि को प्राप्त ओ त्वष्टा नामक ऋषि के श्रेष्ठ तप से उत्पन्न हो वृत्रासुर बना।गुरुदेव बृहस्पति आगे बोले- 'वृत्तासुर बाल्यकाल से ही शिवभक्त रहा है। अतः हे इन्द्र तुम बृहस्पति प्रदोष व्रत कर शंकर भगवान को प्रसन्न करो।' देवराज ने गुरुदेव की आज्ञा का पालन कर बृहस्पति प्रदोष व्रत किया। गुरु प्रदोष व्रत के प्रताप से इन्द्र ने शीघ्र ही वृत्रासुर पर विजय प्राप्त कर ली और देवलोक में शान्ति छा गई।

6. शुक्र प्रदोष व्रत

शुक्र त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत शुक्र प्रदोष व्रत कहलाता है। इस व्रत को शुभ लग्न में आरम्भ कर विधि विधान से पूर्ण करना चाहिए।

प्राचीनकाल की बात है, एक नगर में तीन मित्र रहते थे – एक राजकुमार, दूसरा ब्राह्मण कुमार और तीसरा धनिक पुत्र। राजकुमार व ब्राह्मण कुमार का विवाह हो चुका था। धनिक पुत्र का भी विवाह हो गया था, किन्तु गौना शेष था। एक दिन तीनों मित्र स्त्रियों की चर्चा कर रहे थे। ब्राह्मण कुमार ने स्त्रियों की प्रशंसा करते हुए कहा- 'नारीहीन घर भूतों का डेरा होता है।' धनिक पुत्र ने यह सुना तो तुरन्त ही अपनी पत्नी को लाने का निश्चय किया। माता-पिता ने उसे समझाया कि अभी शुक्र देवता डूबे हुए हैं। ऐसे में बहू-बेटियों को उनके घर से विदा करवा लाना शुभ नहीं होता। किन्तु धनिक पुत्र नहीं माना और ससुराल जा पहुंचा।ससुराल में भी उसे रोकने की बहुत कोशिश की गई, मगर उसने जिद नहीं छोड़ी। माता-पिता को विवश होकर अपनी कन्या की विदाई करनी पड़ी। ससुराल से विदा हो पति-पत्नी नगर से बाहर निकले ही थे कि उनकी बैलगाड़ी का पहिया अलग हो गया और एक बैल की टांग टूट गई। दोनों को काफी चोटें आईं फिर भी वे आगे बढ़ते रहे। कुछ दूर जाने पर उनकी भेंट

डाकुओं से हो गई। डाकू धन-धान्य लूट ले गए। दोनों रोते-पीटते घर पहूंचे। वहां धनिक पुत्र को सांप ने डस लिया। उसके पिता ने वैद्य को बुलवाया। वैद्य ने निरीक्षण के बाद घोषणा की कि धनिक पुत्र तीन दिन में मर जाएगा जब ब्राह्मण कुमार को यह समाचार मिला तो वह तुरन्त आया ।उसने माता-पिता को शुक्र प्रदोष व्रत करने का परामर्ष दिया और कहा- 'इसे पत्नी सहित वापस ससुराल भेज दें। यह सारी बाधाएं इसलिए आई हैं क्योंकि आपका पुत्र शुक्रास्त में पत्नी को विदा करा लाया है। यदि यह वहां पहुंच जाएगा तो बच जाएगा।' धनिक को ब्राह्मण कुमार की बात ठीक लगी। उसने वैसा ही किया। ससुराल पहुंचते ही धनिक कुमार की हालत ठीक होती चली गई। शुक्र प्रदोष व्रत करने से सभी प्रकार की समस्या का शमन हो जाता हैं।

7.शनि प्रदोष व्रत

शनि त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत शनि प्रदोष व्रत कहलाता हैं। जो भी इस शनि प्रदोष व्रत को नियमानुसार करता है वह बड़े बड़े संकटों से पार हो जाता है।

प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन-दौलत और वैभव से सम्पन्न था। वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहां से कभी कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी देखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दुखी थे। दुःख का कारण था- उनके सन्तान का न होना। सन्तानहीनता के कारण दोनों चिंता करते जा रहे थे। एक दिन उन्होंने तीर्थयात्र पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सोंप चल पडे। अभी वे नगर के बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े ।दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति-पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम और फिर रात हो गई, लेकिन साधु की समाधि नही टूटी। मगर सेठ पति-पत्नी धैर्यपूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत बैठे रहे। अंततः अगले दिन प्रातः काल साधु समाधि से उठे। सेठ पति-पत्नी को देख वह मन्द मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर बोले- 'मैं तुम्हारे अन्तर्मन की कथा भांप गया हूं वत्स! मैं तुम्हारे धैर्य और भक्तिभाव से अत्यन्त प्रसन्न हूं।' साधु ने सन्तान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शंकर भगवान की निम्न वन्दना बताई।

हे रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगगुरु नमस्कार ॥

हे नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चन्द्र सुख नमस्कार॥

हे उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार॥

ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार॥

तीर्थयात्रा के बाद दोनों वापस घर लौटे और नियमपूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र जो जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके घर पुत्र की प्राप्ति हो गयी जो विधि पूर्वक, श्रधा से शनि प्रदोष व्रत को करता हैं भगवान शंकर उनकी सभी मनोकामनाए पूर्ण करते हैं।

2.5 प्रदोष व्रत का पोराणिक महात्म्य

प्राय प्रदोष व्रत का उल्लेख पुराणों में प्राप्त होता है l प्रदोष व्रत करने से किन किन वस्तुओ की प्राप्ति होती है इस कथा के माध्यम से समझते हैं।

एक ग्राम में एक दीन-हीन ब्राह्मण रहता था। उसकी धर्मनिष्ठ पत्नी प्रदोष व्रत करती थी। उनके एक पुत्र था। एक बार वह पुत्र गंगा स्नान को गया। दुर्भाग्यवश मार्ग में उसे चोरों ने घेर लिया और डराकर उससे पूछने लगे कि उसके पिता का गुप्त धन कहां रखा है। बालक ने दीनतापूर्वक बताया कि वे अत्यन्त निर्धन और दुःखी हैं। उनके पास गुप्त धन कहां से आया। चोरों ने उसकी हालत पर तरस खाकर उसे छोड़ दिया। बालक अपनी राह होलिया। चलते-चलते वह थककर चूर हो गया और बरगद के एक वृक्ष के नीचे सो गया। तभी उस नगर के सिपाही चोरों को खोजते हुए उसी ओर आ निकले। उन्होंने ब्राह्मण-बालक को चोर समझकर बन्दी बना लिया और राजा के सामने उपस्थित किया।राजा ने उसकी बात सुने बगैर उसे कारावार में डलवा दिया। उधर बालक की माता प्रदोष व्रत कर रही थी। उसी रात्रि राजा को स्वप्न आया कि वह बालक निर्दोष है। यदि उसे नहीं छोड़ा गया तो तुम्हारा राज्य और वैभव नष्ट हो जाएगा। सुबह जागते ही राजा ने बालक को बुलवाया। बालक ने राजा को सच्चाई बताई। राजा ने उसके माता-पिता को दरबार में बुलवाया। उन्हें भयभीत देख राजा ने मुस्कुराते हुए कहा- 'तुम्हारा बालक निर्दोष और निडर है। तुम्हारी दरिद्रता के कारण हम तुम्हें पांच गांव दान में देते हैं। इस तरह ब्राह्मण आनन्द से रहने लगा। शंकर की कृपा से उसकी दरिद्रता दूर हो गई।

2.6 प्रदोष व्रत विधि, उद्धापन, शांति विधान

प्रदोष व्रत करने के लिये व्रती को त्रयोदशी के दिन प्रात: सूर्य उदय से पूर्व जागरण करना चाहिए. नित्यकर्मों से निवृत होकर, भगवान शंकर का स्मरण कर ध्यान करना चाहिए। इस व्रत को करने से पूर्व निराहार होकर इस व्रत को प्रारंभ करने का विधान हैं। सर्वप्रथम ईशान कोण की दिशा में किसी एकान्त स्थान में जाकर उस स्थान का परीक्षण कर पूजा के लिए प्रयोग करना चाहिए। पूजन स्थल को गंगाजल या स्वच्छ जल से शुद्ध करने के बाद, गाय के गोबर से लीपकर, मंडप तैयार किया जाता है. अब इस मंडप में पद्म पुष्प की आकृति पांच रंगों का उपयोग करते हुए बनाई जाती है।प्रदोष व्रत कि आराधना करने के लिये कुशासन का प्रयोग किया जाता है,इसी विधि विधान के साथ पूजन की तैयारियां कर उतर-पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठकर भगवान शंकर का पूजन करना चाहिए। पूजन में भगवान शिव के मंत्र "ऊँ नमः शिवाय" या वैदिक मंत्र का जप करते हुए शिव को जल की धारा देना चाहिए।इस व्रत को ग्यारह या फिर 26 त्रयोदशियों तक रखने के बाद व्रत का समापन करना चाहिए. इसे उद्धापन के नाम से भी जाना जाता है। उद्धापन करने की **विधि-**

सर्वप्रथम उद्यापन करने से पूर्व गणेश जी का ध्यान किया जाता हैं। विधि विधान से वैदिक तथा लोकिक मंत्रो के द्वारा षोडशोपचार पूजन करने का शस्त्रोक्त विधान हैं।इस व्रत को ग्यारह या फिर 26त्रयोदशियों तक रखने के बाद व्रत का समापन करना चाहिए. इसे उद्धापन के नाम से भी जाना जाता है।इस व्रत का उद्धापन करने के लिये त्रयोदशी तिथि का चयन किया जाता है. उद्धापन से एक दिन पूर्व श्री गणेश जी का पूजन किया जाता है. पूर्व रात्रि में कीर्तन करते हुए जागरण किया जाता है. प्रात: काल उठकर मंडप बनाकर, मंडप को वस्त्रों या पद्म पुष्पों से सजाकर तैयार किया जाता है।मंत्र की एक माला अर्थात 108 बार जप करना चाहिए हैं

तथा भगवान शंकर का षोडशो पचार से पूजन करना चाहिए।

पाद्यं

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (आचमन जल छोड़े।)

अर्घ्यं

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव॥

हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि अर्घ्य का जल छोड़े

आचमनं

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी आचमनके लिये जल समर्पित करे ।)

स्नानीय जलं

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
स्नानीयं जलं समर्पयामि

वस्त्र-

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।

आभूषणं -

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

अलङ्करणार्थ आभूषणानि समर्पयामि

गन्धं

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

पुष्पं

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

धूपं

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आत्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपं

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

नैवेद्यं

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

आचमनं

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ।।
मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी आचमनके लिये जल समर्पित करे ।

ताम्बूलं

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

स्तवपाठ

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ।।

इस प्रकार विधि विधान से पूजन कर भगवान शंकर की आरती कर पुष्पांजलि कर पूजन का समापन करना चाहिए l इस व्रत के करने से सभी प्रकार के दुखों का शमन हो जाता हैंl एक समय की बात हैंl सभी प्राणियों के हितार्थ परम् पुनीत गंगा के तट पर ऋषि समाज द्वारा एक विशाल सभा का आयोजन किया गया, जिसमें व्यास जी के परम् प्रिय शिष्य पुराणवेत्ता सूत जी महाराज हरि कीर्तन करते हुए पधारे। शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषि-मुनिगण ने सूत जी को दण्डवत् प्रणाम किया। सूत जी ने भक्ति भाव से ऋषिगण को आशीर्वाद दे अपना स्थान ग्रहण किया।ऋषिगण ने विनीत भाव से पूछा, "हे परम् दयालु! कलियुग में शंकर भगवान की भक्ति किस आराधना द्वारा उपलब्ध होगी? कलिकाल में जब मनुष्य पाप कर्म में लिप्त हो, वेद-शास्त्र से विमुख रहेंगे । दीनजन अनेक कष्टों से त्रस्त रहेंगेहे मुनिश्रेष्ठ! कलिकाल में सत्कर्मं में किसी की रुचि न होगी, पुण्य क्षीण हो जाएंगे एवं मनुष्य स्वतः ही

असत् कर्मों की ओर प्रेरित होगा। इस पृथ्वी पर तब ज्ञानी मनुष्य का यह कर्तव्य हो जाएगा कि वह पथ से विचलित मनुष्य का मार्गदर्शन करे, अतः हे महामुने! ऐसा कौन-सा उत्तम व्रत है जिसे करने से मनवांछित फल की प्राप्ति हो और कलिकाल के पाप शान्त हो जाएं ?" सूत जी बोले- "हे शौनकादि ऋषिगण! आप धन्यवाद के पात्र हैं। आपके विचार प्रशंसनीय व लोककल्याणकारी हैं। आपके हृदय में सदा परहित की भावना रहती है, आप धन्य हैं। हे शौनकादि ऋषिगण! मैं उस व्रत का वर्णन करने जा रहा हूं जिसे करने से सब पाप और कष्ट नष्ट हो जाते हैं तथा जो धन वृद्धिकारक, सुख प्रदायक, सन्तान व मनवांछित फल प्रदान करने वाला है।इसे भगवान शंकर ने सती जी को सुनाया था।"सूत जी आगे बोले- "आयु वृद्धि व स्वास्थ्य लाभ हेतु रवि त्रयोदशी प्रदोष का व्रत करें। इसमें प्रातः स्नान कर निराहार रहकर शिव जी का ध्यान कर पूजन करना चाहिए ।मन्दिर जाकर शिव आराधना करें। माथे पर त्रिपुण धारण कर , धूप, दीप, अक्षत व ऋतु फल अर्पित करें। रुद्राक्ष की माला से सामर्थ्यानुसार, ॐ नमः शिवाय' जपे। ब्राह्मण को भोजन कराएं और दान-दक्षिणा दें, तत्पश्चात मौन व्रत धारण करना चाहिए। संभव हो तो यज्ञ-हवन कराएं।'ॐ ह्रीं क्लीं नमः शिवाय स्वाहा' मंत्र से यज्ञ-स्तुति करे । इससे अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।प्रदोष व्रत में व्रती एक बार भोजन करे और पृथ्वी पर शयन करे। इससे सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। श्रावण मास में इस व्रत का विशेष महत्व रहता हैं। सभी मनोरथ इस व्रत को करने से पूर्ण होते है। हे ऋषिगण! यह प्रदोष व्रत जिसका वृत्तांत मैंने सुनाया, किसी समय शंकर भगवान ने सती जी को और वेदव्यास मुनि ने मुझे सुनाया था।"शौनकादि ऋषि बोले – "हे पूज्यवर! यह व्रत परम् गोपनीय, मंगलदायक और कष्ट को दूर करने वाला व्रत हैं।

2.7 प्रदोष व्रत मुहूर्त

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रदोष व्रत को शुभ मुहूर्त मैं किया जाना चाहिए। जिससे उसका पूरा फल प्रदोष व्रत करनेंवाले को प्राप्त हो सके, बिना मुहूर्त के कोई भी धार्मिक कार्य को करना अशुभ माना जाता हैं। शुभ मुहूर्त मैं कियागया कार्य हमेशा से शुभता को प्राप्त करता हैं। इस प्रदोष व्रत मैं भी पंचागादि, नक्षत्र योग ,करण तथा शुभ लग्न केद्वारा इस व्रत का विधान किया जाता हैं। त्रयोदशी तिथि सूर्यास्त से पूर्व 45 मिनट पहले प्रारम्भ हो जाता हैं। जोरात को 8-9, बजे तक रहता हैं। जिसे प्रदोष काल कहा जाता हैं।

प्रदोष काल

प्रदोष काल सूर्यास्त से 45मिनट पहले शुरू होता हैं। तथा 45मिनट बाद तक रहता हैं इस काल कोप्रदोष काल कहते हैं।यदि सूर्यास्त का काल 6.45है, तो प्रदोष काल का समय 5.58 से

शुरूहोजाता हैं, तथा इसकी समाप्ति 07.25, तक होगी प्रदोष काल की कुल अवधि 1.5घंटे की होती हैं। इसी शुभ काल मैं पूजन कर ब्रत का आरंभ करना चाहिए।

2.8 प्रदोष व्रत महत्व

प्रदोष व्रत करनेंसे आध्यात्मिक , सामाजिक, एवं भौतिक लाभ प्राप्त होते हैं। इसके साथ साथ आध्यात्मिकउन्नति के द्वारा सभी प्रकार के दूषित वातावरण, संगति, तथा अन्य दूषित तत्वों से हम सुरक्षित रहते हैं। जिससेहमें कोई भी अराजक तत्व स्पर्श न कर पाय सभी प्रकार के सुख को प्राप्त करनें के लिए प्रदोष व्रत के महत्व कोजानना और समझना आवश्यक होता हैं। इस प्रसंग मैं पद्मपुराण मैं चन्द्र देव से संबंधित कथानक को आप आगेसमझनें का प्रयास करें, पद्म पुराण के अनुसार चंद्रदेव जब अपनी 27 पत्नियों में से सिर्फ एक रोहिणी से ही सबसे ज्यादा प्रेम करते थे और बाकी 26 पत्नियोंसे असंतुष्ट रहते थे। जिसके चलते उन्हें उनके ससुर जी राजा दक्ष ने श्राप दे दिया था। शाप के चलते उन्हें कुष्ठ रोग हो गया था। ऐसे में अन्य देवताओं की सलाह पर उन्होंने शिवजी की आराधना की और जहां आराधना की वहीं पर एक शिवलिंग स्थापित कर दिया । शंकर ने प्रसन्न होकर उन्हें न केवल दर्शन दिए बल्कि उनका कुष्ठ रोग भी ठीक कर दिया। चन्द्रदेव का एक नाम सोम भी है। उन्होंने भगवान शिव को ही अपना नाथ-स्वामी मानकर यहां तपस्या की थी इसीलिए इस स्थान का नाम 'सोमनाथ' हो गया। कहा जाता है कि व्रत रखने से चंद्र अंतिम सांसें गिन रहे थे तभी भगवान शंकर ने प्रदोषकाल में चंद्र को पुनर्जीवन का वरदान देकर उसे अपने मस्तक पर धारण कर लिया अर्थात चंद्र मृत्युतुल्य होते हुए भी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए। पुनः धीरे- धीरे चंद्र स्वस्थ होने लगे और पूर्णमासी पर पूर्ण चंद्र के रूप में प्रकट हुए। प्रदोष में दोष' यही था कि चंद्र क्षय रोग से पीड़ित होकर मृत्युतुल्य कष्टों को भोग रहे थे। 'प्रदोष व्रत' इसलिए भी किया जाता है कि भगवान शिव ने उस दोष का निवारण कर उन्हें पुनःजीवन प्रदान किया अतः हमें उस की आराधना करनी चाहिए जिन्होंने मृत्यु को पहुंचे हुए चंद्र को मस्तक पर धारण किया था। प्रदोष काल में स्नान करके मौन रहना चाहिए, क्योंकि शिवकर्म सदैव मौन रहकर ही पूर्णता को प्राप्त करता है। इसमें भगवान सदाशिव का पंचामृत ,गंगाजल के द्वारा प्रातः तथा संध्या के समय अभिषेक कर पुष्पांजलि किया जाता है।

2.9 सारांश

इस प्रदोष व्रत नामक ईकाई मैं आपने प्रदोष व्रत क्या है प्रदोष व्रतको रखने क्या-क्या विधान हैं, प्रदोष व्रतक्षके रखनेसे क्या क्या लाभ प्राप्त होते हैं जीवन मैं इस व्रत को करनें के पश्चात् शारीरिक

स्वास्थ्य मैं कितना लाभ प्राप्तहो सकता हैं, इस विषय मैं आपने विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त की, तथा प्रदोष व्रत के प्रकार, पौराणिक महत्त्व,अलग-अलग मास मैं किये जाने वाले त्रयोदशी प्रदोष व्रत, प्रदोष व्रत का महत्व, व्रत, विधि, उद्यापन, शांतिविधान, प्रदोष व्रत परिचय इन सभी प्रकार के साधनों के माध्यम से प्रदोष व्रत किया जाता हैं। इस व्रत को करनेंकी विधि का उल्लेख हमारे धर्मग्रंथों मैं विस्तृत रुप मैं प्राप्त होता हैं। वेद, पुराण, धर्म ग्रंथों मैं इस व्रत कोकिसने किया था जिससे उसका लाभ सभी को प्राप्त हुआ। आज , सोमव्रत प्रदोष,करने से ब्राह्मणी का पुत्र था वहघायल अवस्था मैं होकर उसे कैसे स्वस्थ किया जाय तो सोम प्रदोष व्रत करनें वह स्वस्थ हो गया। भौम प्रदोष व्रतमैं मंगलिया नामक पुत्र के माध्यम से हनुमान जी के दर्शन होना, बुध प्रदोष के माध्यम से पति पत्नी के द्वारात्रयोदशी का व्रत करना, गुरु प्रदोष व्रत के द्वारा इन्द्र वृत्रासुर के युद्ध के पश्चात् इन्द्र ने वृत्रासुर को परास्त किया ,क्योंकि इन्द्र ने गुरुजी के आदेश पर गुरु प्रदोष व्रत किया था इसलिए वे विजयी हो गये, शुक्र अस्त मैघर से बाहरयात्रा पर न जाएं इसकी चर्चा कथानक के माध्यम से की गई हैं।संतान की प्राप्ति के लिए राजा ने शनिप्रदोष व्रत का विधि विधान से पूजन अर्चन किया जिसमें उनको पुत्र कीप्राप्ति हो गई थी। इसी प्रकार से इस प्रदोष व्रतके अलग अलग लाभ प्राप्त होते हैं। आप समझ रहे होंगे की इस व्रतको करनें से हमें सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।

2.10 पारिभाषिक शब्दावली

प्रदोष - सायंकाल किया जाने वाला व्रत

उपवास - निकट रहकर किया जानें वाला व्रत,

ज्ञ - बुध

पौराणिक - प्राचीन पुराणों मैं प्रदोष व्रत

मृदा। - मिट्टी

अन्तर्ध्यान - दिखाई न देना

पराजित - हारना

काल - समय,

2.11 अभ्यास प्रश्न

1. प्रदोष काल कब होता हैं।
2. प्रदोष व्रत के प्रकार हैं।
3. प्रदोष व्रत करनें के लिए सर्वप्रथम क्या होना चाहिए।

4. शनि प्रदोष व्रत करनें से किसकी प्राप्ति होती हैं।
5. गुरु प्रदोष करनें सें कोन विजयी हुआ।
6. प्रदोष व्रत के मुख्य देव कोन हैं।
7. प्रदोष शांति के लिए किन मंत्रों का उच्चारण किया जाता हैं।

2.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.सूर्यास्त से 45मिनट पूर्व

2.मुख्य रूप से 7प्रकार

3.दिनचर्या का निश्चय होना

4.पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

5. इन्द्र।

6.भगवान् शंकर

7.वैदिक मंत्रों का।

2.13 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. व्रत परिचय

2. स्कंध पुराण

3. पद्मपुराण

2.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रदोष व्रत का परिचय देते, विस्तार पूर्वक इसका उल्लेख कीजिए।
2. प्रदोष व्रत का पौराणिक महत्व क्या हैं, कथानक के द्वारा प्रकाश डालिए।
3. व्रत विधि, उद्यापन, शांति विधान का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. प्रदोष के कितने प्रकार हैं, इन सभी का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
5. प्रदोष व्रत का शुभ काल, क्या हैं, विस्तृत वर्णन कीजिए।

इकाई - 3 गणेश चतुर्थी व्रत

इकाई की संरचना –

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 गणेश जी का सामान्य परिचय

3.4 गणेशाम्बिका षोडशोपचार पूजन

3.5 गणेश चतुर्थी व्रत कथा

3.6 सारांश

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई व्रत परिचय नामक पुस्तक के तृतीय खण्ड के तृतीय इकाई गणेश चतुर्थी व्रत के नाम से है| व्रत, धर्म का साधन माना गया है। संसार के समस्त धर्मों ने किसी न किसी रूप में व्रत और उपवास को अपनाया है। व्रत के आचरण से पापों का नाश, पुण्य का उदय, शरीर और मन की शुद्धि,अभिलषित मनोरथ की प्राप्ति और शांति तथापरम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। गणेश चतुर्थी विघ्नहर्ता और बुद्धि के देवता भगवान गणेश के जन्म का उत्सव है। उन्हें नई शुरुआत और समृद्धि के देवता के रूप में भी पूजा जाता है। भक्त अपने प्रयासों में सफलता और अपने जीवन से बाधाओं को दूर करने के लिए भगवान गणेश से प्रार्थना करते हैं| इस इकाई में गणेश चतुर्थी व्रत के बारे में समझाने का प्रयास किया गया है|

3.2 उद्देश्य

- ❖ गणेश चतुर्थी के महत्व को समझ सकेंगें|
- ❖ गणेश चतुर्थी व्रत विधि को जान पायेंगे|
- ❖ गणेश जी को अग्रपूज्य क्यों कहा जाता है, इसे समझ सकेंगें|
- ❖ गणेश चतुर्थी की व्रत कथा को समझने में सहायक हो सकेंगें|

3.3 गणेश जी का सामान्य परिचय

मनुष्य को पुण्य के आचरण से सुखऔर पाप के आचरण से दुख होता है। संसार का प्रत्येक : प्राणी अपने अनुकूल सुख की प्राप्ति और अपने प्रतिकूल दु:ख की निवृत्ति चाहता है। मानव की इस परिस्थिति को अवगत कर त्रिकालज्ञ और परहित में रत ऋषिमुनियोंने वेद, पुराण, स्मृति और समस्त निबंधग्रंथों को आत्मसात् कर मानव के कल्याण के हेतु सुख की प्राप्ति तथा दुख की निवृत्ति के लिए : अनेक उपाय कहे हैं। उन्हीं उपायों में से व्रत श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय हैं। व्रतों के विधान करनेवाले ग्रंथों में व्रत के अनेक अंगों का वर्णन देखने में आता है।भगवान गणेश को बुद्धि का देवता माना जाता है। हिंदू धर्म में किसी भी नए काम को प्रारंभ करने से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है। माना जाता है कि भगवान गणेश की पूजा करने के बाद प्रारंभ होने वाला कार्य हर हाल में पूरा होगा। भगवान शिव व माता पार्वती के पुत्र गणेश को विघ्नहर्ता भी कहा जाता है। मान्यता है कि मनुष्य जब भी किसी संकट में फंसता है और सच्चे मन से भगवान गणेश को याद करता है तो उसका संकट टल जाता है।

गणेश शब्द का अर्थ होता है जो समस्त जीव जाति के ईश अर्थात् स्वामी हो। गणेश जी को विनायक भी कहते हैं। विनायक शब्द का अर्थ है विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्य के आरम्भ जिस देवता का पूजन से होता है, वही विनायक हैं। गणेश चतुर्थी के पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्त्व

है।गणेश गजवदन, विनायक, लम्बोदर आदि अनेक नामों से विख्यात हैं। गणेश हमारे राष्ट्रीय आदर्श तो है ही, देवकार्य या मांगलिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा और सर्वत्र अग्रपूज्य भी हैं और यदि इस अग्रपूज्यता को हम प्रकारान्तर से नेतृत्वकर्ता या गणों का स्वामी मानें तो हमारे सामने श्रीगणेश के गणपति होने का रहस्य भी प्रकट होता है। अर्थात् गणपति का नाम गणेश का पर्याय क्यों है? इसलिए कि वे गणों के स्वामी हैं।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥

अर्थात् जो इस सृष्टि के आदि में प्रकट है, प्रकृति पुरुष से परे है, ऐसे गणपति का ध्यान करने वाले योगी तो समस्त योगियों में भी श्रेष्ठ हैं। गणों को यदि हम सत्. चित् और आनन्द के तीन वर्षों में विभक्त करते हैं तो इनका संयुक्त सच्चिदानन्द ही गणपति है। तीनों गणों के पति या रक्षक से विभूषित तत्त्व ही गणपति है। इस प्रकार के गणपति सत्ता, ज्ञान और सुख के अधिष्ठाता है। जाग्रत, स्वप्न या सुषुप्तावस्था जैसी परिस्थिति से परे पुरुष जो समस्त परिस्थतियों में है भी और नहीं भी है, अर्थात् निर्विकार समाधिस्थ है, वही गणों का पति या गणपति है। कुर्यावस्था में स्थित ब्रह्म जो परा, पश्यन्ती और मध्यमा का दृष्टा है, त्रिभुवन अर्थात् पृथ्वी, अन्तरिक्ष और अनन्त स्वर्ग का पति है, वही गणेश या गणपति है। भागवतकार का कधन 'ब्रह्माद्वयं शिष्यते' (10/4/18) अर्थात् ब्रह्मा ही उपक्रम और पर्यावसान है। इसी के लिये तुलसीदास ने मंगलाचरण में लिखा है-

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्तारी वन्दे वाणी विनायकौ ॥

छन्द शास्त्र के आठ गणों मगंण, जगण, सगण, यगण, रगण, तगण, भगण और नगण इनके आठ विनायक ही **'अष्टौ विनायकाः'**वास्तव में गणपति हैं। एकमात्र अधिपति होने के कारण यही गणपति तथा महागणपति है। कठश्रुति का कथन **'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति'**भी तभी सम्भव है जब समस्त वेद उसी ऊँकार स्वरूप का बारम्बार स्मरण करते हों, तीनों गण-देवगण, मनुष्यगण और राक्षसगण का स्वामी भी गणेश है। ऐसी हमारे ज्योतिषशास्त्र की स्वीकारोक्ति है। ऋग्वेद में वर्णन है कि सत्ता एक ही है और उसी का वर्णन प्रकारान्तर से भिन्न-भिन्न रूपों में है, अर्थात् एकता का सर्वोत्तम प्रदर्शन अनेकता का एकता में दर्शन, वही हमारे शास्त्रों-पुराणों का परम लक्ष्य भी है।

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहूरयोदिव्यः स सुवर्णा गरुत्मान् ।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्यग्नि यमं मातारिश्वानमाहुः ॥

गणेश जी के गजतुण्ड, एकदन्त, गणमुख, वक्रतुण्ड आदि होने केभी दिलचस्प कथानक हमारे पुराणों में वर्णित हैं। तैत्तिरीय आरण्यक के 10वें प्रपाठ के प्रथम अनुवाक में प्रयुक्त मन्त्र जिसे गणेश गायत्री का सम्बोधन भी प्राप्त है, उपरोक्त विश्लेषण से युक्त है-

ॐतत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डायचीमहि । तन्नोदन्ती प्रचोदयात् ॥

महाकवि कालिदास ने गणेश जी के आविर्भाव के सम्बन्ध में वर्णन 'चिद्गगन चन्द्रिका' में इस प्रकार किया है-

क्षीरोद पौर्णमासीशशवर इव यः प्रस्फुरनिस्तरंग।
चिद्धयोम स्कारनादं रुचि विसरलप्साद्विन्दुः वक्रोर्मिलमालम्।
आद्यस्पन्दस्वरूपः प्रपयति सकृदोंकार शुण्डः क्रियादृग।
दन्त्यास्यो यं हठाद्रवः शमयतु दुरितं शक्तिजनमा गणेशः।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार गणेश जी के जन्म के पश्चात् गणेश जी पर शनिश्चर का दृष्टिपात होने से उनका सर धड़ से अलग हो गया और विष्णु ने तत्काल उपलब्ध हाथी का सर काटकर उनके धड़ भाग से संयोजित कर दिया। इसी कारण उनका नाम 'गजानन' हो गया। इसी पुराण कथा के अनुसार एक बार जब परशुराम जी शिव-पार्वती के दर्शन के लिये कैलाश गये तब गणेश जी निदित माता-पिता के सुरक्षार्थ रक्षक तथा पहरेदार रूप में कार्यरत थे और प्रवेश से उन्होंने परशुराम जी को रोका, जिस पर हुए संघर्ष में परशुराम के फरसे से गणेश जी का दाँत टूट गया और गणेश जी एकदन्त हो गये। गणेश जी के जन्म की एक अन्य कथा के अनुसार पार्वती ने स्नान करते समय उबटन व मृत्तिका से एक मूर्ति का निर्माण किया और प्राण फूंकने पर वह बालक गणेश हो गये। इसी समय शिव वहाँ आये, किन्तु बालक गणेश ने उन्हें रोक दिया। जिस पर शिव ने बालक का सर काट दिया किन्तु पार्वती के द्वारा सत्य जानने के पश्चात् दक्षिण की ओर निद्रित उपलब्ध गज का सिर धड़ से जोड़कर उसमें प्राणों की प्रतिष्ठापना करने के फलस्वरूप गजमुख बालक गणेश का गजानन में रूपान्तरण हो गया। बौद्ध मतावलम्बी श्वेत-गज की धार्मिक सत्ता को स्वीकार करते हैं। गिरनारवाली धर्मलिपि में तेरहवें प्रज्ञापन के नीचे '**श्वेतो हस्ती सर्वलोकखुखाहरोनाम**'उत्कीर्ण है, क्या यह गजानन या गणेश के लिये नहीं है ?

समाधि से योगी जिस तत्त्व को प्राप्त करते हैं, वह 'ग' है और जिस प्रकार से बिम्ब के द्वारा प्रतिबिम्ब का निर्माण होता है, वैसे ही कार्यकरण- स्वरूप प्रणवात्मक प्रपंच है, जिससे 'ज' होता है और **'समाधिनो योगिनो यत्र गच्छन्ति इति 'ग' तथा यस्माद् बिम्ब प्रतिबिम्बवत्तया प्रणवात्मक जगउजायते इति 'द' तथा जन्माद्यस्थ यतः यस्मादोंकार सम्भूर्तिर्यतो वेदो यतोजगत् इत्यादि वचन इनके पोषक हैं। श्रीमद्भगवद् गीता के कथन 'प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति'** (3/33) के अनुसार समस्त जीवन अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार ही कार्य प्रवृत्त होते हैं और गणेश की प्रकृति के सम्बन्ध में कथन है कि विष्णु, देवी, दुर्गा, सूर्य, शिव और गणेश पंचतत्त्व अधिष्ठाता है जिसमें गणेश को जल तत्त्व काअधिष्ठाता बताया है

आकाशस्याधियो विष्णुरानेश्चैव महेश्वरी
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः॥

गणेश जी का पादादि कण्ठपर्यन्तदेह 'नरदेह' है और कण्ठादि- मस्तकपर्यन्त 'गजस्वरूप' है। गणेश जी 'एकदन्त हैं, जिसमें 'एक' शब्द 'माया' और दन्त शब्द 'मयिक' बोधक है।

एकशब्दात्मिका माया तस्याः सर्व समुद्भवम् ।
दन्तः सत्तावरस्तत्र मायाचालक उच्यते ।

सन्त ज्ञानेश्वर ने गणेश जी का निरूपण वेदों से वर्णनयीय आदिरूप, बुद्धि प्रकाशक, वेदाक्षर, पुरागमणि भूषण, भुजाओं का षड्दर्शन रूप, तर्कशास्त्री, परशुरूपा, न्यायशास्त्री, अंकुशरूपा, धर्मप्रतिष्ठापक आदि करते हुए कहा है कि आप विघ्नशमक, सूक्ष्मदर्शी हैं। इसी प्रकार पद्मपुराण के अनुसार गणेशजी को समस्त विघ्नों को शान्त करने वाले, परमबुद्धिमान, ज्ञान-विज्ञान के प्रदाता दैत्यसंहारक, प्रसन्नता-धन-यश कीर्ति के उत्थापक, यज्ञ रक्षक और मनोरथों को पूर्ण करने वाले बताया गया है। यजुर्वेद (3/57) के अनुसार गणेश का वाहन 'मूषक' प्राणियों के समस्त भोग्यपदार्थों को हरण करके भी पाप-पुण्यरहित है। वैसे ही माया भी सर्वान्तर्यामी और सर्वभोग्य भोग्या होने के बाद भी पुण्यपाप वर्जित है।

3.4गणेशाम्बिकाषोडशोपचार पूजन

गणेश गौरी पूजन

हाथ में अक्षत लेकर-भगवान् गणेश का ध्यान-
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

गौरी का ध्यान –

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

गणेश का आवाहन-

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहेप्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहेनिधीनां त्वा
निधिपतिँहवामहेवसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।
एह्योहिहेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष !।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

हाथ के अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें।
पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

गौरी का आवाहन –

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।
ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु।विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ।।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। !
प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।
आसान के लिए पुष्प समर्पित करें।
"ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनञ्च मया दत्त गृहाण परमेश्वर ।
आसनं समर्पयामि ॥"
आचमनी से चरणों को धोने के लिए जलं समर्पित करें।ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।
पाद्यं समर्पयामि ॥गन्ध पुष्प अक्षत युतं जलं तीन बार समर्पित करें।ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
करुणां कुरु मे देव गृहाणायं नमोऽस्तुते ॥

आचमनीयम्

ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।
आचमनीयं समर्पयामि ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥
एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

पञ्चामृतस्नान -ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय
पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

आचमन -शुद्धोकदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र-ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रां समर्पयामि।

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।
वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
वस्त्र के बाद आचमन के लिए जल दे।

उपवस्त्र-ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो॥
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मापकारकम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।
उपवस्त्र न हो तो रक्त सूत्र अर्पित करे।

आचमन - उपवस्त्र के बाद आचमन के लिये जल दें।

यज्ञोपवीत -ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीततेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

आचमन -यज्ञोपवीत के बाद आचमन के लिये जल दें।

चन्दन -ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षत -ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला -ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा -ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर-ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य-ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं
परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर!।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य-ॐ अहिरिव0 इस पूर्वोक्त मंत्र से चढ़ाये
ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप-ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वद्दितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।।
ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन -'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य-पुष्प चढ़ाकर बायीं हाथ से पूजित घण्टा बजाते हुए।
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल -ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

जल-फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।जल अर्पित करे।

ॐ मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।

करोद्वर्तन-ॐ अ ँ शुना ते अ ँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।
चन्दनं मलयोद्भुतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल -ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।
(इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

विशेषार्घ्य-ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-
ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रौलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्ि छतं वाञ्छितार्थद।।
गृहाणाघ्र्यमिमं देव सर्वदेवनमस्कृतम्।
अनेन सफलाघ्र्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

3.5 गणेश चतुर्थी व्रत कथा

श्रीगणेश उवाच ।। भद्रे भाद्रपदे मासि सङ्कष्टी या चतुर्थिका । अनेकफलदा प्रोक्ता सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।।२।।

पूजा पूर्वविधानेन तस्यां कार्य्या समन्ततः । विशेषस्तु प्रवक्ष्यामि भोजनादिषु पार्वति ।।३।।

श्रीकृष्ण उवाच एवं निगदिते पुत्रे पुनः पप्रच्छ पार्वती । को विशेषः प्रकर्त्तव्यः पूजने भोजनेषु च ।।४।।

श्रीगणेश उवाच ।।५रर्चयेत् ।। -नामभिगुरूपदिष्टमार्गेण भत्त्या तव्रतमाचरेत् । द्वादशेष्वपि मासेषु पृथा - विनायकश्चैकदन्तः कृष्णपिङ्गो गजाननः । लम्बोदरो भालचन्द्रो हेरम्बो विकटस्तथा ।।६।।

वक्रतुण्डश्चाखुरथो विघ्नराजो गणाधिपः । द्वादशैर्नामभिश्चैतैर्गणेशं पूजयेद् व्रती ।।७।।

द्वादशेष्वपि मासेषु पूज्यते नामभिः पृथक् ।। चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय नित्यकृत्यं यथोदितम् ।।८।।

नलो ह्यासीत्कृतयुगे पुण्यश्लोको नराधिपः । तस्य रूपवती भार्य्या दमयन्तीति विश्रुता ।।९।।

तस्य देववशाच्छापः स्त्रीवियोगविषादकृत् । तदा देव्या कृतं हौतद् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ।।१०।।

पार्वत्युवाच केन वै विधिना पुत्र दमयन्ती व्रतोत्तमम् । चकार भूपतिं लेभे तृतीये मासि शोभना ।।११।।

श्रीकृष्ण उवाच एवं निगदितः पार्थ पार्वत्या गणनायकः। प्रोवाच वचनं श्रीमान् विस्तरेण शृणुष्व तत् - ।।१२।।

श्रीगणेश उवाच मातर्नलस्य भूपस्य विपत्तिर्विपुलाभवत् ।। गजाश्च गजशालायां मन्दुरायां तथा हयाः ।।१३।।

कोशस्तु तस्करैर्नीतो गृहं दग्धं कृशानुना। मन्त्रिणोऽपि गतास्तस्य राजकार्यविनाशकाः ।।१४।।

अक्षक्रीडनकेनैव राजा सर्वहृतोऽभवत्।। भग्नदेशस्ततो राजा स्वपुरान्निर्गतो वनम् ।।१५।।

दमयन्त्या समं तत्र नानाक्लेशैश्च पीडितः ।। तत्रापि दमयन्ती च वियोगं प्राप दैवतः ।।१६।।

कस्मिश्चिन्नगरे राजा भृत्यभावं समागतः ।। कस्मिश्चिद्विषये भार्यां कस्मिश्चिद्विषये सुतः ।।१७।।

भिक्षाशिनस्तु ते सर्वे नानाव्याधिप्रपीडिताः । स्वकर्मभोगान् भुञ्जानः परस्परं वियोगिनः ।।१८।।

एकदा दमयन्ती सा शरभंङ्ग महामुनिम् । प्रणम्य पादयोर्मूर्ध्वा बद्धाञ्जलिरभाषत ।।११।।

दमयन्त्युवाच कथं भो मत्पतिप्राप्तिः पुत्रप्राप्तिः कथं भवेत् । कथं गजहयान् राज्यं नगरं नृभिराकुलम् ।।२०।।

कथमेतादृशं भाग्यं मुने तद्वद निश्चितम्। गणेश उवाच इति तस्या वचः श्रुत्वा शरभङ्गोऽब्रवीद्वचः ।।२१।।

शरभङ्ग उवाच दमयन्ती शृणु वचो वक्ष्यामि हितकारकम्-। महासङ्कष्टशमनं सर्वकामप्रदं शुभम् ।।२२।।

भाद्रमासस्य या कृष्णाचतुर्थी सङ्कटा तु सा। तस्यां पूज्यो नरैः स्त्रीभिरेकदन्तो गजाननः ॥ २३ ॥
पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीत्या च श्रद्धया। व्रतेनानेन भो देवि लब्धकामा भविष्यति ॥ २४॥
मुनिमासैर्महाराजमिति मे निश्चला मतिः । गणेश उवाच तदा चक्रे सङ्कष्टव्रतमुत्तमम् । भाद्रे दमयन्ती - ॥२५मासि कृतारम्भा गणनाथार्चने रतिः ॥
सप्तमासैः पतिं प्राप्यं राज्यं पुत्रं तथैव च । तथैव सुपदं राजा कृत्वा चैव व्रतोत्तमम् ॥२६॥
श्रीकृष्ण उवाच तथा पार्थ व्रतादस्माद्राज्यं प्राप्स्यसि निश्चितम् । वैरिणस्ते पराभूता भविष्यन्ति विशेषतः ॥२७॥
इति ते कथितं भूप -॥ इति श्रीस्कन्द२८व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ करिष्यति महाभागं सर्वदुःखनिवारणम् ॥ !

हिंदी व्याख्या

गणेश व्रत की संक्षिप्त कथा भाद्रपद कृष्ण गणेशचतुर्थी व्रत की कथा प्रारम्भ करते हुए गणेश जी अपनी माता पार्वती जी से कहते हैं कि हे भद्रे। भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी संकष्ट चतुर्थी के नाम से प्रसिद्ध है। सर्वसिद्धि- प्रदायिनी इस चतुर्थी तिथि में विधानपूर्वक गणेशपूजन तथा व्रत करने के अनेक शुभफल प्राप्त होते हैं। माता पार्वती ने इस व्रत की विशेषता के सम्बन्ध में पुनः प्रश्न किया। गणेशजी ने कहा कि गुरु परम्परा से बताये हुए कर्म द्वारा भक्तिपूर्वक इस व्रत का आचरण करना चाहिए और हर महीने पृथक् पृथक् नामों से मेरी अर्चना करनी चाहिए। वे नाम क्रमशः १ विनायक २ एकदन्त ३कृष्णपिंग ४ गजानन ५ लम्बोदर ६ भालचन्द्र ७ हेरम्ब ८ विकट ९ वक्रतुण्ड १० आखुरथ ११ विघ्नराज १२ गणाधिप हैं। प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी के दिन प्रातःकाल नित्य क्रिया सम्पादित करने के अनन्तर पूजन तथा व्रत आरम्भ करना चाहिए ।

दृष्टान्त रूप में गणेशजी ने कहा कि सतयुग में नल नाम के प्रतापी राजा थे और उनकी परम रूपवती पत्नी दमयन्ती थी। भाग्यवश किसी के शाप से स्त्री से वियोग हो गया और उनकी पत्नी ने इस व्रत के प्रभाव से अपने पति को पुनः प्राप्त किया ।

जगदम्बा पार्वती ने पुनः प्रश्न किया कि हे पुत्र । दमयन्ती ने किस विधि से उत्तम व्रत का सम्पादन किया और ७वें महीने में अपने पति को प्राप्त किया। अपनी माता के प्रश्न को सुन कर गणेश जी ने कहा कि हे माता। राजा नल दैवयोग से घोर विपत्ति में पड़ गये। हाथी-घोड़े, धन-सम्पत्ति आदि चल-अचल सभी वस्तुओं का नाश हो गया। मन्त्री लोग छोड़कर चले गये। द्यूत क्रीड़ा में हारे हुए व्यक्ति के समान राजा भी सब कुछ खो चुके थे और अपने राज्य को नष्ट हुआ जानकर समय व्यतीत करने हेतु दमयन्ती के साथ वन को चले गये। जंगल में राजा अनेक प्रकार की यातनायें भोगते रहे और अन्त में अपनी पत्नी दमयन्ती से भी उनका वियोग हुआ। राजा किसी नगर में जीविकार्थ भृत्यभाव को प्राप्त हुए और पत्नी तथा पुत्र भी किन्हीं अन्य नगरों में भिखारी बनकर नाना प्रकार के कष्ट उठाने लगे। परस्पर वियोगी होकर वे अपने कर्मों का फल भोगने लगे। संयोगवश सहसा दमयन्ती का शरभंग ऋषि से साक्षात्कार

हुआ। दमयन्ती ने उन्हें प्रणाम कर नम्रता पूर्वक पूछा कि ऋषिराज कृपाकर बताइए कि मेरे पति तथा पुत्र किस उपाय से प्राप्त होंगे। साथ ही राज्यधन-सम्पत्ति की किस उपाय से प्राप्ति सम्भव है। इसके अतिरिक्त यह भीबताइये कि क्यों भाग्य ने मुझको इस गति में पहुँचाया ।

गणेशजी कहते हैं कि हे माता! दमयन्ती के वचनों के सुनकर शरभङ्ग ऋषि ने कहा कि हे दमयन्ती! सुनो मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से कहता हूँ। भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी जो संकष्ट चतुर्थी के नाम के व्रत से विख्यात है। यह व्रत महासंकट को मिटानेवाला और सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। इस दिन पुरुष या स्त्री भक्ति पूर्वक श्रद्धा से एकदन्त गजानन का पूजन करने से सात माह के अन्दर ही इच्छानुसार फल प्राप्त करते हैं। गणेशजी ने पुनः कहा कि दमयन्ती ने इस संकष्ट व्रत को भाद्रपद मास से आरम्भ किया और सात माह में अपने पति पुत्र तथा राज्य कोप्राप्त कर लिया ।

इस प्रकार से कथा को पड़ने या सुनने के उपरांत आरती व मन्त्रपुष्पांजली करनी चाहिये|

आरती-ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अरार्तिकं समर्पयामि।
(कर्पूर की आरती करें, आरती के बाद जल गिरा दें।)

मन्त्र पुष्पांजलि-अंजली में पुष्प लेकर खड़े हो जायें।
ॐ मालतीमल्लिकाजाती- शतपत्रादिसंयुताम्।
पुष्पांजलिं गृहाणेश तव पादयुगार्पितम्।।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रा पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा -ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना।।विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गः परिवारः प्रीयताम्।।
श्रीविघ्नराजप्रसादात्कर्तव्यामुककर्मनिर्विघ्नसमाप्तिश्चास्तु।

बोध प्रश्न -

1. कथा के अनुसार गणेश जी के कितने नाम हैं|
2. षोडश का अर्थ है|
3. इस इकाई के अनुसार कितनी अवस्थाएँ मानी गयी हैं|
4. गणेश जी का पादादि कण्ठपर्यन्त कौन सा देह है
5. कथा में किस-किस का आपस में संवाद है|

3.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई के माध्यम से हमने यह समझाने का प्रयास किया है, किइसका व्रत किस प्रकार से करना चाहिये| और क्या-क्या विधान इसको करने का है|इस इकाई के द्वारा आप गणेश जी को प्रथम पूज्य क्यों कहा जाता है, इसे आसानी से समझ सकते हैं| व्रत हमारे सनातन संस्कृति का एक अहम हिसा है, जिसके द्वारा हम अपने आराध्य देव को प्रसन्न करने के लिये उस दिन निराहार रहकर उनका पूजन,अर्चन व वन्दन किसी मनोकामना पूर्ति के लिये करते है,तो वह व्रत की श्रेणी में आता है| व्रत को आप किस देवता की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये व किस कार्य सिद्धि के लिये करते है,यह उस कार्य पर निर्भर करता है| इस इकाई में हमने जो समस्त विघ्नों को हरने वाले व सभी सिद्धियों के दाता गणेश जी के चतुर्थी व्रत के बारे में चर्चा की है, तथा उनके व्रत कथा को भी इस इकाई में जोड़ा गया है|हमे आशा है की छात्र इसे पड़के अपनी शंकाओं का समाधान निकाल सकते है|

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. 12
2. 16

3. 3 (जाग्रत, स्वप्न या सुषुप्तावस्था)
4. नरदेह
5. गणेश जी वा माता पार्वती जी का

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

व्रतराज, खेमराज श्रीकृष्णदास अकादमी प्रकाशन, बम्बई-4.
निर्णय सिन्धु, पं. ज्वाला प्रसाद मिश्रा, व्याख्याकार खेमराज, श्रीकृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई, 2012
धर्मसिन्धु, काशीनाथ उपाध्याय, साई सतगुरू पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1986
नित्यकर्म पूजाप्रकाश पं लालविहारी मिश्र गीताप्रेस गोरखपुर
कर्मठ गुरुः पं मुकुन्द बल्लभ मोतीलाल वनारसीदास , वाराणसी
पर्व विवेक, प्रो प्रियव्रत शर्मा, अभिजीज प्रकाशन, सैक्टर-6, पचकुला

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1 गणेश चतुर्थी व्रत के कथा का वर्णन करें।

2 गणेश जी की षोडशोपचार पूजन विधि का वर्णन कीजिये|

इकाई - 4 पूर्णिमा का व्रत

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 पूर्णिमा का व्रत परिचय

4.4 सारांश

4.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 तृतीय सेमेस्टर से सम्बन्धित है। पूर्व के इकाई में आपने विभिन्न व्रत-पर्वों के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप पूर्णिमा के व्रत का अध्ययन करने जा रहे है। शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को पूर्णिमा कहा जाता है और इस दिन किया जाने वाला व्रत पूर्णिमा का व्रत कहलाता है। प्राय: यह व्रत सायंकालीन चन्द्रमा को देखकर उनकी पूजा करके ही किया जाता है।

आइए हम सभी तिथिपरक व्रतों के अन्तर्गत पूर्णिमा तिथि के व्रत का अध्ययन करते हैं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- पूर्णिमा तिथि का व्रत कैसे करते है।
- पूर्णिमा तिथि में किस देवता का पूजन किया जाता है।
- पूर्णिमा तिथि की व्रत-विधि क्या है।
- पूर्णिमा तिथि व्रत का महत्व क्या है।
- पूर्णिमा तिथि का व्रत क्यों करना चाहिये।

4.3 पूर्णिमा का व्रत परिचय

शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि का नाम 'पूर्णिमा' है। पूर्णिमा तिथि में किए जाने वाले प्रमुख व्रत का नाम है- पूर्णिमा व्रत, वटसावित्री व्रत, गोपद्मव्रत, कोकिला व्रत, रक्षाबन्धन, उमामाहेश्वर व्रत, कोजागर व्रत, कार्तिकमासव्रत का उद्यापन, होलीकोत्सव आदि। प्राय: प्रत्येक शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि अर्थात् पूर्णिमा का व्रत धारण कर दिन भर के उपवास के पश्चात् सायंकाल चन्द्रदर्शन-पूजन कर व्रत को सम्पन्न किया जाता है। किन्तु उन पूर्णिमा व्रतों में भी शरद पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा तथा फाल्गुन पूर्णिमा आदि का विशेष महत्व होता है।

पूर्णिमा व्रत – चैत्र मास की पूर्णिमा सामान्य निर्णय से परा अर्थात् बाद की ही ग्रहण करनी चाहिये। इस व्रत में निर्णयामृत में विष्णुस्मृति के वाक्यों से कुछ विशेष लिखा है कि चैत्री पूर्णिमा चित्रानक्षत्र से युक्त हो तो रंगे हुए वस्त्र दान करने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। ब्राह्मपुराण में लिखा है कि यदि चैत्र का

शनि, रवि, और गुरुवार हो तो उसमें स्नान तथा श्राद्धादि कर्म करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। वैशाखी पूर्णिमा के विषय में भविष्य पुराण में कुछ विशेष कहते हुए कहा गया है कि वैशाखी, कार्तिकी और माघी पूर्णिमा तिथि अत्यन्त श्रेष्ठ है। अत: इन व्रतों को अवश्य करना चाहिये।

गोपद्मव्रत – यह व्रत आषाढ़ पूर्णिमा के दिन होता है। इसमें मुख्यत: भगवान नारायण का पूजन किया जाता है।

श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को भद्रारहित काल में रक्षाबन्धन व्रत का विधान है यह भविष्य पुराण में लिखा है। कृष्ण के वचन के अनुसार श्रावण की पूर्णिमा तिथि को प्रात:काल सूर्योदय के समय श्रुति और स्मृतियों के विधान के अनुसार स्नान करना चाहिये। गंगा जल से देव और पितरों का तर्पण करना चाहिये। यदि फाल्गुन की पूर्णिमा हो तब रात को भद्रा के अवसान में होलिका जलानी चाहिये। यदि पूर्व दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा न रहती हो अथवा उसके रहने पर भद्रा बिना समय न मिले एवं दूसरे दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा न हो तो भद्रा की पुच्छ में अग्नि देकर होलिका जलानी चाहिये। फाल्गुन मलमास में हो तो शुद्ध मास होने पर होली पर्व का आचरण करना चाहिये।

पूर्णिमा तिथि को व्रत धारण करके पंचोपचार अथवा षोडशोपचार विधि से पूजन करके भगवान नारायण की उपासना करनी चाहिये। कतिपय आचार्यों के मतानुसार पूर्णिमा तिथि को भगवान सत्यनारायण की पूजा तथा व्रतकथा श्रवण करने का विधान भी बतलाया गया है। आज भी ग्रामीण अथवा नगरीय परिवेश में पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा कहलवाने का विधान प्रचलित है।

पूर्णिमा व्रत कथा –

द्वापर युग में एक समय की बात है कि यशोदा जी ने कृष्ण से कहा हे कृष्ण! तुम सारे संसार के उत्पन्नकर्ता, पोषण तथा उसके संहारकर्ता हो, आज कोई ऐसा व्रत मुझसे कहो, जिसके करने से मृत्युलोक में स्त्रियां को विधवा होने का भय न रहें तथा यह व्रत सभी मनुष्यों की मनोकामना पूर्ण करने वाला हो। श्री कृष्ण कहने लगे हे माता! तुमने अति सुंदर प्रश्न किया है। मैं तुमसे ऐसे ही व्रत को सविस्तार कहता हूं। सौभाग्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को द्वात्रिंशत् अर्थात बत्तीस पूर्णिमाओं का व्रत करना चाहिए। इस व्रत को करने से स्त्रियों को सौभाग्य संपत्ति मिलती है। यह व्रत अचल सौभाग्य को देने वाला और भगवान शंकर के प्रति मनुष्य मात्र की भक्ति को बढ़ाने वाला है। यशोदा जी कहने लगीं हें कृष्ण सर्वप्रथम इस व्रत को मृत्युलोक में किसने किया था। इसके विषय विस्तार पूर्वक मुझसे कहो। श्री कृष्ण जी कहने लगे कि इस भूमंडल पर एक अत्यंत प्रसिद्ध राजा चंद्रहास से पालित अनेक प्रकार के

रत्नों से परिपूर्ण कातिका नाम की एक नगरी थी। वहां धनेश्वर नाम का एक ब्राह्मण था और इसकी स्त्री अती सुशील रुपवती थी। दोनों ही उस नगरी में बड़े प्रेम से साथ रहते थे। घर में धन धान्य आदि की कोई कमी नहीं थी। उनको एक बड़ा दुख था उनके कोई संतान नहीं थी। जिस वजह से वह बहुत दुखी रहते थे। एक दिन एक बड़ा तपस्वी योगी उस नगरी में आया। वह योगी बाकी सभी घरों से भिक्षा मांगकर भोजन किया करता था लेकिन, उस ब्राह्मण के घर से भिक्षा नहीं मांगा करता था। एक दिन योगी गंगा किनारे भिक्षा मांगकर प्रेमपूर्वक खा रहा था कि धनेश्वर ने योगी को यह सब करते देख लिया।

सब कार्य किसी प्रकार से देख लिया। अपनी भिक्षा अनादर से दुखी होकर धनेश्वर योगी से बोले और सभी घरों से भिक्षा लेते हैं परंतु मेरे घर की भिक्षा कभी भी नहीं लेते इसका कारण क्या है। योगी कहने लगा कि आपके धर्म हमें इस बात की आज्ञा नहीं देता है, क्योंकि अभी आप गृहस्थ जीवन में एक सुख से वंचित हैं। आपके घर संतान होने पर मैं आपके घर से भी भिक्षा स्वीकार कर लूंगा।

उन्होंने कहा कि जिसे संतान नहीं है उसके घर से भिक्षा लेने से मेरे भी पतित हो जाने का भय है। धनेश्वर यह सब बात सुनकर बहुत दुखी हुआ और हाथ जोड़कर योगी के पैरों पर गिर पड़ा तथा दुखी मन से कहने लगा की आप मुझे संतान प्राप्ति के उपाय बताए। आप सर्वज्ञ है मुझपर अवश्य ही यह कृपा कीजिए। धन की मेरे घर में कोई कमी नहीं है। लेकिन, मैं संतान न होने के कारण अत्यंत दुखी हूं आप मेरे इस दुख का हरण कीजिए। यह सुनकर योगी कहने लगे- तुम चण्डी की आराधना करो। घर पहुंचकर उन्होंने यह सारी बात अपनी पत्नी को बताई और खुद वन में चला गया। वन में पहुंचकर उसने चण्डी की आराधना की और उपवास किया।

चण्डी ने सोलह दिन उसको सपने में दर्शन दिए और कहा कि हें धनेश्वर! जा तेरे पुत्र होगा, लेकिन, उसकी आयु सिर्फ सुलह वर्ष होगी। सुलह वर्। की आयु में ही उसकी मृत्यु हो जाएगी। अगर तुम दोनों स्त्री और पुरुष 32 पूर्णिमाओं को व्रत करोगे तो यह दीर्घायु हो जाएगा। जितनी तुम्हारा सामर्थ हो उतने आचे के दिये जलाकर शिवजी का पूजन करना। लेकिन पूर्णमासी 32 ही होनी चाहिए। सुबह होती ही तुम्हें इस स्थान के पास एक आम का पेड़ दिखाई देगा। उसपर चढ़कर एक फल तोड़कर अपने घर चले जाना। अपनी स्त्री का इस बारे में बताना। सुबह स्नान होने के बाद वह स्वच्छ होकर शंकर जी का ध्यान करके उस फल को खा ले। तब शंकर भगवान की कृपा से उसको गर्भ हो जाएगा। जब ब्राह्मण सुबह उठा तो उसे उस स्थान पर आम का पेड़ दिखाई दिया और वह उससे फल तोड़ने के चढ़ा लेकिन, वह पेड़ पर चढ़ नहीं पा रहा था। यह देखकर उसे बड़ी चिंता हुई उसने भगवान गणेश की उपासनी की और कहा हे दयानिधे! अपने भक्तों के विघ्नों का नाश करके उनके मंगल कार्य को करने वाले, दुष्ट का

नाश करने वाले रिद्धि सिद्धि देने वाले आप मुझे इतना बल दें कि मैं अपनी मनोकामना पूरी कर सकूं। इसके बाद वह पेड़ से फल तोड़कर अपनी पत्नी के पास पहुंचा। उसकी पत्नी ने अपने पति के कहे अनुसार, इस फल को खा लिया और वह गर्भवती हो गई। देवी की कृपा से उसे बहुत सुंदर पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम उन्होंने देवीदास रखा।

माता पिता के हर्ष और शोक के साथ वह बाल बढ़ने लगा। भगवान की कृपा से बालक बहुत ही सुंदर था। सुशील और पढ़ाई लिखाई में भी बहुत ही निपुण था। दुर्गा जी के कथानुसार, उसकी माता से 32 पूर्णमासी का व्रत रखा। जैसे ही सोलहवां वर्ग लगा दोनों पति पत्नी बहुत दुखी हुए। कही उनके पुत्र की मृत्यु न हो जाए। उन्होंने सोचा की अगर उनके सामने यह सब हुआ तो वह कैसा देख पाएंगे। तभी उन्होंने देवीदास के मामा को बुलाया और एक वर्ष के लिए देवीदास को काशी में पढ़ने के लिए भेज दिया। एक वर्ष के बाद उसे वापस लेकर आ जाना। देवीदास अपने माता के साथ एक घोड़े पर सवार होकर चल दिया। उसके मामा को भी यह बात पता नहीं था। दोनों पति पत्नी से 32 पूर्णमासी का व्रत पूरा किया।

दूसरी तरफ मामा और भांजा दोनों रात गुजारने के लिए रास्ते में एक गांव में रुके। उस दिन उस गांव में ब्राह्मण की कन्या का विवाह होने वाला था। जिस धर्मशाली में वर और बारात के बाकी लोग रुके हुए थे। उसी धर्मशाला में देवीदास और उसका मामा ठहर गए। उधर कन्या को तेल आदि चढ़ने के बाद जब लग्न का समय आया तो वर की तबीयत खराब हो गई। वर के पिता ने अपने परिवार वालों से विचार विमर्श करके कहा कि यह देवीदास मेरे पुत्र जैसा ही है मैं इसके साथ लगन करा दूं और बाद में बाकी सारे काम मेरे बेटे के साथ पूरे हो जाएंगे। ऐसे कहने के बाद वर के पिता देवीदास को मांगने के लिए उसके मामा के पास गए और उन्हें सारी बात बताई। मामा ने कहा कि कन्या दान में जो कुछ भी मिलेगा वो हमें दे दिया जाए।वर के पिता ने बात स्वीकार कर ली। इसके बाद देवीदास का विवाह कन्या के साथ संपन्न हो गया। इसके बाद वह अपनी पत्नी के साथ भोजन न कर सका और मन में विचार करने लगा की न जानें यह किसकी पत्नी होगी। यह सोचकर उसकी आंखों में आंसू आ गए। तब वधू ने पूछा कि क्या बात है? आप उदास क्यों हैं? तब उसने सारी बातें पत्नी को बता दी। तब कन्या कहने लगी यह ब्रह्म विवाद के विपरीत है। आप ही मेरे पति हैं। मैं आपकी की पत्नी रहूंगी। किसी अन्य की कभी नहीं। तब देवीदास ने कहा ऐसा मत करिए क्योंकि, मेरी आयु बहुत कम है। मेरे बात आपका क्या होगा। लेकिन, उसकी पत्नी नहीं मानी और बोली स्वामी आप भोजन कीजिए। दोनों रात में सोने के लिए चले गए। सुबह देवीदास ने पत्नी को चार नगों से जड़ी एक अंगूठी दी और एक रुमाल दिया। और बोला की हे प्रिय! इसे लो और संकेत समझकर स्थिर चित हो जाओं।मेरे मरण और जीवन जानने के लिए एक पुष्प वाटिका बना लो। उसमें सुगंधि वाली एक नव मल्लिका लगा लो, उसको

प्रतिदिन जल से सीचा करें और आनंद के साथ खेलो कूदों।

जिस समय और जिस दिन मेरा प्राणान्त होगा उस दिन यह फूल सूख जाएंगे। जब यह फिर से हरे हो जाएं तो जान लेना मैं जीवित हूं। यह समझाकर वह वहां से चला गया। इसके बाद जब वर और बाकी बाराती मंडप में आए तो कन्या ने उसे देखकर कहा कि ये मेरा पति नहीं है। मेरे पति वह है जिनके साथ रात में विवाद हुआ है। इसके साथ मेरा विवाह नहीं हुआ है। अगर यह वहीं है तो यह बताएं कि मैंने इसके क्या दिया है साथ ही कन्या दान के समय को आभूषण मिले उन्हें दिखाएं। कन्या की ये सारी बातें सुनकर वह कहने लगा की मैं यह सब नहीं जानता । इसके बाद सारी बारात भी अपमानित होकर लौट गई।

भगवान कृष्ण बोले हें माता इस प्रकार देवीदास काशी चला गया। कुछ समय जब बीत गया तो एक सर्प उसको डसने के लिए वहां आया। लेकिन, वह उसको काट नहीं पाया कयोंकि, उसकी माता ने पहली ही 32 पूर्णिमा का व्रत कर लिए थे। इसके बाद खुद काल वहां पहुंचा। भगवान की कृपा से तभी वहां माता पार्वती और भगवान गणेश आ गए। देवीदास को मूर्च्छित दशा में देखकर माता पार्वती ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि महाराज इस बालक की माता ने पहले ही 32 पूर्णिमा के व्रत कर लिए है। आप इसको प्राण दे। भगवान शिव ने माता पार्वती के कहने पर उसे प्राण दान दे दिया।

उधर उसकी पत्नी उसके काल की प्रतीक्षा कर रही थी, उसकी पत्नी ने जाकर देखा की पुष्प और पत्र

दोनों ही नहीं है तो उसको बहुत आश्चर्य हुआ और जब उसने देखा की पुष्पवाटिका फिर से हरी हो गई तो वह समझ गई की उसका पति जिंदा हो गया है। इसके बाद वह बहुत ही प्रसन्न होकर अपने पिता से कहने लगी की मेरे पति जीवित हैं उनको ढूंढिए। जब सोलहवां वर्ष व्यतीत हो गया तो देवीदास भी अपने मामा के साथ काशी चल दिया। इधर उसकी पत्नी के परिवार वाले उन्हें ढूंढने के लिए जा ही रहे थे कि उन्होंने देखा की देवीदास और उसका मामा उधर ही आ रहे थे। उसको देखकर उनके ससुर बहुत प्रसन्न हुए और उसे अपने घर ले आए। वहां सारा वगर इकट्ठा हो गया और कन्या ने भी उसे पहचान लिया। देवीदास ने इसके बाद अपनी पत्नी और मामा को लेकर वहां से चल जिया। उसके ससुर ने भी उसे बहुत धन दहेज दिया। जब वह अपने घर की तरफ चल रहा था तो उसके माता पिता को लोगों ने खबर कर दी। तुम्हारा पुत्र देवीदास अपनी पत्नी और मामा के साथ आ रहा है। ऐसा समाचार सुनकर पहले तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ लेकिन, जब देवीदास आया और उसने अपने माता पिता के पैर छुए तो देवीदास के माता पिता ने उनका माथा चूमा और दोनों को अपने सीने से लगा लिया। दोनों के आने की खुशी में धनेश्वर ने बहुत दान दक्षिणा ब्राह्मणों को दी। श्री कृष्ण जी कहने लगे की इस तरह धनेश्वर को 32 पूर्णिमा को व्रत के प्रभाव से संतान प्राप्त हुई। जो

स्त्रियां इस व्रत को करती हैं वह जन्म जन्मांतरों तक वैधव्य का दुख नहीं भोगती हैं और सदैव सौभाग्यवती रहती हैं, यह मेरा वचन है। यह व्रत संतान देने वाला और सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है।

होलिका निर्णय -

इसमें यह भद्रा रहित प्रदोषव्यापिनी ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि दुर्वासा ने कहा है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन-रात को होली का उत्सव होता है। उसे दिवा विष्टि (भद्रा) रिक्ता 4,9,14 तिथियों में और प्रतिपदा में नहीं करना चाहिये। नारद जी का भी कथन है कि प्रतिपदा, चतुर्दशी और भद्रा के दिन, होलिका का पूजन होने से वह वर्ष भर राष्ट्र को जलाती रहती है, अत: सदैव फाल्गुन की पूर्णिमा को प्रदोषव्यापिनी ग्रहण करना चाहिये। इसमें भद्रा के मुख को छोड़कर प्रदोष काल में होली का पूजन हो। दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो परा का ही ग्रहण करना चाहिये। यदि निशीथ के बाद भद्रा का अवसान मिल जाय तो भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रा में ही प्रदोष के समय आग दे दे, क्योंकि दिनार्ध से ले रहे हैं। इससे यह व्यक्त होता है कि निशीथव्याप्ति मुख्य तथा प्रदोषव्याप्ति गौण है।

होली भारतवर्ष का प्रमुख पर्व है और इसका सम्बन्ध फाल्गुन पूर्णिमा से है, इसलिए इसका ज्ञान होना भी परमावश्यक है।

इसके अतिरिक्त कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को देवदीपावली के रूप में मनाया जाता है। इसलिए इसकी भी प्राथमिकता श्रेष्ठतम है। इस तिथि में सायंकाल पूजनादि करके दीपदान करने का विधान है। भारतीय संस्कृति में देवताओं का दीपावली के रूप में इसको मनाने का विधान कहा गया है।

बोध प्रश्न –

1. शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को क्या कहते है?
   क. अमावस्या ख. दर्श ग. सिनी घ. पूर्णिमा
2. कार्तिक पूर्णिमा को कौन सा त्योहार मनाया जाता है?
   क. छठ ख. दीपावली ग. देव दीपावली घ. रक्षाबन्धन
3. फाल्गुन पूर्णिमा का सम्बन्ध किससे है?
   क. होली ख. दीपावली ग. रक्षाबन्धन घ. गोपद्मव्रत
4. आषाढ़ पूर्णिमा के दिन कौन सा व्रत होता है?
   क. दीपावली ख. छठ ग. गोपद्म व्रत घ. अनन्त व्रत
5. रिक्ता संज्ञक तिथियाँ है?
   क. 1,11,9 ख. 4,9,14 ग. 2,7,12 घ. 3,6,9

4.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि का नाम 'पूर्णिमा' है। पूर्णिमा तिथि में किए जाने वाले प्रमुख व्रत का नाम है- पूर्णिमा व्रत, वटसावित्री व्रत, गोपद्मव्रत, कोकिला व्रत, रक्षाबन्धन, उमामाहेश्वर व्रत, कोजागर व्रत, कार्तिकमासव्रत का उद्यापन, होलीकोत्सव आदि। प्राय: प्रत्येक शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि अर्थात् पूर्णिमा का व्रत धारण कर दिन भर के उपवास के पश्चात् सायंकाल चन्द्रदर्शन-पूजन कर व्रत को सम्पन्न किया जाता है। किन्तु उन पूर्णिमा व्रतों में भी शरद पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा तथा फाल्गुन पूर्णिमा आदि का विशेष महत्व होता है।

पूर्णिमा व्रत – चैत्र मास की पूर्णिमा सामान्य निर्णय से परा अर्थात् बाद की ही ग्रहण करनी चाहिये। इस व्रत में निर्णयामृत में विष्णुस्मृति के वाक्यों से कुछ विशेष लिखा है कि चैत्री पूर्णिमा चित्रानक्षत्र से युक्त हो तो रंगे हुए वस्त्र दान करने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। ब्राह्मपुराण में लिखा है कि यदि चैत्र का शनि, रवि, और गुरुवार हो तो उसमें स्नान तथा श्राद्धादि कर्म करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। वैशाखी पूर्णिमा के विषय में भविष्य पुराण में कुछ विशेष कहते हुए कहा गया है कि वैशाखी, कार्तिकी और माघी पूर्णिमा तिथि अत्यन्त श्रेष्ठ है। अत: इन व्रतों को अवश्य करना चाहिये।

4.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. घ

2. ग

3. क

4. ग

5. ख

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

पूर्णिमा - शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि

गोपद्म व्रत - आषाढ़ पूर्णिमा को किया जाने वाला व्रत

रक्षाबन्धन - श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला त्योहार

होली – फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व

देवदीपावली – कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाने वाला पर्व

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

व्रतराज

व्रतार्क

पूर्णिमा व्रत कथा

धर्मसिन्धु

4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पूर्णिमा तिथि में मनाया जाने वाले व्रतों का उल्लेख करें।

2. पूर्णिमा व्रत कथा का वर्णन करें।

3. होलिका निर्णय पर प्रकाश डालें।

4. रक्षाबन्धन पर्व निर्णय का वर्णन करें।

5. पूर्णिमा के महत्व पर प्रकाश डालिये।

इकाई - 5 वट सावित्री व्रत

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 वट सावित्री व्रत का परिचय

5.3.1 वट सावित्री व्रत का महत्त्व

5.3.2 वट सावित्री पूजा विधि:

5.3.3 वट सावित्री व्रत का साधारण पूजन विधि

5.3.4 वट वावित्री व्रत कथा

5.4 बोध प्रश्न

5.5 सारांशः

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई बी.ए. कर्मकाण्ड विषय के तृतीय सेमेस्टर की BAKA(N)– 220 पाठ्यक्रम से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है - '**वट सावित्री व्रत**'। भारत में व्रतों का सर्वव्यापी प्रचार है। भारतीय अनेकों नर-नारी सूर्य-सोम-भौमादि के एकभुक्त साध्य व्रत से लेकर एकाधिक कई दिनों तक के अन्न-पानादि वर्जित कष्ट साध्य व्रतों तक को बड़ी श्रद्धा से करते हैं। इनके फल और महत्त्व भी प्रायः सर्वज्ञात है। फिर भी यह सूचित कर देना अत्युक्ति न होगा कि 'मनुष्यों के कल्याण के लिये व्रत स्वर्ग के सोपान अथवा संसार-सागर से तार देने वाली प्रत्यक्ष नौका है। '
यहॉ हम इस इकाई में **वट सावित्री व्रत** सम्बन्धित विषयों का अध्ययन विस्तार पूर्वक करेंगे ।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- ❖ वट सावित्री व्रत परिभाषित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- ❖ वट सावित्री व्रत महत्त्व को समझा सकेंगे।
- ❖ वट सावित्री व्रत निरूपण करने में समर्थ होंगे।
- ❖ वट सावित्री व्रत पूजा विधि को जान सकेगें ।

5.3 वट सावित्री व्रत का परिचय

यह व्रत स्कन्द और भविष्योत्तर के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को और निर्णयामृतादि के अनुसार अमावस्या को किया जाता है। इस देश में प्रायः अमावस्या को ही होता है। संसार की सभी स्त्रियों में ऐसी कोई शायद ही हुई होगी,जो सावित्री के समान अपने अखण्ड पतिव्रत्य और दृढ़ प्रतिज्ञा के प्रभाव से यमद्वार पर गये हुए पति को सदेह लौटा लायी हो। अतः विवाहित, बालिका, वृद्धा, सपुत्रा, अपुत्रा सभी स्त्रियों को सावित्री का व्रत अवश्य करना चाहिये।

5.3.1 वट सावित्री व्रत का महत्त्व

भारतवर्ष में वटसावित्री व्रत-पूजा का बड़ा महत्त्व है। कौन स्त्री पतिव्रता होती है, और पतिव्रता का क्या लक्षण है? जो स्त्री पुत्र की अपेक्षा सौ गुना अधिक स्नेह से पति की आराधना करती है तथा राजा के समान उसका भय मानती है और पतिको भगवान् का स्वरूप मानती है, वह पतिव्रता है। जो

गृह कार्य में दासी, रमणकालमें वेश्या तथा भोजन के समय माता के समान पति के प्रति आचरण करती है तथाविपत्ति के समय स्वामी को नेक सलाह देकर मन्त्री का काम करती है। जो मन,वाणी, शरीर से एवं क्रिया द्वारा कभी मालिक की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करतीतथा हमेशा पति के भोजन कर लेने पर ही भोजन करती है। वह स्त्री पतिव्रता मानीगयी है। जिस शय्यापर पति शयन करते हैं वहाँ जो प्रतिदिन यत्नपूर्वक उनकी पूजाकरती है। पति के प्रति कभी डाह नहीं करती है। पति की ओर से आदर मिले याअनादर दोनों में जिसकी समान बुद्धि रहती है ऐसी स्त्री को पतिव्रता कहते हैं।जो पतिव्रता स्त्री सुन्दर वेषधारी परपुरुष को देखकर उसे भ्राता, पिता अथवापुत्र मानती है, वह भी पतिव्रता है । हे द्विजश्रेष्ठ! तुम उस पतिव्रता के पास जाओ।और उससे अपने मनोरथ कहकर सुनाओ। उसका नाम शुभा है। जिसे अपने पतिकी सेवा करने के समय संसार के किसी भी अन्य कार्यों का ध्यान नहीं रहता है।ऐसी बहुत सी पतिव्रता स्त्रियाँ सावित्री सत्यवान् जैसी इस भरतखण्ड में उत्पन्न हुईं।यही हमारे आर्यावर्त का गौरव है।

5.3.2 वट सावित्री पूजा विधि:

'सुमुखञ्चैकदन्तञ्चे 'त्यादिना गणेशाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य, अर्घ्यं संस्थाप्य, सूर्यार्घ्यंदत्वा, आसनोपवेशनं भूतोत्सादनं च विधाय, पुरनर्घ्यं संस्थाप्य, आत्मानं पूजासामग्रींच सम्प्रोक्ष्य, सङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा-

सङ्कल्प — ॐ विष्णुः ३ अद्येह अमुकनामसंवत्सरे उत्तरायणे ग्रीष्मर्तौ ज्येष्ठमासेकृष्णपक्षे वटसावित्र्यमावास्यायां शुभपुण्यतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽमुकराशिःअमुकीदेव्यहं श्रुति - स्मृति-पुराणोक्तफलावाप्तये मम भर्तुः आयुरारोग्याद्यभिवृद्धयेआत्मनञ्च जन्मजन्मन्यवैधव्यसिद्धये पुत्रपौत्राद्यभिवृद्धये चाऽनुष्ठितसावित्रीव्रताङ्गत्वेनसुवर्णप्रतिमायां मृण्मय्यां वा पट्टादिलिखितप्रतिमायां वा सपरिवारायाः सवित्रीदेव्याःषोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये ।

प्रतिष्ठा - ॐ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेनयज्ञपतिं तेन मामव॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यामिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञसमिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्री-ब्रह्माणौ इहागच्छतं इह तिष्ठतं सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् । तथा द्वादशग्रन्थि-युतडोरकसुप्रतिष्ठितो वरदो भव। सुवर्णप्रतिमायां प्राणप्रतिष्ठां च विधाय ।

ध्यानम् —

पद्मपत्रासनस्थञ्चब्रह्माधेयश्चतुर्मुखः ।

सावित्री तस्य ध्यातव्या वामोत्सङ्गता सती ॥

आदित्यवर्णधर्मज्ञा साक्षमालाकरा तथा॥

ध्यानं समर्पयामि नमः ।

आवाहनम्—

ब्रह्मणा सहितां देवीं सावित्रीं लोकमातरम्।

सत्यवन्तं धर्मराजं वटं चावाहयाम्यहम्॥

ॐ कारपूर्विके देवि! वीणापुस्तकधारिणि ।

वेदमातर्नमस्तुभ्यमवैधव्यंप्रयच्छ मे॥

सपरिवाराभ्यां सावित्रीब्रह्मभ्यां नमः, आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम् –

ब्रह्मणा सह सावित्रि सत्यवत्सहितेऽनघे ॥

गृहाणासनकंहैमंधर्मराजसुरेश्वरि!॥

इतयनेनासनं समर्पयामि ।

पाद्यम्—

गङ्गाजलंसमानीतं पाद्यार्थंब्रह्मण:प्रिये ।

भक्तया दत्तं धर्मराज सावित्रिप्रतिगृह्यताम्॥

'ॐ कारपूर्विके देवि ० ' इत्यादिना पुनः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम् –

गाङ्गं समाहृतं तोयं फलपुष्पंसमन्वितम् ।

अर्घ्यं गृहाण सावित्रि मम सत्यव्रतप्रिये ॥

'ॐ कारपूर्विके' त्यादिना च अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीयम् —

सलिलं सह कर्पूरंसुरभिस्वादुशीतलम् ।

ब्रह्मणा सह सावित्रि कुरुष्वाचमनीयकम्।

'ॐ कारपूर्विके' त्यादिना च आचमनीयं समर्पयामि ॥

पञ्चामृतस्नानम् —

पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करायान्वितम्।

पञ्चामृतेन स्नपनं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शुद्धोदकस्नानम् –

मन्दाकिन्याः समीनीतं हेमाम्भोरुहवासितम्।

परिवारयुते देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम् –

सूक्ष्मतन्तुयुतंवस्त्रयुग्मं कार्पाससम्भवम्।

सावित्रि सत्यवत्कान्ते भक्तया दत्तं प्रतिगृह्यताम् ॥

वस्त्रं समर्पयामि ।

उपवीतम्—

वटेन ब्रह्मणा सार्द्धमुपवीतं प्रतिगृह्यताम् ।

चन्दनम्—

कुङ्कुमागुरुकर्पूरकस्तूरी रोचनायुतम्। ।

चन्दनं ते मया दत्तं सावित्री प्रतिगृह्यताम् ॥

अक्षता –

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभनाः ।

मया निवेदिता भक्तया गृहाण परमेश्वरि ॥

भूषणानि च दिव्यानि मुक्ताहारयुतानि च।

त्वदर्थमुपक्लृप्तानिगृहाण शुभलोचने ॥

सौभाग्यद्रव्यम् -

हरिद्रा कुङ्कुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।

सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं सावित्रि प्रतिगृह्यताम्॥

अङ्गपूजा – सावित्र्यै नमः, पादौ पूजयामि । प्रसवित्र्यै नमः, जानुनी पूजयामि ।कमलपत्राक्ष्यै नमः, कटिं पूजयामि । भूतधारिण्यै नमः, उदरं पूजयामि। गायत्र्यै नमः,कण्ठं पूजयामि। ब्रह्मणाः प्रियायै नमः, शिरः पूजयामि ।

ब्रह्म सत्य पूजा

धात्रे नमः पादौ पूजयामि । ज्येष्ठाय नमः उदरं पूजयामि। परमेष्ठिने नमः मेढ्रंपूजयामि। अग्निरूपाय नमः कटिं पूजयामि। वेधसे नमः उदरं पूजयामि। पद्मनाभायनमः हृदयं पूजयामि। विधात्रे नमः कण्ठं पूजयामि। हिरण्यगर्भाय नमः मुखं पूजयामि ।ब्रह्मणे नमः शिरः पूजयामि । विष्णवे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम् –

देवद्रुमरसोद्भूतःकालागुरुसमन्वितः ।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपं सावित्रि गृह्यताम् ॥

दीपंचक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरनाशनम् ।

घृतवर्तिसमायुक्तं दीपं गृह्ण नमोऽस्तु ते ॥

नैवेद्यम् —

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।

मया निवेदितं । भक्तया नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

क्षणं ध्यात्वा, जपं विधाय । ॐ सावित्रीदेव्यै नमः । जलं गृहीत्वा,'गुह्यातिगुह्यगोत्री 'ति समर्प्य। फलम्। ताम्बूलम् । 'हिरण्यगर्भे 'ति दक्षिणां च नैवेद्य,आरार्तिकं कृत्वा, प्रदक्षिणां नमस्कारांश्च कुर्यात्।

सावित्री प्रसवित्री च सततं ब्राह्मणप्रिया ।

पूजिताऽसि द्विजैः सर्वैः सर्वैर्मुनिगणैस्तथा ॥

त्रिसन्ध्यं सर्वभूतानां वन्दनीयासि सुव्रते ।

यथा कृतामिमां पूजां त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते॥

ॐ कारपूर्विके देविवीणापुस्तकधारिणि ।

वेदमातार्नमस्तुभ्यमवैधव्यंप्रयच्छ मे ॥

सपरिवाराभ्यां सावित्रीब्रह्मभ्यां नमः । प्रार्थनां कृत्वा,

सावित्रि ब्रह्मगायत्रि सर्वदा प्रियभाषिणि ।

तेन सत्येन मां पाहि दुःख - संसारसागरात् ॥

त्वं गौरी त्वं शची लक्ष्मीस्त्वं प्रभा चन्द्रमण्डले ।

त्वमेव भूर्जगन्माता त्वमुद्धरवरानने ॥

सौभाग्यं कुलवृद्धिं च देहि त्वं मम सुव्रते ।

यन्मया दुष्कृतं सर्वं कृतं जन्मशतैरपि ॥

भस्मी भवतु तत्सर्वमवैधव्यं च देहि मे।

सावित्रि त्वं यथा देवि चतुर्वर्षशतायुषम् ।

पतिं प्राप्तसि गुणिनं मम देवि तथा कुरु ॥

ब्राह्मणप्रार्थना –

कर्मसाक्षिन् ! जगत्पूज्य! सर्वबन्धो! प्रसीद मे।

संवत्सरखतं सर्वं परिपूर्णं तदस्तु मे॥

अर्घ्यदानम् –

पतिव्रतेमहाभागेवह्नियानेशुचिस्मिते।

दृढव्रतेदृढमतेभर्तुश्चप्रियवादिनि ॥

अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते ।

पुत्रान् पौत्रांश्च सौख्यं च गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

त्वया सृष्टं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।

सत्यव्रतधरो देव ब्रह्मरूप नमोऽस्तु ते॥

त्वं कर्मसाक्षी लोकानां शुभाऽशुभविवेचकः ।

गृहाणार्घ्यं धर्मराज वैवस्त नमोऽस्तु ते॥

तत्र सङ्कल्पः— ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्येहेत्यादि देशकालौ समुच्चार्य, अमुकीदेव्यहंश्रीवटसावित्रीव्रतपूजासाङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च इदं फलं

वस्त्राद्युपेतंवंशपात्रसहितं सौभाग्यद्रव्यम् इमां सुपूजितां सौवाण सावित्रीप्रतिमां च ब्राह्मणाय तुभ्यंसम्प्रददे। तथा दानप्रतिष्ठासिद्धयर्थम इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय दास्ये। तत्सन्न मम।

दानवाक्यम्— उपायनमिदं
द्रव्यं व्रतसम्पूर्तिहेतवे।
वाणकं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्॥

5.3.3 वट सावित्री व्रत का साधारण पूजन विधि

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को वट सावित्री का पूजन होता है। यह सौभाग्यवतीस्त्रियों का प्रमुख पर्व है। इस दिन वटवृक्ष की पूजा की जाती है। स्त्रियाँसुबह-सवेरे स्नान करती हैं और केशों को शुद्ध करती हैं। जल, मौली, रोली,चावल, गुड़, भीगे चने, फूल, धूप, दीप, से वट-वृक्ष की पूजा की जाती है औरउसके चारों और कच्चे सूत का धागा लपेटा जाता है। भीगे हुए चनों का बायनानिकाला जाता है। कहीं-कहीं पर यह त्यौहार ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी से अमावस्यातक मनाया जाता है। यह व्रत स्त्रियों के अखण्ड सौभाग्यवती रहने की कामनासे किया जाता है। इस व्रत के सम्बन्ध में सावित्री-सत्यवान की कथा प्रसिद्ध हैजो इस प्रकार है।

5.3.4 वट वावित्री व्रत कथा

मद्रदेश में अश्वपति नाम के परमज्ञानी राजा थे। धन-वैभव से पूर्ण होने परभी वे सन्तान के अभाव में बड़े दुःखी रहते थे। राजा ने पण्डितों की सलाह सेपुत्र-प्राप्ति के लिए सावित्री की आराधना की। सावित्री ने प्रसन्न होकर राजा-रानी को दर्शन देकर आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम्हारे भाग्य में पुत्र तो नहींहै पर मैं स्वयं कन्यारूप में तुम्हारे यहाँ जन्म लूँगी। इतना कहकर सावित्री देवीअन्तर्धान हो गई।

कुछ समय बाद रानी के गर्भ से साक्षात् सावित्री का जन्म हुआ। राजा-रानीने उसका नाम भी सावित्री ही रखा। सावित्री सर्वगुण सम्पन्ना था। वह चन्द्रमाकी कला के समान नित्यप्रति बढ़ने लगी।

जब वह विवाह के योग्य हुई तबमाता-पिता ने उससे कहा कि अब तुम अपने योग्यमनचाहा वर खोज लो।राजा ने उसे एक बूढ़े मंत्री के साथ वर खोजने के लिए भेज दिया। सावित्री वरढूँढने के लिए रवाना हो गई।

इधर एक दिन अचानक नारद मद्रराज अश्वपति से भेंट करने के लिएआये। संयोग से उसी समय सावित्री भी अपने लिए वर पसन्द करके लौट आई।उसने आदर-पूर्वक नारद जी को प्रणाम किया। नारदजी ने उसे विवाह योग्यदेखकर राजा अश्वपति से पूछा कि आपने इसके योग्य वर खोजा है या नहीं ?राजा ने बताया कि मैंने सावित्री को वर खोजने के लिए भेजा था। वह अभीलौटकर आई है और अब यही बतायेगी कि उसने अपने पतिरूप में किसे पसन्दकिया है । राजा की बात सुनकर नारद जी ने सावित्री से पूछा कि तुमने किस वरके साथ विवाह करने का निश्चय किया है ?सावित्री ने परम विनम्र हो, हाथ जोड़कर निवेदन किया कि महाराज ! राजाद्युमत्सेन का राज्य रुक्मी ने छीन लिया है और वे अन्धे होकर रानी के साथ वनमें रहते हैं। उनके एकमात्र पुत्र सत्यवान को ही मैंने अपना पति बनाने कानिश्चय किया है।

सावित्री के ऐसा कहने पर नारदजी ने अश्वपति से कहा कि आपकी कन्याने वर खोजने में निःसन्देह भारी परिश्रम किया है। वास्तव में ही सत्यवानगुणवानऔर धर्मात्मा है। वह रूपवान और समस्त शास्त्रों का ज्ञाता है। वहअपने माता-पिता के समान सत्य बोलने वाला है, इसी कारण उसका नामसत्यवान हुआ। जिस प्रकार समुद्र रत्नों की राशि है उसी भाँति सत्यवान सभीसद्गुणों का भण्डार है। वह सब प्रकार से सावित्री के योग्य है। वह सब बातोंमें सावित्री के साथ रहने की क्षमता रखता है। इतना कुछ होते हुए भी उसमें एकदोष है जिसके सामने ये सभी गुण फीके से पड़ जाते हैं। वह अल्प आयु है औरविवाह के उपरान्त एक वर्ष की समाप्ति पर उसकी मृत्यु हो जाएगी।

नारद जी के मुख से यह वचन सुनकर राजा अश्वपति का चेहरा उदास होगया और उनके मधुर स्वप्न नष्ट हो गये। नारद के वचन कभी मिथ्या नहीं होसकते ऐसा विचार कर उन्होंने सावित्री को समझाया कि ऐसे क्षीणायु व्यक्तिके साथ विवाह करना कल्याणकारक नहीं है । इसलिये कोई अन्य वर पसन्दकर लो । पिता की बात सुनकर सावित्री ने कहा कि अब मैं शारीरिक सम्बन्धके लिए तो कभी मन में भी किसी अन्य पति के खोजने का विचार नहीं करसकती। कोई भी संकल्प पहले मन में आता है, फिर वाणी से कहा जाता है।कहने के पश्चात् उसे करना ही होता है, चाहे वह शुभ हो या अशुभ। मैंने जिसेएक बार अपने मन से पति स्वीकार कर लिया है, वही मेरा पति होगा। अब मैंकिसी दूसरे का वरण किस प्रकार कर सकती हूँ ! राजा एक ही बार आज्ञा देताहै, पण्डित एक ही बार प्रतिज्ञा करते हैं और

कन्यादान भी एक ही बार होता है,जैसा भी है, अब वह मेरा पति है। मुझे उसके दीर्घायु या अल्पायु होने से कोईहर्ष या विषाद नहीं है। अब मैं अन्य पुरुष की तो बात ही क्या, देवराज इंद्र कोभी स्वीकार नहीं करूँगी। कोई शक्ति मुझे मेरे इस निश्चय से नहीं डिगासकती। मैं पुनः दृढ़तापूर्वक कहती हूँ कि सत्यवान ही मेरा पति होगा।

सावित्री का ऐसा दृढ़संकल्प सुनकर नारद जी ने राजा अश्वपति को सम्मतिदी कि तुम्हें सावित्री का विवाह सत्यवान के साथ ही कर देना चाहिए। यहीउचित प्रतीत होता है। इस प्रकार राजा को समझा-बुझाकर नारदजी अपनेस्थान को चले गये।

राजा अश्वपति ने भगवान् के मंगलमय विधान में विश्वास करके विवाहकी समस्त सामग्री इकट्ठी की और कन्या तथा बूढ़े मंत्री को साथ लेकरद्युमत्सेन की तपोभूमि में पहुँच गये। वहाँ पर राजा द्युमत्सेन अपनी रानी औरराजकुमार सत्यवान के साथ रहते थे। अश्वपति ने उनके पास पहुँचकर अपनानाम बताते हुये उनके चरणों में प्रणाम किया। द्युमत्सेन ने अश्वपति के आने काकारण पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरी कन्या सावित्री ने आपके सुपुत्र सत्यवानके साथ विवाह करने का निश्चय किया है। मैं भी इससे सहमत होकर विवाहकी तमाम सामग्री लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। राजा की बातसुनकर द्युमत्सेन उदास हो गए और उन्होंने कहा कि अब आपमें और मुझमेंकैसी समता। आप राज्यासीन उच्च राजा और मैं राज्यभ्रष्ट रंक। इस पर भी हमपति-पत्नि अन्धे हैं, निर्धन हैं और वन में रहते हैं। आपकी कन्या ने वन के भारीकष्टों को न जानकर ही ऐसा विचार कर लिया है। महाराज अश्वपति ने कहाकि सावित्री ने इस सब बातों पर भली प्रकार विचार कर लिया है। वह कहतीहै कि जहाँ मेरे सास-ससुर और पतिदेव निवास करते हैं, वही मेरे लिये बैकुण्ठहै।

सावित्री के ऐसे दृढ़ निश्चय को सुनकर द्युमत्सेन ने विवाह की स्वीकृति देदी। शास्त्र सम्मत रीति से सावित्री का विवाह सत्यवान के साथ करके राजाअश्वपति तो अपनी राजधानी को लौट गये और उधर सावित्री मनचाहे पतिसत्यवान को पाकर सुखपूर्वक वन में रहने लगी।

नारदजी के वचन हर समय सावित्री के कानों में गूँजते रहते थे। वह एक-एक करके दिन गिन रही थी। उसने जब पति की मृत्यु का दिन निकट आयाजाना तो तीन दिन पहले से ही उसने उपवास आरम्भ कर दिया। तीसरे दिनअपने पितरों का पूजन किया। क्योंकि वही दिन नारदजी ने सत्यवान की मृत्युका बताया था। रोज की भाँति उस दिन भी जब सत्यवान अपने समय परकुल्हाड़ी और टोकरी लेकर लकड़ी काटने के लिए वन में जाने लगा तोसावित्री ने स्वयं भी उसके साथ चलने का आग्रह

किया। सत्यवान ने उस माता-पिता की सेवा के लिए वहीं ठहरने की सम्मति दी। तब सावित्री अपने सास-ससुर से सत्यवान के साथ वन में जाने की आज्ञा ले आई और उसके साथ वनको चलने की तैयारी की।

सत्यवान ने वन में पहुँचकर फल-फूल तोड़े और बाद में लकड़ी काटने केलिए एक वृक्ष पर चढ़ गया। वृक्ष के ऊपर ही सत्यवान के सिर में भारी पीड़ाहोने लगी। वह वृक्ष से नीचे उतर आया और सावित्री की जंघा पर अपना सिररखकर लेट गया। कुछ देर बाद सावित्री ने अनेक दूतों के साथ यमराज कोहाथ में पाश लिए हुए देखा। पहले तो यमराज ने सावित्री को दैवी विधानकहकर सुनाया और फिर वे सत्यवान के अंगुष्ठमात्र जीव को लेकर दक्षिणदिशा की ओर चले गये। सावित्री भी यमराज के पीछे-पीछे चलने लगी। जबबहुत दूर तक भी उसने यमराज का पीछा न छोड़ा तो उन्होंने उससे कहा कि हेपतिव्रते! जिस सीमा तक एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का साथ दे सकता है वहाँ तकतुमने पति का साथ दिया, अब तुम घर लौट जाओ।

सावित्री ने कहा- धर्मराज! जहाँ मेरा पति जा रहा है वहीं मुझे भी जानाचाहिये, यही सनातन धर्म है। पतिव्रत के प्रभाव और आपकी कृपा से कोई भीमेरी गति नहीं रोक सकता।

सावित्री के ऐसे धर्मपूर्ण वचन सुनकर यमराज ने प्रसन्न होकर उसे एक वरमाँगने के लिए कहा।

सावित्री बोली कि मेरे सास ससुर वन में रहते हैं और अन्धे हैं। मैं आपसेयही माँगती हूँ कि उन्हें दिखाई देने लगे। यमराज ने'ऐसा ही हो' कहकर उसेपुनः लौट जाने की सलाह दी।

यमराज की बात सुनकर सावित्री ने कहा- भगवन्! जहाँ मेरे पतिदेव जातेहों वहाँ उनके पीछे-पीछे चलने में मुझे भी कष्ट या परिश्रम नहीं है। पतिपारायण होना मेरा कर्त्तव्य है। आप धर्मराज हैं, परम सज्जन हैं। सत्पुरुषों कासमागम भी तो कुछ कम पुण्यों का फल नहीं है।

सावित्री के ऐसे धर्मयुक्त और श्रद्धापूर्ण वचन सुनकर यमराज ने फिरकहा- सावित्री! मैं तुम्हारे वचनों से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे एक वरदानऔर माँग सकती हो।

सावित्री ने कहा- राजा द्युमत्सेन का राज्य छिन गया है। उसे वे पुनः प्राप्तकरें और धर्म में उनकी सदैव प्रीति रहे; यही वरदान मुझे दीजिये।

यमराज ने वरदान देकर पुनः उसको लौट जाने को कहा किन्तु वह न मानीऔर बराबर पीछा करती रही। उसकी ऐसी दृढ़ पतिभक्ति देख यमराज ने प्रसन्नहोकर उसे तीसरा वरदान देने की इच्छा

प्रकट की। तब सावित्री ने अपने पितृकुलकी भलाई को दृष्टि में रखकर सौ भाई होने का वरदान माँगा। यमराज ने सहर्षयह वरदान भी दिया और सावित्री से पुनः आगे न बढ़ कर, लौट जाने काआग्रह किया। किन्तु सावित्री अपने प्रण पर अडिग रही।

सावित्री की ऐसी निष्ठा और दृढ़संकल्प देखकर यमराज का हृदय पसीजगया। वे बड़ी कोमल वाणी में बोले- हे सुव्रते! तुम ज्यों-ज्यों उत्तम धर्मयुक्तऔर गम्भीर युक्तिपूर्ण वचन कहती हो, त्यों-त्यों मेरी प्रीति तुम पर बढ़ती जातीहै। अत: तुम सत्यवान के जीवन को छोड़कर एक और वरदान मुझसे ले लोअपने घर लौट जाओ ।

पहले तीनों वरदान पाकर सावित्री ने अपने श्वसुर-कुल और पितृकुलदोनों का कल्याण कर दिया। अब केवल अपनी ही भलाई का प्रश्न सम्मुखथा। पति-पारायण नारी को अपने पति की आयु वृद्धि के अतिरिक्त और क्याफल कामना हो सकती है! यही सोचकर सावित्री ने सत्यवान से सौ पुत्र होने कावरदान माँगा।

सावित्री के ऐसे युक्तिपूर्ण वचन सुनकर यमराज बहुत संतुष्ट हुये औरउन्होंने उसे वरदान हुये सत्यवान को पाश से मुक्त कर दिया और कहा किसत्यवान से तुम्हें ही सौ पुत्र होंगे।

सावित्री को मनोवांछित वरदान देकर यमराज वहीं अन्तर्धान हो गये औरवह लौटकर वट-वृक्ष के नीचे आई। वट-वृक्ष के नीचे सत्यवान का मृत शरीरपड़ा हुआ था। तभी उसमें जीवन का संचार हो गया और वह उठकर बैठ गया।

सावित्री ने सत्यवान से सारा वृत्तान्त कह सुनाया और फिर वे दोनों खुशी-खुशी आश्रम की ओर चले। सत्यवान के माता-पिता को दृष्टि प्राप्त हो गई थीऔर वे अपने आज्ञाकारी पुत्र और सेवा पारायण पुत्र-वधू को न देखकर अत्यंतदुःखी हो रहे थे। तभी सावित्री -सत्यवान वहाँ पर पहुँच गये।

सारे देश में सावित्री के अनुपम पतिव्रत का समाचार फैल गया। प्रजाजनोंने महाराज द्युमत्सेन को ले जाकर आदरपूर्वक राज सिंहासन पर बैठाया।सावित्री के पिता अश्वपति को सौ पुत्र प्राप्त हुए और सावित्री सत्यवान नेभी सौ पुत्र प्राप्त करके दीर्घायु तक राज्य भोगा और अन्त में बैकुण्ठ सिधारे ।

प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री को यह व्रत अवश्य करना चाहिए। जिससे उनकेपति दीर्घायु हों और गृहस्थी में सभी प्रकार के सुख भगवान् की कृपा से बनेरहें।

बोध प्रश्न : -

1 - वट सावित्री व्रत किस मास में किया जाता है।

A .चैत्र मास B. ज्येष्ठ मास C. श्रावण मास D. कार्तिक मास

2- वट सावित्री व्रत किस तिथि में किया जाता है।

A .प्रतिपदा B. तृतीया C. पंचमी D. अमावस्या

3 - वट सावित्री व्रत में किस वृक्ष की पूजा की जाती है

A .आम B. वट C. पीपल D. नीम

4. सावित्री की पति का क्या नाम था?

A . सत्यवान B. हरिश्चन्द्र C. रोहित D. राहुल

5. वटवृक्ष का पर्याय है-

A . पीपल B. आम C. बरगद D. सागवान

5.4 सारांश:–

इस इकाई के अध्ययन से आपने जान लिया है कि वटसावित्री का व्रत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा या अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। इस व्रत के प्रताप से सावित्री ने अपने मृतक पति सत्यवान के प्राण को यमराज से पुन: वापस ले आयी थी। तभी से इस व्रत की महिमा और बढ़ गयी तथा वट सावित्री व्रत वाले दिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए इस व्रत को धारण करने लगी। और यह परम्परा रूप में मनायी जाने लगी। ऐसा माना जाता है कि व्रत का पालन करने से महिलाएं अपने पति के लिए सौभाग्य और समृद्धि लाने में सक्षम होती हैं। वट सावित्री पूजा विवाहित महिलाओं द्वारा की जाती है। इसमें महिलाएं विशेष रूप से वट अर्थात् बरगद वृक्ष की पूजा करती हैं।

5.5 पारिभाषिक शब्दावली

अमावस्या – कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि

वटसावित्रीव्रत – अमावस्या तिथि को किया जाने वाला व्रत

सत्यवान- सावित्री का पति

वट – बरगद का वृक्ष

सौभाग्यवती स्त्री – विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो।

समृद्धि – धन-वैभवादि से युक्त

मृतक – मरा हुआ

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर –

1. B. ज्येष्ठ मास
2. D. अमावस्या
3. B. वट
4. A. सत्यवान
5. C. बरगद

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. व्रत परिचय - गीताप्रस गोरखपुर

2. वट सावित्री व्रत कथा - रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

3. व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

5.8 सहायक पाठ्यसामग्री

व्रतार्क

व्रतराज

व्रतपरिचय

वटसावित्री व्रत कथा

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न -

1. वट सावित्री व्रत का परिचय देते हुए उसके महत्वों पर प्रकाश डालियें।

2. वट सावित्री व्रत का पूजन विधि एवं कथा को विस्तार पूर्वक लिखिये।

इकाई– 6 ऋषि पंचमी व्रत

इकाई की संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 ऋषि पंचमी का व्रत परिचय

6.3.1 व्रतोद्यापन

6.4 ऋषि पंचमी की व्रत कथा

6.5 सारांश

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.7 पारिभाषिक शब्दावली

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-220 तृतीय सेमेस्टर से सम्बन्धित है। पूर्व के इकाई में आपने विभिन्न व्रत-पर्वों के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप ऋषि पंचमी के व्रत का अध्ययन करने जा रहे है। पंचमी तिथि को किया जाने वाला व्रत ऋषि पंचमी के नाम से जाना जाता है।

आइए हम सभी तिथिपरक व्रतों के अन्तर्गत ऋषि पंचमी के व्रत का अध्ययन करते हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- ऋषि पंचमी का व्रत कैसे करते है।
- ऋषि पंचमी में किस देवता का पूजन किया जाता है।
- ऋषि पंचमी की व्रत-विधि क्या है।
- ऋषि पंचमी व्रत का महत्व क्या है।
- ऋषि पंचमी का व्रत क्यों करना चाहिये।

6.3 ऋषि पंचमी का व्रत परिचय

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को 'ऋषिपंचमी' व्रत करने का विधान है। इसी दिन ऋषि पंचमी होता है। इस व्रत को मध्याह्नव्यापिनी ही ग्रहण करना चाहिये। माधवीया और हारीत के अनुसार सभी पूजाव्रतों में मध्याह्नव्यापिनी तिथि को ही ग्रहण करना चाहिये। यदि दो दिन मध्याह्नव्यापिनी तिथि हो तो पहली वाली ही ग्रहण करें। सात वर्ष तक इस व्रत को करना चाहिये और तत्पश्चात् उसका उद्यापन करना चाहिये।

इस व्रत के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस व्रत का आचरण करने से नरक का दर्शन नहीं होता है। रजस्वला समय में स्पर्शस्पर्शादि दोषों के निवारणार्थ यह व्रत होता है। स्त्रियों के लिए तो यह परमावश्यक है परन्तु सपत्नीक व्रत की महत्ता अधिक बतलायी गयी है।

व्रतविधान – कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वसिष्ठ ये सात सप्तऋषि है। चतुर्थी तिथि को सायंकाल नित्यकर्म को समाप्त करके संकल्प लें कि कल मैं ज्ञात-अज्ञातावस्था में

रजस्वलावस्था में स्पर्शादि दोष के निवारणार्थ ऋषिपंचमी व्रत करुँगा। व्रत के दिन कर्ता प्रात:काल उठकर नित्यकर्मादि को समाप्त करके संकल्प द्वारा व्रत ग्रहण करें। मध्याह्न में नदी या जलाशय के समीप जाकर समन्त्रक पंचगव्य प्राशन करें। (कहीं पर ब्रह्मकूर्च होम पूर्वक पंचगव्य प्राशन का विधान मिलता है) चिचिरी के पौधे से अरुन्धती सहित सप्तऋषियों का निर्माण करना चाहिये। सात चिचिड़ी पौधों के समूह को इकट्ठा कर एक बण्डल बनावें इसी प्रकार आठ बनावें। जहाँ अपामार्ग (चिचिड़ी) का अभाव हो वहाँ मिट्टी के कसोरे में चावल भरकर अष्टदल कमल बनाकर उसके ऊपर सुपारी की स्थापना करें। शुद्धासन के उपर सप्तऋषियों को स्थापित कर निम्न वैदिक मन्त्र का पाठ करके एक-एक नाम से आवाहन करें –

'ऊँ सप्तऋषय: प्रतिहिता: शरीरे सप्त रक्षंति सदमप्प्रमादम्। सप्ताप: स्वपतोलोकमायुस्तत्र जाग्रतोऽअस्वप्न्जौसत्रसदौं च देवौ।।'

ऊँ कश्यपाय नम: कश्यपमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ अत्रये नम: अत्रिमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ भारद्वाजाय नम: भरद्वाजमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ विश्वामित्राय नम: विश्वमित्रमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ गौतमाय नम: गौतममावहयामि स्थापयामि।

ऊँ जमदग्नये नम: जमदग्निमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ वसिष्ठाय नम: वसिष्ठमावहयामि स्थापयामि।

ऊँ अरुन्धत्यै नम: अरुन्धनतीमावहयामि स्थापयामि।

इन सभी ऋषियों का 'ऊँ मनोजूति जूषताम.....0 मन्त्र से प्रतिष्ठा करके नाम मन्त्र से तथा पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना का मन्त्र इस प्रकार है –

नमोस्तु ऋषिवृन्देभ्यो देवर्षिभ्यो नमो नम:। सर्वपापहरेभ्यो हि वेदविद्भ्यो नमो नम:। एते सप्तर्षय: सर्वे भक्त्या सम्पूजिता मया। सर्वपापं व्यपोहंतु ज्ञानतोऽज्ञानत: कृतम्।

उक्त मन्त्र से प्रार्थना करके उपवास रहकर व्रत का आचरण करना चाहिये तदुपरान्त अग्रिम दिन

पारण करने का विधान है। इस प्रकार से ऋषिपंचमी व्रत को धारण तथा उसका आचरण करने का विधान बतलाया गया है।

6.3.1 व्रतोद्यापन -

निर्धारित अवधि (सात वर्ष) पर्यन्त व्रताचरण करके उद्यापन के दिन पूर्ववत् संकल्प करें। अन्त में 'आचरित ऋषिपंचमीव्रतोद्यापनमहं करिष्ये' इसको जोड़ दें। संकल्प के पश्चात् गणेश पूजन से आचार्य वरण पर्यन्त कर्म करके सर्वतोभद्रमण्डल के बीच सात ताम्र अथवा एक ताम्र कलश को विधिनुसार संस्थापित करके सामर्थ्यानुसार स्वर्ण की सातों ऋषियों की अरुन्धती सहित प्रतिमा स्थापित करें। पूर्व में वर्णित जो विधि है, उस विधि से स्थापन, आवाहन, प्रतिष्ठा, पूजन इत्यादि करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित घृतनिर्मित पदार्थ को फलसहित वायन के रूप में दें। दान के समय 'वायनं फल संयुक्तं' से 'वायनस्य प्रसादत:' तक मन्त्र बोलें जो इस प्रकार है –

वायनं फलसंयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम्। द्विजवर्याय दास्यामि व्रतसंपूर्तिहेतवे।।

भवंत: प्रतिगृह्णन्तु ज्योतीरुपास्तपोधना:। उभयोस्तारका: सन्तु वायनस्य प्रसादत:।।

उक्त मन्त्र से प्रार्थना करने के पश्चात् ऋषिपंचमी कथा का श्रवण करना चाहिये। कथा श्रवण करते हुए रात्रि जागरण करके प्रात:काल अग्नि को प्रतिष्ठापित करके आज्यभागान्त ग्रहहोम करके अरुन्धती सहित सप्त ऋषियों को उनके नाममन्त्रों से आहुति देकर सर्वतोभद्रदेवताओं को आहुति देकर होम शेष को समाप्त कर उत्तर पूजन करें। सात सपत्नीक ब्राह्मणों का पूजन करके वस्त्रादि कलशादि देना चाहिये।

यदि एक कलश हो तो केवल आचार्य को दें, बाकी सभी लोगों का पूजन करके आचार्य के लिए सामर्थ्यानुसार गौ इत्यादि भी देना चाहिये। इसके बाद विसर्जनादि प्रक्रिया पूर्ण करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर इष्टबन्धुजन के साथ स्वयं भोजन ग्रहण करना चाहिये।

6.4 ऋषि पंचमी की व्रत कथा

कथा – 1

विदर्भ देश में उत्तंक नामक एक सदाचारी ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी बड़ी पतिव्रता थी, जिसका नाम सुशीला था। उस ब्राह्मण के एक पुत्र तथा एक पुत्री दो संतान थी। विवाह योग्य होने पर उसने समान कुलशील वर के साथ कन्या का विवाह कर दिया। दैवयोग से कुछ दिनों बाद वह विधवा हो गई। दु:खी ब्राह्मण दम्पति कन्या सहित गंगा तट पर कुटिया बनाकर रहने लगे।

एक दिन ब्राह्मण कन्या सो रही थी उसका शरीर कीड़ो से भर गया। कन्या ने सारी बात माँ से कही। माँ

ने पति से सब कहते हुए पूछा- प्राणनाथ! मेरी साध्वी कन्या की यह गति होने का क्या कारण है? उत्तंक ने समाधि द्वारा इस घटना का पता लगाकर बताया- पूर्व जन्म में भी यह कन्या ब्राह्मणी थी। इसने रजस्वला होते ही बर्तन छू दिए थे। इस जन्म में भी इसने लोगों की देखा-देखी ऋषि पंचमी का व्रत नहीं किया। इसलिए इसके शरीर में कीड़े पड़े हैं।

धर्म-शास्त्रों की मान्यता है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन चाण्डालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, तीसरे दिन धोबिन के समान अपवित्र होती है। वह चौथे दिन स्नान करके शुद्ध होती है। यदि यह शुद्ध मन से अब भी ऋषि पंचमी का व्रत करें तो इसके सारे दु:ख दूर हो जायेंगे और अगले जन्म में अटल सौभाग्य प्राप्त करेगी। पिता की आज्ञा से पुत्री ने विधिपूर्वक ऋषि पंचमी का व्रत एवं पूजन किया। व्रत के प्रभाव से वह सारे दु:खों से मुक्त हो गयी। अगले जन्म में उसे अटल सौभाग्य सहित अक्षय सुखों का भोग मिला।

ऋषि पंचमी की व्रत कथा – 2

सतयुग में विदर्भ नगरी में श्येनजित नामक राजा हुए थे। वह ऋषियों के समान थे। उन्हीं के राज में एक कृषक सुमित्र था। उसकी पत्नी जयश्री अत्यन्त पतिव्रता थी।

एक समय वर्षाऋतु में जब उसकी पत्नी खेती के कामों में लगी हुई थी, तो वह रजस्वला हो गई। उसको रजस्वला होने का पता लग गया फिर भी वह घर के कामों में लगी रही। कुछ समय बाद वह दोनों स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी आयु भोगकर मृत्यु को प्राप्त हुए। जयश्री तो कुतिया बनीं ओर सुमित्र को रजस्वला स्त्री के सम्पर्क में आने के कारण बैल की योनि मिली, क्योंकि ऋतु दोष के अतिरिक्त इन दोनों का कोई अपराध नहीं था। इसी कारण इन दोनों को अपने पूर्व जन्म का समस्त विवरण याद रहा। वे दोनों कुतिया और बैल के रूप में उसी नगर में अपने बेटे सुचित्र के यहां रहने लगे। धर्मात्मा सुचित्र अपने अतिथियों का पूर्ण सत्कार करता था। अपने पिता के श्राद्ध के दिन उसने अपने घर ब्राह्मणों को भोजन के लिए नाना प्रकार के भोजन बनवाए।

जब उसकी स्त्री किसी काम के लिए रसोई से बाहर गई हुई थी तो एक सर्प ने रसोई की खीर के बर्तन में विष वमन कर दिया। कुतिया के रूप में सुचित्र की मां कुछ दूर से सब देख रही थी। पुत्र की बहू के आने पर उसने पुत्र को ब्रह्म हत्या के पाप से बचाने के लिए उस बर्तन में मुँह डाल दिया। सुचित्र की पत्नी चन्द्रवती से कुतिया का यह कृत्य देखा न गया और उसने चूल्हें में से जलती लकड़ी निकाल कर कुतिया को मारी। बेचारी कुतिया मार खाकर इधर-उधर भागने लगी। चौके में जो जूठन आदि बची रहती थी, वह उसी को खाकर अपना पेट भरती थी, लेकिन क्रोध के कारण उसने वह भी बाहर फिकवा दी। सब खाने का सामान फिर से मंगवाकर उसने ब्राह्मणों को खिलाया। रात्रि के समय भूख से व्याकुल

होकर वह कुतिया बैल के रूप में रह रहे अपने पूर्व पति से जाकर बोली –मैं भूख के मारे मरी जा रही हूँ। वैसे तो मेरा पुत्र मुझे रोज खाने को देता था, लेकिन आज मुझे खाने के लिए कुछ नहीं मिला। मैं तो ब्रह्म हत्या के भय से मैंनें खाने को छूकर ब्राह्मणों के न खाने योग्य कर दिया था। इसी कारण उसकी बहू ने मुझे मारा और खाने को भी कुछ भी नहीं दिया। तब वह बैल बोला- हे भद्रे! तेरे पापों के कारण तो मैं भी इस योनि में आ पड़ा हूँ और आज बोझा ढ़ोते-ढ़ोते मेरी कमर टूट गई है। आज मैं भी खेत में दिन भर हल में जुता रहा। मेरे पुत्र ने आज मुझे भी भोजन नहीं दिया और मुझे मारा भी बहुत। मुझे इस प्रकार कष्ट देकर उसने इस श्राद्ध को निष्फल कर दिया।

अपने माता-पिता की इन बातों को सुचित्र सुन रहा था, उसने उसी समय दोनों को भरपेट भोजन कराया और फिर उनके दु:ख से दु:खी होकर वन की ओर चला गया। वन में जाकर ऋषियों से पूछा कि मेरे माता-पिता किन कर्मों के कारण इन नीच योनियों को प्राप्त हुए हैं और अब किस प्रकार से इनको छुटकारा मिल सकता है। तब सर्वतमा ऋषि बोले- तुम इनकी मुक्ति के लिए पत्नीसहित ऋषि पंचमी का व्रत धारण करो तथा उसका फल अपने माता-पिता को दो।

भाद्रपद मास की शुक्ल पंचमी को मुख शुद्ध करके मध्याह्न में नदी के पवित्र जल में स्नान करके और नये रेशमी कपड़े पहनकर अरून्धती सहित सप्तऋषियों का पूजन करना। इतना सुनकर सुचित्र अपने घर लौट आया और अपनी पत्नीसहित विधि-विधान से पूजन व्रत किया। उसके पुण्य से माता-पिता दोनों पशु योनियों से मुक्त हो गए। इसलिए जो महिला श्रद्धापूर्वक ऋषिपंचमी का व्रत करती है, वह समस्त सांसारिक सुखों को भोगकर बैकुण्ठ धाम को जाती है।

बोध प्रश्न : -

1. ऋषि पंचमी कब मनाया जाता है?
   क. भाद्रपद मास की शुक्ल पंचमी को
   ख. भाद्रपद मास की पूर्णिमा तिथि को
   ग. भाद्रपद मास की प्रतिपदा तिथि को
   घ. भाद्रपद मास की दशमी तिथि को
2. ऋषि पंचमी को किसका पूजन होता है?
   क. अरून्धती सहित सप्तऋषियों का
   ख. जमदग्नि ऋषि का
   ग. कश्यप, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र ऋषि का

घ. मरीची, कश्यप और विश्वामित्र का

3. ऋषि पंचमी व्रत पूजन का विधान किस काल में है?

   क. प्रात: ख. मध्याह्न ग. सायं घ. गोधूलि

4. सुमित्र कौन था?

   क. ऋषि ख. कृषक ग. मजदूर घ. पंडित

5. सुशीला कौन थी?

   क. उत्तंग की पत्नी ख. उत्तंग की पुत्री ग. उत्तंग की माता घ. कोई नहीं

6.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को 'ऋषिपंचमी' व्रत करने का विधान है। इसी दिन ऋषि पंचमी होता है। इस व्रत को मध्याह्नव्यापिनी ही ग्रहण करना चाहिये। माधवीया और हारीत के अनुसार सभी पूजाव्रतों में मध्याह्नव्यापिनी तिथि को ही ग्रहण करना चाहिये। यदि दो दिन मध्याह्नव्यापिनी तिथि हो तो पहली वाली ही ग्रहण करें। सात वर्ष तक इस व्रत को करना चाहिये और तत्पश्चात् उसका उद्यापन करना चाहिये।

इस व्रत के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस व्रत का आचरण करने से नरक का दर्शन नहीं होता है। रजस्वला समय में स्पर्शस्पर्शादि दोषों के निवारणार्थ यह व्रत होता है। स्त्रियों के लिए तो यह परमावश्यक है परन्तु सपत्नीक व्रत की महत्ता अधिक बतलायी गयी है।

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क

2. क

3. ख

4. ख

5. क

6.7 पारिभाषिक शब्दावली

ऋषिपंचमी - भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि का मनाया जाने वाला व्रत

मध्याह्न – दोपहर

रजस्वला - मासिक धर्म

सपत्नीक - पत्नी सहित

निवारणार्थ – निवारण के लिए

महत्ता - महत्व

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ऋषिपंचमी व्रत कथा

व्रत-पर्वानुष्ठान

व्रतराज

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ऋषिपंचमी व्रत विधान का उल्लेख करें।

2. ऋषिपंचमी व्रत पूजन का वर्णन करें।

3. ऋषिपंचमी व्रत कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

4. ऋषिपंचमी व्रत का महात्म्य बतलाइये।